॥ अथ श्रीप्रकरणसंग्रहप्रारंभः ॥

आ पुस्तक पंक्तिराज पूज्यश्री ३ देवजी स्वामिना शिष्यपूज्य
श्रीलाधाजी स्वामिपांसे शुद्धकरावी
सुरतवदरनिवासी श्रावक भगवानदास केवलदासे
मुंबइमां "गुजराती प्रिंटिंग प्रेसमां" छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे
संवत् १९६६
आवृत्ति ५ मी
किमत रु १

॥ श्रीप्रकरणसंग्रहनी अनुक्रमणिका ॥

॥ श्रीप्रकरणसंग्रहनो अनुक्रमणिका ॥

१ छकायनाबोल	१	९ चोविशजिनांतरा	७१
२ नवतत्व	४	१० कर्मप्रकृतिनाबोल	७८
३ लघुदंडक	१५	११ धर्मध्यान	८४
४ गतागत	३४	१२ पांचबोल	९१
५ गुणठाणा	३७	१३ पदवीनाबोल	१०५
६ मह्रोटोबासठीयो	५४	१४ सिझणाद्वार	१०८
७ अठाणुबोलनो अल्पबहुत्व	६३	१५ विरहद्वार	१०९
८ छआरानाबोल	६५	१६ पांचदेवनाबोल	११०

। अनुक्रम

१७ दिसाणुवाइ	११३	२२ रूपिअरूपीनाबोल	१५३
१८ खंभाजोयण	११५	२३ प्रमाणबोध	१५३
१९ सजयानाबोल	१२७	२४ सिद्धांतादिमान	१५८
२० नियठानाबोल	१३५	२५ ज्योतिषबोध	१६३
२१ पद्रूपनाबोल	१४५	इति अनुक्रमणिका समाप्ता	

॥ ॐ नमः ॥ श्रीवीतरागाय नम ॥ श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ श्रीगणधरेभ्यो नम ॥
अथ छकायना बोल लिख्यते ॥ पहेले बोले इंद्री थावरकाय ॥ २ ॥ बीजे बोले बंभी थावरकाय ॥ ३ ॥ सपि थावरकाय ॥ ४ ॥ सुमति थावरकाय ॥ ५ ॥ पयावच्च थावरकाय ॥ ६ ॥ जंगमकाय ॥ ए छकायना नाम कह्यां ॥ हवे गोत्र कहेछे ॥ पृथवी काय ॥ १ ॥ अपूकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥ वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ हवे पृथ्वीकायना बे भेद ॥ सुक्ष्म अने बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमा भरयाछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे ॥ ज्ञानी जाणे देखे ॥ हवे बादरपृथ्वी कायना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले माटीने मीठानी जात ॥ २ ॥ खमीने खारानी जात ॥ ३ ॥ कालमिढ मरमीया पाहणा ने सिद्धानी जात ॥ ४ ॥ हिंगलो ने हमतालनी जात ॥५॥ गेरु ने गोपीचदननी जात ॥ ६ ॥ रत्न परवालानी जात ॥ ७ ॥ सोल जातिना रत्न आदि लेईने ततालीस जातनी पृथ्वीकायछे ॥ तेना एक ककमामां ॥ असंख्याता जीव । श्रीभगवंते कह्याछे ॥ ते जुवार ॥ तथा पीलु ॥ जेटली पृथ्वीकाय लइये ॥ तेमाथी ॥ एकेको जीव निकलीने । पारेवा जेवडी काया करे तो ॥ एक लाख जोजननो जंबुद्विप छे ॥

छे ॥ एकवार उघाम्हे मोढे चोळ्ये ॥ असंख्याता जीव हणाय छे ॥ तेमाथी एकेको जीव निकलीने ॥ वम्हना वीज जेवम्ही काया करेतो ॥ जम्बुद्विपमा समाय नहि ॥ तेना कुल सात लाख क्रोम्हछे ॥ तेनु आउखु । जघन्य । अतमुंहूर्तनु ॥ उत्कृष्ठु ॥ त्रणहजार वर्षनु ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥ ४ ॥ पांचमे बोले वनस्पतिकाय ॥ तेना बे भेद । सुक्ष्म अने बादर ॥ सुक्ष्म ते आखा लोकमा भर्याछे ॥ ते आपणी नजरे न आवे । बादरवनस्पतिकायना बे भेद ॥ प्रत्येक अने साधारण ॥ प्रत्येक कोने कहीये । सरीरे सरीरे एकेको जीव होय ॥ तेने प्रत्येक कहीये ॥ अने एक सरीरे अनंता जीव होय । तेने साधारण कहीये ॥ हवे प्रत्येकना नाम कहेछे ॥ पहेले बोले वृक्ष ने वेलानी जात ॥ रिंगणी तलसी ने गुलमनी जात ॥ एरम्डा आकम्डा धतुरानी जात ॥ दाम्डम सेलम्डी ने केलानी जात ॥ थो केवम्डो दालम्डो ने तरणानी जात ॥ फुल कमल ने नागरवेलनी जात ॥ बोरम्डी केरम्डो ने कर्मेलानी जात॥ जुवार बाजरो मठ मकाइनी जात॥ ताजलजो सूवा मोघरी वालोरफलीनी जात ॥ ए आदि [illegible] प्रत्येक वनस्पति छे॥तेमा भगवाने बे प्रकारना जीव कह्याछे.।संख्याता॥असं

ख्याता ॥ तेनी दया पालीये तो अनता मोक्षनां सुख पामीए ॥ तेनुंआजखुंज० अत० उत्० दशहजार वर्षनु ॥ हवे साधारण वनस्पतिना नाम कहेछे ॥ पहेले वोले लीलफूल सेवालनी जात । गाजर मूलानी जात । रुगली लसणनी जात ॥ आदु ने गरमरनी जात ॥ रतालु पिम्रालुनी जात ॥ कटालो थोर खुरसाणी कुवार सेलरानी जात ॥ मोथ्र लुणीनी जात ॥ उगता अंकुरा अने कुणी काकमीप्रमुखनी जात ॥ ए आदि लेइने घणी जातिनी साधारण वनस्पतिछे ॥ एक कद मूलना कक्मामा अनता जीव छे ॥ तेनुं आउखुं । जघन्य । उत्०अतर्मुहुर्तनु । वेहुना कुल २० लाख क्रोमछे ॥तेनी दया पालीये तो अनता मोक्षनां सुख पामीये॥ हवे त्रसकायना चार न्नेद। वे इंडीय । तेइडीय । चौरेंडीय । पंचेडीय । हवे वे इंडीयना वे न्नेद । अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्ता ॥ वेइंडीय ते कोने कहीये । जेनेकाया । जीन्या । वे इडीय होय । तेने वेइडीय कहीये । तेना नाम ॥ जलो । किमा पोरा । करमीया । सरमिया मामणमुमा । अलसीया । लट । लाल । सख । गीप । कोमा ॥ आदि लेइने घणी जातिना । वेइडीय जीव छे ॥ तेनां कुल सात लाख क्रोमछे॥ तेनु आउखुं जघन्य अंतर्मुहुर्तनु ॥ उत्कष्टु । वार वर्षनुं ॥ तेनी दया पालीये तो अनंता मोक्षनां सुख पामीये ॥

जीवतत्व ते केहने कहिये ॥ चैतन्यलक्षण ॥ सदा सउपयोगी ॥ असख्यात प्रदेशी ॥ सुख दुःखनो जाण ॥ सुखदु खनो वेदक तेहने जीवतत्व कहिये ॥ १ ॥ अजीवतत्व ते केहने कहिये ॥ जमलक्षण ॥ चैतन्यरहित ॥ तेहने अजीवतत्व कहिये ॥ २ ॥ पुण्यतत्व ते शुभ कमाणिये करी ॥ शुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवता मीठा लागे तेहने पुण्यतत्व कहिये ॥ ३ ॥ पापतत्व ते अशुभ कमाणिये करी ॥ अशुभ कर्मने उदये करी ॥ जेहना फल आत्माने भोगवता कडुवा लागे। तेहने पापतत्व कहिये ॥ ४ ॥ आश्रव तत्व ते। अव्रत ने अपच्चखाणे करी। विषय कषायने सेववेकरी ॥ आत्मारूपतलावने विषे ॥ इन्द्रियादिक घरनाले छिद्रेकरी। कर्म पापरूप जलनो प्रवाह आवे। तेहने आश्रवतत्व कहिये ॥ ५ ॥ संवरतत्व ते जीवरूप तलावने विषे ॥ कर्मरूप जल आवता व्रतपच्चखाणादिक द्वार देवेकरी रोकीये ॥ तेहने संवरतत्व कहिये ॥ ६ ॥ निर्जरातत्व ते ॥ आत्माना प्रदेशथी बार भेदे तपस्यायेकरी देशथकि कर्मनु निर्जरवु करीने दुर थावु ॥ तेहने निर्जरातत्व कहिये ॥ ७ ॥ बंधतत्व ते। आत्माना प्रदेशने कर्मप्रकृतना दल रु रु -

रनीपेरे ॥ लोहपिंम अग्निनी परे । लोलीभूत थइ बधाय ॥ तेहने बधतत्व कहिये ॥ ८ ॥ मोक्षत
त्व ते सकल आत्माना प्रदेशथी सकल कर्मनु बुटवु ॥ सकल बधनुं मुकावबुं ॥ सकल कार्यनी
सिद्धि थाय ॥ तेहने मोक्षतत्व कहिये ॥ ए ॥ ए नव पदार्थनुं जाणपणु ॥ तेहने तत्व कहिये ॥
हवे जीवनो एक भेद छे ॥ सकल जीवोनुं चैतन्य लक्षण एक छे ॥ माटे सग्रहनये करी एक भेदे
जीव कहिये ॥ तथा बे प्रकारे पण जीव कहिये ॥ त्रस ॥ १ ॥ थावर ॥२॥ तथा ॥ सिद्ध ॥१॥
ने ससारी ॥ २ ॥ तथा त्रण भेदे जीव ॥ स्त्री वेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ नपुंसकवेद ॥ ३ ॥
तथा भवसिद्धिया ॥ १ ॥ अभवसिद्धिया ॥ २ ॥ नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया ॥ ३ ॥ तथा
च्यार भेदे जीव ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ मनुष्य ॥ ३ ॥ देवता ॥ ४ ॥ तथा
चक्षुदर्शनी ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनी ॥ २ ॥ अवधि दर्शनी ॥ ३ ॥ केवलदर्शनी ॥ ४ ॥ तथा पाच
प्रकारे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बे इंद्रिय ॥ २ ॥ तेइंद्रिय ॥३॥ चउरिंद्रिय ॥४॥ पंचेंद्रिय ॥५॥
तथा सजोगी ॥ १ ॥ मनजोगी ॥ २ ॥ वचनजोगी ॥ ३ ॥ कायजोगी ॥ ४ ॥ अजोगी ॥ ५ ॥
तथा ७ प्रकारे जीव ॥ पृथवीकाय ॥ १ ॥ अपूकाय ॥ २ ॥ तेउकाय ॥ ३ ॥ वाउकाय ॥ ४ ॥

वनस्पतिकाय ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥ तथा सकषायी ॥ १ ॥ कोहकषायी ॥ २ ॥ मानक
षायी ॥ ३ ॥ मायाकषायी ॥ ४ ॥ लोभकषायी ॥ ५ ॥ अकषायी ॥ ६ ॥ तथा सात प्रकारे
जीव ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ तिर्यंचणी ॥ ३ ॥ मनुष्य ॥ ४ ॥ मनुष्यणी ॥ ५ ॥
देवता ॥ ६ ॥ देवी ॥ ७ ॥ तथा आठ प्रकारे जीव ॥ सलेशी ॥ १ ॥ कृष्णलेशी ॥ २ ॥ निल
लेशी ॥ ३ ॥ कापुतलेशी ॥ ४ ॥ तेजुलेशी ॥ ५ ॥ पद्मलेशी ॥ ६ ॥ शुकललेशी ॥ ७ ॥
अलेशी ॥ ८ ॥ तथा नव प्रकारे जीव ॥ पृथवी ॥ १ ॥ अप् ॥ २ ॥ तेउ ॥ ३ ॥ वाउ ॥ ४ ॥
वनस्पति ॥ ५ ॥ बेइन्द्रिय ॥ ६ ॥ तेइन्द्रिय ॥ ७ ॥ चउरिन्द्रिय ॥ ८ ॥ पचेंद्रिय ॥ ९ ॥ तथा दश
भेदे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥ १ ॥ बेइन्द्रिय ॥ २ ॥ तेइन्द्रिय ॥ ३ ॥ चउरिन्द्रिय ॥ ४ ॥ पंचेंद्रिय ॥ ५ ॥
ए ५ ना अपजात्ता । ने । प्रजात्ता । एव ॥ १० ॥ तथा ॥ इग्यार भेदे जीव ॥ एकेंद्रिय ॥ १ ॥
बेइंद्रिय ॥ २ ॥ तेइन्द्रिय ॥ ३ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ४ ॥ नारकी ॥ ५ ॥ तिर्यंच ॥ ६ ॥ मनुष्य ॥ ७ ॥
भवनपति ॥ ८ ॥ वाणव्यंतर ॥ ९ ॥ ज्योतिषी ॥ १० ॥ वैमानिक ॥ ११ ॥ तथा ॥ १२
भेदे जीव ॥ पृथवी ॥ १ ॥ अप ॥ २ ॥ तेउ ॥ ३ ॥ वाउ ॥ ४ ॥ वनस्पति ॥ ५ ॥ त्रसकाय ॥ ६ ॥

ए ठना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ १२ तथा तेरभेदे जीव ॥ कृष्णलेशी ॥ १ ॥ निल लेशी ॥ २ ॥ कापुतलेशी ॥ ३ ॥ तेजुलेशी ॥ ४ ॥ पद्मलेशी ॥ ५ ॥ शुकललेशी ॥ ६ ॥ ए । ठना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्ता एवं ॥ १२ ॥ ने । एक अलेशी ॥ १३ ॥ एवं ॥ १३ ॥ हवे जीवना ॥ १४ ॥ भेद कहे छे ॥ सुक्ष्म एकेन्द्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ २ ॥ वादर एकेन्द्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ ४ ॥ वेइन्द्रियनो । अप्रजाप्तो ॥ ५ ॥ ने । प्रजाप्तो ॥६॥ तेइन्द्रियनो । अप्रजाप्तो ॥७॥ ने । प्रजाप्तो ॥ ८ ॥ चउरिन्द्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ९ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १० ॥ असंज्ञी पंचेन्द्रियनो अप्रजाप्तो ॥ ११ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १२ ॥ सज्ञी पचेंन्द्रियनो अप्रजाप्तो ॥ १३ ॥ ने प्रजाप्तो ॥ १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तार नये करीने पाचसेत्रेसठ भेद जीवना कहे छे ॥ तेहमा त्रणसे ने त्रणभेद मनुष्यना ॥ एकसोअठाणुभेद देवताना ॥ अडतालीस भेद तिर्यंचना ॥ चउदभेद नारकीना ॥ ए ॥ ५६३ ॥ भेद जीवना ॥ हवे तेहमा ॥ मनुष्यना ॥ ३०३ ॥ भेद कहेछे ॥ ते ॥ १५ कर्म भूमिना मनुष्य ॥ ३० ॥ अकर्मभूमिना मनुष्य ॥ ५६ ॥ अतरद्विपना मनुष्य ॥ एवं ॥ १०१ क्षेत्रना गर्भज मनुष्यना ॥ अप्रजाप्ता

ने प्रजाता ॥ एव ॥ २०२ ॥ ने एकसोने एक क्षेत्रना समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता एव॥२०३॥ नेद मनुष्यना ॥ हवे कर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ असी ॥ १ ॥ मसी ॥ २ ॥ कृषी ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ प्रकारना व्यापारे करी जीवे तेहने कर्मभूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते कर्मभूमिना क्षेत्र केटलावे ॥ ५ ॥ भरत ॥ ५ ॥ इरवत ने ॥ ५ महाविदेह । एव ॥१५॥ ते कर्मभूमि किहां छे ॥ एकलाख जोजननो जबुद्विप छे ॥ तेहमा ॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवत ॥ १ ॥ महाविदेह ए ॥ ३ ॥ क्षेत्र कर्मभूमिनां जंबुद्विपमा छे ॥ तेहने फरतो ॥ बे लाख जोजननो लवण समुद्र छे ॥ तेहने फरतो चारलाख जोजननो धातकीखंडद्विप छे ॥ तेहमा ॥ २ ॥ भरत ॥ ७ ॥ इरवत ॥ २ ॥ महाविदेह छे ॥ तेहने फरतो ॥ ७ ॥ लाख जोजननो । कालोदधि समुद्र छे ॥ तेहने फरतो ॥ ७ ॥ लाख जोजननो । अर्द्धपुष्कर द्विप छे ॥ तेहमा ॥ ७ भरत ॥ २ इरवत ॥ २ महाविदेह छे ॥ एवं ॥ ७ दु ॥ १२ ॥ ने ॥३॥ पन्नर । कर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे ३० अकर्मभूमिना मनुष्य कहेछे ॥ अकर्मभूमि ते केहने कहिये ॥ ३ ॥ कर्मरहित दशप्रकारना कल्पवृक्षेकरीने जीवे तेहने अकर्मभूमिना मनुष्य कहिये ॥ ते केटला छे ॥ ५ ॥

हेमवय ॥ ५ हिरणवय ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमकवास ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उतरकुरु ॥ एव ॥३०॥ हवे जंवुद्विपमा ॥ १ हेमवय ॥ १ हिरणवय ॥ १ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ १ देवकुरु ॥ १ उतरकुरु ॥ एव ॥ ६ ॥ क्षेत्रजंवुद्विपमा छे ॥ धातकिखंडमा वेवे जाणवा ॥ एव ॥ १२ ॥ अर्धपुष्करद्विपमा वेवे जाणवा ॥ एव ॥ ३० ॥ अकर्मभूमिना मनुष्य कह्या ॥ हवे छपनअंतरद्विपना मनुष्य कहे छे ॥ जंवुद्विपना भरतक्षेत्रनि मर्यादानो करणहार । चुल हिमवतनामा पर्वत छे ॥ ते पीलासोनामय छे ॥ ते सो जोजननो उचो छे ॥ सो गाउनो उंडो छे ॥ एकहजार वावन जोजन ने वार कलानो पहोलो छे ॥ चोविशहजार नवशें वत्रिश जोजननो लावो छे ॥ तेहने पूर्वपश्चिमने छेहडे वेवे डाढा निकलि छे ॥ एकेकि डाढा चोरासीशें चोरासीशें जोजननी झाझेरी लावि छे ॥ ते एकेकि डाढाउपरे॥सातसात अंतर द्विपाछे॥तेअतरद्विपा किहाछे॥जगतिना कोटथकि ॥ ३०० ॥ जोजन लवणसमुद्रमा जाइये । तिवारे पहेलो अंतरद्विपो आवे॥ते॥३००॥ जोजननो लावो ने पहोलो छे ॥ तिहाथि ॥ ४०० ॥ जोजन जाइये ॥ तिवारे विजो अतरद्विपो आवे ते ॥ ४०० ॥ जोजननो लाबो ने पहोलो छे ॥ तिहाथि ॥ ५०० ॥ जोजन

जाइये तिवारे ॥ त्रिजो अतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ५०० ॥ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ तिहा-
थि छसें जोजन जाइये तिवारे ॥ चोथो अंतरद्विपो आवे ते ॥ ६०० ॥ जोजननो लाबो ने पहो-
लो छे ॥ तिहाथि ॥ ७०० ॥ जोजन जाइये तिवारे । पाचमो अंतरद्विपो आवे ॥ ते ॥ ७००॥
जोजननो लाबो ने पहोलो छे ॥ तिहांथि ॥ ८०० ॥ जोजन जाइये तिवारे छठो अतरद्विपो
आवे ॥ ते ॥ ८०० ॥ जोजननो लाबो ने पहोलो छे ॥ तिहाथि ॥९००॥ जोजन जाइये तिवारे
सातमो अतरद्विपो आवे ते ॥ ९०० ॥ जोजननो लाबो ने पोहोलो छे ॥ एव । सात चोकु ॥२८॥
अंतरद्विपा जाणवा ॥ एमज इरवतक्षेत्रनी मर्यादानो करणहार शिखरीनामा पर्वत छे ॥ ते चुल-
हिमवत शरिखो जाणवो ॥ तिहा पण ॥ २८ ॥ अतरद्विपा छे ॥ अठाविश ड ॥ ५६ ॥ अतर-
द्विपा जाणरा ॥ अतरद्विपाना मनुष्य ते केहने कहिये ॥ हेठे समुद्र छे ॥ अने उपर अवर
माळामा द्विपाना रहेनार छे ॥ माटे अतरद्विपाना मनुष्य कहिये । हवे १०१ क्षेत्रना समुर्छिम
मनुष्य ॥ १४ स्थानकमा उपजे छे ते कहेछे ॥ उच्चारे सुवाते वडिनितमा उपजे ॥ १ ॥ पासवणे
सुवाते लघुनितमा उपजे ॥ २ ॥ खेले सुवात्ते बळखामा उपजे ॥ ३ ॥ संघाणे सुवाते लिटमा

उपजे ॥ ४ ॥ वंतेसुवाते वमनमां उपजे ॥ ५ ॥ पीतेसुवाते निलापिला पीतमा उपजे ॥ ६ ॥ पुइएसुवाते परुमा उपजे ॥ ७ ॥ सोणिएसुवाते रुधिरमा उपजे ॥ ८ ॥ सुक्केसुवाते विर्यमा उपजे ॥ ए ॥ सुक्कपोग्गलपरिसाडिएसुवाते विर्यादिकना पुद्गलसुकाणा ते फिरि जिना थाय तेहमा उपजे ॥ १० ॥ विगयजीव कलेवरेसुवाते मनुष्यना कलेवरमा उपजे ॥ ११ ॥ इत्थिपुरिस संजोगेसुवाते स्त्रीपुरुषना सजोगमा उपजे ॥ १२ ॥ नगरनिधमणेसुवाते नगरनी खालोमा उपजे ॥ १३ ॥ सव्वेसुचेवअसुइठाणेसुवाते सर्वमनुष्य संबधि अशुचिस्थानकोमा उपजे ॥१४॥ एव ॥ १०१ क्षेत्रनासमुर्छिम मनुष्य अप्रजाप्ता ॥ एवं सर्व मिली ॥ ३०३ ॥ भेद मनुष्यना कह्या ॥ हवे देवताना ॥ १एठ ॥ भेद कहेछे ॥ तेहमा । दश भवनपतिना नाम ॥ असुर-कुमार ॥ १ ॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार॥ए॥ द्विपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ए ॥ थणितकुमार ॥ १० ॥ हवे ॥ १ए ॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस॥२॥ शाम ॥३॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ए ॥

मनुष्य ॥ १० ॥ कुम्न ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥ १५ ॥
सोल वाणव्यंतरना नाम ॥ पिशाच ॥ १ ॥ नूत ॥ २ ॥ जक्ष ॥ ३ ॥ राक्स ॥ ४ ॥ किन्नर ॥ ५ ॥
किंपुरिस ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ९ ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसि
वाइ ॥ ११ ॥ नूइवाइ ॥ १२ ॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकंदिय ॥ १४ ॥ कोहन्ड ॥ १५ ॥ पयग
देव ॥ १६ ॥ दश जंन्नकाना नाम ॥ आणजंन्नका ॥ १ ॥ पाणजन्नका ॥ २ ॥ लयणजन्नका ॥ ३ ॥
शयणजन्नका ॥ ४ ॥ वत्थजन्नका ॥ ५ ॥ पुष्पजन्नका ॥ ६ ॥ फलजन्नका ॥ ७ ॥ बीय जंन्नका
॥ ८ ॥ विज्जुजन्नका ॥ ९ ॥ अवियत जन्नका ॥ १० ॥ दश ज्योतिषीना नाम ॥ चन्द्रमा ॥ १ ॥
सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ चल ते अढि द्विपमा छे । ने ॥ ५
स्थिर ते अढि द्विपवाहिर छे ॥ एवं ॥ १० ॥ हवे ॥ ३ ॥ किल्विषिना नाम ॥ त्रण पलिया
॥ १ ॥ त्रण सागरिया ॥ २ ॥ तेर सागरिया ॥ ३ ॥ नव लोकांतिकना नाम ॥ सारस्वत ॥ १ ॥
आदित्य ॥ २ ॥ वन्हि ॥ ३ ॥ वरुण ॥ ४ ॥ गर्द्दतोया ॥ ५ ॥ तोषिया ॥ ६ ॥ अव्याबाधा ॥ ७ ॥
अगिच्चा ॥ ८ ॥ रिठा ॥ ९ ॥ बार देवलोकना नाम ॥ सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनत्कमार

... नाम ॥ सुधर्म ॥ १ ॥ ईशान ॥ २ ॥ सनत्कुमार
॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लंतक ॥६॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्रार ॥ ८ ॥ आणत
॥ ए ॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्चुय ॥ १२ ॥ नव ग्रीवेकना नाम ॥ न्नद्दे ॥ १ ॥
सुन्नद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ प्रियदर्शणे ॥ ५ ॥ सुदर्शने ॥ ६ ॥ आमोहे
॥ ७ ॥ सुपमिवद्दे ॥ ८ ॥ जशोधरे ॥ ए ॥ पाच अनुत्तर विमानना नाम ॥ विजय ॥ १ ॥ वि-
जयत ॥ २ ॥ जयत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ ए एए जातना देवता अप्र-
जाप्ता ने ॥ एए जातना प्रजाप्ता । एवं ॥ १एए न्नेद देवताना कह्या ॥ हवे तिर्यचना ॥ ४८ ॥
न्नेद कहेडे ॥ पृथवी ॥ १ ॥ पाणि ॥ २ ॥ तेउ ॥ ३ ॥ वाउ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ सुक्ष्म ने ॥ ४ वाद
र ॥ एवं ॥ ८ ॥ एना अप्रजाप्ता ने ॥ ८ ना प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ १६ ॥ वनस्पतिना ॥३॥ न्नेद ॥
सुक्ष्म ॥ १ ॥ प्रत्येक ॥ २ ने । साधारण ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ ३ ॥ ना ।
प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ ६ ॥ एवं ॥ २२ ॥ एकेंड्रियना ॥ त्रण विकलेंड्रिय ॥ बे इंड्रिय ॥ १ ॥ ते इंड्रिय
॥ २ ॥ चउरिंड्रिय ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ना अप्रजाप्ता ने ॥ ३ ॥ ना । प्रजाप्ता । ए ॥ ६ ॥ एवं ॥२८॥
जलचर ॥ १ ॥ थलचर ॥ २ ॥ उरपर ॥ ३ ॥ न्नुजपर ॥ ४ ॥ खेचर ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ समु-

छिम ने ॥ ५ ॥ गर्भज ॥ एवं ॥ १० ॥ ना । अप्रजाप्ता ने ॥ १० ॥ ना । प्रजाप्ता ॥ एवं ॥ २० ॥
एग ॥ ४८ ॥ भेद तिर्यंचना कह्या । हवे ॥ १४ ॥ भेद नारकिना कहेछे ॥ सात नरकना नाम ॥
घमा ॥ १ ॥ वंशा ॥ २ ॥ शिला ॥ ३ ॥ अजणा ॥४॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ माघवइ ॥ ७ ॥ हवे
॥ ७ ना गोत्र कहेछे ॥ रत्नप्रभा ॥ १ ॥ शर्करप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा
॥ ४ ॥ धुमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ना अप्रजाप्ता ।
ने ॥ ७ ना प्रजाप्ता । एव ॥ १४ ॥ भेद नारकिना कह्या ॥ एवं । सर्व मिलीने ॥ ५६३ ॥ भेद
जीवना जाणवा ॥ इति जीवतत्त्व समास ॥ १ ॥ हवे अजीवतत्वना ॥ १४ ॥ भेद कहेछे ॥
धर्मास्तिकायनो स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अधर्मास्तिकायनो ॥ स्कंध ॥ ४
देश ॥ ५ ॥ प्रदेश ॥ ६ ॥ आकाशास्ति कायनो स्कंध ॥ ७ ॥ देश ॥ ८ ॥ प्रदेश ॥ ९ ॥
अद्धासमयकाल १० ॥ ए ॥ १० भेद अरूपि अजीवना कह्या ॥ हवे रूपि अजीवना ॥ ४ ॥
भेद कहेछे ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ नो स्कंध ॥ ११ ॥ देश ॥ १२ ॥ प्रदेश ॥ १३ ॥ परमाणु
पुद्गल ॥ १४ ॥ एम ॥ १४ ॥ हवे व्यवहार विस्तारनयेकरी ॥ ५६० ॥ भेद अजीवतत्वना

कहेछे ॥ तेहमा ॥ ३० ॥ भेद । अरूपि अजीवना कहेछे ॥ धर्मास्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥१॥
क्षेत्रथकि लोक प्रमाणे ॥ २ ॥ कालथकि-अनादिअनंत ॥ ३ ॥ भावथकि । अवर्णे । अगंधे ।
अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥ ४ ॥ गुणथकि चलणसहाय ॥ ५ ॥ अधर्मास्तिकाय द्रव्यथकि
एक ॥ ६ ॥ क्षेत्रथकि लोकप्रमाणे ॥ ७ ॥ कालथकि अनादिअनंत ॥ ८ ॥ भावथकि ।
अवर्णे । अगधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥ ए ॥ गुणथकि स्थिर सहाय ॥ १० ॥ आकाशा-
स्तिकाय द्रव्यथकि एक ॥ ११ ॥ क्षेत्रथकि लोकालोक प्रमाणे ॥ १२ ॥ कालथकि अनादि
अनत ॥ १३ ॥ भावथकि । अवर्णे । अगंधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥ १४ ॥ गुणथकि ॥
अवगाहनादान ॥ १५ ॥ हवे काल द्रव्यथकि अनेक ॥ १६ ॥ क्षेत्रथकि । अढिद्विपप्रमाणे॥१७॥
कालथकि अनादिअनंत ॥ १८ ॥ भावथकि । अवर्णे । अगधे । अरसे । अफासे । अमूर्ति ॥१ए॥
गुणथकि वर्त्तनालक्षण ॥ २० ॥ एवं ॥ २० ॥ ने ॥ १० ॥ पूर्वे कह्या ते ॥ एव ॥ ३० ॥ भेद
अरूपि अजीवना जाणवा ॥ हवे ॥ ५३० ॥ भेदरूपिअजीवना कहेछे तेहमां । वर्ण ॥ ५ ॥
कालो ॥ १ ॥ निलो ॥ २ ॥ रातो ॥ ३ ॥ पिलो ॥ ४ ॥ धोलो ॥ ५ ॥ एकेका वर्णमांहि वीश

वीश भेद लाभे ॥ ते ॥ २.॥ गध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ सठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श ॥ एव । विश पंचा
सो ॥ द्रवे ॥ २ ॥ गध ते । सुरभिगंध ॥ १ ॥ डुरभिगध ॥ २ ॥ एकेका गंधमाहि त्रेविश त्रे-
विश भेद लाभे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ सठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एव॥ ७३ डु वेतालिश
भेद जाणवा ॥ द्रवे ॥ ५ ॥ रस ते ॥ तिखो ॥ १ ॥ करुवो ॥ २ ॥ कसायलो ॥ ३ ॥ खाटो
॥ ४ ॥ मिठो ॥ ५ ॥ एकेका रसमा वीश वीश भेद लाभे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २ ॥ गध ॥ ५ ॥
सठाण ॥ ८ ॥ स्पर्श । एव । वीश पचा सो ॥ द्रवे ॥ ५ ॥ सठाण ॥ परिमंडल सठाण ॥१॥
वटसंठाण ॥ २ ॥ त्रंश ॥ ३ ॥ चउरंस ॥ ४ ॥ आयतसठाण ॥ ५ ॥ एकेका संठाणमां वीश
वीश भेद लाभे ॥ ५ ॥ वर्ण ॥ २ ॥ गध ॥ ५ ॥ रस ॥ ८ ॥ स्पर्श । एवं । वीश पचा सो ॥
द्रवे ॥ ८ ॥ स्पर्श । खरखरो ॥ १ ॥ सुहालो ॥ २ ॥ भारि ॥ ३ ॥ हलवो ॥ ४ ॥ टाढो ॥ ५ ॥
उन्हो ॥ ६ ॥ चोपड्यो ॥ ७ ॥ लुखो ॥ ८ ॥ एकेका स्पर्शमा । त्रेविश त्रेविश भेद लाभे ॥५॥
वर्ण ॥ २ ॥ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ५ ॥ संठाण ॥ ६ ॥ स्पर्श ॥ एव ॥ २३ ॥ भेद लाभे । खरख-
रामा खरखरो ने सुंहालो ने वर्जवा ॥ एम बेबे स्पर्श वर्जवा ॥ एवं ॥ २३ अठ १८४ ॥ एवं सर्व

मिलिने ॥ ५३० ॥ ज्ञेदरूपिअजीवना कह्या ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ ५६० ॥ ज्ञेद । अजीवना जाण-
वा ॥ इति अजीवतत्व समाप्त ॥ २ ॥ हवे नव ज्ञेदे पुण्यउपराजे ते कहे ठे ॥ अन्नपुन्ने ॥ १ ॥
पाणपुन्ने ॥ २ ॥ लयणपुन्ने ॥ ३ ॥ शयणपुन्ने ॥ ४ ॥ वस्त्रपुन्ने ॥ ५ ॥ मनपुन्ने ॥ ६ ॥ वचन
पुन्ने ॥७॥ कायपुन्ने ॥ ८ ॥ नमस्कार पुन्ने ॥ ए ॥ ए ॥ए॥ ज्ञेदे पुण्य उपराजे॥तेहना शुज्ञ
फल ॥ ४२ ॥ ज्ञेदे ज्ञोगवे॥ शातावेदनिय ॥ १ ॥ उच गोत्र ॥ २ ॥ मनुष्यगति ॥ ३॥ मनुष्यानु-
पूर्व्वी ॥ ४ ॥ देवतानि गति ॥ ५ ॥ देवानुपूर्व्वी ॥ ६ ॥ पचेंद्रियनि जाति॥७॥ उदारिक शरिर॥८॥
वैक्रेय शरिर ॥ए॥ अहारक शरिर ॥१०॥ तैजस शरिर ॥११॥ कार्मण शरिर॥ १२ ॥ उदारिकना
अग उपाग ॥ १३ ॥ वैक्रेयना अंग उपाग ॥ १४ ॥ आहारकना अग उपांग ॥ १५ ॥ वज्ररिषज्ञ
नारायचसघयण ॥ १६ ॥ समचउरशसठाण ॥ १७ ॥ शुज्ञवर्ण ॥ १८ ॥ शुज्ञगध ॥ १ए ॥
शुज्ञरस ॥ २० ॥ शुज्ञस्पर्श ॥ २१ ॥ अगुरु लघुनाम ॥ २२ ॥ पराघातनाम ॥२३ ॥ उस्वास
नाम ॥ २४ ॥ आतापनाम ॥ २५ ॥ उद्योतनाम ॥ २६ ॥ शुज्ञचालवानि गति ॥ २७ ॥
निर्माणनाम २८ ॥ त्रसनाम ॥२ए॥ वादरनाम ॥३०॥ प्रजाप्तनाम ॥३१॥ प्रत्येकनाम ॥३२॥

स्थिरनाम ॥ ३३ ॥ शुभनाम ॥ ३४ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ३५ ॥ सुस्वरनाम ॥ ३६ ॥ आदेय नाम ॥ ३७ जशोकीर्तिनाम ॥ ३८ ॥ देवतानुं आउखु ॥ ३९ ॥ मनुष्यनुं आउखुं ॥ ४० ॥ तिर्यंचनुं आउखु जुगलवत् ॥ ४१ ॥ तिर्थंकरनामकर्म ॥ ४७ ॥ एव ॥ ४२ ॥ भेद पुण्यना जाणवा ॥ इति पुण्यतत्व समाप्त ॥ ३ ॥हवे ॥१८॥ प्रकारे पाप उपराजे ते कहेछे ॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥ मैथुन ॥४॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशून्य ॥ १४ ॥ परपरिवाद ॥ १५ ॥ रतिअरति ॥ १६ ॥ मायामोसो ॥ १७ ॥ मिछादंसणसल्ल ॥ १८ ॥ ए ॥ १८ ॥ हवे तेहना अशुभ फल ॥८२॥ प्रकारे भोगवे ते कहेछे ॥ मतिज्ञानावरणिय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणिय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणिय ॥ ३ ॥ मनपर्जवज्ञानावरणिय ॥ ४ ॥ केवलज्ञानावरणिय ॥ ५ ॥ दानांतराय ॥ ६ ॥ लाभांतराय ॥ ७ ॥ भोगांतराय ॥ ८ ॥ उपभोगांतराय ॥ ९ ॥ वीर्यांतराय ॥ १० ॥ निद्रा ॥ ११ ॥ निद्रानिद्रा ॥ १२ ॥ प्रचला ॥ १३ ॥ प्रचलाप्रचला ॥ १४ ॥ थीणद्धिनिद्रा ॥ १५ ॥ चक्षुदर्शना-

वरणिय ॥ १६ ॥ अचक्षुदर्शनावरणिय ॥ १७ ॥ अवधिदर्शनावरणिय ॥ १८ ॥ केवलदर्श-
नावरणिय ॥ १९ ॥ निच्चगोत्र ॥ २० ॥ अशातावेदनीय ॥ २१ ॥ मिथ्यात्वमोहनिय ॥ २२ ॥
स्थावरपणु ॥ २३ ॥ सूक्ष्मपणु ॥२४॥ अप्रजाप्तपणु॥२५॥ साधारपणुं ॥२६॥ अस्थिरनाम ॥२७॥
अशुभनाम ॥ २८ ॥ दौर्भाग्यनाम ॥ २९ ॥ दुःस्वरनाम ॥ ३० ॥ अनादेयनाम ॥ ३१ ॥
अजशोकीर्तिनाम ॥ ३२ ॥ नरकनिगति ॥ ३३ ॥ नरकनुआउखु ॥ ३४ ॥ नरकानुपूर्वी
॥ ३५ ॥ अनतानुवंधि क्रोध ॥ ३६ ॥ मान ॥ ३७ ॥ माया ॥ ३८ ॥ लोभ ॥ ३९ ॥
अपच्चखाणावरणिय क्रोध ॥ ४० ॥ मान ॥ ४१ ॥ माया ॥ ४२ ॥ लोभ ॥ ४३ ॥ पच्चखा-
णावरणिय क्रोध ॥ ४४ ॥ मान ॥ ४५ ॥ माया ॥ ४६ ॥ लोभ ॥ ४७ ॥ संजलनो क्रोध
॥ ४८ ॥ मान ॥ ४९ ॥ माया ॥ ५० ॥ लोभ ॥ ५१ ॥ हास्य ॥ ५२ ॥ रति ॥ ५३ ॥ अरति
॥ ५४ ॥ भय ॥ ५५ ॥ शोक ॥ ५६ ॥ दुगंछा ॥ ५७ ॥ स्त्रीवेद ॥ ५८ ॥ पुरुषवेद ॥ ५९ ॥
नपुसकवेद ॥ ६० ॥ तिर्यचनी गति ॥ ६१ ॥ तिर्यंचनी अनुपूर्वी ॥ ६२ ॥ एकेंद्रियपणुं ॥ ६३ ॥
बेइंद्रियपणु ॥ ६४ ॥ तेइन्द्रियपणु ॥ ६५ ॥ चउरिंद्रियपणु ॥ ६६ ॥ अशुभ चालवानि गति

॥ ६७ ॥ उपघातनामकर्म ॥ ६८ ॥ अशुभवर्ण ॥ ६९ ॥ अशुभगंध ॥ ७० ॥ अशुभरस ॥ ७१ ॥ अशुभस्पर्श ॥ ७२ ॥ रुषभनाराच संघयण ॥ ७३ ॥ नाराचसंघयण ॥ ७४ ॥ अर्द्धनाराचसंघयण ॥ ७५ ॥ कीलकसंघयण ॥ ७६ ॥ छेवट्ठसंघयण ॥ ७७ ॥ निगोहपरिमंडलसंठाण ॥ ७८ ॥ सादिसंठाण ॥ ७९ ॥ वामनसंठाण ॥ ८० ॥ कुब्जसंठाण ॥ ८१ ॥ हुंडसंठाण ॥ ८२ ॥ एवं ॥ ८२ ॥ भेद पापतत्वना जाणवा ॥ इति पापतत्व समाप्त ॥ ४ ॥ हवे आश्रवना सामान्य प्रकारे ॥ २० ॥ भेद कहेछे ॥ मिथ्यात्व ते आश्रव ॥ १ ॥ अव्रत ते आश्रव ॥ २ ॥ प्रमाद ते आश्रव ॥ ३ ॥ कषाय ते आश्रव ॥ ४ ॥ अशुभजोग ते आश्रव ॥ ५ ॥ प्राणातिपात ते आश्रव ॥ ६ ॥ मृषावाद ते आ० ॥ ७ ॥ अदत्तादान ते आ० ॥ ८ ॥ मैथुन ते आ० ॥ ९ ॥ परिग्रह ते आ० ॥ १० ॥ श्रोतेंद्रियअसंवरे ते आ० ॥ ११॥चक्षुइंद्रिय आ० ॥ १२ ॥ घ्राणेंद्रियअ० आ० ॥ १३ ॥ रसेंद्रियअ०आ० ॥ १४ ॥ स्पर्शेंद्रियअ०आ० ॥ १५ ॥ मनअ०आ ॥ १६ ॥ वचन अ०आ० ॥ १७ ॥ कायअ०आ० ॥ १८ ॥ भंडउपगरणउपधिजिमतिमलियेमुके ते आ० ॥ १९॥ शुचिकुसग्ग करे ते आ० ॥ २० ॥ हवे विशेषे ॥ ४२ ॥ भेद कहेछे ॥ ५ ॥ आश्रव ॥ ५ ॥

इड्रिय मोकलि मुके एव ॥ १० ॥ ने ॥ ४ ॥ कषाय ॥ एवं ॥ १४ ॥ ने त्रण अशुन्न जोग । एव ॥ १७ ॥ ने ॥ ३९ ॥ क्रिया ते ॥ कायिकी क्रिया ॥ १ ॥ अधिकरणकी क्रिया ॥ २ ॥ पाउसिया ॥ ३ ॥ पारितावणिया ॥ ४ ॥ पाणाइवाय ॥ ५ ॥ आरन्निया ॥ ६ ॥ परिग्गहिया ॥ ७ ॥ मायावतिया ॥ ८ ॥ अपच्चखाणवतिया ॥ ९ ॥ मिछादंशणवतिया ॥ १० ॥ दिठीया ॥ ११ ॥ पुठिया ॥ १२ ॥ पाडुचिया ॥ १३ ॥ सामतोवणिया ॥ १४॥ नेसथ्यिया ॥ १५ ॥ सहथिया ॥ १६ ॥ अणवणिया ॥ १७ ॥ विदारणिया ॥ १८ ॥ अणान्नोगी ॥ १९ ॥ अणावकखवतिया ॥ २० ॥ अनापउगी ॥ २१ ॥ सामुदाणी ॥ २२ ॥ पेजवतिया ॥ २३ ॥ दोसवतिया ॥ २४ ॥ इरियावहिया क्रिया ॥ २५ ॥ एवं ॥ २५ ॥ ने ॥ १७ ॥ बेतालीश न्नेद आश्रव तत्वना जाणवा ॥ इति आश्रवतत्व समाप्तं ॥ ५ ॥ हवेसवरना सामान्य प्रकारे ॥ २० ॥ न्नेद कहेठे॥ समकित ते सवर ॥ १ ॥ व्रतपच्चखाण ते स० ॥ २ ॥ अप्रमाद ते स० ॥ ३ ॥ अकषाय ते स० ॥ ४ ॥ शुन्नजोग ते सं० ॥ ५ ॥ जीवदया पालवी ते स० ॥ ६ ॥ सत्यवचन बोलवुं ते स०॥७॥ दत्तव्रत ग्रहण ते सं० ॥ ८ ॥ शियल पालवु ते सं० ॥ ९ ॥ अपरिग्रह ते सं० ॥ १० ॥ इड्रिय

॥ ५ ॥ जोग ॥ ३ ॥ ए ॥ ७ ॥ नुं सवखु ते सं० । एवं ॥ १७ ॥ भंमउपगरणउपधिजतनाये लिये मुके ते स० ॥ १ए ॥ शुचिकुसग्ग न करे ते सं० ॥ २० ॥ हवे विशेषे ॥ ५७ ॥ भेद कहेछे॥ इर्यासुमति ॥ १ ॥ भाषासुमति ॥ २ ॥ एषणासुमति ॥ ३ ॥ आयाणभंममत्तनिखेवणासुमति ॥ ४ ॥ उच्चारपासवणखेलजलसिंघाणपारिठावणीया सुमति ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ सुमति ने ॥३॥ गुप्ति ते ॥ मनगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ ए ७ प्रवचनमाता आदरवा ने ॥ ७७ ॥ परिसह सहेवा ॥ ते कहेछे ॥ क्षुधानो परिसह ॥ १ ॥ तृषानो० ॥२॥ टाढनो० ॥ ३ ॥ तापनो० ॥ ४ ॥ दशमंशनो० ॥ ५ ॥ अचेलनो० ॥ ६ ॥ अरतिनो० ॥ ७ ॥ स्त्रीनो० ॥ ७ ॥ चरियानो० ॥ ए ॥ बेसवानो० ॥ १० ॥ सेजानो० ॥ ११ ॥ आक्रोश वचननो० ॥ १२ ॥ वधनो० ॥ १३ ॥ जाचवानो० ॥ १४ ॥ अलाभनो० ॥ १५ ॥ रोगनो० ॥ १६ ॥ तृणस्पर्शनो० ॥ १७ ॥ मेलनो० ॥ १७ ॥ सत्कार पुरस्कारनो० ॥ १ए ॥ प्रज्ञानो० ॥ २० ॥ अज्ञाननो० ॥ २१ ॥ दशणपरिसह ॥ २२ ॥ ए ॥ २२ ॥ ने ॥ ७ ॥ पूर्वे कह्या ते । एवं ॥ ३० ॥ खंति ॥ ३१ ॥ मुत्ति ॥ ३२ ॥ अज्जवे ॥ ३३ ॥ मद्दवे ॥ ३४ ॥ लाघवे ॥ ३५ ॥ सच्चे ॥ ३६ ॥ संजमे ॥ ३७ ॥ तवे

॥ ३ढ ॥ चियाए ॥ ३ए ॥ बन्नचेरवासे ॥ ४० ॥ ए ॥ १० ॥ प्रकारे जतिधर्म आराधवो ने ॥१२॥
न्नावना न्नाववी । तेह्ना नाम ॥ अनित्यन्नावना ॥ १ ॥ अशरणन्ना० ॥ २ ॥ संसारन्ना० ॥३॥
एकत्वन्ना० ॥ ४ ॥ अन्यत्वन्ना० ॥ ५ ॥ अशुचिन्ना० ॥ ६ ॥ आश्रवन्ना० ॥ ७ ॥ संवरन्ना० ॥ ढ ॥
निर्जरान्ना० ॥ ए ॥ लोकन्ना० ॥ १० ॥ बोधन्ना० ॥ ११ ॥ धर्मन्ना० ॥ १२ ॥ ए ॥ ४० ॥ ने
॥ १२ ॥ बावन । शामायकचारित्र ॥ ५३ ॥ बेदोपस्थापनिय० चा० ॥ ५४ ॥ परिहारविशुद्ध
॥ ५५ ॥ सुक्ष्मसपराय० ॥ ५६ ॥ जथाख्यात० ॥ ५७॥ ए ॥ ५७ ॥ न्नेद संवरतत्वना जाणवा ॥
इति सवरतत्वं समासं ॥ ६ ॥ हवे निर्जराना ॥ १२ ॥ न्नेद कहेबे ॥ अनशन ॥ १ ॥ उणोदरि ॥ २ ॥
वृत्तिसक्षेप ॥ ३ ॥ रसपरित्याग ॥ ४ ॥ कायक्लेश ॥ ५ ॥ पमिसलिणाया ॥ ६ ॥ ए ब न्नेद
बाह्यज्यना कह्या ॥ हवे ब न्नेद अन्यंतरना कहेबे ॥ प्रायश्चित्त ॥ ७ ॥ विनय ॥ ढ ॥ वेयावच्च
॥ ए ॥ सज्झाय ॥ १० ॥ ध्यान ॥ ११ ॥ काउसग्ग ॥ १२ ॥ एवं ॥ १२ ॥ न्नेद निर्जरातत्वना
कह्या ॥ ७ ॥ हवे बंधतत्वना ॥४॥ न्नेद कहेबे ॥ प्रकृतिबंध ॥१॥ स्थितिबंध ॥२॥ अनुन्नागबंध ॥३॥
प्रदेशबंध ॥ ४ ॥ प्रकृतिबंध ते कर्मनो स्वन्नाव तथा परिणाम ॥ १ ॥ स्थितिबंध ते जे कर्मनी

अनतमे ज्ञागे वे । लोकने असख्यातमे ज्ञागे वे ॥ ७ ॥ ज्ञाव ते सिद्धमा क्षायकज्ञाव ॥ केवलज्ञान । केवलदर्शन । क्षायकसमकित वे । अने परिणामिकज्ञावे ते सिद्धपणो जाणवो ॥ ८ ॥ अल्प वहुत्व द्वार ते ॥ सर्वथि थोमा नपुसक सिद्ध ॥ तेथि स्त्री सख्यातगुणि सिद्ध ॥ तेथि पुरुप सख्यातगुणा सिद्ध ॥ एक समये नपुसक ॥ १० ॥ सिद्ध थाय ॥ स्त्री ॥ २० ॥ सिद्ध थाय ॥ पुरुष ॥ १०८ ॥ सिद्ध थाय ॥ ए ॥ त्रसपणे ॥ १ ॥ वादरपणे ॥ २ ॥ सज्ञि पणे ॥ ३ ॥ वज्रऋषज्ञनाराचसंघयणपणे ॥ ४ ॥ शुकलध्यानपणे ॥ ५ ॥ मनुष्यगति ॥ ६ ॥ क्षायकसमकित ॥ ७ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ८ ॥ पमितवीर्य ॥ ए ॥ केवलज्ञान ॥ १० ॥ केवल दर्शन ॥११॥ ज्ञव्य सिद्धिक ॥१२॥ परमशुकललेशी ॥१३॥ चरमशरीरि ॥१४॥ ए॥१४॥ वोलनो धणि होय ते मोक्ष जाय ॥ जघन्य वे हाथनि अवघेणावालो ॥ उत्कृष्टि पाचशें धनूपनि अवघेणावालो । जघन्य नव वरसनो ॥ उत्कृष्ट पूर्वकोमिना आयुपवालो कर्मज्ञूमिनो होय ते मोक्षमा जाय ॥ इति मोक्षतत्व समास ॥ ए ॥ इति नव तत्वना वोल सपूर्ण ॥ ॥ ॐनम सिद्ध ॥ अथ श्री २४ दमकना वोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ सरीरोगाहणसंघयण ॥

सठाणकसाय तद्दहुतिसन्नाउ ॥ लेसिंदियसमुघाए । सन्निवेदेयपज्जती ॥ १ ॥ दिठिदंसणनाण अनाणे ॥ जोगुवउगेतहाकिमाहारे ॥ उववायठिइसमुदाए । चवणगइरागइचेव ॥ २ ॥ ए वे गाथा सुत्रपाठे कही ॥ हवे अर्थ कहेठे ॥ सरीर कहेता सरीर पाच ॥ उदारीक सरीर ॥ १ ॥ वैक्रेय सरीर ॥ २ ॥ आहारक सरीर ॥ ३ ॥ तैजस सरीर ॥ ४ ॥ कार्मण सरीर ॥ ५-१ ॥ उगाहण कहेता । अवघेणा ॥ उदारिक सरीरनी अवघेणा जघन्य अगुलनो असंख्यातमो न्नाग ॥ उत्कृष्टी एक हजार जोजननी फाफेरी ॥ कमलनाम्होम्हानेन्याये ॥ वैक्रेय सरीरनि न्नवधारणि अवघेणा । जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो न्नाग ॥ उत्कृष्टी पाचसे धनुषनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय सरीरनी अवघेणा ॥ जघन्य अंगुलनो सख्यातमो न्नाग ॥ उत्कृष्टी लाख जो- जननि फाफेरी ॥ आहारक सरीरनी अवघेणा जघन्य । मुढा हाथनी ॥ उत्कृष्टी एक हाथनी ॥ तेजस कार्मण सरीरनी अवघेणा जघन्य अंगुलनो असख्यातमोन्नाग । उत्कृष्टी चौद राजलोक प्रमाणे ॥ केवल समुद्घातनी अपेक्षाये ॥ तथा पोत्तपोताना सरीर प्रणामो

जाणवी ॥ एम अवधेणा जाणवी ॥ २ ॥ संघयण कहेता संघयण ७ ॥ वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ १ ॥ ऋषभनाराचसंघयण ॥ २ ॥ नाराचसंघयण ॥ ३ ॥ अर्धनाराचसंघयण ॥ ४ ॥ किलकुसंघयण ॥ ५ ॥ छेवट्ठसंघयण ॥ ६-३ ॥ संठाण कहेता संठाण ७ ॥ समचउरंस संठाण ॥ १ ॥ निगोहपरिमंडल संठाण ॥ २ ॥ सादि संठाण ॥ ३ ॥ वामन संठाण ॥ ४ ॥ कुबज संठाण ॥५॥ हुंड संठाण ॥ ६ ॥ ५ ॥ कसाय कहेता कषाय च्यार ॥ ४ ॥ क्रोध १। मान २। माया ३। लोभ ॥ ४ ॥ ५ ॥ तदहुंति कहेता तिमज होय ॥ सणाउ कहेता संज्ञा च्यार ॥ आहारसंज्ञा ॥ १ ॥ भयसंज्ञा ॥ २ ॥ मैथुनसंज्ञा ॥ ३ ॥ परिग्रहसंज्ञा ॥ ४-६ ॥ लेसा कहेता लेस्या ७ ॥ कृष्णलेस्या ॥ १ ॥ नीललेस्या ॥ २ ॥ कापोतलेस्या ॥ ३ ॥ तेजुलेस्या ॥ ४ ॥ पदमलेस्या ॥ ५ ॥ सुकललेस्या ॥ ६-७ इंद्रिय कहेता। इन्द्रिय पाच ॥ श्रोतेन्द्रिय ॥ १ ॥ चक्षुइन्द्रिय ॥ २ ॥ घ्राणेन्द्रिय ॥ ३ ॥ रसेंद्रिय ॥ ४॥ फरसेंन्द्रिय ॥ ५·८ ॥ समुघाए कहेता ॥ समुद्घात सात । वेदनी ॥ १ ॥ कषाय ॥ २ ॥ मारणातिक ॥ ३ ॥ वैक्रेय ॥ ४ ॥ तैजस ॥ ५ ॥ आहारक ॥ ६ ॥ केवल ॥७ ए ॥ सन्नी कहेता-सज्ञी असज्ञी । मन होय ते

सञ्ज्ञी । मन न होय ते असंज्ञी ॥ १० ॥ वेदेय कहेता वेद त्रण ॥ स्त्रीवेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ नपुंसकवेद ॥ ३-११ ॥ पज्ञति कहेता पर्याप्ति ७ ॥ आहारपर्याप्ति ॥ १ ॥ सरीरपर्याप्ति ॥ २ ॥ इंद्रीपर्याप्ति ॥ ३ ॥ स्वासोस्वासपर्याप्ति ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्ति ॥ ५ ॥ मनपर्याप्ति ॥ ६ १२ ॥ दिठि कहेता दृष्टि ॥ ३ ॥ समकितदृष्टि ॥ १ ॥ मिथ्यातदृष्टी ॥ २ ॥ समामिथ्यातदृष्टी ॥ ३ १३ ॥ दसण कहेता दर्शन च्यार । चक्षुदर्शन ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शन ॥ २ ॥ अवधिदर्शन ॥ ३ ॥ केवल दर्शन ॥ ४-१४ ॥ नाण कहेता ज्ञान ॥ ५ ॥ मतिज्ञान ॥ १ ॥ श्रुतज्ञान ॥ २ ॥ अवधिज्ञान ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञान ॥ ४ ॥ केवलज्ञान ॥ ५-१५ ॥ अनाणे कहेता ॥ अज्ञान त्रण । मतिअज्ञान ॥ १ ॥ श्रुतअज्ञान ॥ २ ॥ विभंगज्ञान ॥ ३-१६ ॥ जोग कहेता जोग पनर । च्यार मनना । च्यार वचनना । सात कायाना ॥ हवे च्यार मनना कहेछे । सत्य मनजोग ॥ १ ॥ असत्यमन जोग ॥ २ ॥ मिश्रमनजोग ॥ ३ ॥ व्यवहारमनजोग ॥ ४ ॥ हवे च्यार वचनना कहेछे ॥ सत्यवचनजोग ॥ १ ॥ असत्यवचनजोग ॥ २ ॥ मिश्रवचनयोग ॥ ३ ॥ व्यवहारवचनजोग ॥ ४ ॥ हवे सात कायाना कहेछे ॥ उदारिक ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ वैक्रेय ॥ ३ ॥

वैक्रेयनो मिश्र ॥ ४ ॥ आहारक ॥ ५ ॥ आहारकनो मिश्र ॥ ६ ॥ कार्मणकायजोग ॥ ७ ॥
एवं पनर जोग ॥ १७ ॥ उवयोग कहेता उपयोग बार ॥ पांच ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ च्यार
दर्शन ॥ एवं बार ॥ १८ ॥ तहाकिमाहारे कहेता ॥ तिमज अनुक्रमे आहार लीए ॥ जघन्य
त्रण दिसनो ॥ उत्कृष्टो ७ दिसनो ॥ त्रण दिस ते कइ ॥ उची नीची ने त्रीछी ॥ ए त्रण
दिशनो लीए॥७ दिस ते कइ ॥ पूर्व ॥ १ ॥ पछिम ॥ २ ॥ उत्तर ॥ ३ ॥ दषण ॥ ४ ॥ उची ॥ ५ ॥
नीची ॥ ६ ॥ ए ७ दिसनो आहार लीए ॥ तथा वलि त्रण प्रकारनो । आहार । सचेत ॥ अचे-
त ने मिश्र । उज ॥ १ ॥ रोम ॥ २ ॥ कवल ॥ ३ ॥ ए त्रण प्रकारनो आहार ॥ १९ ॥ उववाय
कहेता आवीने उपजे चोविस दंडकनो ते आगल कहेवासे ॥ २० ॥ ठिइ कहेता थिति ॥ जघन्य
अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ अने उतकृष्टी तेत्रीस सागरोपमनी ॥ ते आगल कहेवासे ॥ २१ ॥ समुहाए
कहेता-। समोहियामरण ॥ १ ॥ असमोहियामरण,॥ २ ॥ समोहियामरण ते केहने कहिये ॥
कीडीनीलारनीपरे जीवना परदेस छुटाछुटा नीकले ॥ तेहने समोहियामरण कहिये ॥ १ ॥
असमोहियामरण ते केहने कहिये ॥ बंदुकना भडाकानीपरे जीवना प्रदेश सामटा नीकले ॥

तेहने असमोहियामरण कहिये ॥ १-२२ ॥ चवण कहेता चविने जाय जेटला दम्कमा ते आगल केहेवासे ॥ २३ ॥ गइ कहेता गति पाच ॥ नरकनी गति१। तिर्यंचनी गति २ ॥ मनुष्यनी गति३ । देवतानी गति४ । सिधनी गति५ । एहमां जे जावु ते गति ॥ अने आगइ कहेता जेमाथी । आववुं ते आगति च्यार ॥ नरकनी । तिर्यंचनी ॥ मनुष्यनी ॥ देवतानी ॥ ४-२४ ॥ चेव कहेता निश्चे ए बे गाथानो । अर्थ कह्यो ॥ हवे प्राण दश । पाच इंद्रीयना पाच प्राण ॥ श्रोतेंद्रीय ॥ १ ॥ चक्षु इंद्रीय ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रीय ॥ ३ ॥ रसइंद्रीय ॥ ४ ॥ फरसइंद्रीय ॥ ५ ॥ मनबल ॥ ६ ॥ वचनबल ॥ ७ ॥ कायबल ॥ ८ ॥ स्वासोस्वास ॥ ९ ॥ आउखु ॥ १० ॥ ए पचविस द्वार कह्या ॥-२५ ॥ हवे चोविस दंडकना नाम कहेछे ॥ पेहेलो नारकीनो दम्क ॥ ते सात नरकना नाम कहेछे ॥ पहेली घमा ॥ १ ॥ बीजी वंसा ॥ २ ॥ त्रीजि सीला ॥ ३ ॥ चोथी अजणा ॥ ४ ॥ पाचमी रिठा ॥५॥ छठी मघा ॥ ६ ॥ सातमी माघवइ ॥ ७ ॥ ए सात नरकना नाम कह्या ॥ हवे सातना गोत्र कहेछे । पहेली रतनप्रभा।बीजी सकरप्रभा । त्रीजि वालुप्रभा । चोथी पंकप्रभा ॥ पाचमी धुमप्रभा ॥ छठी तमप्रभा ॥ सातमी तमतमाप्रभा ॥ ए सात मलिने एक दम्क

थयो ॥ १ ॥ हवे दश भवनपतिना दस दंमक ॥ तेहना नाम कहेछे ॥ पेहेला असुरकुमार॥ बीजा नागकुमार ॥ त्रीजा सोवनकुमार ॥ चोथा विजुकुमार ॥ पांचमा अग्निकुमार ॥ छठा दिपकुमार ॥ सातमा उदहिकुमार ॥ आठमा दिसाकुमार ॥ नौमा पवनकुमार ॥ दशमा थणतकुमार ॥ एवं अगियार दंमक थया ॥ ११ ॥ हवे पाच थावरना पांच दंमक कहेछे ॥ इंदिथावरकाय ॥ बम्भीथावरकाय ॥ सपीथावरकाय ॥ सुमतिथावरकाय ॥ पयावचथावरकाय ॥ ए नाम कह्या ॥ हवे गोत्र कहेछे ॥ प्रथवीकाय ॥ अपकाय ॥ तेउकाय ॥ वाउकाय ॥ वणसइ काय ॥ एवं सोल दंमक थया ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंडीयना त्रण दंमक कहेछे ॥ बेइंडीय । तेरिंडीय ॥ चउरिंडीय॥एव॥ उगणीस दंमक थया॥१ए॥हवे विसमो तिर्यंच पंचेंडीयनो दंमक कहेछे ॥ तिर्यंच पचेंडीयना पाच भेद ॥ जलचर ॥ थलचर ॥ उरपर ॥ भुजपर । खेचर । हवे जलचर ते केहने कहिये ॥ जे जलमा चाले तेहने जलचर कहिये ॥ तेहना अनेक भेद ॥ मछ कछ। गाहा । मगर । सुसुमार प्रमुप ॥१॥ हवे थलचर ते केहने कहिए ॥ जे थल पृथविइं चाले ॥ ने थलचर कहिये ॥ तेहना च्यार भेद ॥ एगखरा । डुखरा । गंमीपया ॥ मणपया ॥ एगखुरा

ते घोमा खर प्रमुख ॥ उखुरा ते गाय ज्ञेस प्रमुख ॥ गम्हीपया ते सुंहालापग ॥ सोनीनी अहिर-
एने घाटे पग ॥ ते हाथी गेंरु प्रमुख ॥ सणपया ते नोहोरालाजीव ॥ ते सिह वाघ चित्रा
कुतरा विलाम्हा प्रमुख ॥ २ ॥ उरपर ते केहने कहिये । हश्यान्नर चाले ते सर्पनी जात ॥
तेहना वे न्नेद ॥ एक फेण मारे ने ॥ एक फेण न मारे ॥ ३ ॥ न्नुजपर सर्प ते केहने
कहिये ॥ न्नुजाए तथा हश्यान्नर चाले ते न्नुजपर सर्प ॥ तेहना अनेक न्नेद । नोल कोल
कार्कीम्हा । गोह । उदर ॥ खीसकोली प्रमुख ॥ ४ ॥ खेचर ते केहने कहीये ॥ जे आकासे
चाले ते पखीनी जाति ॥ ते पखीना च्यार न्नेद । चरमपंखी १ । रोमपखी २ । विततपंखी ३ ।
समुगपखी ४ ॥ चरमपखी ते चामम्हानी पाख ॥ ते वापा ॥ वागुलप्रमुख ॥ १ ॥ रोमपंखी
ते रोमरायनी पाख ॥ ते सुम्हा चरकला पारेवा प्रमुख ॥ २ ॥ ए वे पखी अढी द्वीपमाहे अने
वाहिर ठे ॥ वितत पखी ते पोहोलीज रहे पाख जेहनी ते वितत पंखी कहिए ॥ ३ ॥ समुग
पखी ते म्हावम्हानीपेरे वीम्हीरहे पाख जेहनी ते समुग पखी ॥ ए वे पखी अढी द्विप वाहरे ज ठे ॥
ए पाच तिर्यंच पचेंडी । समुछिंम ने गर्न्नज जाणवा ए विसमो तिर्यंच पचेंडीयनो दंम्हक

थयो ॥ २० ॥ हवे एकविसमो मनुष्य पचेंडीयनो दंमक कहेठे ॥ ते मनुष्य पंचेंडीना च्यार न्नेद ॥ पनर कर्मन्नुमिना मनुष्य ॥ १ ॥ त्रीस अकर्मन्नुमिना मनुष्य ॥ २ ॥ ठपन्न अतर द्वीपना मनुष्य ॥ ३ ॥ चउद थानकना समुर्छिम मनुष्य ॥ ४ ॥ एवं एकसो एक केत्रना गरन्नज मनुष्य अपर्यांप्ता ॥ ने एकसो एक पर्याप्ता एवं २०२ ने एक सो एक केत्रना समुर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता । एव त्रणसे त्रण न्नेदनो एकविसमो मनुष्यनो दंमक थयो ॥ २१ ॥ हवे बाविसमो वाणव्यंतरनो दमक कहेठे ॥ तेहनी सोल जाति । पिशाच ॥ १ ॥ न्नूत ॥ २ ॥ जक ॥ ३ ॥ राकस ॥ ४ ॥ किनर ॥ ५ ॥ किंपूरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपनी ॥ ए ॥ पाणपनी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ न्नूइवाइ ॥ १२ ॥ कंदिय ॥ १३ ॥ महाकदिय ॥ १४ ॥ कोहम ॥ १५ ॥ पयगदेव ॥ १६ ॥ इति बाविसमो वाणव्यतरनो दमक संपूर्ण ॥ २२ ॥ हवे त्रेविसमो जोतीषीनो दमक कहेठे ॥ तेहनी दस जाति ॥ चंड्मा ॥ १ ॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ ए पाच चर ते अढिद्वीप मध्ये ठे ॥ अने पाच थिर ते अढिद्वीप बाहिर ठे ॥ एवं दस जात ॥ बे चंड्मा ने बे सूर्य जबूद्वीपमध्यें ठे ॥

च्यार चंद्रमा ने च्यार सूर्य लवणसमुद्रमध्ये छे ॥ बार चंद्रमा ने बार सूर्य धातकीखंडमध्ये छे ॥ बेतालिस चंद्रमा । बेतालिस सूर्य कालोदधिसमुद्रमध्ये छे ॥ बहुत्तेर चंद्रमा ॥ बहुत्तेर सूर्य पुष्करार्द्धद्विपमध्ये छे ॥ एव सर्व मलीने मनुष्यक्षेत्रमा । एकसो बत्रीस चंद्रमा ॥ एकसो बत्रीस सूर्य ॥ परिवारसहित चर छे ॥ परिवार ते जिहा एक चंद्रमा । एक सूर्य तिहा अठासी ग्रह ॥ अठाविस नक्षत्र ॥ छासठहजार नवसें पंच्योतेर कोडा कोडी तारा छे ॥ एव सर्व चंद्रमा सूर्यनो परिवार गणवो ॥ असख्याता चंद्रमा असख्याता सूर्य परिवारसहित मनुष्यक्षेत्र बाहेर असख्याता द्विपसमुद्रमाहि थीर छे ॥ एवं दस जातनो त्रेविसमो ज्योतिषीनो दंडक थयो ॥ २३ ॥ हवे चोविसमो वैमानिकनो दंडक कहेछे ॥ तेहना छविस भेद छे ॥ बार देवलोक ॥ नव ग्रीवेयक ॥ पाच अनुत्तर विमान । एवं छविस । हवे तेहना नाम कहेछे ॥ सुधर्म ॥ १ ॥ इसान ॥ २ ॥ सनंतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लंतक ॥ ६ ॥ महासुक्र ॥ ७ ॥ सहस्रार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ९ ॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अचुय ॥ १२ ॥ ए बार देवलोकना नाम कह्या ॥ हवे नवग्रैवेयकना नाम कहेछे ॥ भद्रे ॥ १ ॥

सुन्नदे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ प्रीयदंसणे ॥ ५ ॥ सुदसणे ॥ ६ ॥ आमोहे ॥ ७ ॥ सुपमिवधे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ ए नव ग्रैवेयकना नाम कह्या ॥ हवे पाच अनुत्तर विमानना नाम कहे छे । विजय ॥ १ ॥ विजयत ॥ २ ॥ जयत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ ए पाच अनुत्तर विमानना नाम कह्या । ए छविस नेदनो वैमानीकनो दमक थयो ॥ २४ ॥ हवे पनर परमाधामीना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥ २ ॥ साम ॥ ३ ॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असी पत्र ॥ ९ ॥ धणुप ॥ १० ॥ कुंन ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महाघोष ॥ १५ ॥ ए पनर परमाधामी ते असुरकुमारमा नल्या । हवे दस जातिना जंनका तेहना नाम कहेछे ॥ आणजंनका ॥ १ ॥ पाणजंनका ॥ २ ॥ लयणजंनका ॥ ३ ॥ सयण जंनका ॥ ४ ॥ वछजंनका ॥ ५ ॥ पुफजंनका ॥ ६ ॥ फलजंनका ॥ ७ ॥ बीजजंनका ॥ ८ ॥ विजुजंनका ॥ ९ ॥ अवीयतजंनका ॥ १० ॥ ए दस जातिना जंनकादेवता ते वाण-व्यतरमा नल्या ॥ ३ ॥ किल्विषीना नाम ॥ त्रण पलिया ॥ १ ॥ त्रण सागरिया ॥ २ ॥ तेर

सागरिया ॥ ३ ॥ ए त्रण किलविषी देवलोक अंतरनिवासी माटे विमानीकमा जव्या । नव लोकातिकना नाम कहेठे ॥ सारस्वत ॥ १ ॥ आदित्य ॥ २ ॥ विन्ही ॥ ३ ॥ वरुण ॥ ४ ॥ गर्दतोया ॥ ५ ॥ तोसीया ॥ ६ ॥ अवावाहा ॥ ७ ॥ अगीचा ॥ ८ ॥ रिठा ॥ ए ॥ ए नव लोकातिक ब्रह्मलोकवासी माटे ॥ उत्तम वैमानिकमा जव्या ॥ इति चोविस दंमकना नाम कह्या ॥ २४ ॥ हवे सात कोमी बोहोत्तेर लाख जवनपतिना जवन ठे । चोरासी लाख नरकावासा ठे । असंख्याता वाणव्यतरना नगर ठे ॥ असख्याता जोतिषीना विमान ठे ॥ असंख्याती राज्यधानी द्वीपा जोतिषीना ठे । चोरासी लाख सताणु हजार त्रेवीस विमान वेमानिकना ठे ॥ सख्याता वास मनुष्यना ठे । सेष दंमक नवना असंख्याता असख्याता वास ठे ॥ ते सर्व वर्णव अन्य सिद्धातादिकथि जाणवो ॥ २४ ॥ हवे सिद्धसिलाना बार नाम कहेठे ॥ इसितिवा ॥ १ ॥ इसिपज्जारातिवा ॥ २ ॥ तणुतिवा ॥ ३ ॥ तणुतणुत्तिवा ॥ ४ ॥ सिधित्तिवा ॥ ५ ॥ सिद्धालएतिवा ॥ ६ ॥ मुत्तित्तिवा ॥ ७ ॥ मुत्तालएत्तिवा ॥ ८ ॥ लोयगेतिवा ॥ ए ॥ लोगथुन्नियातिवा ॥ १० ॥ लोगपमिवोहेतिवा ॥ ११ ॥ सवपाणन्नुयजीवसत्त

सुद्दावदेतिवा ॥ १२ ॥ ए वार मोक्‍नना नाम कह्या ॥ ए नामडुवार किंचित्‌मात्र संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे चोविस डुवार ते चोविस दन्डक उपरे उतारवा ते कहेछे ॥ पेहलो नारकीनो दन्डक ॥ तेमाहे सरीर त्रण ॥ वैक्रेय० ॥ तेजस० ॥ कार्मण ॥ अवघेणा उवधारणि सरीरनी ज० अगु० असं० ॥ उ० पाचसे धनुपनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय सरीरनी ॥ ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० हजार धनुपनी ॥ पेहली नरके उवधारणी ज० अगु० अस० ॥ उ० पोणा आठ धनुष्य ने छ अगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० उ० साढापनर धनुप ने वार अंगुलनी ॥ वीजी नरके ज० अगु० अस० ॥ उ० साढापनर धनुष्य ने वार अंगुलनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० सख्या० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुपनी ॥ त्रीजि नरके ज० अगु० असं० ॥ उ० सवाएकत्रिस धनुपनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अगु० सख्या० ॥ उ० साढावासठ धनुपनी । चोथी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० साढावासठ धनुपनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो । ज० अगु० संख्या० ॥ उ० सवासो धनुपनी ॥ पाचमी नरके ज० अंगु० असं० ॥ उ० सवासो धनुपनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० सख्या० ॥ उ०

अढीसे धनुपनी ॥ ठठि नरके ज० । अगु० असं०॥उ० अढिसे धनुपनी ॥ अने उत्तरवैक्रेय करे तो ज० अंगु० सख्या० उ० पाचसे धनुपनी ॥ सातमी नरके ज० अंगु० अस०॥ उ० पाचसें धनुपनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अगु० सख्या०॥ उ० हजार धनुपनी । संघयण क०॥ नारकीअसंघेणी ॥ संठाण एक हुन्मसठाण ॥ कषाय च्यारे । क्रोध मान माया ने लोभ ॥ पण नारकीने क्रोध घणो ॥ सज्ञा च्यारे॥आहारसंज्ञा । भयसज्ञा । मैथुनसज्ञा। परिग्रहसंज्ञा। पण नारकीने भय घणो । लेस्या नारकीने त्रण समुचे ॥ पेहेली ने वीजी नरके एक कापुत लेसा ॥ त्रीजी नरके वे लेस्या । कापुत घणी अने नील थोमी ॥ चोथी नरके एक नीललेस्या ॥ पाचमी नरके वे लेस्या । नील घणी अने कृष्ण थोमी ॥ ठठी नरके एकली कृष्णलेस्या ॥ सातमी नरके महाकृष्णलेस्या ॥ इंद्रीय पाच । श्रुतइन्द्रिय ॥ १ ॥ चक्षुइंद्रीय ॥ २ ॥ घ्राणइंद्रीय ॥३॥ रसइंद्रीय ॥ ४ ॥ फरसइन्द्रीय ॥ ५ ॥ समुद्घात च्यार ॥ वेदनी कषाय मारणातिक वैक्रेय ॥ सनि कहेता पेहेली नरके संज्ञी असंज्ञी वे होय ॥ वीजीथी मांमी सातमी नरकसुधी एकला संज्ञी ठे ॥ वेद एक नपुंसकवेद ॥ ५ पर्या लाभे ते भापामन भेलावाघे । दृष्टी त्रण ॥ समकी-

तेजुलेस्या । इंद्री पाचे छे ॥ समुद्घात पांच ॥ वेदनी कषाय मारणातिक । वैक्रेय ने तेजस संज्ञी असज्ञी वे जाणवा ॥ वेद वे स्त्री ने पुरुष । प्रजा ए त्रापामन त्रेला वाधे ॥ दृष्टी त्रण ॥ दर्शण त्रण ॥ केवल दर्शन एक नहीं ॥ ज्ञान त्रण ॥ मति ज्ञान । श्रुत ज्ञान । अवधि ज्ञान ॥ अज्ञान त्रण ॥ मतिअज्ञान । श्रुतअज्ञान । विभंगज्ञान ॥ जोग इग्यार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना । त्रण कायाना । वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ॥ कार्मण कायजोग । एव इग्यार ॥ उपयोग नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन ॥ एव नव ॥ तहा तिमज आहार ले ॥ जघन्य ने उत्कृष्टे ७ दिसनो आहार ले । वली वे प्रकारे आहार ले । उजआहार ने रोम आहार ॥ ते पण सुत्र ने अचेत आहार ॥ उववाय ते आवीने उपजे वे दंडकनो ॥ मनुष्य ने तिर्यंचनो । थिति भवनपतिमा दक्षण दिसना । असुरकुमारनी । ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागरनी ॥ तेहनी ॥ देवीनी ज० दस हजार वरसनी । उ० साढा त्रण पल्योपमनी ॥ तेहना नव नीकायना देवतानी । ज० दस हजारवरसनी । उ० दोढ पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० पोणा पल्यनी ॥ उत्तर दिसना असुरकुमारनी

स्थीति ॥ ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक सागर जाझेरानी ॥ तेहनी देवीनी ज० दश हजार वर्षनी । उ० साढा च्यार पल्योपमनी ॥ तेहना नव निकायना देवतानी ज० दसहजार वरसनी । उ० बे पल्योपम देसे उणी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी । उ० एक पल्योपम देसे उणीनी ॥ समोहिया मरण अने असमोहिया मरण ॥ ए बे मरण लाभे । चवण ते चविने पाच दंडकमा जाय ॥ प्रथवी ॥ पाणी ॥ वनस्पति ॥ मनुष्य ने तिर्यंच ए पाचमा जाय ॥ गइ कहेण । मरिने बे गतिमां जाय मनुष्य ने तिर्यंचमां ॥ आगइ ते आवे पण बे गतिनो ॥ मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ प्राण दस लाभे । जोग त्रण ॥ इति दस भवनपतिना दस दंडक संपूर्ण ॥ ११ ॥ हवे पाचस्थावरना पाचदंडक कहेछे ॥ पृथ्वी ॥ १ ॥ पाणी ॥ २ ॥ तेउ ॥ ३ ॥ वनस्पति ॥ ४ ॥ ए च्यार ने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ने कार्मण ॥ अने वाउ ने सरीर च्यार । उदारिक । वैक्रेय । तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा प्रथवी पाणि तेउ वाउ ए च्यारेनी ॥ जघन्य ने उत्कष्टी अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ अने वनस्पतिनी जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उत्कष्टी हजार जोजननी जाझेरी कमल प्रमुखनी ॥

संघेण एक वेवटु ॥ सगाण एक हुरू । पांचेना सगाण कहेछे ॥ प्रथवीनु सगाण मसुरनी दाल तथा चद्रमाने आकारे ॥ १ ॥ पाणीनु संगाण पाणीना परपोटाने आकारे ॥ २ ॥ तेउनु सगाण सोयना भाराने आकारे ॥ ३ ॥ वायरानुं संगाण धजापताकाने आकारे ॥ ४ ॥ वनस्पतिनु सगाण नानाप्रकारनुं ॥ ५ ॥ कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या पृथ्वी पाणी वनस्पति ने अपर्याप्ता वेला च्यार पेहेली ॥ अने पाचे ने लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री एक कायानी । समुद्घात पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति ने ॥ ३ ॥ वेदनी कषायमारणांतिक ॥ अनें वायराने समुद्घात च्यार वैक्रेयनी वधी ॥ सज्ञी ते पाचे थावर असज्ञी ॥ वेद एक नपुसक ॥ पर्या च्यार ॥ आहार पर्या ॥ सरीरपर्या ॥ इंद्रीपर्या ॥ स्वासोस्वासपर्या ॥ दष्टी एक मिथ्यात ॥ दर्शन एक अचषुदर्शन ॥ ज्ञान नथी । अज्ञान बे । मतीअज्ञान ॥ श्रुत अज्ञान । जोग पृथ्वी पाणी तेउ वनस्पति ने त्रण ॥ उदारीक ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मण कायजोग ॥ ३ ॥ अने वायराने पाच ते ॥ वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥ ए बे वध्या ।

...पयोग त्रण ॥ वे अज्ञान ॥ एक ... दर्शन ॥ एव त्रण ... ॥ तेहनी ...

त्रण दिसनो उ० ब दिसनो ॥ ते वलि वे प्रकारनो ओज ने रोम १ ॥ कवलवाजिंने ॥ ते पण २ प्रकारनो ॥ सचेत ॥ अचेत ने मिश्र ॥ उववाय ते आवीने उपजे । पृथवी पाणी ने वनस्पतिमां ॥ त्रेविस दंडकना एक नारकी वरजीने ॥ अने तेउ वाउमां दस दंडकना आवीने उपजे ॥ पाच थावर ॥ त्रण विगलेंडी ॥ मनुष्य ने तिर्यंच ॥ एवं दसना ॥ स्थिति पृथवीनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी । उ० बाविस हजार वरसनी ॥ १ ॥ पाणीनी ज० अंतर्मुहुर्त्तनी । उ० सात हजार वरसनी ॥ २ ॥ तेउनी ज० अतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० त्रण अहोरात्रनी ॥ ३ ॥ वायरानी । ज० अतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० त्रण हजार वरसनी ॥ ४ ॥ वनस्पतिनी ज० । अंतर्मुहुर्त्तनी ॥ उ० दस हजार वर्षनी ॥ समोहियामरण अने असमोहियामरण । ए वे मरण छे ॥ चवण ते चविने ॥ प्रथवि पाणी ने वनस्पति ॥ दस दंडकमा जाय ॥ पाच थावर त्रण विगलेंडि ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमा जाय । अने तेउ वाउ नव दंडकमा जाय ॥ पांच थावर त्रण विगलेंडी ने तिर्यंच ए नव ॥ गइ क० ते मरीने प्रथवी पाणी ने वनस्पति बे गतिमा जाय मनुष्य ने तिर्यंचमा ॥ अने तेउ वाउ एकगतिमां जाय तिर्यंचमा ॥ आगइ ते आवे पृथवी पाणी ने वनस्पतिमां

त्रण गतिनो आवे देवता मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ अने तेज वाउमां वेगतिनो आवे । मनुष्य ने तिर्यंचनो । प्राण पाचे ने च्यार ॥ एक इन्द्रिपणु ॥ १ ॥ कायवल ॥ २ ॥ स्वासोस्वास ॥ ३ ॥ आउखुं ॥ ४ ॥ जोग एक कायजोग ॥ इति पांच थावरना पाच दंडक संपूर्ण ॥ १६ ॥ हवे त्रण विगलेंद्रियना ३ दंडक कहेछे ॥ वेइंद्रि ॥ तेरंद्री ॥ चोरिंद्रीमा सरीर त्रण ॥ उदारिक । तेजस ॥ कार्मण । अवघेणा वे इंद्रिनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० बार जोजननी ॥ तेरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ उ० त्रण गाउनी ॥ चउरिंद्रीनी ज० अंगुलनो असंख्यातमो भाग । उ० च्यार गाउनी ॥ संघेण एक छेवटु ॥ संठाण एक हुंडक ॥ कषाय च्यारे ॥ सज्ञा च्यारे ॥ लेस्या त्रण पेहेली ॥ इंद्री वेरिंद्रीने ॥ वे ॥ काया ॥ १ ॥ जिभ ॥ २ ॥ तेरिंद्रीने इंद्री त्रण । नासिका वधी ॥ चउरिंद्रीने इंद्री चार ॥ आंख वधी ॥ समुद्घात त्रण वेदनी कषाय ने मारणातिक ए त्रण ॥ संज्ञी के ते असज्ञी ॥ वेद एक नपुंसक ॥ पर्या पाच मन नही ॥ द्रष्टी वे ॥ समकितद्रष्टी ने मिथ्यातद्रष्टी ॥ दर्शन बेइंद्री तेइंद्रीने एक अचक्षुदर्शन । चउरिंद्रीयने वे दर्शन ॥ चक्षुदर्शन ने । अचक्षुदर्शन ॥ ज्ञान । वे । मतिज्ञान

ने । सुतज्ञान ॥ अज्ञान वे । मतिअज्ञान । सुतअज्ञान ॥ जोग चार । उदारिक ॥ १ ॥ उदारिकनो मिश्र ॥ २ ॥ कार्मणकाय जोग ॥ ३ ॥ व्यवहार वचन ॥ ४ ॥ उपयोग वेइंद्री तेइंद्रीने पांच ॥ वे ज्ञान । वे अज्ञान । एक अचक्षुदर्शन ए पांच ॥ चउरिंद्रीने उपयोग छ ॥ वे ज्ञान ॥ वे अज्ञान । वे दर्शन ए छ । तहा कहेतां तिमज आहार ले ॥ जघन्य अने उत्कृष्टो छ दिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारनो आहार ले । उज ॥ १ ॥ रोम ॥२॥ ने कवल ॥३॥ उववाय ते आवीने उपजे दस दंडकना । पाच थावर । त्रिण विगलेंद्री । मनुष्य ने तिर्यंच ॥ ए दस ॥ स्थिति वेरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी । उत्कृष्टी बार वरसनी ॥ तेइंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी । उत्कृष्टी उगणपचास दिवसनी । चउरिंद्रीनी जघन्य अंतर्मुहुर्त्तनी । उत्कृष्टी छ महिनानी ॥ समोहिया मरण । अने असमोहिया मरण वे छे ॥ चवण ते चविने जाय दस दंडकमां ॥ पाच थावर त्रिण विगलेंद्री ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय । गइ ते मरीने वे गतिमा जाय ॥ मनुष्य ने त्रिजंचमां ॥ आगइ ते आवे पण वे गतिनो मनुष्य ने त्रिजचनो ॥ प्राण वेरिंद्रीने छ प्राण । वे इंद्रीना वे प्राण ॥ कायबल ॥ स्वासोस्वास ॥ आउखुं । वचन । ए छ । तेरिंद्री-

ने सात प्राण । ते नासिका वधी । चउरिंद्रीने आठ प्राण आख वधी । जोग बे ॥ वचनजोग ने । कायजोग ॥ इति त्रण विगलेंद्रीना त्रण दंडक संपूर्ण ॥ १९ ॥ हवे विसमो तिर्यंच-पंचेंद्रीनो दंडक कहेछे । हवे पाचे समुर्छिमने सरीर त्रण ॥ उदारिक ॥ तेजस ॥ ने कार्मण ॥ अने गर्भजने च्यार सरीर वैक्रेय वध्यु । अवघेणा पाचेनी कहेछे ॥ हवे जलचर समुर्छिम ने गर्भजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ थलचर समुर्छिमनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० । प्रत्येक गाउनि ॥ गर्भजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० छ गाउनी । उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक जोजननी ॥ अने गर्भजनी ज० अंगु० असं० ॥ उ० हजार जोजननी ॥ भुजपर सर्प समुर्छिमनी । ज० अंगु० असं० । उ० प्रत्येक धनुषनी । गर्भजनी । ज० अंगु० असं० ॥ उ० प्रत्येक गाउनी ॥ खेचर समुर्छिमने गर्भजनी ज० अंगु० असं० । उ० प्रत्येक धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० । उ० नवसें जोजननी ॥ सघेण समुर्छिमने एक छेवटु ॥ गर्भजने छ सघेण । सठाण समुर्छिमने । एक हुंड । गर्भजने छ संठाण ॥ कषाय च्यारे पण त्रिजंचने माया घणी ॥ संज्ञा च्यारे पण

त्रिजचने आहार सज्ञा घणी । लेस्या समुर्छिमने त्रण पेहेली । गर्भ्नज नें ठ लेस्या ॥ इन्द्री पाचे ठे ॥ समुद्घात समुर्छिमने त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणातिक अने गर्भ्नजने समुद्घात पाच वेदनी कषाय मारणातिक वैक्रेय ने तेजस ॥ समुर्छिम असंज्ञी ॥ गर्भ्नज संज्ञी॥ वेद एक नपुसक समुर्छिमने ॥ गर्भ्नजने त्रण वेद ॥ पर्या समुर्छिमने पाच मन नही ॥ अने गर्भ्नजने पर्या ठ ॥ द्रष्टी समुर्छिमने बे । समकित ने । मिथ्यात ॥ गर्भ्नजने त्रण द्रष्टी ॥ दर्शन समुर्छिमने बे चक्षूदर्शन ने । अचक्षूदर्शन ॥ गर्भ्नजने त्रण दर्शन ॥ ज्ञान समुर्छिमने बे मतिज्ञान ॥ श्रुतज्ञान । गर्भ्नजने त्रण ज्ञान ॥ अज्ञान समुर्छिमने बे । मति अज्ञान ने श्रुतअज्ञान॥ गर्भ्नजने त्रण अज्ञान ॥ जोग समुर्छिमने चार ॥ उदारिकना बे ॥ कार्मण । ववहारवचन ॥ गर्भ्नजने तेर जोग आहारकना बे नही ॥ उपयोग समुर्छिमने ठ । बे ज्ञान बे अज्ञान बे दर्शन ॥ गर्भ्नजने नव उपयोग ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन । तिमज आहार ॥ जघन्य उत्कृष्टो ठ दिसनो आहार ले॥ तथा त्रण प्रकारे आहार ले । उज रोम ने कवल आहार ले ते पण सचेत अचेत ने मिश्र ॥ उववाय ते । आवीने उपजे ॥ समुर्छिममा दस दम्कना ॥ पाच

थावर त्रण विगलेंद्री ॥ मनुष्यने त्रिजच ॥ गर्न्नजमा चोविसे दन्कना आविनें उपजे। थिति जलचर समुर्छिम ने गर्न्नजनी । ज० अंत० । उ० पूर्व कोमनी। थलचर समुर्छिमनी ज० अंत० ॥ उ० चठरासी हजार वर्षनी। अने गर्न्नजनी ज० अंत० ॥ उ० त्रण पल्योपमनी॥ उरपर सर्प समुर्छिमनी ज० अंत०। उ० त्रेपन हजार वरसनी ॥ अने गर्न्नजनी ज० अंत०॥ उ० पूर्व कोमनी ॥ नुजपर सर्प समुर्छिमनी । ज० अंत ॥ उ० बेतालिस हजार वरसनी अने गर्न्नजनी ज० अंत०। उ० पूर्व कोमीनी ॥ खेचर समुर्छिमनी ज० अंत० उ० बोहोतेर हजार वरसनी ॥ अने गर्न्नजनी ज० अंत० उ० पल्योपमनो असख्यातमो न्नाग । समोहि-यामरण ने असमोहियामरण ॥ ए वे मरण ठे ॥ चवण ते चवीने ॥ समुर्छिम जाय तो आविस दंन्कमां । जोतीषी ने विमानीकमां जाय नही ॥ अने गर्न्नज चउविसे दन्कमा जाय । गइ ते समुर्छिम मरिने । च्यार गतिमा जाय ॥ अने गर्न्नज पण च्यार गतिमा जाय । आगइ ते आवे समुर्छिममा वे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ अने गर्न्नजमां च्यार गतिनो आवे ॥ माण समुर्छिमने नव । मन नही । अने गर्न्नजने प्राण दशे जाणे ॥ ओग

समुर्छिमने वे ॥ कायजोग ने वचनजोग ॥ अने गर्ञजने त्रण जोग ॥ मन वचन ने काय जोग ॥ इति विसमो तिर्यचपचेंडीनो दंमक संपूर्ण ॥ २० ॥ हवे एकविसमो मनुष्यनो दंमक कहेछे ॥ तेमा समुर्छिम मनुष्यमा शरीर त्रण । उदारिक तेजस ने कार्मण । जुगलीयामां सरीर त्रण तेहज ॥ कर्मन्नुमिना मनुष्य गर्ञजमा सरीर पांच लाञ्ने ॥ अवघेणा समुर्छिमनि जघन्य ने उत्कृष्टी अंगुलनो असंख्यातमो ञ्जाग ॥ अने गर्ञज मनुष्यनी ञ्जरत ईरवतमां आराने मेले जाणवी ॥ पेहेले आरे वेसता त्रण गाउनी ॥ उतरता वे गाउनी ॥ वीजे आरे वेसता वे गाउनी ॥ उतरता एक गाउनी ॥ त्रीजे आरे वेसता एक गाउनी ॥ उतरता पांचसे धनुषनी । चोथे आरे वेसता पांचसें धनुषनी ॥ उतरता सात हाथनी ॥ पांचमे आरे वेसता सात हाथनी ॥ उतरता एक हाथनी ॥ ठठे आरे वेसता एक हाथनी ॥ उतरता मुढा हाथनी ॥ पठे चमता अवला सवली जाणवी ॥ ५ महाविदेहमां पांचसें धनुषनी ॥ उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अंगु० संख्या० ॥ उ० लाख जोजननी जाफेरी ॥ हेमवय इरणावयमा ज० अगु० असं० ॥ उ० एक गाउनी ॥ हरिवास रमकवासमां ॥ ज० अंगु० असं० ॥ उ० वे

गाउनी । देवकुरु उत्तरकुरुमा ज० । अगु० अस । उ० त्रण गाउनी ॥ हवे छपन्न अंतर द्विपामा ज० अगु० अस० ॥ उ० आठसें धनुषनी । संघयण ॥ समुर्छिमने एक छेवठ्ठु ॥ जुगलियाने एक वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ पन्नर कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने छ संघयण ॥ संठाण समुर्छिमने एक हुंड ॥ जुगलियाने । एक समचउरस ॥ कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यने छ संठाण । कषाय च्यारे पण मनुष्यने मान घणुं ॥ संज्ञा च्यारे पण मनुष्यने मैथुन संज्ञा घणी ॥ लेस्या समुर्छिमने त्रण पेहेली॥जुगलीयाने लेस्या च्यार पेहेली ॥ गर्भजने छ लेस्या । इन्द्री पांचे ॥ समुद्घात समुर्छिमने त्रण वेदनी । कषाय ने मारणांतिक ॥ जूगलियाने समुद्घात त्रण तेइज ॥ कर्मभुमीना गर्भज मनुष्यने ॥ सात समुद्घात ॥ समुर्छिम असंज्ञी ॥ गर्भज संज्ञी ॥ वेद समुर्छिमने एक नपुंसक ॥ जुगलियामा बे वेद ॥ स्त्री ने पुरुष । कर्मभुमिना गर्भज मनुष्यमा त्रण वेद ॥ स्त्री पुरुष ने नपुसक ॥ पर्या समुर्छिमने च्यार जापा ने मन नही ॥ गर्भजने छ पर्या ॥ दृष्टी समुर्छिमने छपन्न अंतर्द्विपामां एक मिथ्यात ॥ त्रिस अकर्म भुमीमां बे दृष्टी ॥ समकित ने मिथ्यात ॥ कर्मभुमिना मनुष्यमां

त्रणे दृष्टी ॥ दर्शन समुर्छिम अने जूगलीयाने वे । चक्षुदर्शन ने अचक्षुदर्शन । गर्भजने दर्शन च्यारे लाभे । ज्ञान त्रिस अकर्मभुमीमा वे ॥ अने छपन्न अतर द्वीपामा अने समुर्छिमने नथी ॥ गर्भजने पाचे ज्ञान। अज्ञान समुर्छिम ने जुगलीयाने वे मति अज्ञान ने श्रुतअज्ञान। गर्भजने त्रण । जोग समुर्छिमने त्रण । उदारिकना वे ने १ कार्मणकायजोग ए त्रण ॥ जूगलीयाने जोग ॥ ११ ॥ मनना ॥ ४ ॥ वचनना ॥ ४ ॥ उदारिकना ॥ २ ॥ कार्मण ॥ १ ॥ एवं जोग ॥ ११ ॥ गर्भजने पनर जोग ॥ उपयोग त्रिशअकर्मभूमीमां ॥ ६ ॥ वे ज्ञान ॥ २ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥ दर्शन ए ॥ ६ ॥ ५६ अंतरद्वीपामां ने समुर्छिमने च्यार ॥ वे अज्ञान वे दर्शन । गर्भजने वार उपयोग ॥ तिमज आहार ले तो । जघन्य ने उत्कृष्टो ढ दिसनो ॥ तथा त्रण प्रकारे आहार ले उज रोम ने कवल । ते पण सचेत अचेत ने मिश्र ॥ उववाय ते आवीने उपजे । समुर्छिममां आठ दंडकना ॥ पृथवि पाणी वनस्पति त्रण विगलेंद्री॥ मनुष्य ने तिर्यंच॥ ए आठनो ॥ जुगलीयामा २ दंडकनो ते मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ गर्भज मनुष्यमा बाविस दंडकना उपजे ते तेउ वाउना नही ॥ थिति समुर्छिमनी जघन्य ने उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्त्तनी ॥

गर्ज्जनी आराने मेले जाणवी ॥ पहेले आरे वेसता त्रण पल्योपमनी । उतरता त्रे पल्योपमनी ॥ वीजे आरे वेसता वे पल्योपमनी ॥ उतरतां एक पल्योपमनी ॥ त्रीजे आरे वेसता एक पल्योपमनी ॥ उतरता पूर्व कोमनी ॥ चोथे आरे वेसता पूर्व कोमनी ॥ उतरता सो वरस काझेरानी । पाचमे आरे वेसता सो वरस काझेरानी । उतरते आरे विस वरसनी ॥ ठठे आरे वेसता वीस वरसनी । उतरते आरे सोल वरसनी ॥ एम चमता उतरता अवला सवलो जाणवी । हिमवय इरणवयमा एक पल्योपमनी ॥ हरिवास रमकवासमा । वे पल्योपमनी ॥ देवकुरू उतरकुरूमा त्रण पल्योपमनी । ठपन्न अतरद्विपामा । पल्योपमनो असंख्यातमो जाग । ए महाविदेहमा पूर्व कोमनी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए वे मरण ठे ॥ चवण ते चवीने समुर्छिम दस दमकमां जाय ॥ पाच थावर ने त्रण विगलेंद्री । मनुष्य ने तिर्यंचमां जाय ॥ जुगलीया एक देवगतिमां जाय ॥ गर्ज्जज चोविसे दमकमा जाय ॥ गइ ते मरीने समुर्छिम वे गतिमा मनुष्य ने तिर्यंचमा जाय ॥ गर्ज्जज मनुष्य पाच गतिमां जाय ॥ आगइ ते समुर्छिमने जुगलीयामा आवे तो वे गतिनो । मनुष्य ने तिर्यंचनो ॥ गर्ज्जजमा च्यार गति-

नो आवे ॥ प्राण समुर्छिमने आठ ज्ञाषा ने मन नही ॥ गर्न्नजने दस प्राण ॥ जोग समु
र्छिमने एक कायानो ॥ गर्न्नजने त्रण जोग ॥ इति एकविसमो मनुष्यनो दंरूक संपूर्ण ॥ २१॥
हवे बाविसमो वाणव्यतरनो दंरूक ॥ तेमां सरीर त्रण ॥ वैक्रेय ॥ तेजस ने कार्मण ॥
अवघेणा ज० अगु० असं० उ० सात हाथनी ॥ अने उत्तर वैक्रेय करे तो ज० अंगु० संख्या० ।
उ० लाख जोजननी ॥ संघयण नथी । संठाण एक समचउरंस ॥ कषाय च्यारे पण देवता-
ने लोन्न घणो । सज्ञा च्यारे पण देवताने परिग्रह संज्ञा घणी ॥ लेस्या च्यार पेहेली ।
इंद्री पाचे । समुद्घात पाच आहारक ने केवल नही ॥ संज्ञी असंज्ञी बे ॥ वेद बे ॥ स्त्री ने
पुरुष ॥ पर्या ५ ज्ञाषा मन ज्ञेला बांधे । दृष्टी त्रण ॥ दर्शन त्रण । ज्ञान त्रण । अज्ञान त्रण ॥
जोग अगीयार ॥ च्यार मनना । च्यार वचनना ॥ त्रण कायाना ते वैक्रेय ॥ वैक्रेयनो मिश्र ॥
कार्मण कायजोग ॥ एवं अगीयार । उपयोग नव त्रण ज्ञान । त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एव
नव ॥ तेमज आहार ले तो जघन्य ने उत्कृष्टो व दिसनो ॥ तथा बे प्रकारे उज ने रोम
ते पण सुन्न ते पण अचेत आहार । उववाय ते आवीने उपजे बे दंरूकना ॥ मनुष्य ने तिर्य-

चना । स्थिति वाणव्यतरनी । ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० एक पल्योपमनी ॥ तेहनी देवीनी ज० दस हजार वरसनी ॥ उ० अरध पल्योपमनी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए बे मरण छे ॥ चवण ते चविने जाय पाच दंडकमां ॥ पृथ्वी पाणी ने वनस्पति । मनुष्य ने तिर्यंच ए पांच ॥ गइ ते मरीने बे गतिमा जाय ॥ मनुष्य ने तिर्यंचमा ॥ आगइ ते आवे पण बे गतिना मनुष्य ने तिर्यंचना ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण । मन वचन ने कायाना ॥ इति बाविसमो वाणव्यतरनो दंडक संपूर्ण ॥ २२ ॥ हवे त्रेविसमो जोतिषीनो दंडक तेहमा सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस ने कार्मण । अवघेणा ज० अगु० असं० उ० सात हाथनी अने उत्तर वैक्रेय करे तो ॥ ज० अगु० सख्या० उ० । लाख जोजननी ॥ संघयण नथी ॥ संठाण एक समचउरंस । कषाय च्यारे ॥ संज्ञा च्यारे ॥ लेस्या एक तेजु । इन्द्री पाचे ॥ समुद्घात पाच आहारक ने केवल नही । सन्नी छे ॥ वेद बे । पर्या ५ भाषा मन भेला बांधे ॥ दृष्टी त्रण ॥ दर्शन त्रण । ज्ञान त्रण ॥ अज्ञान त्रण ॥ जोग अगीयार । च्यार मनना च्यार वचनना त्रण कायाना ते वेक्रेय । वैक्रेयनो [illegible] ॥ एम अगीयार ॥ उपयोग नव । त्रण

ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान । त्रण दर्शन ॥ एव नव ॥ तिमज आहार ले तो जघन्य ने उत्कृष्टो ठ दिसनो ॥ तथा वे प्रकारे ॥ उज ने रोम ते पण सुन्न ने अचेत आहार ॥ उववाय ते आविने उपजे ॥ वे दंमकना ॥ मनुष्य ने तिर्यचना । थिति चइमाना देवतानी ज० पापल्यनी । उ० एक पल्य ने लाख वरसनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पापल्यनी ॥ उ० अरध पल्य ने पचास हजार वरसनी ॥ सूर्यना देवतानी ज० पापल्यनी ॥ उ० एक पल्य ने हजार वरसनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पापल्यनी ॥ उ० अरधपल्य ने पाचसे वरसनी । ग्रहनादेव-तानी ज० पापल्यनी ॥ उ० एक पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ज० पापल्यनी उ० अरध पल्यनी ॥ नक्षत्रना देवतानी । ज० पापल्यनी ॥ उ० अरध पल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ॥ ज० पल्यनो आठमो न्नाग ॥ उ० पापल्यनी ॥ ताराना देवतानी ज० पल्यनो आठमो न्नाग । उ० पापल्यनी ॥ तेहनी देवीनी ॥ ज० पल्यनो आठमो न्नाग ॥ उ० पल्यनो आठमो न्नाग जाफेरी ॥ समोहिया ने असमोहिया ए वे मरण ठे ॥ चवण ते चविने जाय । पांच दंमकमां । पृथवी पाणी वनस्पति मनुष्य ने तिर्यचमा ॥ गइ ते मरीने वे गतिमां जाय ॥ मनुष्य ने

तिर्यंचमा । आगइ ते मनुष्य ने तिर्यंचनो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण ॥ इति त्रेविसमो ज्योतिषीनो दंडक संपूर्ण ॥ २३ ॥ हवे चोविसमो वेमानिकनो दंडक ॥ तेहमा सरीर त्रण ॥ वैक्रेय तेजस ने कार्मण ॥ अवघेणा सुधर्म इशाण ए वे देवलोके ज० अगु० अस० ॥ उ० सात हाथनी । त्रीजे चोथे देवलोके छ हाथनी ॥ पाचमे छठे देवलोके पाच हाथनी ॥ सातमे आठमे देवलोके च्यार हाथनी ॥ नवमे दशमे इग्यारमे बारमे दे० त्रण हाथनी ॥ नव ग्रैवेयकें बे हाथनी ॥ च्यार अनुत्तर विमानमा एक हाथनी ॥ सर्वार्थसीधमां मुढा हाथनी ॥ अने उत्तरवेक्रेय करे तो । बार देवलोक सुधी ज० अगु० संख्या० ॥ उत्कृष्टी लाख जोजननी ॥ संघयण नथी ॥ संठाण एक समचउरंस ॥ कषाय च्यारे पण लोभ घणो ॥ सज्ञा चारे पण परिग्रहसंज्ञा घणी । लेस्या पेहले बीजे देवलोके एक तेजुलेस्या । त्रीजे चोथे पांचमे एक पद्मलेस्या । छठाथी मांडी नव ग्रैवेयकमा ॥ एक सुकललेस्या । अने पांच अनुत्तर विमानमा १ परमसुकललेस्या ॥ इंद्री पांचे ॥ समुद्घात बार देवलोक सुधी ॥ पाच आहारकने केवल नही ॥ नव ग्रैवेयक ने पांच अनुत्तर विमानमा त्रण ॥ वेदनी कषाय ने मारणांतिक ॥

संज्ञी एकला छे ॥ वेद पेहेले बीजे देवलोके बे स्त्रीवेद । पुरुष वेद ॥ त्रीजाथी ते सर्वार्थ-
सीधलगे एक पुरुष वेद ॥ पर्या ५ प्राणामन भेलाबांधे ॥ दृष्टी बार देवलोकमा त्रण दृष्टी ॥
नव ग्रैवेयकमा बे दृष्टी समकित ने मिथ्यात ॥ पाच अनुत्तर विमानमा एक दृष्टी समकित ॥
दर्शन त्रण ॥ ज्ञान त्रण ॥ अज्ञान त्रण ते बार देवलोक ने नव ग्रैवेयकमां ॥ पाच अनुत्तर
विमानमा अज्ञान नथी । जोग अगीयार च्यार मनना च्यार वचनना त्रण कायाना ॥
वैक्रेय वैक्रेयनो मिश्र ने कार्मण कायजोग ॥ एव अगीयार ॥ उपयोग बार देवलोक ने नव
ग्रैवेयकमा नव ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण अज्ञान ॥ त्रण दर्शन एवं नव ॥ पाच अनुत्तर विमानमां
छ उपयोग ॥ त्रण ज्ञान ॥ त्रण दर्शन ए छ ॥ तिमज आहार ले तो जघन्य ने ॥ उत्कृष्टो
छ दिसनो तथा बे प्रकारे उज ने रोम ते पण अचेत ते पण सुज्ञ आहार ॥ उववाय ते आवीने
उपजे पेहेला देवलोकथी मांडीने आठमा देवलोक सुधी बे दंडकना मनुष्य ने तिर्यचना ।
अने नवमेथी ते सर्वार्थसिधलगे एक मनुष्यनो आवे ॥ थिति पेहेले देवलोके जघन्य एक
पल्यनी ॥ उत्कृष्टी बे सागरनी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी । उ० सात

पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ॥ ज० एक पल्यनी । उ० पंचास पल्यनी ॥ बीजे देवलोके ज० एक पल्यनी झाझेरी ॥ उ० बे सा० झाझेरी ॥ तेहनी परिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी झाझेरी । उ० नव पल्यनी ॥ अने अपरिग्रहीत देवीनी ज० एक पल्यनी झाझेरी ॥ उ० पचावन पल्यनी ॥ त्रीजे देवलोके ज० बे सा० ॥ उ० सात सा० तिहां देवी नथी पण तेडावी जाय ॥ चोथे देवलोके ज० बे सा० झाझेरी ॥ उ० सात सा० झाझेरी ॥ पांचमे देवलोके ज० सात सा० ॥ उ० दस सा० ॥ छठे देवलोके ज० दस सा० उ० चउद० सा० ॥ सातमे देवलोके ज० चउद० सा० उ० सतर० सा० ॥ आठमे देवलोके ज० सतर० सा० ॥ उ० अढार सा० ॥ नवमे देवलोके । ज० अढार सा० । उ० उगणीस सा० ॥ दसमे देवलोके ज० उगणीस सा० । उ० वीस सा० ॥ अग्यारमे देवलोके ज० वीस सा० ॥ उ० एकविस सा० ॥ बारमे देवलोके ज० एकविस सा० । उ० बाविस सा० ॥ प्रथम ग्रैवेयके ज० बाविस सा० । उ० त्रेविस सा० ॥ बीजी ग्रैवेयके ज० त्रेविस सा० उ० चोविस सा० । त्रीजी ग्रैवेयके ज० चोविस सा० ॥ उ० पंचविस सा० चोथी ग्रैवेयके ज० पंचविस

सा० । उ० ठविस सा० । पांचमी ग्रैवेयके ज० ठविस सा० । उ० सत्याविस सा० ॥ ठठि ग्रैवेयके ज० सताविस सा० उ० अठाविस सा० ॥ सातमी ग्रैवेयके ज० अठाविस सा० । उ० उगणत्रिस सा० ॥ आठमी ग्रैवेयके ज० उगणत्रिस सा० । उ० त्रिस सा० । नवमी ग्रैवेयके ज० त्रीस सा० नी । उ० एकत्रिस सा० । च्यार अनुत्तरविमानमां ज० एकत्रीस सा० । उ० तेत्रिस सा० ॥ सर्वार्थसिधमां ज० ने उ० तेत्रीस सा० । समोह्िया ने असमोह्िया ए वे मरण लाभे । चवण ते चविने पेहेला बीजा देवलोकना देवता पाच दरूकमा जाय । पृथवी पाणी वनस्पति मनुष्य ने तिर्यच ए पाच ॥ त्रीजाथी ते आठमा देवलोकना देवता जाय तो वे दरूकमा मनुष्य ने त्रिजचमा ॥ नवमेथी मांरूीने सर्वार्थसीधलगेना देवता । एक दरूकमा जाय मनुष्यमा ॥ गइ ते मरीने पेहेलाथी मांरूीने आठमा देवलोकना देवता वे गतिमा जाय । अने नवमाथी मारूीने सर्वार्थसिद्ध सुधिना एक मनुष्यनी गतिमां जाय । आगइ ते पेहेलाथी मारूीने आठमा देवलोकलगे बे गतिनो आवे । मनुष्य ने त्रिजंचनो । अने नवमाथी मारूीने सर्वार्थसिद्धलगे एक मनुष्यनो आवे ॥ प्राण दस ॥ जोग त्रण ॥

इति श्री चोविसमो वैमानिकनो दंडक सपूर्ण ॥ २४ ॥ हवे सिद्धनो द्वार कहेछे । सीद्धने शरीर नथी ॥ अवघेणा सीद्धनी अरूपिजीवना प्रदेशना घननी । ज० एक हाथ ने आठ अंगुलनी । मध्यम च्यार हाथ ने सोल अंगुलनी । अने उत्कृष्टी त्रणसें तेत्रीस धनुष ने बत्रीस अंगुलनी ॥ सिद्धने संघयण नथी ॥ सिद्धने सठाण नथी । सिद्धने कषाय नथी । सिद्धने सज्ञा नथी । सिद्धने लेश्या नथी ॥ सिद्धने इंद्रीय नथी ॥ सिद्धने समुद्घात नथी । सिद्ध सज्ञी असज्ञी नथी ॥ सिद्धने वेद नथी ॥ सिद्धने प्रजा नथी ॥ सिद्ध समकितदृष्टी छे ॥ सिद्धने एक केवल दर्शन छे ॥ सिद्धने एक केवल ज्ञान छे ॥ सिद्धने अज्ञान नथी ॥ सिद्धने जोग नथी । सिद्धने उपयोग बे छे ॥ केवल ज्ञान । केवल दर्शन ॥ सिद्धने आहार नथी ॥ उववाय ते आवीने उपजे । एक दंडकनो मनुष्यनो । सिद्धनी थितिनो छेहडो नथी ॥ सिद्धने मरण नथी ॥ सिद्धने चववू नथी ॥ गइ ते मरीने सिद्धने कोइ गतिमा जावुं नथी । आगइ ते सिद्धमा एक मनुष्यनो आवे ॥ सिद्धने प्राण नथी । पण भाव प्राण बे छे केवल ज्ञान ने केवल दर्शन । सिद्धने जोग नथी ॥ इति सिद्धनो द्वार सपूर्ण ॥ इति श्री

लघुदंमकना बोल संपूर्ण ॥ अथ गतागतना बोल लिख्यते ॥ पहिलीनर्के आगत ॥ २५ ॥ न्नेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मन्नूमी ॥ ५ सञ्ज्ञीतिर्यंच ने ॥ ५ ॥ असंज्ञीतिर्यंच ॥ ए ॥ २५ ॥ ना प्रजाप्तानि ॥ गत ॥ ४० ॥ न्नेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मभूमी ने ॥ ५ ॥ सञ्ज्ञीतिर्यंच । ए ॥ २०॥ ना अप्रजाप्ता । ने प्रजाप्तानि ॥ १ ॥ बिजी नर्के आगत ॥ २० ॥ नि ते ॥ ५ ॥ असञ्ज्ञीतिर्यंचना प्रजाप्ता वर्ज्या । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ २ ॥ त्रिजीनर्के ॥ १ए ॥ न्नेदनि आगत ते । पूर्वे ॥ २० ॥ कह्या तेहमाथि ॥ १ न्नुजपर वर्ज्यों । गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ ३ ॥ चजथीनर्के आगत १७ न्नेदनि । ते । पूर्वे १ए कह्या तेहमाथि ॥ १ खेचर वर्ज्यो । गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ पाचमी नर्के आगत १७ न्नेदनि ते । पूर्वे १७ कह्या तेहमाथि ॥ १ ॥ थलचर वर्ज्यों ॥ गत ४० नि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ छठी नर्के आगत ॥ १६ ॥ न्नेदनि ते ॥ १७ ॥ पूर्वे कह्या तेहमाथि ॥ १ उरपर वर्ज्यों गत ॥ ४० ॥ नि पूर्ववत् ॥ ६ ॥ सातमी नर्के आगत १६ न्नेदनि ते ॥ १५ ॥ कर्मन्नूमी ने ॥ १ मछजलचर ॥ ए १६ ना प्रजाप्तानि स्त्री वर्जी । गत ॥ १० न्नेदनि ते ॥ ५ सञ्ज्ञीतिर्यंचना अप्रजाप्ता ने प्रजाप्तानि ॥ ७ ॥ दश न्नवनपति ॥ १५ ॥

पर्मागामी ॥ १६ ॥ वाणव्यतर ॥ १० जंभका । ए ॥ ५१ ॥ जातिना देवतामा ॥ आगत
१११ भेदनि ते ॥ १०१ क्षेत्रना संज्ञीमनुष्य ॥ ५ सज्ञीतिर्यंच ॥ ५ असंज्ञीतिर्यंच । ए १११
ना प्रजासानि । गत ४६ नि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच ए ॥ २० ॥ ने प्रथ्वी ॥१॥
पाणि ॥ २ ॥ वनस्पति ॥ ३ ॥ ए ॥ २३ ॥ ना अप्र० ने प्रजासानि ॥ ८ ॥ ज्योतषी ने
पहिला देवलोकमा ॥ आगत ॥ ५० भेदनि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ ॥ संज्ञी तिर्यंच ने ३०
अकर्मभूमी । ए ५० ना प्रजासानि । गत ॥ ४६ नि पूर्ववत् ॥ ए ॥ त्रिजा देवलोकमा आगत
४० भेदनि ॥ ते पूर्वे ५० भेद कह्या तेह्माथि ॥ ५ हेमवय ने ॥ ५ एरणवय । ए १० ना प्रजासा
वर्ज्या । गत ॥ ४६ नि पूर्ववत् ॥ १० ॥ पहिला किल्बिषीमा आगत ॥ ३० भेदनि ते ।
पूर्वे ४० कह्या ॥ तेहमाथि ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमक वास । ए १० प्रजासा वर्ज्या । गत ४६
नि पूर्ववत ॥ ११ ॥ त्रिजा देवलोकथि आठमा देवलोकसुधि ॥ ६ देवलोक ॥ ए लोकातिक
॥ २ किल्बिषी । ए १७ जातिना देवतामां आगत ॥ २० भेदनि ते ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५
संज्ञीतिर्यंच । ए २० ना प्रजासानि ॥ गत ४० नि ते । आगतनिपरे ॥ १२ ॥ नवमा देवलोकथि

ते सर्वार्थसिद्धलगे ४ देवलोक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तर विमान ॥ ए १७ मा आगत ॥ १५ कर्मभूमीना प्रजाप्तानि । गत ॥ १ए नि ते आगतनिपरे ॥ १३ ॥ पृथिवी ॥ १ ॥ पाणि ॥२॥ वनस्पति ॥ ३ ॥ ए ३ मा आगत ॥ ३४३ भेदनि ते ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्यना अप्रजाप्ता ॥१५॥ कर्मभूमीना अप० ने प्रजाप्ता । एव ॥ १३१ ॥ ने ॥ ४७ भेद तिर्यंचना । एव १७ए नी लट ने ॥ ६४ भेद देवताना ते ॥ १० भवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यतर ॥ १० जम्भका ॥ १० ज्योतषी । एव ६१ ने ॥ २ देवलोक ॥ एक किल्बिषी ॥ एवं ॥ ६४ ना प्रजाप्तानि ॥ एवं ३४३ नि । गत १७ए नि लटनि ॥ १४ ॥ तेउ ॥ १ ॥ वाउ ॥ २ ॥ ए २ मा आगत ॥ १७ए नि लटनि ॥ गत ॥ ४७ भेद तिर्यंचनी ॥१५॥ त्रिण विगलेन्द्रियनि आगत ॥ १७ए भेदनि । गत पण १७ए भेदनि ॥ १६ ॥ असञ्ज्ञीतिर्यंचमा आगत ॥ १७ए नि लटनि ॥ गत ॥ ३ए५ भेदनि ते ॥ ए६ अतरद्विपा ने ॥ ५१ जातिना देवता । ते ॥ १० भवनपति ॥१५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यतर ॥ १० जम्भका ए ॥ ५१ जातिना देवता ॥ एवं सर्व मिलि १०७ भेद थया अने ॥ १ पहिली नर्क ॥ एवं ॥ १०७ ना अप० ने प्रजाप्ता एव २१६ अने १७ए नि लट

सर्वमिली ॥ ३५५ भेदनि ॥ १३ ॥ संज्ञीतिर्यंचमा आगत ॥ ७६७ भेदनि ॥ ते ८१ भेद वेरताना । ते ५५५ माहिथि ॥ ४ देवलोक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । ए ॥ १८ वर्ज्या ने १३५ नि लट । एवं सर्व मिलि ॥ ७६० ने ७ नर्कना प्रजाप्ता ॥ एव ॥ २६७ नि ॥ गत पांचेनि जुदी २ कहेछे ॥ जलचरनि ॥ ५२७ नि ते ५६३ माहिथि नवमा देवलोकथि सर्वार्थ सिद्धथि ॥ १८ ना अप्र० ने प्रजा० एव ३६ वर्ज्या शेष ॥ ५२७ रह्या ॥ उरपरनि गत ॥ ५२३ नि ते ॥ ५२७ माहिथि ॥ छठी ॥ १ ॥ सातमी । ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ नर्कना । अप्र० । प्रजाप्ता । ए ॥ ४ वर्ज्या ॥ थलचरनि गत ॥ ५२१ नि ते ५२७ माथि ॥ पांचमी ॥ १ ॥ छठी ॥ २ ॥ सातमी ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ नर्कना अप्र० प्रजा० । ए ॥ ६ वर्ज्या ॥ खेचरनि गत ॥ ५१५ नि ते पूर्वं ५२१ कह्या तेहमाथि । चोथिनर्कना अप्र० । प्रजा० । ए २ भेद वर्ज्या ॥ भुजपरनि गत ५१७ नि ते पूर्वं ॥ ५१५ ॥ कह्या तेहमाथि त्रिजीनर्कना । अप्र० । प्रजा० । ए ॥ २ भेद वर्ज्या ॥ १८ ॥ समुर्छिम मनुष्यमा आगत १७१ भेदनि ते ॥ १७५ नि लटमाथि ॥ ८ तेऊ वाउना वर्ज्या । शेष १७१ नि । गत ॥ १७५ नि उटनि ॥ १५ ॥ संज्ञीमनुष्यनि आगत ७७६

न्नेदनि ॥ ते १७ए नि लटमाहिथि तेन्न वान्नना ७ वर्ज्या । शेष १७१ रह्या अने ॥ एए जातिना देवता प्रजाप्ता एव ॥ ३३० ॥ ने ६ नर्कना प्रजाप्ता ॥ सर्व मिली ३७६ नि । गत ॥ ५६३ न्नेदनि ॥ ३० ॥ ३० अकर्मन्नूमीमा आगत ३० न्नेदनि ते ॥ १५ कर्मन्नूमी ॥ ५ सङ्गीतिर्यंच । ए ॥ ३० प्रजाप्तानि ॥ गत जुदी ३ कहेछे ॥ ५ देवकुरु ॥ ५ उत्तरकुरुनि गत ॥ १२७ ॥ न्नेदनि ते ॥ १० न्नवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यतर ॥ १० जन्नका ॥ १० ज्योतषी ॥ ३ देवलोक । पहिलो । बिजो ने ॥ १ किल्बिषी । ए ॥ ६४ जातिना देवता । अप्र० । प्रजा० । एव ॥ १२७ नि गत ॥ ५ हरिवास ॥ ५ रमकवासनि गत ॥ १२६ ॥ नि ते पूर्वे १२७ न्नेद कह्या । तेह्माथि पहिला किल्बिषीनो अप्रजा० । प्रजा० । ए ॥ ३ न्नेद वर्ज्या ॥ ५ हेमवय ॥ ५ एरणवयनि गत ॥ १२४ न्नेदनि । ते पूर्वे १२६ न्नेद कह्या तेह्माथि बिजा देवलोकना अप्र० । प्रजा० । ए ॥ ३ न्नेद वर्ज्या ॥ ३१ ॥ उपन्न अंतरद्विपमा आगत ॥ ३५ ॥ न्नेदनि ते ॥ १५ कर्मन्नूमी ॥ ५ सङ्गीतिर्यंच ॥ ५ असङ्गीतिर्यंच ए ॥ ३५ ना प्रजाप्तानि । गत १०३ न्नेदनि त ॥ १० न्नवनपति ॥ १५ परमाधामी ॥ १६ वाणव्यंतर ॥ १० जंन्नका । एव ॥ ५१ ना अप्र० ।

प्रजात्मा । सर्व मिली १०२ भेद ॥ २२ ॥ इति ॥ २४ ॥ दमकनि गतागत समासं ॥ हवे तिर्थंकरदेवमा आगत ॥ ३० भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ॥ ए लोकांतिक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान ने ॥ २ नरकपहिली ॥ एव ॥ ३० प्रजातानि ॥ गत मोक्षनि ॥ २३ ॥ चक्रवर्तीमा आगत ॥ ७२ भेदनि ते ॥ एए जातिना देवतामांहिथि ॥ १५ परमाधामी ॥ ३ किल्बिषी । ए १० वर्ज्या । शेष ॥ ७१ ॥ रह्या ने १ पहिली नरक एवं ७२ भेदनि ॥ गत नरकनि ॥ ७ नरकना अप्र० ने प्रजातानि ॥ २४ ॥ बलदेवमां आगत ॥ ७३ भेदनि ते ॥ ७२ पूर्वे कह्या ते । ने ॥ १ ॥ बीजी नरक वधि । एव ॥ ७३ नि । गत ॥ ७० भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ॥ ए लोकांतिक ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एव ३५ ना अप्र० प्रजातानि ॥ २५ ॥ वासुदेवमा आगत ॥ ३७ भेदनि ते ॥ १७ देवलोक ॥ ए लोकांतिक ॥ ए ग्रैवेयक । ए ३० ने पहिली २ नरक । एव ३२ नि । गत १४ भेदनि ॥ ७ नरकना अप्र० ॥ प्रजातानि ॥२६॥ केवलीमा आगत ॥ १०७ भेदनि ते ॥ एए भेद देवता माहिथि ॥ १५ परमाधामी ने ॥ ३ किल्बिषी । ए १० वर्ज्या । शेष ७१ रह्या ने ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ सन्नीतिर्यंच एवं १०१ ॥ ने ४

नरक पहिलीने ॥ पृथिवी १ पाणी २ वनस्पति ३ ॥ एवं १०७ नि । गत मोक्षनि ॥ २७ ॥ साधुमा आगत २७५ भेदनि ते ॥ १७ए नि लटमांथि तेउ वाउना ७ वर्ज्या शेष ॥ १७१ रह्या ने ॥ एए जातिना देवता अने ॥ ५ नरक ॥ एवं ॥ २७५ नि ॥ गत ॥ ७० ॥ भेदनि । ते ॥ १२ देवलोक ॥ ए लोकातिक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एवं ॥ ३५ ना अप्र० ॥ प्रजाप्ता । एव ॥ ७० ॥ नि ॥ ४७ ॥ श्रावकमां आगत ॥ २७६ ॥ भेदनि । ते । पूर्वे २७५ कह्या ते । अने ॥ १ ठ्ठी नर्क वधि । ए २७६ नि ॥ गत ४२ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ने ॥ ए लोकांतिक । ए २१ ना अप्र० । प्रजाप्तानि ॥ ४ए ॥ समदृष्टिमां आगत ॥ ३६३ भेदनि ते ॥ एए जातिना देवता प्रजाप्ता ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्य अप्रजाप्ता ॥ १०१ सञ्ज्ञी मनुष्य प्रजाप्ता ॥ १५ कर्मभूमीना अप्रजाप्ता ॥ ७ नरकना प्रजाप्ता । अने ४७ ॥ तिर्यंचमाहिथि तेउ वाउना ७ वर्ज्या । शेष ४० रह्या ते । एवं सर्व थइने ॥ ३६३ नि ॥ गत २१२ नि ते ॥ ७१ जातिना देवता ते एए माथि १५ परमाधामि ने ३ किल्बिषि ए १७ भेद वर्ज्या ते ॥ ने १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ६ नरक । एव ॥ १०७ ना अप्र० । प्रजाप्ता वसे चउद अने ॥३ विगलेन्द्रिना

प्रजाप्ता । सर्व मिली १०२ भेद ॥ ९२ ॥ इति ॥ ९४ ॥ ८८कनि गतागत समास ॥ हवे तिर्थंकरदेवमा आगत ॥ ३८ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ॥ ९ लोकांतिक ॥ ९ ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान ने ॥ ३ नरकपहिली ॥ एव ॥ ३८ प्रजाप्तानि ॥ गत मोक्षनि ॥ ९३ ॥ चक्रवतीमां आगत ॥ ८२ भेदनि ते ॥ ९९ जातिना देवतामाहिथि ॥ १५ परमाधामी ॥ ३ किल्बिषी । ए १८ वर्ज्या । शेष ॥ ८१ ॥ रह्या ने १ पहिली नरक एवं ८२ भेदनि ॥ गत नरकनि ॥ ७ नरकना अप्र० ने प्रजाप्तानि ॥ ९४ ॥ बलदेवमा आगत ॥ ८३ भेदनि ते ॥ ८२ पूर्वे कह्या ते । ने ॥ १ ॥ बीजी नरक वधि । एव ॥ ८३ नि । गत ॥ ७० भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ॥ ९ लोकातिक ९ ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एवं ३५ ना अप्र० प्रजाप्तानि ॥ ७५ ॥ वासुदेवमा आगत ॥ ३७ भेदनि ते ॥ १७ देवलोक ॥ ९ लोकातिक ॥ ९ ग्रैवेयक । ए ३० ने पहिली २ नरक । एव ३२ नि । गत १४ भेदनि ॥ ७ नरकना अप्र० ॥ प्रजाप्तानि ॥ २६ ॥ केवलीमा आगत ॥ १०८ भेदनि ते ॥ ९९ भेद देवता माहिथि ॥ १५ परमाधामी ने ॥ ३ किल्बिषी । ए १८ वर्ज्या । शेष ८१ रह्या ने ॥ १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञीतिर्यंच एवं १०१ ॥ ने ४

नरक पांहेलीने ॥ पृथिवी १ पाणी २ वनस्पति ३ ॥ एव १०० नि । गत मोक्षनि ॥ २७ ॥ साधुमा आगत २७५ भेदनि ते ॥ १७ए नि लटमांथि तेउ वाउना ७ वर्ज्या शेष ॥ १७१ रह्या ने ॥ एए जातिना देवता अने ॥ ५ नरक ॥ एवं ॥ २७५ नि ॥ गत ॥ ७० ॥ भेदनि । ते ॥ १२ देवलोक ॥ ए लोकांतिक ॥ ए ग्रैवेयक ॥ ५ अनुत्तरविमान । एवं ॥ ३५ ना अप्र० ॥ प्रजाप्ता । एव ॥ ७० ॥ नि ॥ ४७ ॥ श्रावकमा आगत ॥ २७६ ॥ भेदनि । ते । पूर्वे २७५ कह्या ते । अने ॥ १ छठी नर्क वधि । ए २७६ नि ॥ गत ४२ भेदनि ते ॥ १२ देवलोक ने ॥ ए लोकांतिक । ए २१ ना अप्र० । प्रजाप्तानि ॥ ४ए ॥ समदृष्टिमां आगत ॥ ३६३ भेदनि ते ॥ एए जातिना देवता प्रजाप्ता ॥ १०१ समुर्छिम मनुष्य अप्रजाप्ता ॥ १०१ सज्ञी मनुष्य प्रजाप्ता ॥ १५ कर्मभूमीना अप्रजाप्ता ॥ ७ नरकना प्रजाप्ता । अने ४७ ॥ तिर्यंचमाहिथि तेउ वाउना ७ वर्ज्या । शेष ४० रह्या ते । एवं सर्व थइने ॥ ३६३ नि ॥ गत २४२ नि ते ॥ ७१ जातिना देवता ते एए माथि १५ परमाधामि ने ३ किल्विषि ए १८ भेद वर्ज्या ते ॥ ने १५ कर्मभूमी ॥ ५ संज्ञी तिर्यंच ने ६ नरक । एवं ॥ १०७ ना अप्र० । प्रजाप्ता वसे चउद अने ॥३ विगलेंद्रिना

अप्र० । अने ॥ ५ असज्ञीतिर्यंचना अप्र० । एव २२२ नि० ॥ ३० ॥ मिथ्यातिमां आगत ॥ ३७१ भेदनि ते । पूर्वे ॥ ३६३ कह्या तेहमां तेउ वाउना ॥ ७ ॥ वध्या ॥ गत ५५३ भेदनि ते ५६३ भेदमांथि ॥ ५ अनुत्तर विमानना अप्र० ने प्रजाप्ता । ए ॥ १० वर्ज्या ॥ शेष ५५३ नि ॥ ३१ ॥ स्त्रीवेद ॥ १ ॥ पुरुषवेद ॥ २ ॥ ए ॥ २ मा ३७१ भेदनि आगत ते मिथ्याति-निपरे । गतपुरुषनि ५६३ नि । स्त्रीवेदनि ॥ ५६१ नि ते सातमी नरकना २ भेद वर्ज्या ॥३२॥ नपुंसकवेदमा आगत ॥ २७५ भेदनि ते ॥ ९९ जातिना देवता प्रजाप्ता ॥ १७९ नि लट ॥ ७ ॥ नारकी । ए ॥ २७५ ॥ नि ॥ गत ॥ ५६३ ॥ भेदनि ॥ ३३ ॥ नारकी देवता जे गतिमा जाय तिहां प्रजाप्ता थइनेज मरे छे अपर्याप्ता मरे नहि माटे नारकिदेवतानि गतमां अपर्याप्ताना भेद गणवा नहि ॥ केटलीक मतमां गण्या नथि माटे ॥ इति गतागतना बोल संपूर्ण ॥

अथ श्रीगुणस्थानद्वार लिख्यते ॥श्रीजिनवरेंद्रायनमः ॥ नाम १ लखगुण २ ठिइ ३॥ किरिया४ सत्ता ५ बंध ६ वेदेय ७ उदय ८ उदिरणा ९ चेव ॥ निर्जरा १० भाव ११ कारण १२ ॥ १ ॥ परिसह १३ मग्ग १४ आयाय १५ ॥ जीवाय भेदे १६ जोग १७ उविओग १८ ॥ लेस्या १९

सम्मत २१ ॥ अप्पाबहुत्त २२ गुणठाणोंहे ॥ २ ॥ ए द्वार २२ नी गाथा २ कहि । हवे पहिलो नामद्वार कहे छे ॥ पहिलु मिथ्यात्व गुणठाणुं ॥ १ ॥ बिजुं सास्वादना गु० ॥ २ ॥ त्रिजु समामिछत गु० ॥ ३ ॥ चोथुं अविरति सम्यक्त्वद्दष्टि गु० ॥ ४ ॥ पांचमुं देशविरति गु० ॥ ५ ॥ छठुं प्रमत्तसंजति गु० ॥ ६ ॥ सातमुं अप्रमत्तसंजति गु० ॥ ७ ॥ आठमुं नियट्टिबादर गु० ॥ ८ ॥ नवमुं अनियट्टिबादर गु० ॥ ९ ॥ दशमु सुक्ष्मसंपराय गु० ॥ १० ॥ इग्यारमुं उपशातमोह गु० ॥ ११ ॥ बारमु क्षिणमोह गु० ॥ १२ ॥ तेरमु सजोगि केवलि गु० ॥ १३ ॥ चउदमु अजोगि केवलि गुणठाणु ॥ १४ ॥ ए नामद्वार समाप्त ॥ हवे लक्षणगुणद्वार कहे छे ॥ पहिला मिथ्यात्व गुणठाणाना लक्षण कहेछे ॥ श्रीवीतराग नि वाणिथि उछु । अधिक । विपरीत शईहे परूपे फरसे तेहने मिथ्यात्व कहिये ॥ उणि परूपणा ते केहने कहिये । जिम कोइ कहे जे जीव अंगुठ मात्र छे । तंदुल मात्र छे ॥ शामा मात्र छे ॥ दीपक मात्र छे तेहने उणि परूपणा कहिये ॥ १ ॥ अधिकी परूपणा ते केहने कहिये ॥ एक जीव सर्व लोक ब्रह्मांड मात्रमा व्यापि रह्यो छे । तेहने अधिकी परूपणा कहिये ॥ २ ॥ विपरीत

परूपणा ते केहने कहिये ॥ कोइ कहे जे पंच भूत थकि आत्मा उपनो छे ॥ अने एहने विनाशे जीव पण विणशे छे ॥ ते जड छे । तेथकि चैतन्य उपजे विणशे । इम कहे तेहने विपरीत परूपणा कहिये ॥ ॥ ३ ॥ ए मीथ्यात्व इम नव पदार्थनु विपरीतपणुं सरदहे परूपे फरसे तेहने मीथ्यात्व कहिये ॥ अने जैनमार्गे आत्मा अकृत्रिम अखण्ड अविनाशी नित्य छे । शरिर मात्र व्यापक छे ॥ तिवारे गौतम स्वामि । हाथ जोडि मान मोडी वंदणा नमस्कार करीने श्रीभगवतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवते कहुं जे । जीवरूप दडिने । कर्मरूप ॥ गेडिये करि ॥ ४ गति ॥ २४ दंडक ८४ लाख जीवा जोनिमाहि वारवार परिभ्रमण करे पण संसारनो पार पामे नहि ॥ १ ॥ हवे बिजा गुणठाणाना लक्षण कहिये छे ॥ जिम कोइ पुरुष खिरखाडनुं भोजन जिम्यो ॥ तिवारपछि वमन कयुं ॥ तिवारे कोइक पुरुषे पुछ्यु भाइ काइ स्वाद रह्यो । तिवारे कहे जे थोडो स्वाद रह्यो । ते समान समकित अने वम्यो ते समान मिथ्यात्व ॥ १ ॥ बिजो [illegible] जेहवो घटानो नाद पहिलो गहेर गंभीर । पछि रणको रहि गयो ॥

नाथ विचमा छ ॥ तिहांसुधि सास्वादन कहिये ॥ अने जीवारे धरतीये आवि पड्युं । तिवारे मिथ्यात्व ॥ ३ ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो ॥ तिवारे श्रीभगवंत कहेछे । कृष्णपक्षी हतो ते शुक्लपक्षी थयो ॥ अर्द्ध पुद्गल ससार भोगववो रह्यो । जिम कोइ पुरुषने माथे लाख क्रोडनुं देणुं हतु ते परदेश जइने कमाइ आव्यो देणु देतां एक अधेलिनुं देणुं रह्युं लेहनुं व्याज थयुं । अर्द्ध पुद्गल ससार भोगववो रह्यो । सास्वादन समकित पांचवार आवे ॥ २ ॥ हवे त्रिजा गुणठाणाना लक्षण कहिये छे ॥ त्रिजुं मिश्रगुणठाणुं । ते बे वस्तु मिलिने मिश्र श्रिखंडनो दृष्टांत ॥ श्रीखंड जिम खाटो ने मिठो । मिठास समान समकित ने खटास समान मिथ्यात्व ॥ ते जिनमार्ग पण रुडो जाणे तथा अन्य मार्ग पण रुडो जाणे ॥ जिम कोइक

नगर वाहिर साधु महापुरुष पधार्याछे ॥ तेहने श्रावक वांदवा जायछे ॥ तेहवामा मिश्रदृष्टिवालो मित्र मिल्यो ॥ तिणे पुछ्युं जे किहां जावछो ॥ तिवारे श्रावक कहे जे । साधु महा पुरुषने वांदवा जइयेछे । तिवारे मिश्रदृष्टिवालो कहे ॥ एहने वांदे स्यु थाय ॥ तिवारे श्रावक कहे जे महालाभ थाय ॥ तिवारे कहे जे हुं पण आवुं । इम कहिने मिश्रगुणठाणावाले ॥ वांदवाने पग उपाड्यो ॥ तेहवामां विजो महामिथ्यात्वी मित्र मिल्यो ॥ तेणे पुछ्यु के स्याभणि जावछो । तिवारे मिश्रगुणठाणावालो कहे जे । साधु महापुरुषने वांदवा जइयेछे ॥ तिवारे महामिथ्याति कहे जे । एहने वांदे स्युं थाय । ए तो मेला घेलाछे ॥ इम कहिने भोलवि नाख्यो पाछो वेगो ॥ तिवारे साधुज्ञानिने श्रावके वांदिने पुछ्यु जे स्वामि वांदवा पग उपाड्यो तेहने स्यु गुण निपनो । तिवारे ज्ञानिगुरु कहेछे । जे काला अरूद सरिखो हतो ते ॥ गंभिदाल सरिखो थयो । कृष्णपक्षी टलिने शुक्लपक्षी थयो ॥ अनादि कालनो उलटो हतो ते सुलटो थयो । समकित सन्मुख थयो पण पग भरवा समरथ न ॥ तिवारे गौतम स्वामि हाथ जोडी मान मोडि वंदणा नमस्कार करिने श्रीभगवतने

पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्यु गुण निपनो । तिवारे श्रीज्ञगवंत कहेछे ॥ ते जीव ४ गती ॥ ३४ ॥ दुःकमा ज्ञमिने पण देशो उण अर्द्ध पुज्ञल परावर्त्तनमा उत्कृष्टो संसारनो पार पामसे ॥ ३ ॥ चोथुं अविरतिसम्यक्त्वदृष्टि गुणठाणुं तेहना स्युं लक्षण ॥ ७ प्रकृतिने क्षयोपशमावे । अनंतानुबंधिक्रोध ॥१॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोज्ञ ॥ ४ ॥ सम्यक्त्वमोहनीय ॥ ५ ॥ मिथ्यात्वमोहनीय ॥ ६ ॥ मिश्रमोहनीय ॥ ७ ॥ ए ७ प्रकृतिने काइक उदय आवे तेहने क्षय करे ॥ अने सत्तामा दल छे तेहने उपशमावे तेहने क्षयोपशमसम्यक्त्व कहिये ॥ ते सम्यक्त्व असंख्याति वार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा उपशमावे ढाके तेहने उपशमसम्यक्त्व कहिये । ते समकित पांचवार आवे ॥ अने ७ प्रकृतिना दलने सर्वथा क्षय करे तिवारे क्षायकसमकित कहिये ॥ ते सम्यक्त्व १ वार आवे ॥ चोथे गुणठाणे आव्यो थको जीवादिक पदार्थ ॥ द्रव्यथकि १ क्षेत्रथकि २ कालथकि ३ ज्ञावथकि ४ नोकारसीआदि छमासी तप जाणे सरदहे परूपे पण फरसि शके नहि ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमि मान मोमि श्रीज्ञगवंतने पुछता हवा ॥ स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ॥

तिवारे श्रीभगवंत कहे ॥ गौतम ते जीव समकितव्यवहारपणे शुद्ध प्रवर्त्ततो ॥ ते जीव जघन्य त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो पंदर भवे मोक्ष जाय ॥ वेदकसमकित एकवार आवे ॥ एक समयनि स्थिती छे । पूर्वे जो आयुपनो बंध पड्यो न होय तो ॥ ७ ॥ बोलमा बंध पामे नहि ॥ नरकनुं आयुष ॥ १ ॥ भवनपतिनुं आयुष ॥ २ ॥ तिर्यंचनु आयुष ॥ ३ ॥ वाणव्यतरनुं आयुष ॥ ४ ॥ ज्योतिषीनु आयुष ॥ ५ ॥ स्त्रीवेद ॥ ६ ॥ नपुंसकवेद ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ बोलमा आयुपनो बंध पामे नहि ॥ ते जीव ॥ ८ ॥ आचार सम- कितना आराधि । चतुर्विंयतघनिवाळका परमदर्प भक्तिभरथको जघन्य पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्॰ । बारमे देवलोके उपजे । पन्नवणानि शाखे ॥ पूर्व कर्मने उदये करिने व्रत पच्चखाण करि न शके । पण अनेक वरसनि श्रमणोपाशकनि प्रवर्ज्यानोपालक कहिये ॥ दशाश्रुत स्कंधे श्रावक कह्या छे ते माटे ॥ दर्शन श्रावकने अविरय समदिठी कहिये ॥ ४ ॥ पांचमुं देशविरतिगुणठाणु तेहना स्यु लक्षण । इग्यार प्रकृतिने क्षयोपशमावे । ते ॥ ७ पूर्वे ते अप्रत्याख्यानी क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ एवं ।

नने क्षय करे तो क्षायकसमकित कहिये ॥ अने ११ प्रकृ० ढांके उपशमावे तो उपशम समकित कहिये । अने ११ प्रकृतिने कांइक ढांके कांइक क्षय करे तेहने क्षयोपशमसमकित कहिये ॥ पाचमे गुणठाणे आव्योथकोजीवादिक पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि नोकारसी आदि देइने छमासीतप जाणे सरदहे परूपे शक्तिप्रमाणे फरसे । एक पच्चखाणथि मांडिने ॥ १२ व्रत ॥ ११ श्रावकनि पडिमा आदरे जावत् सलेखणासुधि अनशन करि आराधे। तिवारे गौतमस्वामी हाथ जोडि मान मोडि श्रीभगवतने पुछताहवा । ते जीवने स्यु गुण निपनो। तिवारे श्रीभगवंते कह्यु ॥ ज० त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ उ०॥ १५ भवे मोक्ष जाय ॥ ज० पहिले देवलोके उपजे ॥ उत्० १२ मे देवलोके उपजे । तेने साधुना व्रतनि अपेक्षाये देशविरति कहिये ॥ पण परिणामथि अव्रतनि क्रिया उतरि गइछे ॥ अल्पइछा ॥ अल्पआरंभ ॥ अल्पपरिग्रही ॥ सुशिल । सुव्रति ॥ धर्मिष्ठ । धर्मव्रति । कल्पउग्रविहारी । महासवेगविहारी ॥ उदासी ॥ वैराग्यवंत ॥ एकातआर्य ॥ सम्यगमार्गी ॥ सुसाधु । सुपात्र ॥ उत्तम । क्रियावादि। आस्तिक्य । आराधक । जैनमार्गप्रभावक ॥ अरिहतना शिष्य वर्णव्याछे । गीतार्थ जाणेछे ॥

सिद्धातनि शांख वेँ । श्रावकपणुं । एक ज्ञवमा प्रत्येक हजारवार आवे ॥ ९ ॥ ठ्ठु प्रमत्त॰
संजतिगुणठाणं ५ प्रकृतिने क्षयोपशमावे । ते ११ प्रकृति पूर्वे कहि ते
॥ २॥ माया ॥ ३ ॥ लोज्ञ ॥४॥ एव ॥ १५ ॥ प्रकृतिने
य । अने १५ प्रकृतिने ढांके तो उपशमसमकित कहिये ॥
के क्षयो मसमकित कहिये ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ
जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे श्रीज्ञगवते
जीवादिक नव पदार्थने तथा नोकारसी आदि
॥ साधुपणुं एक ज्ञवमा नवसेंवार आवें। ते जीव जघन्य
जाय ॥ आराधक जीव । जघ० पहिले देवलोके
सजम निर्मल पाले ॥१२ ज्ञेदे तपस्या करे, पण
पल दृष्टि चपलताना अंशठे । तेणे करिने यद्यपि उत्तम
माटे प्रमादपणो करि ॥ आ ...ादिक लेवा ॥ अशुज्ञ

जोग ॥ कोइक काले प्रणति प्रणमेछे माटे ॥ कषाय प्रकृष्टमत्त थइ जायछे तेहने प्रमत्त संजतिगुणठाणु कहिये ॥ ६ ॥ सातमु अप्रमत्त सजतिगुणठाणुं तेहनु स्युं लक्षण । पाच प्रमाद छांडे । तिवारे सातमे गुणठाणे आवे । ते ॥ ५ प्रमादना नाम ॥ मंद विसंय कसाया । निद्दां विगंहा पचमा भणिया । एए पंच पमाया । जीवापडति ससारे ॥ १ ॥ ए ॥ ५ ॥ प्रमाद छांडे अने १६ प्रकृतिने उपशमावे ॥ १५ ॥ पूर्वे कहि ते अने सजलनो क्रोध । एव १६ ॥ प्रकृतिने क्षयो पशमावे ॥ तेहने स्यु गुंण निपनो । ते जीव जीवादि पदार्थ द्रव्यथि क्षेत्रथि कालथि भावथि तथा नोकारसि आदि देइने छमासी तप ध्यानजुगतपणे जाणे सरदहे परूपे फरसे । ते जीव जघन्य० । तेज भवे मोक्ष जाय ॥ उत्कृष्टो त्रिजे भवे मोक्ष जाय ॥ गति तो प्राये कल्पातीतनि थाय ॥ ध्यानने विषे ॥ अनुष्ठानने विषे । अप्रमत्त उद्यत थका रहेछे । तथा शुभ लेश्यापणेज करिने नथि प्रमत्त कषाय जेहने तेहने अप्रमत्त सजतिगुणठाणुं कहिये ॥ ७ ॥ आठमु नियट्टि वादरगुणठाणुं तेहनुं स्यु लक्षण ॥ १७ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ १६ पूर्वे कहि ते । अने सजलनो मान । ए ॥ १७ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे । तिवारे गौतमस्वामी । हाथ जोडि

मान मोक्ष। श्रीभगवतने पुछता हवा। स्वामीनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो। तिवारे श्रीभगवंते कह्यु॥ परिणामधारा। अपूर्व करण॥ जे कोइ काले जीवने कोइ दिने आव्यु नथि। ते श्रेणि जुगत जीवादिक पदार्थ। द्रव्यथि। क्षेत्रथि। कालथि। भावथि। नोकारसी आदिदइ छमासी तप जाणे। सरदहे परूपे फरसे। ते जीव। जघन्य। तेज भवे मोक्ष जाय॥ उत्कृ०। त्रिजे भवे मोक्ष जाय। इहांथि श्रेणि २ करे। उपशमश्रेणि॥१॥ने क्षपकश्रेणि ॥२॥ उपशम श्रेणिवालो जीव ते मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने उपशमावतो इग्यारमा गुणठाणा सुधिजाय॥ पडिवाइ पण थाय। हायमान परिणाम पण परिणमे॥ अने क्षपकश्रेणिवालो जीव ते। मोहनीय कर्मनि प्रकृतिना दलने खपावतो शुद्ध मूलमाथि निर्जरा करतो। नवमे दशमे गुणठाणे थइने बारमे गुणठाणे जाय। अपडिवाइज होय वर्द्धमान परिणाम परिणमे। हवे नियट्टिबादरनो अर्थ ते निवर्त्योछे बादरकषायथि। बादर संपराय क्रियाथि। श्रेणि करवे। अन्यतर परिणामे। अध्यवसाय स्थिरथते बादर चपलताथि निवृत्योछे। माटे नियट्टिबादरगुणठाणु

अपूर्वकरण गुणठाणुं पण कहिये॥ स्यामाटे जे॥ कोइ कालें

जाव पूर्व आण करि नहुंति । अने ए गुणठाणे पहिलुंज करण ते ॥ पारूतवायनु आवरण
क्षयकरणरूपकरणपरिणामधारा वर्द्धनरूप श्रेणि करे ॥ तेहने अपूर्वकरण गुणठाणुं कहिये ॥ ८ ॥
हवे नवमु अनियट्टिवादरगुणठाणु तेहनुं स्यु लक्षण ॥ एकविंश प्रकृतिने क्षयोपशमावे ते ॥१७
प्रकृति पूर्वे कहि ते अने सजलनि माया ॥ १ ॥ स्त्रीवेद ॥ २ ॥ पुरुषवेद ॥ ३ ॥ नपुंसक
वेद ॥ ४ ॥ एव ॥ २१ ॥ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोडी मान
मोडी श्रीभगवतने पुछता हवा । स्वामिनाथ ते जीवने स्युं गुण निपनो ॥ तिवारे भगवंते
कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदि देइने छमासी तप ॥ द्रव्यथि क्षेत्रथि
कालथि भावथि निर्विकार अमायी ॥ विषयनिरवंछापणे । जाणे सरदहेपरूपे फरसे ते जीव ॥
जघन्य तेज भवे मोक्ष जाय । उत्० । त्रीजे भवे मोक्ष जाय ॥ हवे अनियट्टिवादर ते ।
सर्वथा प्रकारे निवर्त्यो नथि अंश मात्र हजि वादरसंपरायक्रियारहि छे माटे अनियट्टिवादर
गुणठाणु कहिये ॥ तथा आठमा नवमा गुणठाणाना शब्दार्थ घणा गंभीर छे ॥ ते अन्य
पंचसंग्रहादिक ग्रंथ तथा सिद्धांतथि समजवा ॥ ए ॥ दशमु सूक्ष्मसंपरायगुणठाणुं तेहनुं

स्युं लक्षण ॥ २३ प्रकृतिने क्षयोपशमावे ॥ २१ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने । हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ नय ॥ ४ ॥ शोक ॥ ५ ॥ डुगंठा ॥ ६ ॥ एव ॥ २७ प्रकृतिने कयोपशमावे ॥ तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमि मान मोमि ॥ श्रीनगवंतने पुछता हवा । स्वामिनाथ । ते जीवने स्युं गुण निपनो । तिवारे नगवंते कह्युं । ते जीव ॥ ऋयथि क्षेत्रथि कालथि नावथि जीवादिक पदार्थ तथा नोकारसी आदी देईने ठमासी तप निरनिलाष निवंठक निर्वेदकतापणे निराशी अव्यामोह अविनमपणे जाणे सरदहेपरूपे फरसे ते जीव । जघन्य० तेज नवे मोक्ष जाय। उत्० त्रीजे नवे मोक्ष जाय ॥ सूक्ष्म थोमिक लगारेक पातलीमी सपरायक्रिया रहि ठे तेहने सूक्ष्मसंपराय गुणठाणुं कहिये ॥ १० ॥ इग्यारमु उपशांतमोहगुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण ॥ २७ प्रकृतिने उपशमावे ते २७ प्रकृति पूर्वे कहि ते । अने सजलनो लोन ॥ १ ॥ एवं ॥ २८ ॥ मोहनीय कर्मनि प्रकृतिने उपशमावे सर्वथा ढांके । नस्म नारि मध्य अग्निवत् । तिवारे गौतमस्वामि हाथ जोमि मान मोमि श्रीनगवंतने पुछता हवा ।

निपनो । तिवारे श्रीनगवंते कह्युं । ते जीव जीवादिक पदार्थ

द्रव्याथ क्षेत्राथ कालाथ भावाथ नाकारलो आदि देइने अमालो तप वीतराग भाव जथाख्यात

चारित्रपणे ॥ जाणे सरदहेपरूपे फरसे। एहवामा जो काल करे तो । अनुत्तर वीमानमा जाय पछि मनुष्य थइ मोक्ष जाय। अने जो सूक्ष्म लोभनो उदय थाय तो कषाय अग्नि प्रकटे पछि पडे दशमाथि पडे तो पहिला गुणठाणासुधि जाय । पण इग्यारमेथि चढवुं तो नथि । उपशांत ते उपशम्यो छे मोह सर्वथा जले करि अग्नि उलव्यानिपरे टाल्यो नहि ढाक्योछे माटे उपशातमोह गुणठाणु कहिये ॥ ११ ॥ बारमु क्षीणमोह गुणठाणुं तेहनुं स्युं लक्षण जे ॥ २० प्रकृतिने सर्वथा खपावे। क्षेपकश्रेणि । क्षायकभाव। क्षायक समकित ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र ॥ करणसत्य। जोगसत्य। भावसत्य अमायी अकषायी वीतरागी। भावनिर्ग्रंथ। सपूर्ण सवुरू ॥ सपूर्ण भावितात्मा ॥ महातपस्वी । महासुशिल । अमोही। अविकारी । महाज्ञानी ॥ महाध्यानी ॥ वर्द्धमान परिणामी । अपडिवाइ थइ अंतर्मुहुर्त्त रहे । ए गुणठाणे काल करवो नथि। पुनर्भव छे नहि। छेहले समये पाच ज्ञानावरणिय ॥ नव दर्शनावरणिय ॥ पंचविधअतरायक्षयकरणोद्यमकरि ॥ तेरमा गुणठाणाने पहिले समये क्षयकरि। केवल ज्योति

प्रकटे माटे क्षीण ते क्षय कर्योछे मोह सर्वथा जे गुणठाणे तेहने क्षीणमोह गुणठाणु कहिये ॥१२॥
तेरमुं सजोगी केवलि गुणठाणु तेहनुं स्युं लक्षण । दश बोलसहित तेरमे गुणठाणे विचरे ॥
सजोगी ॥ १ ॥ सशरिरी ॥ २ ॥ सलेशी ॥ ३ ॥ शुकललेशी ॥ ४ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥५॥
क्षायकसमकित ॥ ६ ॥ पंमितवीर्य ॥ ७ ॥ शुकलध्यान ॥ ८ ॥ केवलज्ञान ॥ ९ ॥ केवलदर्शन
॥ १० ॥ ए ॥ १० ॥ बोलसहित ॥ जघन्य । अंतमुहुर्त्त । उत्० । देशेऊणी पूर्वकोमिसुधि ॥
विचरे घणा जीवने तारि प्रतिबोधि निहाल करिने ॥ बिजा त्रिजा शुकलध्यानना पायाने
ध्याइने चउदमे जाय ॥ सजोगी ते शुभ मन वचन कायाना जोगसहित छे बाह्याज्यचलोप
करण छे । गमनागमनादिक चेष्टा शुभ सहित छे । केवल ज्ञान केवलदर्शन । उपयोग सम-
पातर । अविछिन्नपणे शुद्ध प्रणमे माटे सजोगि केवलि गुणठाणुं कहिये ॥ १३ ॥ हवे चउदमुं
अजोगी केवली गुणठाणु तेहनु स्यु लक्षण । शुक्लध्याननो चोथो पायो समुछिन्नक्रिय अनंतर
अप्रतिपाती । अनिवृतिध्याता मनजोग रुंधि वचनजोग रुधि कायजोग रुधि आन प्राणनिरोध
करिने [illegible] न ध्याता ॥ ७ ॥ बोलसहित विचरे । तेरमे ॥ १० बोल कह्या

तेहमांथ्य। सजोगी॥ १ ॥ सलेशी ॥ २ ॥ शुक्लेशी ॥ ३ ॥ ए ३ बोल नथी ॥

बोलसहित सकल गिरीनो राजा मेरु तेहनिपरे। अडोल। अचल। स्थिर अवस्थाने पामे शैलेशीपणे रहि पचलघु अक्षर उच्चार प्रमाण काल रहि॥ शेप वेदनीय ॥ १ ॥ आयुप ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ४ कर्म क्षीण करिने मुक्तिपद पामे ॥ शरिर उदारिक । तेजस कार्मण। सर्वथा ढाकिने समश्रेणि रुजुगति अन्य आकाशप्रदेशानावगाहतो अणफरसतो। एक समय मात्रमां। उर्द्धगति। अविग्रहगतिये तिहा जाय। एरंडबीज बंधन मुक्तवत्। निर्लेप तुंबिवत्। कोदंड मुक्तबाणवत्॥ इंधनवह्निमुक्तधुम्रवत्। तिहा सिद्धक्षेत्रे जइ साकारोपयोगे सिद्ध थाय। बुद्ध थाय॥ पारागत थाय। परंपरगत थाय। सकल कार्य अर्थसाधि॥ कृतकृतार्थ। निष्ठितार्थ। अतुल सुखसागर निर्मग्न॥ सादिअनंत भागे सिद्ध थाय॥ ए सिद्धपदनो भावस्मरण॥ चितन मनन कदा काले मुझने होशे। सो घटि पल धन्य सफल होशे॥ हवे अजोगी ते। जोगरहित केवलसहित विचरे॥ तेहने अजोगी केवली गुणठाणुं कहिये॥ १४॥ इति लक्षण गुणद्वार बीजो संपूर्ण॥ २॥ हवे त्रिजो स्थितिद्वार कहेछे॥

पहिला गुणठाणानि स्थिति ३ प्रकारनि छे ॥ अणादिया अपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि ने अंत पण नथि ते अभव्यजीवना मिथ्यात्व आश्रि ॥ १ ॥ अणादिया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि नथि पण अंत छे ते भव्यजीवना मिथ्यात्व आश्रि ॥ २ ॥ सादियासपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वनि आदि पण छे ने अंत पण छे ते पडिवाइ समदिठिना मिथ्यात्व आश्रि ॥ तेहनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त ॥ उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणी पछि अवश्य समकित पामिने मोक्ष जाय ॥ ३ ॥ १ ॥ बिजा गुणठाणानि स्थिति । जघ० ॥ १ य । उत्० ॥ ६ आवलिका ने ७ समयनि ॥ २ ॥ त्रिजा गुणठाणानि स्थिति । ज० । अंतर्मुहूर्त्तनी ॥ ३ ॥ चोथागुणठाणानि स्थिति ज० । अंतर्मुहूर्त्त । उ० ॥ ६६ सागरोपम झाझेरानि ते २२ सागरोपमनि स्थितिये ३ वार बारमे देवलोके उपजे । त्रिण पूर्वकोडि अधिक मनुष्यना भव आश्रि जाणवि ॥ तथा बेवार अनुत्तर विमानमा ३३ सागरोपमनि स्थितिये उपजे ॥ ३३ छ गसठ सागरोपमने पूर्वकोडि ३ अधिक मनुष्यना भव आश्रि जाणवि ॥ ४ ॥ पांचमा छठा तेरमा गुणठाणानि स्थिति ज० अन० उ० देशोणी साकाश्यान

वर्षे उणि पूर्वकोम्नि ॥ सातमाथि ते इग्यारमा गु० सुधि ज० ॥ १ समय० ॥ उ० अंत० । वारमा गु० । स्थिति ज० । उ० । अत० ॥ चउदमा गुणठाणानि स्थिति पाच न्हस्व अक्षर । अं । इं । उं । ऋं । लं । वोलवा प्रमाणे जाणवि । इति त्रिजो स्थितिद्वार समासं ॥ ३ ॥ हवे चोथो क्रियाद्वार कहेछे । पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ २४ ॥ क्रिया लाग्ने । इरियावहिया क्रिया वर्जिने ॥ विजे । चोथे गु० ॥ २३ क्रिया लाग्ने इरियावहिया ॥ १ ॥ ने मिथ्यात्वनि ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥ पांचमे गु० ॥ २२ क्रिया लाग्ने मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अविरति ॥ २ ॥ इरियावहिया ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जिने ॥ छठे गुणठाणे ॥ २ ॥ क्रिया । आरम्भिया ॥ १ ॥ मायावत्तिया ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ लाग्ने । सातमे गुणठाणेथि ते दशमा गुणठाणा सुधि ॥ १ ॥ मायावत्तिया क्रिया लाग्ने ॥ इग्यारमे वारमे तेरमे गुणठाणे ॥ १ ॥ इरियावहिया क्रिया लाग्ने । चउदमे गुण० कोइ क्रिया लाग्ने नहि ॥ इति ॥ ४ थो ॥ क्रियाद्वार समास ॥ ४ ॥ हवे पाचमो सत्ताद्वार कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते इग्यारमा गुणठाणा सुधि । आठ कर्मनि सत्ता । वारमे ॥ ७ ॥ कर्मनि सत्ता १ मोहनियकर्म वर्जिने ॥ तेरमे चउदमे गुण० ॥४॥ कर्मनि

सत्ता । वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥४॥ इति पांचमो सत्ताद्वार समाप्त
॥ ५ ॥ हवे छट्ठो बंधद्वार कहेछे ॥ पहिला गुणठाणाथि ते सातमा गुणठाणासुधि त्रिजुं
ठ ॥ ८ कर्म बांधे । अने जो ॥ ७ बांधे तो आयुष वर्जिने । त्रिजे आठमे न-
पायुष वर्जिने ॥ दशमे गुण० ॥ ६ कर्म बांधे । आयुष ॥ १ ॥
वर्जिने ॥ इग्यारमे बारमे तेरमे गुण० ॥ १ सातावेदनीय बांधे ॥
॥ बंधद्वार समाप्त ॥ ६ ॥ हवे ॥ ७ मो वेद ने ॥ ८
गुणठाणाथि ते दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्म वेदे
। ७ कर्म वेदे ने ॥ ७ नो उदय मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे
॥ नो उदय ॥ वेदनीय ॥ १ ॥ आयुष ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥
८ मो उदयद्वार समाप्त ॥ ७ ॥ ८ ॥ हवे नवमो उदीरणाद्वार
णाथि मांडिने ॥ ७ मा गुणठाणासुधि ॥ ८ कर्मनि उदीरणा । तथा ७
॥ आठमे नवमे गुणठाणे ॥ ७ कर्मनि उदीरणा ते आयुष वर्जिने ।

ठा

॥४

तथा ६ नि करे तो । आयुय ॥ १ ॥ वेदनीय ॥ २ ॥ ए २ वर्जिने । दशमे ॥ ६ नि उदी-
रणा करे ॥ आयुष ॥ १ ॥ वेदनीय ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने । अने ५ नि करे तो । आयुष
॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय ॥ ३ ॥ ए ३ वर्जिने ॥ इग्यारमे वारमे ५ नि उदीरणा ।
आयुष ॥ १ ॥ मोहनीय ॥ २ ॥ वेदनीय । ३। ए ३ वर्जिने । तथा २ नि करे तो । नाम ॥ १ ॥
गोत्र ॥ २ ॥ ए २ नि ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ २ कर्मनि उदीरणा ॥ नाम ॥१ ॥ गोत्र ॥२॥ ए २ नि ॥
चनदमे गुण० उदीरणा करे नहि ॥ इति ॥ ए मो उदीरणाद्वार समाप्त ॥ ए ॥ चेव क७
निश्चे ॥ हवे ॥ १० मो निर्जराद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते ११ मा गुणठाणासुधि ॥ ७ कर्म-
नि निर्जरा ॥ वारमे ॥ ७ कर्मनि निर्जरा मोहनीय वर्जिने ॥ तेरमे चनदमे ४ कर्मनि निर्जरा ।
वेदनीय ॥ १ ॥ आयुप ॥ २ ॥ नाम ॥ ३ ॥ गोत्र ॥ ४ ॥ ए ४ निं । इति १० मो निर्जराद्वार
समाप्त ॥ १० ॥ हवे इग्यारमो ज्ञावद्वार कहेछे ॥ उदयज्ञाव ॥ १ ॥ उपशमज्ञाव ॥ २ ॥
क्षायकज्ञाव ॥ ३ ॥ क्षयोपशमज्ञाव ॥ ४ ॥ पारिणामिकज्ञाव ॥ ५ ॥ संनिवाइज्ञाव ॥ ६ ॥
पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ॥ ३ ज्ञाव । उदय ॥ १ ॥ क्षयोपशम ॥ २ ॥ पारिणामिक ॥ ३ ॥

कर्मने उदय हतो ते । ए ३ वर्जिने शेष ११ रह्या ॥ ते माहिला ॥ १ समये ए वेदे ॥ टाढनो तिहां तापनो नहि । तापनो तिहां टाढनो नहि । चालवानो तिहां थानकनो नहि । थानकनो तेहां चालवानो नहि ॥ इति १३ मो परिसहद्वार समाप्त ॥ १३ ॥ हवे १४ मो मार्गणाद्वार हेठे ॥ पहिले गुणठाणे मार्गणा ॥ ४ ॥ त्रीजे चोथे पांचमे सातमे जाय ॥ बिजे गुण० मार्गणा ॥ १ ॥ पडे तो पहिले आवे पण चढवुं नथि ॥ त्रिजे मार्गणा ॥ ४ पडे तो पहिले ... । अने चडे तो चोथे पाचमे अने सातमे जाय ॥ चोथे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहिले ... त्रिजे आवे । अने चडे तो पाचमे सातमे जाय ॥ पाचमे मार्गणा ॥ ५ पडे तो पहिले त्रिजे त्रिजे चोथे आवे । अने चडे तो सातमे जाय ॥ छठे मार्गणा ॥ ६ पडे तो पहिले त्रिजे त्रिजे चोथे पाचमे आवे । अने चढे तो सातमे जाय ॥ सातमे मार्गणा ॥ २ पडे तो छठे चोथे आवे । अने चडे तो ८ मे जाय ॥ आठमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो सातमे चोथे आवे । चडे तो नवमे जाय ॥ नवमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो आठमे चोथे आवे । अने चढे तो दसमे जाय ॥ दसमे मार्गणा ॥ ३ पडे तो नवमे चोथे आवे । चडे तो इग्यारमे बा

जाय ॥ इग्यारमे मार्गणा ॥ ७ काल करे तो अनुत्तर विमाने जाय ॥ पडे तो दशमाथी पहिलासुधि आवे । चढवु नथि ॥ वारमें मार्गणा ॥ १ तेरमे जाय ॥ पडवुं नथि ॥ तेरमे मार्गणा ॥ १ चउदमे जाय । पडवुं नथि । चउदमे मार्गणा एके नथि मोक्ष जाय । इति मार्गणाद्वार १४ मो समाप्त ॥ १४ ॥ हवे पनरमो आत्माद्वार कहेछे ॥ आत्मा ८ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ १ ॥ कषायआत्मा ॥ २ ॥ योगआत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानआत्मा ॥ ५ ॥ दर्शनआत्मा ॥ ६ ॥ चारित्रआत्मा ॥ ७ ॥ वीर्यआत्मा ॥ ८ ॥ पहिले त्रिजे गुण० ६ आत्मा । ज्ञान ने चारित्र ए २ वर्जिने ॥ बिजे चोथे गुण० ॥ ७ आत्मा चारित्र वर्जिने ॥ पाचमे गुणठाणे पण ॥ ७ आत्मा देशथि चारित्र छे ॥ छठेथि दशमा गुणठाणासुधि ॥ ८ आत्मा । इग्यारमे वारमे तेरमे ॥ ७ आत्मा कषाय वर्जिने ॥ चउदमे ६ आत्मा कषाय ने जोग वर्जिने । सिद्धमा ॥ ४ ॥ आत्मा । ज्ञानआत्मा ॥ १ ॥ दर्शनआत्मा ॥ २ ॥ द्रव्य आत्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा ॥ ४ ॥ इति १५ मो आत्माद्वार समाप्त ॥ १५ ॥ हवे १६ मो जीवभेदद्वार कहेछे । पहिले गुणठाणे ॥ १४ भेद लाभे ॥ बिजे गुण० ६ भेद लाभे ॥ बेइंद्रिय ॥ १ ॥

तेंइन्द्रिय ॥ २ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ३ ॥ असज्ञितिर्यंचपचेंद्रिय ॥ ४ ॥ ए ४ ना अपर्जाप्ता ने सज्ञी पचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने पर्जाप्तो ॥ ए ६ ॥ त्रिजे गुण० ॥ १ संज्ञी पचेंद्रियनो पर्जाप्तो लाभे । चोथे गुणठाणे ॥ २ भेद लाभे । सज्ञी पचेंद्रियनो अपर्जाप्तो ने । पर्जाप्तो ॥ ए २ ॥ पाचमाथि ते १४ मा गुणठाणासुधि १ सज्ञि पचेंद्रियनो पर्जाप्तो लाभे ॥ इति १६ मो जीवभेदद्वार समाप्त ॥ १६ ॥ हवे १७ मो जोगद्वार कहेछे ॥ पहिले विजे ने चोथे गुणठाणे जोग ॥१३॥ लाभे ते आहारकना वर्जिने ॥ त्रिजे गुण० १० जोगलाभे ॥ ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥१ उदारिकनो ॥ १ वेक्रेयनो । ए ॥ १० लाभे ॥ पाचमे गुणठाणे ॥ १२ जोग ॥ आहारकना ॥ २ ने एक कार्मणनो ए ३ ॥ वर्जीने १२ ॥ लाभे ॥ छठे गुण० ॥ १४ जोग लाभे ॥ १ कार्मणनो वर्जिने । सातमे गुण० ॥ ११ जोग ॥ ४ मनना ॥ ४ वचनना ॥ १ उदारिकनो ॥ १ वैक्रेयनो ॥ १ आहारकनो । एव ११ ॥ आठमाथि मांडिने १२ मा गुणठाणासुधि जोग ॥ ए लाभे ॥ ४ मनना ॥ ४ वचनना ने ॥१ उदारिकनो । ए ए ॥ तेरमे गुणठाणे जोग ॥ ७ लाभे ॥ वे मनना वे वचनना । ए ४ ने उदारिकनो १ ॥ उदारिकनो मिश्र २ ॥ कार्मणकायजोग ३ ॥ एवं ७ ॥

चनदमे-गुण० जोग नथि । इति १७ मो जोगद्वार समास ॥ १७ ॥ हवे १८ मो उपयोगद्वार कहेछे ॥ पहिले ने त्रिजे गुणठाणे ६ ॥ उपयोग लाभे ॥ ३ अज्ञान ने ३ । दर्शन । एव ६ ॥ विजे चोथे पाचमे गुण० ६ उपयोग लाभे ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ एव ६ ॥ छठाथि ते वारमा गुणठाणासुधि उपयोग ७ ॥ लाभे ॥ ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ॥ एव ७ ॥ तेरमे चनदमे गुणठाणे तथा सिद्धमा ॥ २ उपयोग । केवल ज्ञान ॥ १ ने । केवलदर्शन २ ॥ इति १८ मो उपयोगद्वार समास ॥ १८ ॥ हवे १९ मो लेशाद्वार कहेछे ॥ पहिलाथि ते छठा गुणठाणासुधि ॥ ६ लेशालाभे ॥ सातमे गुण० उपलि ॥ ३ लेशा लाभे । आठमेथि मांडिने वारमा गुणठाणासुधि ॥ १ शुकल लेशा लाभे ॥ तेरमे गुणठाणे ॥ १ परमशुकललेशा लाभे । चनदमे गुण० लेशा नथि । इति १९ मो लेशाद्वार समास ॥ १९ ॥ हवे २० मो चारित्रद्वार कहेछे । पहिलाथि ते चोथा गुणठाणासुधि कोइ चारित्र नथि । पाचमे गुणठाणे देशथि सामायक चारित्र छे । छठे सातमे गुणठाणे ॥ ३ चारित्र लाभे । सामायक चारित्र ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीयचारित्र ॥ २ ॥ परिहार विशुद्धचारित्र ॥ ३ ॥ ए ३ लाभे । आठमे नवमे गुणठाणे ॥ २ चारित्र लाभे । सामायक

मिथ्यात्व ॥ १ ॥ अज्ञान ॥ २ ॥ अविरति ॥ ३ ॥ असंज्ञिपणु ॥ ४ ॥ आहारकपणुं ॥ ५ ॥ उद्मस्थपणु ॥ ६ ॥ सजोगिपणु ॥ ७ ॥ संसार परियट्टणा ॥ ८ ॥ असिद्ध ॥ ९ ॥ अकेवलि ॥१०॥ एवं ॥ ३३ ॥ हवे अजीव उदयनिष्पन्नना ३० बोल पामे ॥ ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ ॥ रस ॥ ८ ॥ स्पर्श ॥ ५ ॥ शरीर ॥ ५ ॥ शरीरना व्यापार। एव ॥ ३० ॥ एवं उन्नय मिलिने ॥ ३३ ॥ ने ॥ ३० ॥ त्रेशठ जेद उदयजावना कह्या ॥ १ ॥ हवे उपशमजावे ॥ ११ बोल छे। च्यार कषायनो उपशम ॥ ४ ॥ रागनो उपशम ॥ ५ ॥ द्वेषनो उपशम ॥ ६ ॥ दर्शनमोहनीयनो उपशम ॥ ७ ॥ चारित्रमोहनीयनो उपशम ॥ ८ ॥ एव ॥ ८ मोहनीयनि प्रकृति ॥ अने उवसमियादंशणलद्धि ते समकित ॥ ९ ॥ उवसमियाचरित्तलद्धि ॥ १० ॥ उवसमियाअकषायछउमत्थवीतरागलद्धि ॥ ११ ॥ एव ॥ ११ ॥ हवे क्षायक जावे ३७ बोल छे ॥ ५ ॥ ज्ञानावरणिय ॥ ९ दर्शनावरणिय ॥ २ ॥ वेदनीयनि ॥ १ ॥ रागनि ॥ १ ॥ द्वेषनि ॥ ४ कषायनि ॥ १ दर्शनमोहनीयनि ॥ १ चारित्रमोहनीयनि ॥ ४ आयुषनि ॥ २ नामनि ॥ २ गोत्रनि ॥ ५ अंतरायनि। एवं ३७ ॥ प्रकृतिने क्षय करे तेहने क्षायकजाव कहिये। ते ७ बोल पामे ॥ क्षायकसम-

मकित ॥ १ ॥ क्षायकजथाख्यातचारित्र ॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ॥ ४ ॥ अने क्षायकदानादिलब्धि ५ ॥ एवं ए बोल ॥ ३ ॥ हवे क्षयोपशमभावे ॥ ३० बोल छे ॥ ४ ज्ञान प्रथम ॥ ३ अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ ३ दृष्टि ॥ ४ चारित्र प्रथम ॥ १ चरित्ताचरित्त ते श्रावकपणुं पामे ॥ १ आचार्यगणिनि पदवी ॥ १ चउद पूर्व ज्ञाननी प्राप्ति ॥ ५ इन्द्रियनि लब्धि ॥ ५ दानादिलब्धि । एव सर्व मिली ३० बोल ॥ ४ ॥ हवे पारिणामिक भावना २ भेद । सादिपारिणामिक ॥ १ ॥ अनादिपारिणामिक ॥ २ ॥ सादि विणशे ॥ अनादि विणशे नहि । सादिपारिणामिकना अनेक भेद छे । जुनी सुरा मदिरा जुनो गोल तडुल ए आदि ७२ बोल भगवतीनि शाखे छे ॥ अनादिपारिणामिकभावना १० ॥ बोल ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ २ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ ३ ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ ४ ॥ जीवास्तिकाय ॥ ५ ॥ काल ॥ ६ ॥ लोक ॥ ७ ॥ अलोक ॥ ८ ॥ भव्य ॥ ९ ॥ अभव्य ॥ १० ॥ एवं १० ॥ ५ ॥ हवे सन्निवाइभावना २६ भांगा ॥ १० द्विकसजोगीना ॥ १० त्रिकसजोगीना ॥ ५ चउकसजोगीना ॥ १ पंचसजोगिनो । एव २६ भागा । एहनो विचार श्रीअनुयोगद्वार सिद्धातथि जाणवो ॥ ६ ॥

क्रे ॥ १४ गुणठाणा उपर ॥ १० क्षेपकद्वार उतारेछे । तेहमां प्रथम हेतुद्वार कहेछे ॥ ७५ कषाय ॥ १५ जोग ॥ एवं ४० ने ॥ ६ काय ॥ ५ इन्द्रिय ॥ १ मन ॥ ए १२ अव्रत । एव ५२ ने ५ मिथ्यात्व । एवं ५७ हेतु । पहिले गुणठाणे ॥ ५५ हेतु ते आहारकना २ वर्जिने ॥ १ ॥ बिजे गु० ५० हेतु ते ५५ माथि ५ मिथ्यात्व टल्या ॥ २ ॥ त्रिजे गु० ४३ हेतु ते ५७ माथि अनंतानुबंधि ४ ॥ उदारिकनो मिश्र १ ॥ वैक्रेयनो मिश्र २ ॥ आहारकना २ ॥ मिथ्यात्व ५॥एव १४ वर्ज्या ॥ शेष ४३ ॥ ३ ॥ चोथे गु० ४६ हेतु ते पूर्वे कह्या ४३ ते अने उदारिकनो मिश्र १ ॥ वैक्रेयनो मिश्र २ ॥ कार्मण कायजोग ३ ॥ ए ३ वध्या ॥ सर्व मिलिने ४६ ॥ ४ ॥ पांचमे गुणठाणे ४० हेतु ते पूर्वे ४६ कह्या तेहमाथि अप्रत्याख्यानीनि चोकडि ४ ॥ त्रशकायनो अव्रत १ ॥ कार्मणकायजोग १ ॥ एव ६ घट्या ॥ शेष ४० हेतु ॥ ५ ॥ छठे गुण० २७ हेतु पूर्वे ४० कह्या तेहमाथि प्रत्याख्यानावरणियनि चोकडि ४ ॥ पाच स्थावरनो अव्रत ५ ॥ इन्द्रिय ५ नो अव्रत ॥ ५ ॥ ने एक मननो अव्रत ॥ १ ॥ एवं १५ वर्ज्या ॥ शेष २५ रह्या ने ॥ आहारकना २ ॥ वध्या । एवं सर्व मिलि २७ हेतु ॥ ६ ॥ सातमे गुण० २४ हेतु ते पूर्वे २७ कह्या तेहमाथि

उदारिकमिश्र १ ॥ वैक्रेयमिश्र २ ॥ आहारकमिश्र३। ए३ वर्ज्यां । शेष २४ हेतु ॥ ७ ॥ आठमे गुण० २२ हेतु ते पूर्वे २४ कह्या तेहमाथि । वैक्रेयनो १ ॥ आहारकनो २ ॥ ए २ वर्ज्यां । शेष २२ हेतु ॥ ८ ॥ नवमे गुण० १६ हेतु ते पूर्वे २२ कह्या तेहमाथि। हास्य १ ॥ रति २ ॥ अरति ३ ॥ भय ४ ॥ शोक ५ ॥ दुगंछा ६ ॥ ए ७ वर्ज्यां । शेष १६ हेतु ॥ ए ॥ दशमे गुण० १० हेतु ते ॥ ए जोग ने ॥ संजलनो लोभ । एवं १० हेतु ॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे गुण० ॥ ए हेतु ते ए जोग जाणवा ॥ ११ ॥ १२ ॥ तेरमे गुण० ७ हेतु ते ७ जोग जाणवा ॥ १३ ॥ चउदमे गुण० हेतु नथि ॥ १४ ॥ इति पहिलो हेतुद्वार समाप्तं ॥ १ ॥ हवे बीजो दंडक द्वार कहेछे । पहिले गुण० २४ दंडक । बिजे गुण० १ए दंडक ते ५ स्थावरना वर्ज्यां । त्रिजे चोथे गुण० १६ दंडक ते ३ विकलेंद्रिय वर्ज्यां । पाचमे गुण० २ दंडक सज्ञिमनुष्य १ सज्ञितिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ ॥ छठाथि ते चउदमा गुणठा० सुधि १ मनुष्यनो दंडक। इति २ जो दंडकद्वार समाप्त ॥ २ ॥ हवे त्रिजो जीवाजोनिद्वार कहेछे । पहिले गुण० ८४ लाख जीवा जोनि ॥ बिजे गुण० ३२ लाख ते एकेंद्रियनि वर्जि ॥ त्रिजे चोथे गुण० २६ लाख जीवा जोनि ॥ पाचमे गुण०॥ १८

नाग जीवा जोनि । उगणि ते १४ मा गुणठाणासुधि १४ लाख जीवा जोनि । इति त्रिजो जोनिद्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे ४ थो अंतरद्वार कहेछे । पहिले गुण० जघ० अंतरमुहूर्त उत्० ६६ सागर झाझेरानु अथवा १३२ सागर झाझेरानु ते ६६ सागर चउथे गुण० रहे ॥ अंत० त्रीजे गु० रहि पाछो चउथे गुण० ६६ सागर रहि मिथ्यात्वे आवे ॥ बीजाथि मांडिने इग्यारमा गुणठा णासुधि ज० अंत० अथवा पल्यनो असंख्यातमो भाग ते एटला काल विना उपशम श्रेणीकरि ने पडे नहीं उत्० अर्धपुद्गल देशे उणु । बारमे तेरमे ने चउदमे गुण० आंतरु नथि । ए एक जीवआश्रि॥इति ४ थो अंतरद्वार समाप्त ॥४॥ हवे ५ मो ध्यानद्वार कहेछे ॥ पहिले बिजे त्रिजे गुण०२ ध्यान पहिला । चोथे पांचमे गुण० ३ ध्यान पहिला । छठे गुण०२ध्यान आर्त्त १ ने धर्म ॥ २ ॥ सातमे गुण० १ धर्मध्यान० । आठमेथि मांडिने चउदमा गुण० १ शुकलध्यान । इति ५ मो ध्यानद्वार समाप्त ॥ ५ ॥ हवे छठो फरसनाद्वार कहेछे । पहिलुं गुणठाणु १४ राजलोक स्पर्शे ॥ बिजु गुण० देवु पंडगवनथि ते ६ ठि नरकलगे फरसे तथा उंचु अधोगाम त्रिजयथि ते ए श्रेणि फरुषि फरसे ॥ २ ॥ त्रिजुं गुण० लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ ३ ॥ चोथुं गुण०

अधोगाम विजयथि १२ मा देवलोकसुधि फरसे अथवा पनगवनाथ छठीनरक सुधी फरसे ॥ ५ ॥ पाचमुं गुण० पण इमज अधोगाम विजयथि १२ मा देवलोक सुधि फरसे ॥ ५ ॥ छठाथि ते इग्यारमा गुणठाणावाला अधोगाम विजयथि ५ अनुत्तर विमानसुधि फरसे ॥ बारमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे । तेरमुं गुण० सर्व लोक फरसे । चउदमुं गुण० लोकनो असंख्यातमो भाग फरसे ॥ इति ६ ठो फरसनाद्वार समास ॥ ६ ॥ हवे तिर्थंकर गोत्र ४ गुणठाणे बांधे ॥ चोथे पाचमे छठे ने सातमे ॥ ए ४ गुणठाणे बांधे । शेष गुणठाणे न बांधे ॥ तिर्थंकर देव ए गुणठाणा फरसे ते । ४ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । १२ । १३ ॥ १४ ॥ ए ९ फरसे ॥ इति ७ मो द्वार समासं ॥ ७ ॥ गुणठाणा १४ मा । १ ॥ ४ । ५ । ६ । १३ । ए ५ शास्वता । शेष ९ गुण० अशास्वता । इति आठमो द्वार समासं ॥ ८ ॥ गुणठाणा १४ मां । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ए ७ गुण० ६ संघयण । आठमाथि ते १४ मा गुणठाणा सुधि एक वज्रऋषभ नाराचसंघयण । इति ९ मो द्वार समासं ॥ ९ ॥ आर्याजी ॥ १ ॥ अवेदि ॥ २ ॥ परिहारविशुद्धचारित्रवंत ॥ ३ ॥ पुलाकलब्धिवंत ॥ ४ ॥ अप्रमादि साधु ॥ ५ ॥

चउद पूर्वी साधु ॥ ६ ॥ आहारकशरीरि ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ नु कोइ देवता साहारणकरि शके नहि । इति १० मो द्वार समास॥१०॥ इति १० क्षेपक द्वार समासं॥इति गुणठाणाद्वार समासं ॥

अथ श्री मह्टोटो वासठियो लिख्यते ॥
गाथा ॥ जीव१ गइ२ इंदिय३ काए४ । जोग ५ वेए ६ कसाय ७ लेस्सा ८ । सम्मत्त ए नाण १० दंसण ११ । संजय १२ उवत्तग १३ आहारे १४ । । नासग १५ परित्त १६ पज्जत्ती १७ । सुहुम १८ सन्नि १९ जविय २० चरिमेय २१ ॥ जीवेपखत्ते वंधे । पुग्गलए महादरुएचेव । २ । ए २ गाथानो विस्तार कहेछे ॥

द्वार १ समुचय जीवमा जीवना जेद ॥ १४

योग ॥ १२ ॥ लेशा ॥ ६ ॥ इति ॥ १ ॥
द्वार ॥ १ नरक गतिमा जीवना जेद । ३ सञ्जीनो अप्र० १ ने प्रजाप्तो ॥ २ । असञ्जीनो अप्र०।३॥गुण०४प्रथम।जोग।११। ते ४ मनना ४। वचनना ४ वैक्रेय १। वैक्रेयनो मिश्र।१। कार्मणकायजोग। एव११। उपयोग ॥ ए ॥ ३ ज्ञान । ३ । अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेशा ३ प्रथम

२ तिर्यचनि गतिमा जीवना जेद।१४गुण० ए।।प्रथम।।जोग१३आहारकना२वर्जिने।।

ने पर्याप्तो२ गुण०५ प्रथम॥जोग १३ ॥उ
प०ए॥ज्ञान ३ अज्ञान३ दर्श० ३॥ लेशा६

४ मनुष्यनि गतिमा जीवना भेद ३ संज्ञीनो
अप० ने पर्याप्तो ॥ २ ॥ असज्ञीनोअप०॥
३॥ ए ३॥ गुण० १४ । जोग० १५॥ उप०
१२ । लेशा ६ ॥

५ मनुष्यणीमा जीवना भेद २ संज्ञीना ॥
गुण० १४ । जोग १३ आहारकना २
वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

६ देवतानि गतिमा जीवना भेद ३ सज्ञीनो
अप० १ ने यर्पाप्तो२असज्ञीनो अप०३॥
गुण० ४ पहिला॥जोग ११। ४ मनना ४ ॥
वचनना । २ वैक्रियना ॥१ कार्मणनो ॥
एवं ११ ॥ उप० ए ॥ लेशा ६ ॥

७ देवागनामा जीवना भेद २ सज्ञीनो अप
जोग ११ । ४ मनना ४ वचनना ॥२ वैक्रि
यना ने १ कार्मणनो ॥ एवं ११॥ उपयोग
ए ॥ लेशा ४ ॥

८ सिद्धगतिमा जीवना भेद नथि ॥ गुणठा
णा नथि ॥ जोग नथि ॥ उपयो० २ केवल
ज्ञान १ ॥ केवलदर्शन २ । लेशा नथि ॥
एहनो अल्पबहुत्व॥ सर्वथि थोडि मनुष्य
णी १ ॥ तेहथि मनुष्य समुर्छिम भेलता
असखेज्जगुणा २॥ तेहथि नारकि असखे
ज्जगुणा ३॥ तेहथि तिर्यचणी असखेज्जगु
णि ४॥ तेहथि देवता असखेज्जगुणा ५॥
तेहथिदेवीसखेज्जगुणि६॥ तेहथिसिद्धभग
वत अनतगुणा ७। तेहथितिर्यचअनत
गुणा ८ ॥ इति विजो द्वार ॥

१ सइंदियामा जीवनाभेद १४ ॥ गुण० १२

प्रथम ॥ जोग १५ उपयोग १० ॥ केवल ज्ञान १ केवलदर्शन २ ए ७ वर्जीने ॥ लेशा ६ ॥

२ एकेंद्रियमां जीवना भेद ४ ॥ सूक्ष्म एकेंद्रियनो अपर्याप्तो १ ने पर्याप्तो २ ॥ वादर एकेंद्रियनो अपर्याप्तो ३ ने पर्याप्तो ४ ॥ गुण० १ प्रथम ॥ जोग ५ उदारिक १ उदारिकनो मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रियनो मिश्र ४ कार्मणकायजोग ५ ॥ उपयोग ३ ॥ वे अज्ञान ने ॥ १ अचक्षु दर्शन ॥ लेशा ४

५ बेइंद्रिय १ तेइंद्रिय २ चउरिंद्रिय ३ ॥ ए ३ मा जीवना भेद २ पोतपोतानो अपर्याप्तो १ ने पर्याप्तो २ ॥ गुण० २ पहिला । जोग ४ ॥ २ उदारिकना ॥ १ कार्मणनो ॥ ने ॥ १ व्यवहार वचननो । एवं ४ ॥ उपयोग बेइंद्रिय [illegible]

६ ते १ चक्षुदर्शन वध्यु एव ६ ॥ लेशा ३

६ पचेंद्रियमा जीवना भेद ४ ॥ संज्ञिनो अपर्याप्तो १ ने पर्याप्तो २ असंज्ञीनो अपर्याप्तो ३ ने पर्याप्तो ४ एवं ४ ॥ गुण० १२ प्रथम ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ए ७ वर्ज्यां ॥ लेशा ६ ॥

७ अणिंदियामा जीवनो भेद १ संज्ञिनो पर्याप्तो ॥ गुणठाणा २ तेरमुं ने चउदमुं ॥ जोग ७ । २ मनना ते सत्यमन १ व्यवहार मन २ बे वचनना ते सत्यवचन १ व्यवहारवचन २ एव ४ ॥ अने उदारिकनो ५ उदारिकनो मिश्र ६ कार्मणकायजोग ७ ॥ उपयोग २ ॥ केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ॥ लेशा १ शुक्ल ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ स [illegible]

धतेहथि अणिंदिया अनतगुणा ५। तेहथि एकेंद्रिया अनतगुणा ६॥ तेहथि सइंद्रिया विशेपाहिया ७॥ इति त्रिजो द्वार समाप्त

१ सकायामां जीवनाभेद १४ ॥ गुण० १४॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६।

४ पृथवीकाय १ अपकाय २ वनस्पतिकाय ३ ॥ ए ३ मा जीवना भेद ४। गुण० १। जो० ३ ॥ उप० ३। लेशा ४।

६ तेउकाय १ वाउकाय २॥ ए २ मां जीवना भेद ४ ॥ गुण० १ ॥ जोग तेउमा ३ ने ॥ वाउमा ५ ते २ वैक्रियना वध्या ॥ उप० ३ ॥ लेशा ३ ॥

७ त्रशकायमा जीवना भेद १० ते ४ एकेंद्रियना वर्ज्या ॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

जोग नथि उप०२ लेशा नथि एहनो अल्प बहुत्व। सर्वथी थोरा त्रसकाया १। तेहथि तेउकाया असखेज्जगुणा २। तेहथि पृथवीकाया विशेषाहिया ३ ॥ तेहथि अपकाया विशेषाहिया ४॥ तेहथि वाउकाया विशेपाहिया५ ॥ तेहथि अकाया अनंतगुणा ६॥ तेहथि वनस्पतिकाया अनंतगुणा ७ ॥ तेहथि सकायाविशेपाहिया ८॥ इति चउथो द्वार ॥

१ सजोगीमा जीवना भेद १४ गुण० १३ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२॥ लेशा ६॥

२ मनजोगीमा जीवनो भेद १॥ सज्ञीनो पर्याप्तो ॥ गुण० १३ जोग१४एककार्मणनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

३ वचनजोगीमा जीवना भेद॥५॥ वे इंद्रिय

१ तेइन्द्रिय२ चउरिंद्रिय ३ असंज्ञीपंचेंद्रिय ४ संज्ञिपंचेंद्रिय ५ ए ५ ना पर्याप्ता ॥ गुण० १३ जोग १४ कार्मण वर्जिने ॥ १२ ॥ लेशा ६ ॥

गीमा जीवनाभेद १४ ॥ गुण० जोग १५ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

वनो भेद १ संज्ञीनो पर्या । १॥ चउदमु ॥ जोग न

गु केवलज्ञान ने केवलदर्शन ॥

। अल्पबहुत्व॥सर्वथि थो ॥ तेहथि वचन जोगी अ ।२॥तेहथि अजोगी अनंतगुणा

तेह । कायजोगी अनंतगुणा ॥ ४॥ सजोगी विशेषाहिया ५ ॥ इति पाचमो द्वार ॥

प्रथम ॥ जोग १५ । उ० १० केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ ए २ मा । जीवना भेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ए॥ जोग १५॥ पुरुषवेदमा ॥ अने स्त्रीवेदमा १३ ते २ आहारकना वर्जिने ॥ उप० १०॥ लेशा ६

४ नपुंसकवेदमा जीवना भेद १४ । गुण० ए ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ वर्जिने॥ लेशा ६ ॥

५ अवेदीमा जीवनो भेद१ संज्ञीनो पर्याप्तो॥ गुण० ६ नवमाथिते १४ मासुधि ॥ जोग ११।४ मनना ४ वचनना ने ॥२ उदारिकना ॥१ कार्मणनो एव ११॥ उपयोग ए।३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा १ शुकल ॥ एहनो [illegible]

अनतगुणा ४ ॥ तेहथि सवेदी विशेषा
हिया ५ ॥ इति ठगो द्वार ॥

१ सकषायीमा जीवना भेद १४॥ गुण० १०
प्रथम ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १०॥ केवल
ज्ञान १ केवलदर्शन २ वर्जिने ॥ लेशा ६॥

४ क्रोध१ मान२ माया३ ए ३ मा जीवनाभेद
१४॥गुण०ए॥जोग१ए॥उपयोग१०॥लेशा६

५ लोभकषायीमा जीवना भेद १४ ॥ गुण
ठाणा १० पहिला ॥ जोग १५ ॥ उप
योग १०॥ लेशा ६ ॥

३ अकषायीमा जीवनो भेद ॥ १ । सज्ञीनो
पर्याप्तो ॥ गुण० ४ उपरला॥ जोग११ । ४
मनना ॥ ४ वचनना ॥ २ उदारिकना । १
कार्मणनो । एवं ११। उपयोग ए। एज्ञान
४ दर्शन । एव ए॥ लेशा १। शुक्लो अल्प

मानकषायी अनतगुणा २॥ तेहथि कोह
कषायी विशेषाहिया ३ तेहथि मायाक
षायी विशेषाहिया ४ ॥ तेहथि लोभक
षायी विशेषाहिया ५ तेहथि सकषायी
विशेषाहिया ६ । इति सातमो द्वार ॥

१ सलेशीमा जीवना भेद १४॥ गुण० १३ ॥
जोग १५ । उप० १२ ॥ लेशा ६ ।

४ कृष्ण १ निल २ कापुत ३ ए ३ लेशीमे
जीवना भेद १४ ॥ गुणठाणा ६ प्रथम॥
जोग १५ ॥ उपयोग १० वे केवलना
वर्ज्या । लेशा पोतपोतानि

५ तेजुलेशीमे जीवना भेद ३ सज्ञिनो अप-
र्याप्तो १ ॥ पर्याप्तो २ ॥ बादर एकें-
द्रियनो अपर्याप्तो ३ ॥ गुण० ७ प्रथम ॥
जोग १५॥ उपयोग १० ॥ लेशा १ तेजु ॥

६ पद्मलेशीमा जीवना भेद २ सज्ञिना ॥ गुण० ७ प्रथम ॥ जोग १५ ॥ उपयोग १० ॥ लेशा १ पदम ॥

७ शुक्ललेशीमा जीवना भेद२ सज्ञिना ॥ गुण० १३ प्रथम । जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा १ शुक्ल ॥

८ अलेशीमा जीवनो भेद १ सज्ञिनो पर्याप्तो ॥ गुण० १ चउदमु ॥ जोग नथि ॥ उपयोग २ ॥ केवलज्ञान १ ने केवलदर्शन २ ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा शुक्ल लेशी१॥ तेहथि पदमलेशी संखेज्जगुणा २ ॥ तेहथि तेजुलेशीसंखेज्जगुणा ३॥ तेहथि अलेशी अनंतगुणा४॥तेहथि कापुतलेशी अनतगुणा५॥ तेहथि निललेशी वीशेषाद्दिया ६॥ तेहथि

शी विशेषाद्दिया ७ ॥ इति ८ मो द्वार ॥

१ समुचय सम्यक्तदृष्टिमा जीवना भेद६॥ बेइंद्रिय १॥ तेइन्द्रिय २॥ चउरिन्द्रिय ३॥असंज्ञीपंचेंद्रिय ४॥ ए ४ ना अपर्याप्ता ॥ अने सज्ञीपचेंद्रियनो अपर्याप्तो ॥ ने पर्याप्तो एवं ६ ॥गुण०१२पहिलु त्रिजुं वरजीने ॥ जोग १५॥ उपयोग ए ॥३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

२ सास्वादन सम्यक्तदृष्टिमा जीवना भेद ६ ॥ गुण०बिजुं ॥ जोग॥१३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उपयोग ६ ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

३ उपशम सम्यक्तदृष्टिमा जीवना भेद२ संज्ञीना ॥ गुण० ८ चोथाथि ११ मासुधि॥ जोग १५ । उपयोग ७ ॥ ४ ... न ॥ ३

भेद ७ संज्ञीना ॥ गुण० क्षयोपशम सम्यक्तदृष्टिमा अने । वेदकमा ४ थी सातमासुधि॥जोग १५। उप०७। लेशा६

६ क्षायक सम्य०जीवना भेद२संज्ञीना॥गुण०११॥चोथाथि ते१४मासुधि॥जोग १५ उपयोग ए ॥३ अज्ञानवर्जिने॥लेशा ६ ॥

७ मिथ्यात्व दृष्टिमा जीवना भेद १४ गुण० १प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना२वर्जिने॥ उपयोग६। ३ अज्ञान॥३दर्शन॥लेशा६ ॥

८ समामिथ्यात्व दृष्टिमा ॥ जीवनो भेद १ सज्ञिनो पर्याप्तो॥गुण०१ त्रिजु॥जोग १०। ४मनना ॥ ४वचनना॥१ उदारिकनो॥१॥ वैक्रियनो । एवं १० ॥ उप०६ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा सास्वादन ,समकिति १ तेहथि उपशम समसंखेज्जगुणा २ ॥ तेहथि क्षयोपशम समकिति अने वेदक समकिति असंखेज्जगुणा केमके क्षयोपशमने आगल वेदवु छे माटे ५ ॥ तेहथि क्षायक समकिति अनंतगुणा ६ ॥ तेहथि समुचय समकिति विशेषाहिया ७॥ तेहथि मिथ्यात्व दृष्टि अनंतगुणा ॥ इति ए मो द्वार ॥

१ समुचयज्ञानिमा जीवना भेद६॥बेइन्द्रिय १। तेइन्द्रिय २। चउरिंन्द्रिय ३। असज्ञीपचेन्द्रिय ४। एहना अपर्याप्ता। ने अपर्याप्तो ने पर्याप्तो ॥ एव ६ ॥ गुण० १२ पहिलुं त्रिजुं वर्जिने ॥ जोग १५ ॥ उपयोग ए ॥ ५ ज्ञान ने ४ दर्शन ॥ लेशा ६

२ मतिज्ञानी१ श्रुतज्ञानी२ मा जीवना भेद ६॥ गुण०१० पहिलु त्रिजु तेरमु चउदमु

वर्जिने ॥ जोग १५॥ उप० ७॥ लेशा६॥
४ अवधिज्ञानीमा॥जीवना ज्ञेद२॥सज्ञीना॥
गुण०१०॥जोग१५॥उपयोग ७ लेशा ६॥
५ मनपर्यवज्ञानीमा जीवनो ज्ञेद१ संज्ञीनो
पर्याप्तो ॥ गुण०७॥छगथि वारमासुधि॥
जोग१४कार्मणनो वर्जिने॥उप०७॥लेशा६
६ केवलज्ञानीमां जीवनो ज्ञेद १ सज्ञिनो
पर्याप्तो ॥ गुण०२॥ तेरमु ने१४मु ।जोग
७ ॥ उपयोग २॥ लेशा १ परम शुकल॥
७ अज्ञानीमा जीवना ज्ञेद१४॥गुण०२पहिलुं
ने त्रिजु॥जोग १३आहारकना २ वर्जिने॥
उप० ६ । ३ अज्ञान ३दर्शन॥ लेशा ६॥
८ मतिश्रुत अज्ञानीमा जीवना ज्ञेद १४ ॥
गुण० २ पहिलु ने त्रिजुं ॥जोग १३॥ उप
योग० ६ ॥ लेशा ६ ॥

ना ॥गुण० २ पहिलुं ने त्रिजुं॥ जोग१३॥
उप० ६॥ लेशा ६॥ एहनो अल्पबहुत्व॥
सर्वथि थोमा मनपर्यवज्ञानी १ ॥ तेहथि
अवधिज्ञानी असख्यात गुणा २ ॥ तेहथि
मतिज्ञानी ने श्रुतज्ञानी माहोमाहि तुल्य
ने विशेषाहिया ४॥ तेहथि विज्नंग ज्ञानी
असख्यात गुणा ५ । तेहथि केवलज्ञानी
अनतगुणा६ ॥ तेहथि ज्ञानीविशेषा०७॥
तेहथि मति श्रुत अज्ञानी माहोमाहि तु-
ल्य ने अनतगुणाए ॥ तेहथि अज्ञानी वि
शेषाहिया ॥ १० ॥ इति १० मो द्वार ।
१ चक्षुदर्शनीमा जीवना ज्ञेद ६ ॥ चउरिंद्रि-
य १॥असज्ञि पंचेंद्रियश॥ संज्ञी पंचेंद्रिय
३॥ए३ना अपर्याप्ता ने ।पर्याप्ता ॥ गुण०
२ प्रथम ॥ जोग [illegible]

[illegible]
१७ जोग १५ उप० १० लेशा ६
३ अवधिदर्शनीमा जीवना भेद २ ॥ गुण०
१७ । जोग १५ उप० १० लेशा ६
४ केवलदर्शनीमा जीवनो भेद ॥१॥गुण०२
तेरमु चउदमुं।जोग [illegible] उप० २ ॥ लेशा१॥
एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा अवधि
दर्शनी १ ॥ तेहथि चक्षुदर्शनी असख्या
तगुणा २ ॥ तेहथि केवलदर्शनी अनत
गुणा ३॥ तेहथि अचक्षुदर्शनी अनतगुणा
४॥ इति ११ मो द्वार ॥
१ सजतिमा जीवनो भेद१सञ्ज्ञीनो पर्याप्तो।
गुण०एछगाथि ते१४मा सुधि॥जोग १५॥
उप० ए।३ अज्ञानवर्जिने ॥ लेशा० ६॥
३ सामायक १ छेदोपस्थापनीय २ ए वे
चारित्रमा जीवनो भेद १ सञ्ज्ञिनो पर्या
ग १४ कार्मणनो वार्जिने ॥ उपयोग ७।४
ज्ञान ने ३ दर्शन एवं ७ ॥ लेशा० ६ ॥
४ परिहारविशुद्धचारित्रमा जीवनो भेद१॥
गुण० २ छठु ने सातमु ॥ जोग ए । ४
मनना ४ वचनना ॥ ने ॥१ ॥ उदारिकनो
॥ एवंए॥ उप० ७ लेशा० ३ उपलि ॥
५ सुक्ष्मसपरायचारित्रमा जीवनो भेद१॥
गुण० १ दशमु ॥ जोग ए ॥ उपयोग४॥
लेशा १ शुकल ॥
६ यथाख्यातचारित्रमा जीवनो भेद १ ॥
गुण० ४ उपला ॥ जोग ११ । ४ मनना४
वचनना २ उदारिकना ने १ कार्मणनो ॥
उप० ए।३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा १ ॥
७ सजतासजतिमा जीवनो भेद १ ॥ गुण०
१ पाचमु ॥ जोग १२ आहारकना २ ने

१ कार्मणनो वर्जिने ॥ उपयोग ६ । ३ ज्ञान ने । ३ दर्शन । लेशा ६ ।

७ असंजतिमा जीवना भेद १४ । गुण० ४ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ए । ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ॥ ३ दर्शन ॥ लेशा ६ ॥

ए नोसंजतिनोअसंजतिनोसजतासजति मा जीवनो भेद० ॥ गुण० ॥ जोग० नथि ॥ ने । उप० २ ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा सुक्ष्म सपरायचारित्रिया १ ॥ तेहथि परिहार विशुध्धचारित्रिया संखेज्ज गुणा २ ॥ तेहथि यथाख्यातचारित्रियासखेज्जगुणा ३ ॥ तेहथि छेदोपस्थापनीयचारित्रिया संखेज्जगुणा ४ ॥ तेहथि सामायकचारित्रिया संखेज्जगुणा ५ ॥ तेहथि संजति विशेषाहिया ६ ॥ तेहथि सजतासंजति असख्यातगुणा७॥ तेहथि ॥ नोसंजति ॥ नोअसजति नोसंजतासजति अनंत गुणा ७ ॥ तेहथि असंजति अनतगुणा ए ॥ इति १२ मो द्वार ॥

१ सागारोवउत्तामां जीवना भेद१४॥ गुण० १४ । जोग १५ । उप० १२ । लेशा ६

२ अणागारोवउत्तामा जीवना भेद १४ ॥ गुण० १२ दशमुं वर्जिने ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा अणागारोवउत्ता १ ॥ तेहथि सागारोवउत्ता संखेज्जगुणा २ ॥ इति १३ मो द्वार ॥

१ आहारकमा जीवनाभेद १४ ॥ गुण० १३ पहिला ॥ जोग १४ कार्मणनो वर्जिने ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ।

२ अणाहारकमा ॥ जीवनाभेद ८ ॥ सात अपर्याप्ता ने १ सज्ञिनो पर्याप्तो । एवं ८ ॥ गुण० ५ पहिलु बिजु चोथुं तेरमुं ने चउदमु ए ५ ॥ जोग १ कार्मणनो ॥ उपयोग १० ॥ मनपर्यवज्ञान १ ने चक्षु दर्शन २ ए २ वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा अणाहारक १ ॥ तेहथि आहारक असंखेज्जगुणा २ ॥ इति १४ मो द्वार ॥

१ भासगामा जीवना भेद ५ ॥ बेइन्द्रिय १ । तेइन्द्रिय २ । चउरिन्द्रिय ३ । असंज्ञी पंचेंद्रिय ४ । सज्ञीपचेन्द्रिय ५ । ए ५ ना पर्याप्ता ॥ गुण० १३ प्रथम । जोग१४कार्मणनो वर्जिने ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा६ ॥

२ अभासगामां जीवनाभेद १० ॥ ते १४ ३ असंज्ञीपचेंद्रिय व ए व वर्ज्या॥ गुण० ५ ते पहिलुं १ बिजु २ चोथु ३ तेरमुं ४ चउदमु ५ ॥ए५॥ जोग ५ ॥ ते २ उदारिकना २ वैक्रियना । ने ।१। कार्मणनो॥ उप० । ११ ते ॥ मनपर्यवज्ञान नहि ॥ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा भासगा १ ॥ तेहथि अभासगा अनंतगुणा २ ॥ इति १५ मो द्वार ॥

१ परीतसंसारिमा जीवना भेद १४॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप०१२ ॥ लेशा ६

२ अपरीतससारीमा जीवनाभेद१४॥गुण० १॥पहिलुं।जोग१३आहारकना २वर्जिने॥ उप० ६ ॥ अज्ञान ३॥दर्शन३॥ लेशा ६

३ नोपरितनोअपरीतमा जीवना भेद० । गुण० ॥ जोग० ॥ नथि ॥ उप० २ ॥

एहनो अल्पवहुत्व ॥ सर्वथि थोमा परीत १ ॥ तेहथि नोपरीतनोअपरीत अनंत गुणा २ ॥ तेहथि अपरीत अनतगुणा ३ ॥ इति १६ मो द्वार ॥

१ पर्यासामा जीवना ज्ञेद ७ ॥ गुण० १४॥ जोग १५ । उप० १२ । लेशा । ६ ।

२ अपर्यासामा जीवनाज्ञेद ७ ॥ गुण०३। ते । पहिलु ॥ विजु । ने चउथ ॥ जोग ५ ॥ ते । २ उदारिकना ॥२वैक्रियना ने १ ॥ कार्मणनो॥उप० ए ॥ ३ ज्ञान ॥ ३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ एव ए ॥ लेशा ६

३ नोपर्यासानोअपर्यासामा । जीवना ज्ञेद० ॥ गुण० ॥ जोग० ॥ नहि । उप० २ ॥ लेशा नथि ॥

एहनो अल्पवहुत्व ॥ सर्वथि थोमा नोपर्यासानोअपर्यासा १ ॥ तेहथि अपर्यासा अनतगुणा ७ ॥ तेहथि पर्यासा संखेज्ज गुणा ३ ॥ इति १७ मो द्वार ॥

१ सुक्ष्ममा जीवना ज्ञेद २ ॥ सुक्ष्म एकेंद्रियनो अपर्यासो १ ॥ ने पर्यासो २ ॥ गुण० १ प्रथम ॥ जोग ३ वे उदारिकना । ने ।१। कार्मणनो । उप० ३ वे अज्ञान ॥१। अचक्षुदर्शन ॥ ए ३ ॥ लेशा ३ ॥

२ बादरमा जीवना ज्ञेद १२॥ ते २ सुक्ष्मनावर्ज्या । गुण० १४ । जोग १५ ॥ उपयोग १२ ॥ लेशा ६ ॥

३ नोसुक्ष्मनोबादरमा जीवना ज्ञेद० गुण० जोग० नथि ॥ उप० २ ॥ लेशा नथि ॥ एहनो अल्पवहुत्व ॥ सर्वथि थोमा नोसुक्ष्मनोबादर १ ॥ तेहथि बादरअनंतगुणा २ ॥ तेहथि सुक्ष्म०असखेज्जगुणा ३ ॥ इति १८ मो द्वार ॥

१ सज्ञीमा जीवना ज्ञेद २ ॥ गुण० १२ पहिला ॥ जोग १५॥ उप० १० केवलना २ वर्ज्या ॥ लेशा ६ ॥

२ असज्ञीमा जीवना ज्ञेद १२ ते २ सज्ञीना वर्ज्या ॥ गुण० २ प्रथम ॥ जोग ६।२ उदारिकना ॥ २ वैक्रियना ॥ १ कार्मणनो ॥ १ ॥ व्यवहारवचननो ॥ एवं ६॥ उप० ६।२ ज्ञान ॥ २ अज्ञान ॥ २ दर्शन ॥ एव ६॥ लेशा ४ प्रथम ॥

३ नोसज्ञीनोअसज्ञीमा जीवनो ज्ञेद १ ॥ सज्ञीनोपर्याप्तो ॥ गुण० २ तेरमु चउदमुं ॥ जोग ७॥ उपयोग २ ॥ लेशा १ परम शुक्ल ॥ एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोमा संज्ञी १॥ तेहथि नोसंज्ञी नोअसज्ञीअनत गुणा २ ॥ तेहथि असंज्ञी अनत गुणा ३॥ इति १९ मो द्वार ॥

१ ज्ञव्यमाहि जीवनाज्ञेद १४। गुण० १४॥ जोग १५॥ उप० १२। लेशा ६॥

२ अज्ञव्यमा जीवना ज्ञेद १४ गुण० १ प्रथम ॥ जोग १३ आहारकना २ वर्जिने ॥ उप० ६ ॥ लेशा० ६॥

३ नोज्ञव्यनोअज्ञव्यमा जीवना ज्ञेद० ॥ गुण०॥ जोग०॥ नथि ॥ उपयोग २। लेशा नथि ॥

एहनो अल्पवहुत्व ॥ सर्वथि थोमा अन्नव्य-१॥ तेहथि नोन्नव्यनोअन्नव्य अनंतगुणा २॥ तेहथि न्नव्य अनंतगुणा ३॥ इति २० मो द्वार ॥

१ चरममा जीवना न्नेद १४ गुण० १४॥ जोग १५॥ उप० १२। लेशा ६।

२ अचरममा जीवनान्नेद १४ ॥ गुण० १ प्रथम॥ जोग १३आहारकना २ वर्जिने॥ उप० ८ ते केवलज्ञान दर्शन ४ अज्ञान३ लेशा ६ ॥ एहनो अल्पवहुत्व ॥ सर्वथि थोमा अचरम१॥ तेहथि चरम अनतगुणा२॥ इति २१ मो द्वार॥

१ समुच्चयकेवलीमां जीवना न्नेद २ संज्ञीना ॥ गुण० ११ उपला ॥ जोग १५ ॥ उप० ए। ३ अज्ञान वर्जिने ॥ लेशा ६ ॥

२ वीतरागिमा जीवनो न्नेद १॥ गुण० ४। जोग ११ ॥ उप० ए ॥ लेशा १ ॥

३ जुगलियामा जिवनान्नेद २। सज्ञीना ॥ गुण० २ पहिलुं ने चउथुं ॥ जोग ११ ते । ४ मनना । ४ वचनना । २ उदारिकना । १ कार्मणनो ॥ एव ११ ॥ उप० ६ वे ज्ञान।वेअज्ञान ।वेदर्शन ।एवं ६॥ लेशा ४ प्रथम ॥

४ असङ्गीतिर्यंच पचेंद्रियमा जीवना ज्ञेद २। गुण० २ प्रथम ॥ जोग ४ ते ॥ २ ऊदारिकना ॥ १ कार्मणनो । ने । १ व्यवहार वचननो ॥ एव ४॥ उपयोग ६ ते २ ज्ञान । २ अज्ञान । २ दर्शन ॥ एव ६ ॥ लेशा ३ प्रथम

५ समुर्छिम मनुष्यमा जीवनो ज्ञेद १ ॥ गुण० १ पहिलुं ॥ जोग ३। ते ॥२ ऊदारिकना । ने। १ कार्मणनो॥एव ३ ॥ उपयोग ३ । ते बे अज्ञानने १ अचक्षुदर्शन । एव ३ ॥ लेशा ३ ॥

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथिथोम्हा जुगलीया १ ॥ तेहथि समुर्छिम मनुष्य असंखेज्जगुणा २॥ तेहथि असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिया असंखेज्जगुणा ३ ॥ तेहथि वीतरागी अनंतगुणा ४ ॥ तेहथि समुच्चय केवली विशेषाहिया ५ ॥

१ उदारिकशरिरमा जीवना ज्ञेद १४ ॥ गुण० १४ ॥ जोग १५ ॥ उप० १२ ॥ लेशा ६ ॥

२ वैक्रियशरिरमा जीवना ज्ञेद ४ ॥ ते ॥२ सज्ञीना। ने । १ असंज्ञीतिर्यंचनो अपर्यातो । अने । १ बादर वाउकायनो पर्यातो । एव॥४॥गुण० ७ प्रथम । जोग

१७ते। २ आहारकना ने ।१ कार्मणनो। ए ३ वर्ज्या ॥ उप० १० ते २ केवलना वर्ज्या ॥ लेशा ६॥

३ आहारकशरिरमा जीवनो भेद १ सज्ञीनो पर्यासो ॥ गुण० २ छठुं ने सातमुं ॥ जोग १२ ते। २ वैक्रियना। ने। १ कार्मणनो। ए ३ ॥ वर्ज्या ॥ उप० ७ ते ४ ज्ञान ने ३ दर्शन ॥ लेशा ६

५ तेजसकार्मणशरिरमा जीवना भेद १४ ॥ गुण० १४॥ जोग ॥ १५ उपयोग १२ ॥ लेशा ॥ ६

एहनो अल्पबहुत्व ॥ सर्वथि थोडा आहारकशरीरि१॥तहथि वैक्रिय शरीरि असख्यातगुणा २॥ तेहथि उदारिक शरीरि असख्यातगुणा ३ ॥ तेहथि तेजस कार्मण शरीरि माहोमाहि तुल्य ने अनंतगुणा ५

॥ इति महोटो बासठियो समाप्तं ॥

अथ श्रीआगणु बोलनो अल्प बहुत्व द्वार लिख्यते ॥

१ सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य
२ मनुष्यणी सखेजगुणी
३ बादर तेउकाया पर्यासा असं०
४ अनुत्तर विमानना देवता असं०

५ उपली त्रिकना देवता सखेजगुणा
६ मझमत्रिकना देवता सखेजगुणा
७ हेठली त्रिकना देवता सखेजगुणा
८ बारमा देवलोकना देवता सखे०
९ इग्यारमा देवलोकना देवता स०
१० दसमा देवलोकना देवता सखे०
११ नवमा देवलोकना देवता सखे०
१२ सातमी नरकना नारकी असखेज०
१३ छठी नरकना नारकी असखेज०
१४ आठमा देवलोकना देवता अ०
१५ सातमा देवलोकना देवता अ०
१६ पाचमी नरकना नारकी असंखेज०
१७ छठा देवलोकना देवता असखे०
१८ चोथी नरकना नारकी असंखे०
१९ पाचमा देवलोकना देवता असं०
२० त्रिजी नरकना नारकी असंखे०
२१ चोथा देवलोकना देवता अस०
२२ त्रिजा देवलोकना देवता असं०
२३ बीजी नरकना नारकी असखे०
२४ समुर्छिम मनुष्य असंखेजगुणा
२५ बीजा देवलोकना देवता असं०
२६ बीजा देवलोकनी देवी सखेज०
२७ पहेला देवलोकना देवता सखेज०
२८ पहेला देवलोकनी देवी संखेज०

२ए नवनपति देवता असंखेजगुणा
३० नवनपतिनी देवी सखेजगुणी
३१ पहेली नरकना नारकी असंखे०
३२ खेचर पुरुष असंखेजगुणा
३३ खेचरनी स्त्री संखेजगुणी
३४ थलचर पुरुष सखेजगुणा
३५ थलचरनी स्त्री संखेजगुणी
३६ जलचर पुरुष सखेजगुणा
३७ जलचरनी स्त्री संखेजगुणी
३८ व्यतर देवता संखेजगुणा
३ए व्यतरनी देवी सखेजगुणी
४० जोतिषी देवता सखेजगुणा

४१ जोतिषीनी देवी सखेजगुणी
४२ खेचर नपुसक संखेजगुणा
४३ थलचर नपुसक सखेजगुणा
४४ जलचर नपुंसक सखेजगुणा
४५ चउरिंद्रिय पर्याप्ता सखेजगुणा
४६ पचेंडीय पर्याप्ता विसेषाहीया
४७ बेंद्रिय पर्याप्ता विसेषाहीया
४८ तेंडीय पर्याप्ता विसेषाहीया
४ए पचेंडीय अपर्याप्ता असंखेजगुणा
५० चउरिंडीय अपर्याप्ता विसेषाहीया
५१ तेंद्रीय अपर्याप्ता विसेषाहीया
५२ बेंद्रीय अपर्याप्ता विसेषाहीया

५३ वादर प्रत्येक शरीरि वनस्पति०
पर्याप्ता असखेजगुणा
५४ वादर निगोदा पर्याप्ता असं०
५५ वादर पुढवी काया पर्याप्ता अ०
५६ वादर अपकाया पर्याप्ता अस०
५७ वादर वाउकाया पर्याप्ता असं०
५८ वादर तेउ काया अपर्याप्ता अ०
५९ वादर प्रत्येक शरीरि वणस्सइ०
अपर्याप्ता असखेजगुणा
६० वादर निगोदा अपर्याप्ता अ०
६१ वादर पुढवी अपर्याप्ता अस०
६२ वादर अपकाया अपर्याप्ता अ०

६३ वादर वाउ अपर्याप्ता असखे०
६४ सुक्ष्म तेउ अपर्याप्ता असंखेज०
६५ सुक्ष्म पुढवी अपर्याप्ता विसे०
६६ सुक्ष्म अप अपर्याप्ता विसेपा०
६७ सुक्ष्म वाउ अपर्याप्ता विसेपाही०
६८ सुक्ष्म तेउ पर्याप्ता सखेजगुणा
६९ सुक्ष्म पुढवी पर्याप्ता विसेपाही०
७० सुक्ष्म अप पर्याप्ता विसेपाहीया
७१ सुक्ष्म वाउ पर्याप्ता विसेपाहीया
७२ सुक्ष्म निगोदा अपर्याप्ता अ०
७३ सुक्ष्म निगोदा पर्याप्ता संखे०
७४ अजन्य अनंतगुणा,

७५ पडिवाइ समदिठी अनंतगुणा
७६ सिद्धभगवतजी अनंतगुणा
७७ बादर वणसई पर्याप्ता अनंत०
७८ बादर पर्याप्ता विसेषाहीया
७९ बादर वणस्सइ अपर्याप्ता असं०
८० बादर अपर्याप्ता विसेषाहीया
८१ समुचय बादर विसेषाहीया
८२ सुक्ष्म वणसइ अपर्याप्ता असं०
८३ सुक्ष्म अपर्याप्ता विसेषाहीया
८४ सुक्ष्म वणस्सइ पर्याप्ता संखेज०
८५ सुक्ष्म पर्याप्ता विसेषाहीया
८६ समुचय सुक्ष्म विसेषाहीया

८७ भव्य सिद्धीया विसेषाहीया
८८ निगोदीया जीव विसेषाहीया
८९ वणसइ जीव विसेषाहीया
९० एकेंद्रीया जीव विसेषाहीया
९१ तिर्यंच जीव विसेषाहीया
९२ मिथ्यादृष्टी जीव विसेषाहीया
९३ अविरति जीव विसेषाहीया
९४ सकसाया जीव विसेषाहीया
९५ छद्मस्था जीव विसेषाहीया
९६ सजोगी जीव विसेषाहीया
९७ संसारत्था जीव विसेषाहीया
९८ सव जीवा विसेषाहीया

॥इतिश्री अठाणुं बोलनो अल्प बहुत्व संपूर्ण॥

॥ ॐ नम श्रीवीतरागाय नम ॥ श्रीपार्श्वनाथाय नम ॥ श्रीगणधरेभ्यो नम । अथ श्री छ आ-
राना बोल लिख्यते ॥ दस कोडा कोडि सागरोपमना छ आरा जाणवा । तेहमा पहिलो
आरो ॥ ४ ॥ कोडाकोडि सागरोपमनो जाणवो । ए आरो सुसमसुसम नामा जाणवो । एकलुं
सुखमा सुख जाणवु ॥ ए आरानेविषे ३ गाउनु देहमान । अने ३ पल्योपमनु आउखुं ।
उत्तरते आरे २ गाउनुं देहमान अने २ पल्योपमनुं आउखु जाणवु ॥ ए आरे वर्से छपन
पासली । उत्तरते आरे एकसो अठाविस पासली जाणवी । ए आराने विषे ॥ १ ॥ वज्र ऋषभ
नाराच संघयण ने ॥ १ ॥ समचउरस संठाण जाणवु ॥ स्त्री पुरुषना रूप सोभाग्य । घणा ।
दिपे । ए आराने विषे अठम भक्ते आहारनी इछा उपजे । तीवारे शरीर प्रमाणे आहार करे।
धरतिनी सरसाइ साकर सरखी जाणवि । उत्तरते आरे खांड सरखि जाणवि।ए आराने विषे॥१०॥
दश प्रकारना कल्पवृक्ष मनवछीत सुख पहोचाडे। ते कल्पवृक्षना नाम कहेछे । गाथा । मतं
गायभिगा तुडियगा । दिव जोइ चित्तगा । चित्तरसा मणवेगा । गिहगारा अणियगणाउ ॥१॥
मतंगाय कहेता । मिठा मधुरारसना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ १ ॥ भिंगा कहेतां । रत्नजडाव

भाजनना कल्पवृक्ष थइ आवे ॥ २ ॥ तुडियगा कहेता ॥ ४ए ॥ उगणपंचास जातिनां वाजिंत्रना । क० भ० ॥ ३ ॥ दिव कहेता । रत्नजडाव दीवीओना क० ॥ ४ ॥ जोइ कहेता । सूर्यनी जोतिना क० ॥ ५ ॥ चित्तगा कहेतां । चित्रामणसहित फूलनी मालाना क० ॥ ६ ॥ चितरसा क० चितने गमे तेवा रसवति भोजनना । क० ॥ ७ ॥ मणवेगा क० । रत्नजडाव आभरणना । क० ॥ ८ ॥ गिहगारा क० । बेतालीस भोमिया आवासना । क० ॥ ए ॥ अनियगणाउ क० ॥ रत्नजडाव नाकने वायरे उडे एहवा वस्त्रना । क० १० । ए १० । प्रकारना कल्पवृक्ष मनवांछित सुख आपे । ए आराने विषे छेक थाकता जुगलना आउखा आडा ६ मास रहे । तीवारे जुगल परभवनुं आउखुं बांधे । तिवारे जुगलीणी एक जोडलुं प्रसवे । ते छोरुनी प्रतिपालना ४ए दिन करे । जुगलजुगलीणीने क्षण मात्रनो विजोग न पडे । एकने छींक ने एकने बगासु आवे मरिने देवता थाय । एहना शरीरनो निहरण देवता करे । गति तो १ देवनी जाणवी ॥ ए आराने विषे जुगलीयाने वेर विरोध इर्षा केहेर नही ॥ इति पहिलो आरो संपूर्ण ॥ १ ॥ हवे पहिलो आरो उतरीने । बीजो आरो बेसे । तीवारे अनंता वर्ण गंध रस

फर्सना पर्यव ॥ अनता २ हीणा थया । ए आरो ३ त्रण कोमाकोम सागरोपमनो । सूसम नामे जाणवो । एकलु सुख जाणवुं । ए आराने विषे २ वे गाउनु देहमान अने २ पल्यो- पमनु आउखु । उत्तरते आरे ॥ १ ॥ एक गाउनुं देहमान ने एक पल्योपमनु आउखु । ए आराने विषे वज्ररुषभ नाराच सघयण ॥ समचउरंस स्ठाण ॥ ए आरे ॥ १२८ ॥ एकसो अगावीस पासली॥उतरते आरे ६४ पासली जाणवि।ए आरे ०० भक्ते आहारनी ईछा उपजे ॥ तिवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनि सरसाई खामु सरखि । उतरते आरे गोल सरखि जाणवी । ए आरे १० प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सूख पोचाम्डे । ठेक थाकता।जूगलना आउखा आमा ॥ ६ मास रहे । तिवारे जुगल परभवनु आउखुं वाधे । तिवारे जूगलिणी एक जोमलुं प्रसवे । छेरुनी प्रतिपालणा॥६४ दिन करे । जुगल जुगलीणीने । क्षण मात्रनो विजोग न पमे । एकने छीक ने एकने बगासू आवे । मरिने देवता थाय । एना शरीरनुं निहरण देवता करे ॥ गति १ देवतानि जाणवि । इति बिजो आरो संपूर्ण॥२॥ हवे बीजो आरो उतरीने। त्रिजो आरो बेठो तिवारे । अनता वर्ण गध रस फर्सना पर्यव अनता हीणा थया । ए आरो ॥२॥ बे कोमाकोम

सागरोपमनो जाणवो । ए आरो सूसमडुसमनामा जाणवो । सुख घणु ने डुख थोडु जाणवुं ॥ ए आराने विषे एक गाउनुं देहमान ने ॥ १ एक पल्योपमनु आउखुं जाणवुं ॥ उतरते आरे ५०० पाचसें धनुषनु देहमान ने क्रोम पूर्वनुं आउखु जाणवु । ए आराने विषे वज्र ऋषभ नाराच संघयण । ने समचउरस संठाण जाणवुं । ए आरानेविषे ॥ ६४ चोसठ पासली जाणवी । उतरते आरे ३२ बत्रिस पासली जाणवि । ए आराने विषे चउथ भक्ते आहारनी इछा उपजे ॥ तिवारे शरीरप्रमाणे आहार करे । धरतिनि सरसाइ गोल सरास जाणवि ॥ उतरते आरे थोमेरी जाणवि ॥ ए आरे दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवछीत सूख पोंचामे । ठेक आरता जूगलना आउखा आमा ठ मास रहे । तिवारे जूगल परभवनु आउखु बांधे । तिवारे जूगलिणी एक जोमलु प्रसवे ॥ ते ठोरुनी प्रतिपालणा ४९ दिन करे । जूगल जूगलिणीने रुणमात्रनो विजोग न पमे । एकने छीक ने एकने बगासु आवे तिवारे मरीने देवता थाय । एहना शरीरनो निहरण देवता करे । ए ३ आरा जूगलना जाणवा एकलो जूगल धर्म जाणवो । ए आराने विषे । जरारोग कुरुप नहि प्रतिपूर्ण अंग उपांग विषयसुख

ज्ञोगवे ते दान पुन्यना फल जाणवां ॥ ए आराने विषे ठेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण वर्ष ने साढाआठ महीना बाकी रह्या । तिवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी तेत्रीस सागरोपमनुं आउखुं ज्ञोगवीने चविने । विनिता नगरी । नाजी कुलगर राजा पिता । मरुदेवी मातानी कुखे रुषजदेवस्वामी उपना । सवानव मासे जन्म्या ॥ प्रथम रुषजनुं सुपन देखि रुषजदेव नाम दिधु । ऋषजदेवस्वामीये जूगलाधर्म निवारीने । असि मसि कसि आदि देईने ७२ बोतेर कला अनुकपा निमिते सिखवी ॥ २० विस लाख पूर्व लगे तो कुमरपणे रह्या ॥ ६३ त्रेसठ लाख पूर्व लगे राज्य ज्ञोगव्यु । ज्ञरतने राज्य आपिने । चार हजार पुरुष संघाते सजम लिधो । एक लाख पूर्व लगे संजम पाळ्यो ॥ केवल पामिने । अष्टापद पर्वत उपरे । पद्मासने वेसीने । दसहजार साधुसंघाते स्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वामिना ६ कल्याणिक थया । पेहेले कल्याणीके उत्तरासाढा नक्षत्रमा सर्वार्थसिध विमान थकी चविने मातानि कुखे उपना ॥ १ ॥ बिजे क० उ० जन्म्या ॥ २ ॥ त्रीजे क० उ० राज्य बेठा ॥ ३ ॥ चोथे क० उ० सजम लिधो ॥ ४ ॥ पांचमे क० उ० केवलज्ञान उपनुं

॥ ५ ॥ ए ५ ने ६ तु क० अन्नीच नक्षत्रमा मोक्ष पवास्या । ए ६ ॥ ए आराने विषे गति पाच जाणवि । इति त्रीजो आरो सपूर्णं ॥ ३ ॥ हवे त्रीजो आरो उतरीने चोथो आरो बेठो । तिवारे अनता वर्ण गध रस फर्सना पर्जव हीणा थया । ए आरो १ कोमाकोम सागरोपममा बेतालीस हजार वर्ष उणो जाणवो । ए आरो डुखम सूखम नामे जाणवो । डुख घणु ने सुख थोडुं जाणवुं । ए आराने विषे ५०० पाचसे धनुषनु देहमान ने । क्रोम पूर्वनुं आउखु ॥ उतरते आरे सात हाथनुं देहमान ने । सो वर्ष झाझेरानु आउखु ॥ ए आराने विषे ७ संघयण ने ६ संठाण जाणवा । ए आरानेविषे ३२ बत्रिस पांसलि उतरते आरे १६ सोल पांसली जाणवी । ए आरानेविषे दिन १ प्रते आहारनि इच्छा उपजे । तिवारे ३२ कवलनो आहार करे । धरतिनि सरसाइ सारेरि ॥ उतरते आरे थोमेरी जाणवि । ए आरो ठेक थाकता पंच्योतेर वर्ष ने साडाआठ महिना बाकीरह्यो ॥ तिवारे दशमा देवलोकथि वीस सागरोपमनु आउखु जोगविने चविने । माहणकुम गाम नगरनेविषे । रूषभदत्त ब्राह्मणने घेर देवानंदाजीनी कुंखे । महाविरस्वामी उपना ॥ तिहां स्वामी साडीव्यासी रात रह्या । व्यासिमी राते शक्रेंद्रनो आसन चल्यो । तिवारे

शक्रेंद्रे उपयोग मुकीने जोयु प्रभुने भीखाग कुले उपना दीठा अनते काले अछेरु थयु । तिवारे हरणगमेषी देवताने कह्युं । जे जाओ जइने महाविरस्वामिनो गर्भ साहरे । साहरीने खत्रीकुंड गाम नगरने विषे । सिद्धार्थराजाने घरे । त्रिसला-देवी क्षत्रियाणीनी कुखे मुको । अनें त्रिसलादेविराणीनी कुंखे । पुत्रिपणे गर्भ छे ते देवानंदाजीनी कुंखे मुको ॥ तिवारे हरणगमेषीदेवता तेहतप्रमाण करी । तेज वेलाये आव्यो । आविने भगवतने वदणा नमस्कार करीने कह्यु जे स्वामी रुडुं जाणजो हुं तमारो गर्भ साहरुं छु । तिवारे माता देवानंदाजीने अवस्वापिनी निद्रा मुकिने नाभिथि गर्भ साहरीने त्रिसला-देवीजीनी कुखे मुक्या । तिहा स्वामि सर्वे थईने सवानवमासे जन्म्या । त्रिस वर्ष घरमां रह्या । एकाकीपणे संजम लिधो । संजम लेईने साढावार वर्ष ने एक पखवाडिया सुधि । आकरा तप जप ज्ञान ध्यान करिने । स्वामि केवलज्ञान केवलदर्शन पाम्या । बहोतेर वर्षनुं आउखु भोगविने । चोथा आराना ३ वर्ष ने साढाआठ महिना बाकी रह्या । तिवारे महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या । ते स्वामिना ७ कल्याणिक थया । तेमां ५ कल्याणिक

तो उतराफाल्गुनी नक्षत्रमा थया । ते चवन क० ॥ १ ॥ गर्भ साहरण क० ॥ २ ॥ जन्म क० ॥ ३ ॥ दिक्षा क० ॥ ४ ॥ केवलज्ञान क० ॥ ५ ॥ ए पाच ने । स्वाति नक्षत्रमा निर्वाण पधान्या ॥ ६ ॥ ए आराने विषे गति ५ जाणवि ॥ महाविरस्वामि निर्वाण पधान्या तेज रयते गोतमस्वामिने केवलज्ञान उपनु । ने ते १२ बार वर्ष केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधान्या । तेहज वेलाए सुधर्मास्वामिने केवलज्ञान उपनु । ते ॥ ८ ॥ आठ वर्ष सुधि केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधारया । तेहज वेलाए जंबुस्वामिने केवलज्ञान उपनु ॥ ते ॥ ४४ ॥ चुमालिस वर्षसुधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधान्या । महाविरस्वामि- पछी । ज्ञतेकेनमा ॥ ६४ चोसठ वर्ष सुधि केवलज्ञान रह्यु । चोथा आरानो जन्मेलो होय ते पाचमा आरामा मोक्ष जाय । पांचमा आरानो जन्मेलो पांचमा आरामा मोक्ष जाय नही । जंबुस्वामि मोक्ष पहोंता पछी ॥ १० ॥ दश बोल वीछेद गया ते । परमअवधिज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यवज्ञान ॥ २ ॥ केवलज्ञान ॥ ३ ॥ परिहारविसुध-चारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्मसंपरायचारित्र ॥ ५ ॥ जथाख्यातचारित्र ॥ ६ ॥ पुलाकलब्धी ॥ ७ ॥

क्षायकसमकीत ॥ ८ ॥ आहारकशरीर ॥ ए ॥ जिनकल्पीसाधु ॥ १० ॥ ए ॥ १० बोल ॥ इति चोथो आरो सपूर्ण ॥ ४ ॥ हवे चोथो आरो उतरीने पाचमो आरो बेठो । तिवारे अनंता वर्ण गध रस फर्सना पर्जव हीणा थया । ए आरो दुसम नामा एकलुं दुख जाणवु । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आरानेविषे । ७ हाथनु देहमान ने १ शो वर्ष झाझेरानुं आउखु । उतरते आरे ॥ १ ॥ हाथनु देहमान ने २० वर्षनु आउखुं ॥ ए आरानेविषे ॥ ६ ॥ सघयण ने । ६ संठाण जाणवा । उतरते आरे १ छेवटु सघयण ने ॥ १ ॥ हुंड संठाण जाणवु । ए आरानेविषे ॥ १६ ॥ सोल पासली ॥ उतरते आरे ॥ ८ ॥ आठ पासलि जाणवि । ए आरानेविषे । दिन २ प्रते आहारनि इंछा उपजे । तिवारे शरीर प्रमाणे आहार करे । धरतिनी सरसाइ । काइक सारेरि जाणवि । उतरते आरे कुंभारना निंभाडानी ठारसरखि जाणवी । हवे पाचमा आराना लक्षण कहेछे ॥ मोटानगर ते गामडा सरिखा थाशे ॥ १ ॥ गाम ते मसाणसरिखा थासे ॥ २ ॥ भला कुलना छोरु ते दास दासीपणा करशे ॥ ३ ॥ प्रधान ते लालचि थासे॥४॥राजा ते जमडूसरिखा थाशे ॥५॥ भला कुलनी स्त्री ते लज्यारहित थाशे॥६॥

कुलकुलनी स्त्री वेस्यासरिखि थाशे ॥७॥ पोताना पुत्र पोताने गमे चालशे॥८॥ शिष्य गुरुना अपवाद बोलसे ॥ ए ॥ दुर्जन लोक सुखि थाशे ॥ १० ॥ सजन लोक दूखि थाशे ॥११॥ दुर्जन दुकाल घणा पडशे ॥ १२ ॥ उंदर सर्पादिकनी दाढ घणी थाशे ॥ १३ ॥ ब्राह्मण अर्थना लोभी थाशे ॥१४॥ हिंसाधर्मना परूपक घणा थाशे ॥१५॥ एक धर्मना घणा भेद थाशे॥१६॥मिथ्याति देवता घणा पूजाशे ॥ १७ ॥ मिथ्याति लोक घणा थाशे ॥ १८ ॥ माणसने देवदर्शन दुर्लभ थाशे ॥ १९ ॥ विद्याधरनी विद्याना प्रभाव थोडा हुशे ॥ २० ॥ गोरस दुध दहिमा सरसाइ थोडी हुशे ॥ २१ ॥ बलद प्रमुखना बल आउखा थोडा हुशे ॥ २२ ॥ साधु साध्विने मास कल्प तथा चोमासा कर्या जेवा खेत्र थोडा हुशे ॥ २३ ॥ श्रावकनि ११ पडिमा ॥ साधुनी १२ पडिमा विछेद जाशे ॥ २४ ॥ गुरू शिष्यने भणावसे नहि ॥ २५ ॥ शिष्य अविनीत कलहकारी हुशे ॥ २६ ॥ अधर्मकारि जगडाकारी कलहकारी कुमाणस घणा हुशे सुमाणस थोडा हुशे ॥ २७ ॥ आचार्य आप आपणा गच्छनी परपरा सामाचारि जूदि २ प्रवर्तावसे। तथा मूढ मूर्ख जनने मोहिने मिथ्यात्व पासमा पाडशे ॥ उत्सूत्र भाखशे

आप आपणी प्रससामा राचसे निंदक कुबुद्धि होशे ॥ २८ ॥ सरल जद्रिक न्याइ प्रमाणिक माणस थोमा हुशे ॥ २९ ॥ म्लेछना राज्य घणा हुशे ॥ ३० ॥ हिंदु राजा अल्पऋधिया ने थोमा हुशे ॥ ३१ ॥ मोटा कुलना राजा हुशे ते निच काम करसे । अन्याय अधर्म कुव्य-सनमा रणा राचसे ॥ ३२ ॥ ए ३२ ॥ लक्षण जाणवा । ए आरानेविषे धातु सर्वे विछेद जाशे । लोढानी धातु रहेसे चामफानी मोहरो चालशे । ते धनवंत कहेवासे । ए आराने विषे ॥ १ एक उपवास करसे ते मास खमणसरिखो थासे । ए आरानेविषे । ज्ञान तथा सूत्र सर्वे विछेद जाशे । तेमा दसविकालीकना ॥ अध्ययन ॥ ४ ॥ पहेला रहेशे । ते उपरे ॥ ४ ॥ जीव एकावतारि थाशे । तेना नाम । डुपसह नामा साधु ॥ १ ॥ फल्गुणि नामा साध्वि ॥ २ ॥ नागील श्रावक ॥ ३ ॥ नागश्रि श्राविका ॥४॥ ते आषाढ सुद १५ पूनमने दिने शक्रेन्द्रनु आसन चलसे । तिवारे शक्रेद्र उपयोग मुकि जोसे जे । आज पाचमो आरो उतरीने काले छठो आरो बेससे । तिवारे शक्रेद्र आवसे । ते ॥ ४ ॥ जीवने कहेसे जे काले छठो आरो बेससे । माटे आलवो पडिकमो निसलथाउ । ते ४ जीव सर्व जीवने खमाविने

मयारो करशे । तारे सवर्तक वायरो थाशे । तिणेकरिने पहाड । पर्वत । गढ कोठा वार कुवा सरोवर सर्वे वीसराल थाशे ॥ वैताड पर्वत १ गगा २ सिधु ३ रुषभकुट ४ लवण-निगाली ५ । ए ५ वर्जिने शेष सर्व थानक त्रुटी पडशे ॥ ते ४ जीव समाधि प्रणामे काल करीने देवलोकमा जासे तिवारे ४ बोल विछेद जाशे पेहले पोहरे । जैन धर्म विछेद जाशे ॥ १ ॥ बीजे पोहरे ॥ ३६३ ॥ पाखन्डि मिथ्यातिनो धर्म विछेद जाशे ॥ २ ॥ त्रीजे पोहरे राजनीती विछेद जाशे ॥३॥ चोथे पोहरे बादर अग्नि विछेद जाशे ॥४॥ ए आरे बेसता गति ॥ ५ ॥ जाणवी उतरता ४ गति ते मोक्ष अटकी । इति पाचमो आरो सपूर्ण । हवे पांचमो आरो उतरीने छठो आरो बेसें । तिवारे अनता वर्ण गन्ध रस फर्सना पर्जव हीणा थया । ए आरो २१ एकवीस हजार वर्षनो जाणवो । ए आरो दुखमदुखम नामा एकलु दुःखमादु ख जाणवुं । ए आरे ॥ १ एक हाथनुं देहमान ने २० वर्षनु आउखु। उतरते आरे मूढा हाथनी काया ने १६ सोल वर्षनुं आउखुं जाणवु । ए आराने विषे १ छेवट्ठु संघयण ने हुन्डसठाण जाणवु । उतरते आरे पण इमज जाणवु । ए आराने विषे ॥ ८ आठ पासली ॥ उतरते आरे ॥ ४ चार पासली जाणवी ॥ ए

आराने विषे । ६ वर्षनी स्त्री गर्भ धरस्ये । ते काला कुदर्शनी रोगी ने रिसाल नख ने मूवाला घणा एहवा छोकरा घणा जणसे। ते कुतरीनी परे परीवार झेलो फेरवशे । ए आराने विषे गंगा सिधु नदि रहेसे ॥ तेमा ७२ बील छे ॥ तेमा त्रणत्रण माल छे । तेमा मनुष्य त्रीजच पखी बीज मात्र रहेसे ॥ गंगा सिंधुनो साढीबासठ जोजननो पोहोट छे ॥ तेमा रथना चिला प्रमाणे पहोलु ने गाम्हानि धुरि बूडे एटलु ऊंडु पाणि रहेसे । तेहमा मछ कछ घणा थासे । ते ७२ बीलना मनुष्य साझे ने प्रभाते । मछ कछ काढीने वेलुमा झारसे । सूर्य घणो तपसे टाढ घणी पडशे । तेणे करी सीझवाइ रहेसे । तेहनो आहार करशे । तेना हाडका चामडा तिर्यंच चाटीने रहेशे मानवीना माथानि तुबलीमां पाणी लाविने पिसे । एणिपरे २१ एकविस हजार वर्ष पूरा करसे । ए आराने विषे नवकाररहित समकितरहित व्रत पचखाण रहित हसे ते एहवा छठा आराने विषे आविने अवतरसे। माटे एहवु जाणिने जे जीव जिन धर्म करसे ते जीव सुखी थासे ॥ इति ६ आराना बोल संपूर्ण ॥

ॐ नमः ॥ अथ चोविस जिनांतरा लिख्यते ॥ अढार कोडाकोडि सागरने आंतरे ॥ पेहेला

श्री आदिनाथ तिर्थंकर थया ॥ विनीता नगरीने विषे ॥ नाभी राजा पिता । मरुदेवा राणी माता ॥ हेमवर्ण ॥ वृषभ लंछन । पांचसें धनुषनु देहमान । चोरासी लाख पूर्वनु आउखु ॥ वीस लाख पूर्व तो कुंवर पणे रह्या । त्रेसठ लाख पूर्वनुं राज्य पाळ्यु ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाळी । प्रवर्ज्या लीधापछि एक हजार वरसे । केवलज्ञान उपनुं । साधु । साधवी । श्रावक । श्रावीकारूप । चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ त्रीजा आराना । त्रण वरस ने साडाआठ महिना । छेक थाकता बाकी रह्या ॥ तिवारे महा वद तेरसने दहाडे । दस हजार साधु संघाते अष्टापद पर्वत उपरे स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १ ॥ पहेला श्री आदीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि । पचास लाख कोडि सागरने आंतरे ॥ बीजा अजितनाथ तिर्थंकर थया । अयोध्या नगरीनेविषे । जीतसत्रुराजा पिता ॥ विजयादेवी राणी माता ॥ हेमवर्ण ॥ गज कहेतां हस्तिनु लंछन । साढाचारसें धनुषनु देहमान ॥ बहोतेर लाख पूर्वनुं आउखु ॥ तेमा अढारलाख पूर्व तो कुंवरपणे रह्या । त्रेपन लाख पूर्वनु राज्य पाळ्यु । एक लाख पुर्वनी प्रवर्ज्या पाळी ॥ प्रवर्ज्या लीधापछि । बार वरसे केवलज्ञान

उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने । द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पहोता ॥ २ ॥ हवे बीजा अजितनाथ तिर्थंकर मोक्ष पहोंता पछि ॥ त्रीस लाख क्रोडि सागरने आतरे । त्रीजा संभवनाथ तिर्थंकर थया ॥ सावत्थीनगरीनेविषे ॥ जीतार्थ राजा पिता ॥ सेन्यादेवी राणी माता ॥ हेमवर्ण ॥ अस्व कहेता घोडानुं लछन । चारसे धनुषनु देहमान। साठ लाख पूर्वनु आयूष ॥ पनर लाख पूर्व तो कुवरपणे रह्या । चुमालीस लाख पूर्वनु राज पाळ्यु ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधापछि । चउद वर्से केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध सघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ त्रीजा संभवनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछि । दस लाख क्रोडि सागरोपमने आतरे । चोथा अभीनंदन तिर्थंकर थया । विनीता नगरीनेविषे । संवर राजा पिता । सीधार्था राणी माता । हेमवर्णे ॥ वानरनु लछन । साढा-त्रणसे धनुषनुं देहमान । पंचास लाख पूर्वनु आयुष ॥ तेमां साढावार लाख पूर्व तो कुवरपणे

रह्या । साडत्रीस लाख पूर्वनुं राज पाळ्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधापछि अढार वर्से केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पोहोंता ॥ ४ ॥ हवे चोथा अभीनंदन तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछि ॥ नव लाख कोडि सागरने आंतरे । पांचमा सुमतिनाथ तिर्थंकर थया । कुसलपुरी नगरीने विषे । मेघरथ राजा पिता । सुमंगला देवी राणी माता । हेमवर्णं । क्रौंच पखीनु लंछन ॥ त्रणसें धनुषनुं देहमान । चालीस लाख पूर्वनु आयुष । तेमा दश लाख पूर्व तो कुंवरपणे रह्या ॥ उगणत्रीस लाख पूर्वनु राज्य पाळ्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि । वीस वर्से केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादशांगी गणीनि पेटि आपिने एकहजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ५ ॥ पांचमा सुमतिनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि । नेवुं हजार कोडिसागरने आंतरे । छठा पद्मप्रभ तिर्थंकर थया । कोसंबी नगरीनेविषे । धर राजा पिता । सुसिमा देवी राणी

माता । राते वर्णे । पद्म कमलनु लछन । अढीसो धनुषनु देहमान । त्रिशलाख पूर्वनु आयुष ॥ साढासात लाख पूर्व तो कुवरपणे रह्या । साढीएकविस लाख पूर्वनु राज पाळ्यु ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि । छठ्ठे महीने केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने । त्रिहुतेर साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ६ ॥ छठा पद्मप्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ नव हजार कोडि सागरने आतरे । सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसीनगरीने विषे । पइठ राजा पिता । पृथ्विदेवि राणी माता । हेमवर्णे ॥ साथीयानुं लछन । वसें धनुषनु देहमान । विस लाख पूर्वनुं आयूष । तेमा पाचलाख पूर्व तो कुवरपणे रह्या ॥ चउद लाख पूर्वनु राज पाळ्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ नव मासे केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसागीगणीनी पेटी आपीने । पाचसे साधु सघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ७ ॥ सातमा सुपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछे। नवसे कोडि सागरने आतरे। आठमा चद्रप्रभ ति-

थंकर थया । चंद्रनपुरी नगरीने विषे । महासेन राजा पिता । लखमणादेवी राणी माता । उज्वल वर्ण । चंद्रमानुं लंछन । दोढसो धनुष्यनुं देहमान । दशलाख पूर्वनुं आयुष । तेमां अढीलाख पूर्व तो कुंवरपणे रह्या । साडाछ लाख पूर्वनुं राज पाळ्युं । एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाळी । प्रवर्ज्या लीधा पछि त्रण महिने केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ८ ॥ हवे आठमा श्रीचंद्रप्रभ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि । नेवु कोडि सागरने आंतरे ॥ नवमा श्रीसुविधीनाथ तिर्थंकर थया । काकंदी नगरीने विषे ॥ सुग्रीव राजा पिता । रामादेवि राणी माता । उज्वल वर्ण । मघरमछनुं लंछन ॥ सो धनुष्यनुं देहमान ॥ बे लाख पूर्वनुं आउखुं । तेमां अर्ध लाख पूर्व तो कुंवरपणे रह्या । अर्ध लाख पूर्वनुं राज पाळ्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाळी । प्रवर्ज्या लीधा पछि । चार महीने केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादशांगीगणीनी । पेटी आपीने एक हजार साधु संघाते । स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥ ९ ॥

हवे नवमा सुविधीनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ नव क्रोडि सागरने आतरे ॥ दशमा श्रीसितलनाथ तिर्थंकर थया । भदलपुर नगरीने विषे ॥ दृढरथ राजा पिता । नंदा देवी राणी माता ॥ हेम वर्णे । श्रीवछ साथीयानुं लछन ॥ नेवुं धनुष्यनु देहमान । एक लाख पूर्वनु आउखु । तेमा पालाखपूर्व तो कुंवरपणे रह्या । अर्ध लाख पूर्वनु राज पाल्युं ॥ पालाखपूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछे । त्रण मासे केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी । द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १० ॥ हवे दशमा सितलनाथ तिर्थंकर । निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि ॥ एक क्रोडिसागर तेमा ॥ १०० ॥ सागर । छासठ लाख छविस हजार वरसने उणे आतरे ॥ इग्यारमा श्रेयांसनाथ तिर्थंकर थया । सिंहपुरी नगरीनेविषे । विश्नु राजा पिता ॥ विश्नुदेवी राणी माता । हेम वर्णे । गेंडानु लछन ॥ एसी धनुष्यनु देहमान । चोरासी लाख वरसनु आयूष ॥ तेमा ॥२१॥ लाख वरस कुवरपणे रह्या ॥४२ लाख वरसनु राज पाल्युं ॥२१ लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछि ॰ मासे केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप

चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने एक हजार साधु स्वामी सघाते निर्वाण मोक्षने विषे पोहोंता॥११॥हवे इग्यारमा श्रेयासनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी॥५४ सागरने आतरे ॥ बारमा श्रीवासुपुज्य तिर्थंकर थया। चंपापुरी नगरीने विषे। वसुपुज्य राजा पिता। जयादेवी राणी माता। राते वर्ण। भेंसानु लंछन। सितेर धनुष्यनु देहमान। बोहोंतेर लाख वर्षनुं आउखुं ॥ तेमा अढार लाख वरस तो कुवरपणे रह्या। चोपन लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली॥प्रवर्ज्या लीधा पछि एक मासे केवलज्ञान उपनु। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने। छसे साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १२ ॥ हवे बारमा वासुपुज्य तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि त्रीस सागरने आंतरे ॥ तेरमा श्रीवीमलनाथ तिर्थंकर थया। कंपीलपुर नगरने विषे ॥ कृतवर्म राजा पिता ॥ सामादेवि राणी माता ॥ हेम वर्ण ॥ वराह के० सुवरनु लंछन ॥ साठ धनुष्यनु देहमान ॥ ६० लाख वर्षनु आउखु ॥ तेमां पदरलाख वर्ष तो कुवरपणे रह्या। त्रीस लाख वरसनुं राज्य पाळ्युं ॥ १५ लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली। प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ बे महीने

केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने ॥ ६०० साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पोहोंता ॥ १३ ॥ हवे तेरमा विमलनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछी ए सागरने आतरे ॥ चउदमा अनंतनाथ तिर्थंकर थया ॥ अयोध्या नगरीने विषे ॥ सघसेन राजा पिता । सुजसादेवी राणी माता । हेम वर्ण ॥ सकरानुं लछन । अने पचास धनुष्यनुं देहमान ॥ ३० लाख वरसनु आयुष । तेमा साढासात लाख वरस तो कुवरपणे रह्या । पन्नर लाख वरसनुं राज पाळ्यु । साढासात लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाळी । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ ३ महीने केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघ तिर्थ थापीने । द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने । सातसे साधु सघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ १४ ॥ हवे चउदमा अनतनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोता पछि ॥ चार सागरने आतरे ॥ पनरमा धर्मनाथ तिर्थंकर थया ॥ रत्नपुरी नगरीनेवीषे ॥ भानु राजा पीता ॥ सुव्रतादेवी राणी माता । हेम वर्ण ॥ वज्रनुं लंछन । पिस्तालिस धनुष्यनु देहमान ॥ दस लाख वर्षनुं आउखुं ॥ तेमा अढी

लाख वर्ष तो कुंवरपणे रह्या ॥ सामान्य लाख वरसनु राज पाळ्युं ॥ एक लाख वर्षनी प्रवर्ज्या पाळी ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी त्रे महिने केवलज्ञान पाम्या । साधु साधवी ॥ श्रावक श्रावीका रूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ आपीने ॥ द्वादसांगी गणीनि पेटी आपिने ॥ आठसें साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥ १५ ॥ हवे पन्नरमा धर्मनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी ॥ त्रण सागर तेमा पोणापल्यने उणे आंतरे ॥ सोलमा श्रीशांतिनाथ तिर्थंकर थया ॥ हस्तीनागपुरनगरनेविषे ॥ विश्वसेन राजा पीता ॥ अचिरादेवी राणी माता ॥ हेम वर्ण ॥ मृगनु लंछन ॥ चालीस धनुष्यनु देहमान । एक लाख वर्षनु आउखुं ॥ तेमा पा लाख वर्ष तो कुंवरपणे रह्या ॥ पा लाख वरसनु राज पाळ्युं ॥ पा लाख वर्षनि चक्रवर्तीनि पदवी भोगवी ॥ पा लाख वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ एक महीने केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ आपीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ नवसें साधु संघाते स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥ १६ ॥ हवे सोलमा शांतिनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी ॥ अर्ध पल्यने आंतरे ॥ सतरमा श्रीकुंथुनाथ

तिर्थंकर थया ॥ गजपुर नगरीनेवीषे ॥ सुर राजा पीता ॥ सुरादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ छगल कहेता बोकरानु लछन ॥ पात्रीस धनुषनुं देहमान ॥ पंचाणु हजार वरसनुं आउखुं ॥ तेमां पोणी चोवीस हजार वरस तो कुवरपणे रह्या ॥ पोणी चोवीस हजार वरसनुं राज पाल्युं ॥ पोणीचोवीस हजार वरस चक्रवृत्तिनी पदवी भोगवी ॥ पोणीचोवीस हजार वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि सोल महीने केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु सधाते । स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्‍या ॥ १७ ॥ हवे सतरमा कुंथुनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोता पछी ॥ पा पल्यमाथी एक क्रोड ने १ हजार वर्षने उणे आंतरे ॥ १८ मा श्रीअर-नाथ तिर्थंकर थया ॥ नागपुर नगरीने विषे ॥ सुदर्शण राजा पिता ॥ देवकीदेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ नंदावर्त साथीयानुं लछन ॥ त्रीस धनुषनु देहमान ॥ चोरासी हजार वरसनुं आउखु ॥ तेमा २१ हजार वरस तो कुवरपणे रह्या ॥२१ हजार वर्षनु राज पाल्यु ॥ २१ हजार वर्षनी चक्रवृत्तीनी पदवी पाली ॥ २१ हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ त्रण

रें केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु संघाते स्वामी ॥ निर्वाण मोक्ष पधान्या ॥ १८ ॥ ए अढारमा अरनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछी । एक क्रोड ने एक हजार वरसने आंतरे ॥ १९ मा मल्लीनाथ तिर्थंकर थया ॥ मिथिला नगरीनेविषे ॥ कुंभ राजा पिता ॥ प्रभावति राणी माता ॥ निल वर्ण ॥ कलसानु लंछन ॥ पचिस धनुषनुं देहमान ॥ पंचावन हजार वर्षनु आउखु ॥ तेमा सो वरस तो कुंवरीपणे रह्या ॥ बाकी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि ॥ त्रीजे पोहोरे केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ स्थापिने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने ॥ पांचसें साधु ॥ अने पांचसें साधवी संघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधान्या ॥ १९ ॥ ए ओगणीसमा मल्लिनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ ५४ चोपन लाख वरसने आंतरे ॥ २० मा मुनिसुव्रत तिर्थंकर थया ॥ राजग्रही नगरीनेविषे ॥ सुमित्र राजा पीता ॥ पद्मावति राणी माता ॥ साम वर्ण ॥ काछवानुं लंछन ॥ विस धनुषनु देहमान ॥ त्रीस हजार वर्षनु आउखुं ॥ तेमां साडासात हजार वरस तो कुंवर-

पणे रह्या । पनर हजार वर्षनुं राज पाळ्यु । साढासात हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पाळि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि ॥ इग्यार महीने केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधु सघाले॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥२०॥ हवे वीसमा मुनिसुवृत तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछी ६ लाख वर्षने आंतरे २१ मा नमिनाथ तीर्थंकर थया ॥ मथुरा नगरीनेविषे । विजय राजा पिता ॥ विपुलादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ निलोत्पलकमलनु लछन । पनर धनुषनु देहमान ॥ दस हजार वर्षनु आउखु ॥ अढि हजार वर्ष तो कुवरपणे रह्या ॥ साढाछ हजार वर्षनु राज पाळ्युं ॥ एक हजार वर्षनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि ॥ नव महीने केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी० एक हजार साधु सघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥ २१ ॥ हवे एकवीसमा नमीनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोता पछी । पाच लाख वर्षने आंतरे ॥ २२ मा नेमनाथ तिर्थंकर थया । सोरीपुर नगरीनेविषे । समुद्रविजय राजा पीता ॥ सीवादेवी राणी माता ॥ साम वर्णे । सखनु लछन ॥ दस धनुषनु देहमान ॥ एक हजार वर्षनुं आउखुं ॥ तेमा त्रणसे वर्ष तो कुव-

रपणे रह्या ॥ सातसें वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी चोपन दहाडे केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु० ॥ पांचसें ने छत्रीस साधु सघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २२ ॥ इवे बावीसमा नेमनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ पोणीचोरयासी हजार वर्षने आंतरे ॥ २३ मा पार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसी नगरीने विषे ॥ अश्वसेन राजा पिता ॥ वामादेवी राणी माता ॥ निल वर्णे ॥ सर्पनु लंछन ॥ नव हाथनुं देहमान ॥ सो वर्षनु आउखुं ॥ तेमां ३० वर्ष तो कुंवरपणे रह्या । सितेर वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी चोरयासी दहाडे केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु० । एक हजार साधु सघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २३ ॥ इवे त्रेवीसमा श्रीपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पछी ॥ अढिसें वर्षने आंतरे ॥ चोविसमा श्रीमहावीर तिर्थंकर थया ॥ खत्रीकुंडग्राम नगरनेविषे ॥ सिद्धार्थ राजा पिता ॥ त्रिसलादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ सिंहनु लंछन ॥ सात हाथनुं देहमान ॥ बोहोतेर वर्षनु आउखु ॥ तेमा ॥ ३० वर्ष तो कुंवरपणे रह्या ॥ ४२ बेतालीस वर्षनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछी ॥ साडाबार वर्ष ने एक पखवाडे केवलज्ञान उपनु । साधु

साववी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापिने ॥ द्वादसागीगणीनी पेटी आपिने ॥ कारतक वद अमावास्यानी रात्रे लोकिकपक्षे आसो वद अमावास्यानी रात्रे पावापुरी नगरीनेविषे । चोथा आराना त्रण वर्ष ने साढाआठ महीना बाकी रह्या ॥ त्यारे स्वामीनाथ एकाकिपणे ॥ वे दीवसनुं अणसण करी निर्वाण मोक्षनेविषे पहोता ॥ २४ ॥ ठ० ॥ ए प्रथम पेहला तिर्थंकर श्रीऋषभदेवस्वामी ॥ अने चोविसमा तिर्थंकर श्रीमहाविर स्वामी ए बेहू विचे । एक कोडाकोड सागरोपम झाझेरु ॥ तेमा ४२ बेंतालिस हजार वर्ष उणानुं आतरु जाणवू ॥ इति श्री चोविस तिर्थंकरना आतरा सपूर्ण ॥

ॐ नमः अथ श्रीकर्मप्रकृतिना बोल लिख्यते ॥ पहिलुं ज्ञानावरणीय कर्म ते आंखना पाटा समान ॥ १ ॥ बिजु दर्शनावरणीय कर्म ते राजाना पोलिया समान ॥ २ ॥ त्रिजु वेदनीय कर्म ते मध तथा अफिणे खरड्या खड्ग समान ॥ ३ ॥ चउथुं मोहनीय कर्म ते मदिरापान समान ॥ ४ ॥ पाचमुं आयूष कर्म ते हेड समान ॥ ५ ॥ छठुं नाम कर्म ते चितारा समान ॥ ६ ॥ सातमु गोत्र कर्म ते कुम्भारना चाकडा समान ॥ ७ ॥ आठमु अतराय कर्म ते

राजाना भंडारी समान ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्मं अनत ज्ञानगुण रोक्योछे ॥ १ ॥ दर्शनावरणीय कर्मं अनत दर्शनगुण रोक्योछे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्मं अनत अव्यावाध आत्मिक सुख रोक्यु छे ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्मं क्षायक समकित गुण रोक्योछे ॥ ४ ॥ आयुष कर्मं अक्षय स्थिति गुण रोक्योछे ॥ ५ ॥ नाम कर्म अमूर्तिगुण रोक्योछे ॥ ६ ॥ गोत्र कर्मं अगुरु लघुगुण रोक्योछे ॥ ७ ॥ अंतराय कर्मं अनत आत्मिकशक्तिगुण रोक्योछे ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे बांधे ॥ पहिले बोले नाणपडिणीयाए ते ज्ञानीना भुंडा बोले ॥ १ ॥ बिजे बोले नाणनिन्हवणयाए ते ज्ञानिनो उपकार ओलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आशातना करे ॥ ३ ॥ चउथे बोले नाणअंतराएण ते ज्ञाननि अंतराय पाडे ॥ ४ ॥ पांचमे बोले नाणपउसेण ते ज्ञानि उपर द्वेष करे ॥ ५ ॥ छठे बोले नाणविसंवायणाजोगेणं ते ज्ञानि साथे खोटाकथमा विखवाद करे ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बांधे ते ॥ पाच तथा १० प्रकारे भोगवे। ते पाच किया ते कहेछे। मति ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणीय ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञानावरणीय ॥ ४ ॥ केवलज्ञानावरणीय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ज्ञान

प्रगट थावा दे नहि तथा १० प्रकारे नोगवे ते कहेडे ॥ सोयावरणे ॥१॥ सोयविन्नाणावरणे॥२॥ नेत्तावरणे ॥३॥ नेत्तविनाणावरणे ॥ ४ ॥ घाणावरणे ॥ ५ ॥ घाणविन्नाणावरणे ॥ ६ ॥ रसावरणे ॥ ७ ॥ रसविन्नाणावरणे ॥ ८ ॥ फासावरणे ॥ ए ॥ फासविन्नाणावरणे १० ॥ ए १० प्रकारे नोगवे । हवे ज्ञानावरणीय कर्मनि स्थिति ॥ जघ० अतर्मुहुर्त्तनि । उत्० त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनी । अने अवाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ १ ॥ हवे दर्शनावरणीय कर्म ॥ ६ प्रकारे बाधे ते कहेडे ॥ पहिले बोले दशणपमिणीयाए ॥ १ ॥ दशण निएह्वणयाए ॥ २ ॥ दशण आसायणाए ॥३॥ दशण अंतराएण ॥ ४ ॥ दंशण पडसेण॥५॥ दशण विसवायणाजोगेणं ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बाधे ते ॥ ए प्रकारे नोगवे । ते कहेडे । चक्षुदर्शनावरणीय ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनावरणीय ॥ २ ॥ अवधिदर्शनावरणीय ॥३॥ केवलदर्शनावरणीय ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रानिद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचलाप्रचला ॥८ ॥ थिणद्धिनिद्रा ॥ ए ॥ ए ए प्रकारे नोगवे ॥ दर्शनावरणीय कर्मनि स्थिति जघ० अतर्मुहुर्त्तनि । उत्० ३० कोमाकोमि सागरोपमनि। अने अवाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति

राजाना भंडारी समान ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्मे अनत ज्ञानगुण ढाक्योछे ॥ १ ॥ दर्शनावरणीय कर्मे अनत दर्शनगुण ढाक्योछे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्मे अनत अव्याबाध आत्मिक सुख रोक्यु छे ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्मे क्षायक समकित गुण रोक्योछे ॥ ४ ॥ आयुष कर्मे अक्षय स्थिति गुण रोक्योछे ॥ ५ ॥ नाम कर्मे अमूर्तिगुण रोक्योछे ॥ ६ ॥ गोत्र कर्मे अगुरु लघुगुण रोक्योछे ॥ ७ ॥ अतराय कर्मे अनत आत्मिकशक्तिगुण रोक्योछे ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे बाधे ॥ पहिले बोले नाणपडिणीयाए ते ज्ञानीना शत्रु बोले ॥ १ ॥ बिजे बोले नाणनिन्हवणयाए ते ज्ञानिनो उपकार उलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आशातना करे ॥ ३ ॥ चउथे बोले नाणअंतराएण ते ज्ञाननि अतराय पाडवे ॥ ४ ॥ पाचमे बोले नाणपउसेण ते ज्ञानि उपर द्वेष करे ॥ ५ ॥ छठे बोले नाणविसवायणाजोगेण ते ज्ञानि साथे खोटाझघडा विखवाद करे ॥ ६ ॥ ए छ प्रकारे बाधे ते ॥ पाच तथा १० प्रकारे भोगवे । ते पाच किया ते कहेछे । मति ज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणीय ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञानावरणीय ॥ ४ ॥ केवलज्ञानावरणीय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ज्ञान

प्रगट थावा दे नहि तथा १० प्रकारे जोगवे ते कहेछे ॥ सोयावरणे ॥१॥ सोयविन्नाणावरणे॥२॥ नेत्तावरणे ॥३॥ नेत्तविनाणावरणे ॥ ४ ॥ घाणावरणे ॥ ५ ॥ घाणविन्नाणावरणे ॥ ६ ॥ रसावरणे ॥ ७ ॥ रसविन्नाणावरणे ॥ ८ ॥ फासावरणे ॥ ए ॥ फासविन्नाणावरणे १० ॥ ए १० प्रकारे जोगवे । हवे ज्ञानावरणीय कर्मनि स्थिति ॥ जघ० अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनी । अने अवाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ १ ॥ हवे दर्शनावरणीय कर्म ॥ ६ प्रकारे वाघे ते कहेछे ॥ पहिले बोले दंशणपमिणीयाए ॥ १ ॥ दंशणनिएह्वणयाए ॥ २ ॥ दंशण आसायणाए ॥३॥ दंशण अंतराएण ॥ ४ ॥ दंशण पउसेण॥५॥ दंशण विसवायणाजोगेण ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बांधे ते ॥ ए प्रकारे जोगवे । ते कहेछे । चक्षुदर्शनावरणीय ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनावरणीय ॥ २ ॥ अवधिदर्शनावरणीय ॥३॥ केवलदर्शनावरणीय ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रानिद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचलाप्रचला ॥८ ॥ थिणद्धिनिद्रा ॥ ए ॥ ए ए प्रकारे जोगवे ॥ दर्शनावरणीय कर्मनि स्थिति जघ० अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० ३० कोमाकोमि सागरोपमनि। अने अवाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति

॥ २ ॥ त्रिजुं वेदनीय कर्म तेहना २ ज्ञेद ॥ साता वेदनीय ॥ १ ॥ असाता वेदनीय ॥ २ ॥ तेहमा सातावेदनीय दशप्रकारे बाधे ते कहेठे । पाणाणुकंपयाए ॥ १ ॥ नुयाणुकंपयाए ॥ २ ॥ जीवाणुकंपयाए ॥ ३ ॥ सत्ताणुकंपयाए ॥ ४ ॥ बहुणं पाणाण नुयाण जीवाण सत्ताणं अडुख-णयाए ॥ ५ ॥ असोयणयाए ॥६॥ अजुरणयाए ॥७॥ अतिप्पणयाए ॥८॥ अपिट्टणयाए ॥९॥ अपरियावणयाए ॥१०॥ ए १० प्रकारे बाधे ॥ ते ८ प्रकारे ज्ञोगवे । मणुणासद्दा ॥१॥ मणुणारूवा ॥२॥ मणुणागधा ॥३॥ मणुणारसा ॥४॥ मणुणाफासा ॥५॥ मणसुहया ॥६॥ वयसुहया ॥७॥ कायसुहया ॥ ८ ॥ ए ८ प्रकारे ज्ञोगवे । हवे एहनि स्थिति । जघ० ॥ २ समयनि उत्० ॥ १५ कोमाकोम सागरोपमनि । अबाधा काल करे तो । जघ० अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० दोढ हजार वरसनी स्थिति । हवे असातावेदनीय ॥ १२ प्रकारे बाधे ते कहेठे । परडुखणयाए ॥ १ ॥ परसोयणयाए ॥ २ ॥ परजुरणयाए ॥ ३ ॥ परतिप्पणयाए ॥ ४ ॥ परपिट्टणयाए ॥ ५ ॥ पर परियावणयाए ॥ ६ ॥ बहुणं पाणाण नुयाण जीवाण सत्ताण डुखणयाए ॥ ७ ॥ सोयणयाए ॥८॥ जुरणयाए ॥९॥ तिप्पणयाए ॥१०॥ पिट्टणयाए ॥११॥ परियावणयाए ॥ १२ ॥ ए ॥ १७

प्रकारे बांधे ते ॥ ८ प्रकारे ज्ञोगवे । अमणुणासद्दा ॥ १ ॥ अमणुणारुवा ॥ २ ॥ अमणुणागंधा ॥ ३ ॥ अमणुणारसा ॥ ४ ॥ अमणुणाफासा ॥ ५ ॥ मणडुहया ॥ ६ ॥ वयडुहया ॥ ७ ॥ कायडुहया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ प्रकारे ज्ञोगवे । हवे एहनि स्थिति । जघ० ॥ १ सागरना ॥ ७ ज्ञाग करिये एहवा ॥ ३ ज्ञाग एक पल्य ने असंख्यातमे ज्ञाग उणानि उत्० । त्रिश कोम्राकोम्रि सागरोपमनि । एहनो अबाधा काल ॥ ३ हजार वरसनो ॥ ३ ॥ हवे चउथु मोहनीय कर्म ते ६ प्रकारे बांधे ॥ तिव्वकोहे ॥ १ ॥ तिव्वमाणे ॥ २ ॥ तिव्वमायाए ॥ ३ ॥ तिव्वलोहे ॥ ४ ॥ तिव्वदसणमोहणिज्जे ॥ ५ ॥ तिव्वचरित्तमोहणिज्जे ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बांधे ते २८ प्रकारे ज्ञोगवे । अनंतानुबंधि क्रोध ते पर्वतनि राइ समान ॥ १ ॥ अनंतानुबंधि मान ते पथरना स्थंज्ञ समान ॥ २ ॥ अनंतानुबंधि माया ते वांशनि गांठ समान ॥ ३ ॥ अनंतानुबंधि लोज्ञ ते किरमजना रंग समान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ गति करे नरकनि । स्थिति करे जावजीवनि । घातकरे समकितनि ॥ ४ ॥ अप्रत्याख्यानी क्रोध ते तलावना खोट समान ॥ १ ॥ अप्रत्याख्यानी मान ते हाम्रकाना स्थंज्ञ समान ॥ २ ॥ अप्रत्याख्यानी माया ते घेटाना शृंग समान ॥ ३ ॥ अप्रत्याख्यानी लोज्ञ

ते नगरनि खालना कर्द्दम समान ॥४॥ ए चारे गति करे तिर्यंचनि । स्थिति करे वरस एकनि । घात करे देशव्रतनी ॥८॥ पच्चखाणावरणीय क्रोध ते वेलुनि लिटि समान ॥१॥ पच्चखाणावरणीय मान ते लाकडाना स्तम्भ समान॥२॥पच्चखाणावरणीय माया ते गोमुत्रिका समान॥३॥पच्चखाणावरणीय लोभ ते गाडाना खजन समान ॥४॥ ए चारे गति करे मनुष्यनि ॥ स्थिति करे च्यार मासनि । घात करे सर्व व्रतनि ॥ १२ ॥ सञ्ज्वलनो क्रोध ते पाणिनि लिटि समान ॥१॥ सञ्ज्वलनो मान ते नेत्रना स्तम्भ समान ॥२॥ संज्वलनी माया ते वासनि छोइ समान ॥ ३ ॥ सञ्ज्वलनो लोभ ते । पतंग तथा हलिद्रना रंग समान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ गति करे देवतानि । स्थिति करे पनर दिननि । घात करे केवलज्ञाननि ॥१६॥ ए १६ कषाय । हवे ॥ ए नोकसाय कहेछे । हास्य ॥ १७ ॥ रति ॥ १८ ॥ अरति ॥ १९ ॥ भय ॥ २० ॥ शोक ॥ २१ ॥ दुगछा॥२२॥ स्त्रीवेद ॥ २३ ॥ पुरुषवेद ॥ २४ ॥ नपुसकवेद ॥ २५ ॥ ए चारित्र मोहनीयनि २५ प्रकृति॥ हवे दसण मोहनीयनि ॥ ३ प्रकृति कहेछे । समकित मोहनीय १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीय २॥ समामिथ्यात्व मोहनीय ३ ॥ ए ३ दर्शन मोहनीयनि । एव सर्व मिलि ॥ २८ प्रकृति । हवे

एह्नि स्थिति जघ० अतर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥ ७० कोमाकोमि सागरोपमनी । अबाधा काल करे तो । जघ० अतर्मुहुर्त्तनी । उत्० ॥ ७ हजार वरसनि ॥ ४ हवे पांचमुं आयुष कर्म । सोल प्रकारे बाधे । तेहमाहि । नारकिनुं आयुष ॥ ४ प्रकारे बांधे ते महारंभयाए ॥ १ ॥ महापरिग्गहियाए ॥ २ ॥ कुणिमाहारेणं ॥ ३ ॥ पंचिंदियवहेणं ॥ ४ ॥ तिर्यंचनु आयुष ॥ ४ प्रकारे बाधे ॥ माइलयाए ॥१॥ नियडिलयाए ॥२॥ अलियवयणेणं॥३॥ कुडतोलेकुडमाणे ॥४॥ मनुष्यनु आयुष ॥ ४ प्रकारे बाधे । पगइभद्दयाए॥१॥पगइविणीयाए ॥२॥ साणुकोसयाए॥३॥ अमच्छरियाए ॥ ४ ॥ देवतानु आयुष ॥ ४ प्रकारे बाधे । सरागसंजमेणं ॥ १ ॥ संजमासजमेण ॥ २ ॥ बालतवोकम्मेण ॥ ३ ॥ अकामनिजराए ॥ ४ ॥ ए १६ प्रकारे बाधे । ते ॥ ४ प्रकारे भो-गवे । नारकि देवतानुं आयुष ॥जघ० ॥ १० हजार वर्ष ने अंतर्मुहुर्त अधिकनु ॥ उत्० ॥ ३३ सागर ने पूर्वकोडिनो त्रिजो भाग अधिक ॥ मनुष्य ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ ए २ नु आयुष ॥ जघ० अतर्मुहूर्तनुं । उत्० ॥ ३ पल्य ने पूर्वकोडिनो त्रिजो भाग अधिक ॥ ५ ॥ हवे छठुं नाम कर्म तेहना २ भेद ॥ शुभनाम ॥ १ ॥ अशुभनाम ॥ २ ॥ तेमा शुभनाम कर्म ॥ ४ प्रकारे

वाधे ॥ कायुज्जुयाए ॥ १ ॥ न्नासुज्जुयाए ॥ २ ॥ न्नावुज्जुयाए ॥ ३ ॥ अविसंवायणाजोगेणं ॥४॥ ते ॥ १४ प्रकारे न्नोगवे । इगासद्दा ॥ १ ॥ इगारुवा २ इगागधा ३ इगारसा ४ इगाफासा ॥ ५ ॥ इवागइ ॥ ६ ॥ इगाठिइ ॥ ७ ॥ इठेलावणे ॥ ८ ॥ इगाजसोकित्ती ॥ ए ॥ इठेज्ञगणकम्मवलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे ॥ १० ॥ इठसरया ॥ ११ ॥ कतसरया ॥ १२ ॥ पियसरया ॥ १३ ॥ मणुणसरया ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ प्रकारे न्नोगवे ॥ अशुन्ननाम कर्म ॥ ४ प्रकारे वाधे ॥ कायअणुज्जुयाए ॥ १ ॥ न्नासाणुज्जुयाए ॥ २ ॥ न्नावाणुज्जुयाए ॥ ३ ॥ विसंवायणाजोगेण ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ प्रकारे न्नोगवे । अणिठासद्दा ॥ १ ॥ अणिठारुवा ॥ २ ॥ अणिठागंधा ॥ ३ ॥ अणिठारसा ॥ ४ ॥ अणिठाफासा ॥ ५ ॥ अणिठागइ ॥ ६ ॥ अणिठाठिइ ॥ ७ ॥ अणिठेलावणे ॥ ८ ॥ अणिठाजसोकित्ति ॥ ए ॥ अणिठेन्नठाणकम्मवलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे ॥ १० ॥ हिणसरया ॥ ११ ॥ दिणसरया ॥ १२ ॥ अणिठसरया ॥ १३ ॥ अकंतसरया ॥ १४ ॥ ए १४ प्रकारे न्नोगवे ॥ हवे नाम कर्मनि ॥ ए३ प्रकृति कहेछे ॥ नरकगति ॥ १ ॥ तिर्यंचगति ॥ २ ॥ मनुष्यगति ॥ ३ ॥ देवगति ॥ ४ ॥ एकेंद्रिय जाति ॥ ५ ॥ बेइंद्रियजाति ॥६॥

तेइंद्रिय जाति ॥ ७ ॥ चउरिंद्रिय जाति ॥ ८ ॥ पचेंद्रियजाति ॥ ए॥ उदारिकसरिर ॥ १० ॥ वेक्रियसरिर ॥ ११ ॥ आहारकसरिर ॥ १२ ॥ तेजससरिर ॥ १३ ॥ कार्मणसरिर ॥ ॥ १४ ॥ उदारिकअंगोपाग ॥ १५ ॥ वैक्रियअंगोपाग ॥ १६ ॥ आहारकअंगोपाग ॥ १७ ॥ उदारिकबंधन ॥ १८ ॥ वैक्रेयबंधन ॥ १ए ॥ आहारकबधन ॥ २० ॥ तेजसबधन ॥ २१ ॥ कार्मण बधन ॥ २२ ॥ उदारिकसघातन ॥ २३ ॥ वैक्रियसघातन ॥ २४ ॥ आहारकसंघातन ॥२५॥ तेजससघातन ॥ २६ ॥ कार्मणसघातन ॥ २७ ॥ वज्ररुषभनाराचसघयण ॥ २८ ॥ रुषभनाराचसघयण ॥ २ए ॥ नाराचसघयण ॥ ३० ॥ अर्द्धनाराचसघयण ॥ ३१ ॥ किलकुसंघयण ॥ ३२ ॥ छेवट्ठसघयण ॥ ३३ ॥ समचउरशसठाण ॥ ३४ ॥ निगोहपरिमंमलसंठाण ॥ ३५ ॥ सादिसठाण ॥ ३६ ॥ वामनसठाण ॥ ३७ ॥ कुब्जसठाण ॥ ३८ ॥ हुंमसठाण ॥ ३ए ॥ कालो वर्ण ॥ ४० ॥ निलोवर्ण ॥ ४१ ॥ रातोवर्ण ॥ ४२ ॥ पिलोवर्ण ॥ ४३ ॥ धोलोवर्ण ॥ ४४ ॥ सुरभिगघ ॥ ४५ ॥ डुरभिगंध ॥ ४६ ॥ तिखोरस ॥ ४७ ॥ कमवोरस ॥ ४८ ॥ कसायलोरस ॥ ४ए ॥ खाटोरस ॥ ५० ॥ मिठोरस ॥ ५१ ॥ खरखरोस्पर्श ॥ ५२ ॥ सुंहालो फरस ॥ ५३ ॥

भारि फरस ॥ ५४ ॥ हलुवो फरस ॥५५॥ टाढो फरस ॥५६॥ उन्हो फरस ॥ ५७ ॥ चोपडो फरस ॥ ५८ ॥ लुखो फरस ॥५९॥ नरकानुपूर्वी ॥ ६० ॥ तिर्यंचानुपूर्वी ॥ ६१ ॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥ ६२ ॥ देवतानुपूर्वी ॥६३॥ शुभविहायगति ॥ ६४ ॥ अशुभविहायगति ॥ ६५॥ ए ६५ पिंडप्रकृति थइ । पराघातनाम ॥ ६६ ॥ उस्वासनाम ॥ ६७ ॥ अगुरुलघुनाम ॥६८॥ आतापनाम ॥ ६९ ॥ उद्योतनाम ॥ ७० ॥ उपघातनाम ॥ ७१॥ तिर्थंकरनाम ॥ ७२ ॥ निर्माणनाम ॥७३॥ त्रशनाम ॥ ७४ ॥ वादरनाम ॥ ७५ ॥ प्रत्येकनाम ॥ ७६ ॥ पर्याप्तनाम ॥ ७७ ॥ स्थिर नाम ॥ ७८ ॥ शुभनाम ॥७९॥ सौभाग्यनाम ॥८०॥ सुस्वरनाम ॥८१॥ आदेयनाम ॥ ८२॥ जशोकीर्तिनाम ॥ ८३ ॥ स्थावरनाम ॥ ८४ ॥ सुक्ष्मनाम ॥ ८५ ॥ साधारणनाम ॥ ८६ ॥ अप्रजाप्तनाम ॥ ८७ ॥ अस्थिरनाम ॥ ८८ ॥ अशुभनाम ॥ ८९ ॥ दौर्भाग्य नाम ॥ ९० ॥ डुस्वरनाम ॥ ९१ ॥ अनादेयनाम ॥ ९२ ॥ अजशोकीर्तिनाम ॥ ९३ ॥ ए ॥ ९३ प्रकृति थइ । तेहमा ॥ १० बंधननि अधिक भेलतां ॥ १०३ प्रकृति पण ग्रंथवाला कहेछे । अथवा नामकर्मनि ॥ ४२ पण खरि । गति ॥ १ ॥ जाति ॥ २ ॥ शरीर ॥ ३ ॥ अंगोपांग ॥ ४ ॥ बंधन ॥ ५ ॥

संघातन ॥ ६ ॥ वर्ण ॥ ७ ॥ गंध ॥ ८ ॥ रस ॥ ९ ॥ फरस ॥ १० ॥ संघयण ॥ ११ ॥ संठाण ॥ १२ ॥ आनुपूर्वी ॥ १३ ॥ विहायगति ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ अने प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एवं ४२ थइ । तथा विस्तारे चउदनि ६९ तथा प्रत्येक प्रकृति ८ ॥ त्रशनो दशको १० ॥ स्थावरनो दशको १० ॥ एव विस्तारे ९३ प्रकृति थइ ॥ नाम कर्मनि स्थिति । जघन्य । आठ मुहुर्त्तनि । उत्० । विश कोडाकोडि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल ॥ २ हजार वरसनो ॥ ६ ॥ हवे गोत्रकर्मना २ भेद ॥ उंचगोत्र ॥ १ ॥ निचगोत्र ॥ २ ॥ तेहमा उंचगोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ॥ जाइअमदेण ॥ १ ॥ कुलअमदेण ॥ २ ॥ बलअमदेणं ॥ ३ ॥ रुवअमदेण ॥ ४ ॥ तवअमदेणं ॥ ५ ॥ सुयअमदेणं ॥ ६ ॥ लाभअमदेण ॥ ७ ॥ इस्सरियअमदेण ॥ ८ ॥ ए आठ मद अणकरवे करि उंचगोत्र बांधे । ते ॥ ८ प्रकारे भोगवे ॥ जाइविसिठिया ॥ १ ॥ कुलविसिठिया ॥ २ ॥ बलविसिठिया ॥ ३ ॥ रुवविसिठिया ॥ ४ ॥ तवविसिठिया ॥५॥ सुयविसिठिया ॥ ६ ॥ लाभविसिठिया ॥ ७ ॥ इस्सरियविसिठिया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ प्रकारे भोगवे ॥ १ ॥ हवे निचगोत्र ॥ ८ प्रकारे बांधे ते । जाइमएणं ॥ १ ॥ कुलमएण ॥ २ ॥

जावइस्सरियमएण। ए ८ मद करवे करि निचगोत्र बाधे। ते ॥ ८ प्रकारे न्नोगवे॥जाइविहिणया ॥ जावइस्सरियविहिणया ॥ २ ॥ गोत्रकर्मनि स्थिति। जघ० ॥ ८ मुहुर्त्तनि ॥ उत्० । विश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अवाधा काल बे हजार वर्षनो ॥ ७ ॥ हवे ८ मु। अतराय कर्म। पाच प्रकारे बाधे ॥ दानांतराय ॥ १ ॥ लान्नातराय ॥ २ ॥ लोगातराय ॥ ३ ॥ उवन्नोगातराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ अतराय पाम्वे करि अंतरायकर्म बांधे। ते पाच प्रकारे न्नोगवे ॥ दानातराय ॥ १ ॥ लान्नातराय ॥ २ ॥ न्नोगातराय ॥ ३ ॥ उवन्नोगातराय ॥ ४ ॥ वीर्यांतराय ॥ ५ ॥ ए ५ ॥ पामे नहि। ए अंतरायकर्मनि स्थिति ॥ जघन्य। अतुर्मुहुर्त्तनि। उत्० । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अवाधा काल ॥ ३ हजार वर्षनो ॥ ८ ॥ बाध्यानि ॥ ८५ ॥ प्रकृति ॥ ज्ञानावरणीयनि ॥ ६ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ६ ॥ वेदनीयनि ॥२२॥ मोहनीयनि ॥ ६ ॥ आयुषनि ॥ १६ ॥ नामनि ॥ ८ ॥ गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एव सर्व मिलि ॥ ८५ ॥ प्रकृति बाध्यानि जाणवि ॥ न्नोगव्यानि ए३ प्रकृति ते ज्ञानावरणीयनि ॥ १० ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ए ॥ वेदनीयनि ॥ १६ ॥ मोहनीयनि ॥५॥तेसम्मत्तवेयणिज्जं ॥१॥

।मछत्तवेयणिज्जे ॥ २ ॥ सम्मामिछत्तवेयणिज्जे ॥ ३ ॥ कसायवेयणिज्जे ॥ ४ ॥ नोकसायवेयणिज्जे ॥ ५ ॥ ए ए ॥ आयुपनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ ए७ ॥ गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ए ॥ ए सर्व मिलि ॥ ए३ ॥ प्रकृति जोगव्यानि जाणवी ॥ अथवा ॥ १४७ ॥ प्रकारे पण जोगवे ते ॥ पाच ज्ञानावरणीयनि ए ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ए ॥ वेदनीयनि ॥२॥ मोहनीयनि ॥ ए७ ॥ आयुपनि ॥४॥ नामकर्मनि ॥ ए३ ॥ गोत्रकर्मनि ॥ २ ॥ अंतरायनि ॥५॥ एवं सर्व मिलिने ॥१४७॥प्रकृति जाणवि । तथा वधन नामकर्मनि ॥१०॥ प्रकृति ग्रंथांतरे कहिवे ते नेलवता ॥ १५७ ॥ प्रकृति पण थाय ॥ अथवा मुलप्रकृति ॥ ७ ॥ तेहनि उत्तर प्रकृति ॥ ३१ ॥ ज्ञानावरणीयनि ॥ ए ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ए ॥ वेदनीयनि ॥ २ ॥ मोहनीयनि ॥ २ ॥ आयुपनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २ ॥ गोत्रनि ॥ २ ॥ अतरायनि ॥ ५ ॥ एव ॥ ३१ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार ॥ १४७ कर्मप्रकृति जाणवि । ए वोल सिद्धात प्रमाणे छे ॥ इति कर्मप्रकृतिना वोल समाप्त ॥

ॐ नम. सिद्ध॥ सेकित ॥धम्मेझाणे २ ॥ चउविहेचउपरूयारेपन्नते ॥ तजहा ॥ आणाविजए॥१॥ अवायविजए ॥ २ ॥ विवागविजए ॥ ३ ॥ सठाणविजए ॥ ४ ॥ धम्मस्सणझाणस्स चत्तारिल

रकणा पन्नत्ता ॥ तजहा ॥ आणारुइ ॥ १ ॥ निसग्गरुइ ॥ २ ॥ सूतरुइ ॥३॥ उवएसरुइ ॥४॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारि आलवणापन्नत्ता ॥ तजहा ॥ वायणा ॥१॥ पुछणा ॥ २ ॥ परियट्ट णा ॥ ३ ॥ धम्म कहा ॥ ४ ॥ धम्मस्सणंझाणस्स ॥ चत्तारिअणुप्पेहा पन्नत्ता ॥ तजहा एगत्ता णुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसाराणुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहेछे ॥ धर्मध्यानना च्यार भेद ॥ तेमाहि पहिला भेदनो अर्थ कहीएछे ॥ आणा विजाए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते । ए वीतरागनी आज्ञा जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पच महाव्रत । भीखुनी बार पडिमा। शुभध्यान । शुभयोग ॥ ज्ञान दर्शण चारित्र तप ॥ छकायनी रक्षा । ए । वीतरागनी आज्ञा आराधवी ॥ तिहा समय मात्रनो प्रमाद न करवो ॥ चतुर्विध तीर्थना गुणकीर्त्तन करवां ॥ ए धर्म ध्याननो पहेलो भेद कह्यो॥१॥हवे धर्मध्याननो बीजो भेद कहीयेछे॥अवायविजए कहेतां ससा-रमाहि जीव जेहथकि दुख पामेछे तेहनो विचार चींतववो ॥ तेहनो । ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अविरति ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ असुभयोग ॥ तथा अढार पापस्थानक ॥ छकायनी हिंसा । एह

दुखना कारण जाणी ॥ एहवो आश्रवमार्ग गमीने ॥ संवरमार्ग आदरवो ॥ जेहथी जीव दु ख न पामे ॥ ए धर्मध्याननो बीजो भेद कह्यो ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननो त्रीजो भेद कहेछे ॥ विवागविज्जए ॥ कहेता ॥ जीव जे सुख दु ख भोगवेछे ॥ ते स्याथकी तेहनो विचार चितववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवे रसेकरि पूर्वे ॥ जेहवा शुभाशुभ ज्ञानावरणीयादिक कर्म उपार्ज्यांछे ॥ ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी जीव तेहवा सुख दु:ख अनुभवेछे ॥ ते अनुभवताथका ॥ कोइ उपर राग द्वेष नाणीये ॥ समताभाव आणीए ॥ मन वचन कायाना शुभ योगसहित श्री जिनधर्मने विषे प्रवर्तिये ॥ जिम निरावाध परम सुख पामीए ॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो भेद कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननो चोथो भेद कहीये छीये ॥ सठाणविज्जए कहेतां ॥ त्रण लोकना आकारनु स्वरुप चिंतवीए ॥ तेनु ए स्वरुप ॥ ए लोक सुपइठकने आकारे छे ॥ जीव अजीवे संपूर्ण भर्योछे ॥ असंख्यात जोयणनी कोडाकोडिप्रमाणे त्रीछो लोक छे ॥ तिहां असंख्याता द्वीप समुद्र छे ॥ तथा असंख्याता वाणव्यंतरना नगर छे ॥ तथा असंख्याता ज्योतषीना विमान छे ॥ तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी छे ॥ तीहां अढी द्वीपमाहि तिर्थंकर जघन्य २० ॥ उत्कृष्टा एकसो

सितेर होय ॥ तथा केवलि जघन्य पृथक् कोमि ॥ उत्कृष्टा पृथक् कोमि तथा साधु जघन्य पृथक् सहस्र कोमि ॥ उत्कृष्टा पृथक् सहस्र कोमि ॥ तेहने वंदामि ॥ नमसामि ॥ सक्कारेमि ॥ सम्माणेमि ॥ कल्लाण ॥ मंगल ॥ देवयं ॥ चेइय ॥ पज्जुवासामि ॥ तथा त्रिछालोकमांहि ॥ असंख्याता श्रावक श्राविका छे ॥ तेहना गुणग्राम करिये ॥ ते त्रिछालोकथकी असंख्यात गुणो अधिको उर्ध्वलोक छे ॥ तिहां बार देवलोक ॥ नव ग्रैवेयक । पाच अनुत्तरविमान सर्व मळने ॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान छे ॥ तथा ते उपर सिद्धसिला छे ॥ तिहां सिद्धभगवंत विराजे छे ॥ तेहने वंदामि ॥ जावपज्जुवासामि ॥ ते उर्ध्वलोकथी कांइक विशेषेअधिक अधोलोक छे ॥ तिहां चोरासी लाख नरकावासा छे ॥ सात कोमि बहुतेर लाख भवनपतिना भवन छे ॥ एहवा त्रिण लोकनां सर्व थानक समकित सहित करणी विना सर्व जीवे अनंतीवार जन्म मरणेकरी फरसी मूक्या छे ॥ एम जाणी समकितसहित श्रुत अने चारित्रधर्मनी आराधना करीये ॥ जिम अजरामर पद पामीये ॥ ए धर्मध्याननो चोथो भेद कह्यो ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ लक्षण ॥ तेमा धर्मध्याननु पहिलुं लक्षण कहियेछे ॥ आणारुइ कहेता वीत-

रागनी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये ॥ ए धर्मध्याननुं पहेलुं लक्षण कह्यु ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननुं बीजु लक्षण कहियेछे ॥ निसर्गरुइ कहेता ॥ जीवने सन्नावेज तथा जातिस्मरणादिक ज्ञानेकरी श्रुतसहित चारित्रधर्म करवानी रुचि उपजे ॥ तेहने निसर्ग रुचि कहिये ॥ ए धर्मध्याननु बीजूं लक्षण कह्युं ॥ हवे धर्मध्याननु त्रीजूं लक्षण कहिएछीये ॥ सुत्तरुइ कहेता ॥ सूत्रना बे न्नेद ॥ अंगपविठ ॥ १ ॥ अने अंगबाहिर ॥ २ ॥ अंगपविठ ते आचारांगादि १२ अंग ॥ तेमां ॥ ११ अंग ॥ कालिक ॥ अने बारमुं अंग दृष्टिवाद ते । उत्कालिक १ अंगबाहिरना २ न्नेद ॥ आवस्यक १ अने ॥ आवश्यक व्यतिरिक्त २ ॥ आवश्यक ते सामायकादिक ६ अध्ययन ते उत्कालिक ॥ तथा उत्तराध्ययनादिक कालिकसूत्र ॥ तथा उववाइप्रमुख उत्कालिक सूत्र सान्नलवा तथा न्नणवानी रुचि उपजे ॥ तेहने सूत्ररुचि कहिए ॥ ए धर्मध्याननु त्रिजु लक्षण कह्यु ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननु चोथुं लक्षण कहियेछे ॥ उवएसरुइ ॥ उवएसरुइ कहेता ॥ अज्ञानेकरी उपार्ज्यां कर्म ॥ ते ज्ञानेकरी खपावीए ॥ ज्ञाने करी नवा कर्म न बांधीए । मिथ्याते करी उपार्ज्योकर्म ते समकितेकरी खपावीए ॥ समकिते

करी नवा कर्म न बांधीए ॥ २ ॥ अविरतेकरी उपार्ज्यांकर्म ते विरतेकरी खपावीए ॥ विरतेकरी नवा कर्म न बांधीए ॥ ३ ॥ प्रमादेकरी उपार्ज्यांकर्म ते अप्रमादेकरी खपावीए ॥ अप्रमादेकरी नवा कर्म न बांधीए ॥४॥ कषायेकरी उपार्ज्यांकर्म ते कषायने अणकरवे करीने खपावीए। कषायने अण-करवे करीने नवा कर्म न बांधीए ॥ ५ ॥ असुभ योगेकरी उपार्ज्यांकर्म ते सुभयोगेकरी खपावीए ॥ शुभ योगेकरी नवा कर्म न बांधीए ॥ ६ ॥ पाच इंद्रीयना स्वादरूप आश्रवेकरी उपार्ज्यांकर्म ते तपरूप संवरेकरी खपावीए ॥ तपरूप संवरेकरी नवा कर्म न बांधीए ॥ माटे अज्ञानादिक आ-श्रवमार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवरमार्ग आदरवो ॥ एहवो तीर्थंकरनो उपदेश सांभलवानी रुचि उपजे ॥ तेहने उपदेशरुचि कहीए ॥ तथा उगाढरुचि पण कहीए। ए धर्मध्याननु चोथु लक्षण कह्युं ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना च्यार आलंबन कहिएछे ॥ वायणा ॥ १ ॥ पुछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥ धर्मकथा ४ ॥ हवे धर्मध्याननु पहेलु आलंबन कहेछे ॥ वायणा ते केहने कहिए ॥ विनयसहित ज्ञान तथा निर्जराने अर्थे ॥ सूत्रना अर्थना जाण गुर्वादिक समीपे सूत्र तथा अर्थनी वाचणी लीजीयें ॥ तेहने वायणा कहिए ॥

हवे धर्मध्याननूं वीजू आलवन कहिए छीए ॥ पूछणा ते केहने कहिये ॥ अपूर्वज्ञान पामवाने अर्थे ॥ तथा जिनमत दीपाववाने अर्थे ॥ तथा सदेह निवारवाने अर्थे ॥ तथा परनी परीक्षा लेवाने अर्थे यथायोग्य विनयसहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए ॥ तेहने पूछणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननुं वीजूं आलवन कह्युं ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननुं त्रीजू आलवन कहिएछे ॥ परियट्टणा ते केहने कहिए ॥ पूर्वे जे जिनभाषित सूत्र अर्थ भएयाछे ॥ ते असखलित करवाने अर्थे ॥ तथा निर्जराने अर्थे सुद्ध उपयोगसहित सुद्ध सूत्र अर्थनी वारवार सझाय करीए तेहने परियट्टणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननूं त्रीजु आलंवन कह्यु ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननू चोथु आलंवन कहीएछे ॥ धर्मकथा ते केहने कहिए ॥ वीतरागे जे भाव जेहवा परुप्याछे ते भाव पोते तेहवा लहीने ग्रहीने विसेषे निश्चय करीने सका कंखा वितिगिछ रहितपणे पोतानी निर्जराने अर्थे परना उपगारने अर्थे सभा मध्ये ते भाव तेहवा परुपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ एहवी धर्मकथा कहेता थका अने साभलीने सद्दहताथका ॥ ते वेहु वीतरागनी आज्ञाना आराधक होय ॥ ते धर्मकथा सवररूपीउवृक्ष सेवीए ॥ जिम मनवछित सुख पामीये ॥ ते संवररुपी-

उवृक्ष वखाणीएछे ॥ ते संवररूपीउवृक्ष केहवो छे ॥ विशुद्ध समकितरूप मूल छे जेहनुं ॥ १ ॥ धीर्यरूप कंद छे जेहनो ॥ २ ॥ विनयरूप वेदिका छे जेहनी ॥ ३ ॥ तीर्थंकर तथा च्यार तीर्थना गुण कीर्तनरूप खंध छे जेहनो॥४॥ पाच महाव्रतरूप मोटी शाखा छे जेहनी ॥ ५ ॥ पंचवीस नावनारूप त्वचा छे जेहनी ॥ ६ ॥ शुनध्यानने शुनयोगरूप प्रधानपल्लवपत्र छे जेहना ॥ ७ ॥ गुणरूप फूल छे जेहनां ॥ ८ ॥ सीयलरूप सुगंध वासना छे जेहनी ॥ ए ॥ आश्रवरहीत फल छे जेहनां ॥ १० ॥ मोक्षरूप प्रधानवीज छे जेहनुं ॥ ११ ॥ मदरगिरीना शिखरउपरे जिम चलिका विराजे छे तिम समकितीना हृदयमा संवररूपिउवृक्ष वीराजे छे ॥ १२ ॥ एहवा सवररूप वृक्षनी शीतल छाया जेहने परिणमे तेहना नवोनवना पाप टले ॥ ने ते परम अतुल सुख पामे इत्यादिक ४ प्रकारनी कथा ॥ अखेवणी ॥१॥ विखेवणी ॥ २ ॥ सवेगणी ॥ ३ ॥ निवेगणी ॥ ४ ॥ ए च्यार कथा विस्तारपणे कहिए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ ए धर्मध्याननुं चोथु आलंबन कह्युं ॥ ४ ॥ अखेवणी प्रमुख ४ कथानो विस्तार ॥ चोथे ठाणे उद्देसे बीजे सूत्र ५८ मा मध्ये छे ॥ हवे धर्मध्याननी च्यार अणुप्पेहा कहिएछे ॥ अणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य

तेहनो स्वभावसरूप जाणवाने अर्थे सूत्रना अर्थ विस्तारे चींतवीए ॥ तेहने अणुप्पेहा कहिए ॥ हवे धर्मध्याननी पहिली अणुप्पेहा कहे छे॥एकत्त्वाणुप्पेहा ते केहने कहिए॥जीव असंख्यात प्रदेसी अरुपी सदासउपयोगी ते॥ चैतन्यरूप एहवो एक माहरो आत्मा निश्चय नये छे॥तिम सर्व आत्मा निश्चय नये एहवाज छे ॥ अने व्यवहार नये एहवो आत्मा अनादि कालनो ते ॥ अचैतनजरूवर्णादि २० रूपसहित पुदगलनो सयोगीथको ॥ त्रस ने थावर ए २ रूप लेइने अनेक नृत्यकार नट्टुयानीपरे अनेक रूप ॥ अनेक ठाढे प्रवर्त्ते छे॥ ते त्रसनो त्रसरूपे प्रवर्त्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो बे हजार सागर जाझेरासूधी रहे ॥ अने थावरनो थावरपणे प्रवर्त्ते तो जघन्य अंतर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो अनती उत्सर्पणी अवसर्पणी कालथी॥खेत्रथी अनता लोक प्रमाण अलोकना आकास प्रदेस॥तेटला काल चक्र॥उत्सर्पणी अवसर्पणी जाणवी॥तेहना असंख्याता पुद्गल परावर्त्तनथाय॥अंगुलने असंख्याल-मे भागे आकास प्रदेस आवे ॥ तेटला असंख्याता पुद्गल परावर्त्तन थाय॥थावरमध्ये पुद्गल लेइ खेल्यो ॥ ए व्यवहार नयथी जीव जाणीये ॥ १ ॥ वली त्रस ॥ थावरमध्ये रह्यो थको स्त्री१ पुरुष२ नपुसक॥३॥वेदे पुद्गलने संयोगे खेल्यो॥प्रवर्त्यो ॥ अनेक रूप नवा लाव्यो॥तिहां स्त्रीपुरुषना रूप

कोण कोण रीतना लाव्यो ते कहेछे॥कोइक प्रस्तावे देव देवीपणे॥तत्र देवीपणे ज्ञवनपत्यादिक इसान देवलोकसूधी इन्द्रनी इन्द्राणी सुरूपवती अपछरा थई ॥ जघन्य १० हजार वरस उत्कृष्टा ५५ पल्योपम देवांगनाने रूपे अनंतिवार ए जीव खेल्यो ॥ पुरुषमध्ये देवतापणे ज्ञवनपत्यादिक जाव नवमानवग्रैवेयकसूधी महर्धिक देव ॥ महाशक्तिवंत इन्द्रादिक लोकपाल प्रमुखपणे रूपवंत देदीपमान वंछित ज्ञोग संयोगपणे प्रवर्त्यों ॥ जघन्य ॥ १० ॥ हजार वर्ष उत्कृष्टा ३१ सागरोपम एम अनंतीवार ज्ञोगी हूउ ॥ शंकेडे एकज्ञवमांहि ७ पल्योपमनी बाविस कोडाकोड पंचासी लाख कोड एकोत्तर हजार कोड च्यारसें अठावीस कोड सतावन लाख चउद हजार वर्से अठ्यासी उपर पांच पल्यनी ७ एव एटली देवि ज्ञोगवी तोपण तृप्ति न पाम्यो ॥ मनुष्यमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद देवकुरु उत्तरकुरुमध्ये युगल युगलणी थयो ॥ तिहां महा मनोहररूप मनवंछित सुख ज्ञोगव्यां ॥ दस प्रकारना कल्पवृक्ष मनवंछित सुख पहुचाडे॥स्त्रीपुरुषने क्षणमात्रनो वियोग पडे नहि ॥ ३पल्योपम निरंतर सुख विलस्या ॥ हरिवास रमकवासमध्ये२पल्योपम॥हेमवय क्षेत्र एरणवय क्षेत्रमध्ये१पल्य ॥ छपन अंतरद्वीपामध्ये पल्योपमनो असंख्यातमो ज्ञाग ॥ जुगल पुरुष

युगलणी स्त्रीवेदपणें अनतीवार ॥ स्त्रीवेद पुरुषवेदना रूप लेइ खेल्यो पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वली चक्रवर्तिने घरे स्त्रीरत्नपणे लक्ष्मी सरिखा रूप अनतीवार ॥ स्त्रीवेद पुरुषवेदना रूप लेइ खेल्यो ॥ पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वासुदेव मंमलीक राजा ॥ प्रधान व्यवहारीयाने घरे ॥ स्त्रीवेद ॥ मनोज्ञ सुख वंछित ज्ञोग ॥ दीर्घ पूर्व कोमादिकना आउखापणे प्रवर्त्यों ॥ वलि तेहज जीव मनुष्य मध्ये डुर्जागीकुल ॥ दरीद्री ज्जर्त्तार स्त्री पण अलखरूप डुर्जागिणीपणे ए जीव नटवापणे प्रवर्त्यों ॥ तोहि मनुष्यपणे स्त्रीपुरुषनो अवतार पूरो न थयो ॥ वली तीर्यंच पचेंद्रीयमध्ये जलचरादि ए मध्ये स्त्रीवेदे पुरुषवेदे प्रवर्त्यों ॥ वली ते जीव सात नरक ॥ पाच एकेंद्रीय ॥ त्रिण विगलेंद्रीय तथा असञ्ज्ञी तिर्यंच मनुष्यमध्ये नियमा नपुंसकवेद होय अने संज्ञीतिर्यंच मनुष्यमध्ये पण नपुसक होय ते सर्वे नपुंसकवेदे ए जीव प्रवर्त्यों परमार्थे लागट स्त्रीवेदे प्रवर्त्यों ते उत्कृष्टा एकसो दस पल्य अने प्रथक् पूर्व कोमसुधी स्त्रीवेदे खेल्यो ॥ जघन्य आउखा ज्ञोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ पुरुषवेदे उत्कृष्टो पृथक् सो सागर जाजेरासूधी पुरुषवेदमध्ये खेल्यो ॥ जघन्य आउखा ज्ञोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ नपुंसकवेद उत्कृष्टो अनता कालचक्र ॥

ॐ नम अथ श्री पाचवोल लिख्यते ॥ पहिलो नारकिनो द्वार ॥ १ ॥ बिजो भवनपतिनो द्वार ॥ २ ॥ त्रिजो वाणव्यंतरनो द्वार ॥ ३ ॥ चउथो ज्योतिषीनो द्वार ॥ ४ ॥ पाचमो वेमानिकनो द्वार ॥ ५ ॥ हवे पहिलो नरकनो द्वार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे गोत्र ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ ॥ ३ ॥ चोथे पिन्ड ॥ ४ ॥ पाचमे पोलार ॥ ५ ॥ छठे अलोक ॥ ६ ॥ सातमे आधार ॥ ७ ॥ आठमे आतरा ॥ ८ ॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण ने आवलिकाबंध ॥ ९ ॥ दशमे अधकार ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकिने उपजवाना स्थानक ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्रवेदना ॥ १२ ॥ तेरमे पनरपरमाधामिना नाम ॥ १३ ॥ चउदमे जीवअजीवना परिणाम ॥ १४ ॥ पनरमे नारकिने अवधिनुं देखवु ॥ १५ ॥ सोलमे संघयण ॥ १६ ॥ सतरमे कुण जीव केइ नरके उपजे ॥ १७ ॥ अढारमे ॥ ४ ॥ बोल कहेवाशे ॥ पहिले नाम । घमा ॥ १ ॥ वशा ॥ २ ॥ शिला ॥ ३ ॥ अजणा ॥ ४ ॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ माघवइ ॥ ७ ॥ ए साते उघाछत्रने आकारे छे ॥ १ ॥ बिजे गोत्र कहियेछे ॥ रत्नप्रभा ॥ १ ॥ शर्करप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पकप्रभा ॥ ४ ॥ धुमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥ ७ ॥ रत्नप्रभा ते स्यामाटे सोलहजार

जोजननो खरकाण्ड छे ॥ ते ॥ सोलजातिना रत्नमय छे । एकेकु रत्न हजार हजार जोजननु जाडपणे छे ॥ वळ्या कोयलाशरिखा छे। तेमाहि ८० हजार जोजननो आववल छे ॥ अने ॥ ८४ हजार जोजननो पंकवल छे ॥ इम त्रणेकाण्ड थइने ॥ एकलाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिण्ड जाणवो ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ कहेछे ॥ रत्नप्रभा ते रत्ननो पिण्ड ने रत्ननी पिठिका। ते रत्न कहवाछे । श्यामवर्णावळ्याकोयला सरिखा छे ॥ १ ॥ शर्करप्रभा ते काकरानो पिण्ड ने काकरानिपिठिका ते कांकरा केहवाछे । लुखा निरसगोखरुना फरससरिखो फरसछे ॥ २ ॥ वालुप्रभा ते वेलुनो पिण्ड ने वेलुनि पिठिका ते वेलु केहविछे । उन्हि धगधगति । अग्निनिपरे जाज्वल्यमान छे ॥ ३ ॥ पकप्रभा ते कादवनो पिंण्ड ने कादवनि पिठिका ते कादव केहवोछे । ले हिमय परुमय ने वज्रमय काटाछे ॥ ४ ॥ धूमप्रभा ते धुमाडानो पिंण्ड ने धूमाडानि पिठिका ॥ त्रे धूमाडो केहवोछे तिखो तमतमो ने दरदरोछे ॥ ५ ॥ तमप्रभा ते अधकारनो पिण्ड ने अधकारनी पिठिका ॥६॥ तमतमाप्रभा ते विशेषे अंधकारनो पिण्ड ने अधकारनि पिठिका ॥ ७ ॥ ३ ॥ चोथो पिण्ड ने पाचमो पोलार ए बे द्वार भेला कहेछे। पहिलि नरके । एक लाख

ने एशी हजार जोजननो प्रथवीनो पिन्ड छे। तेह्मांथि एकहजार जोजन उचुं मुकिये ॥ एक हजार जोजन निचु मुकिये ॥ विचे १ लाख ने अगोत्तेर हजार जोजननी पोलार छे ॥ ते मांहिं १३ पाथ्रडा ने ३० लाख नरकावासा छे ॥ १ ॥ बीजी नरके एक लाख ने बत्रिश हजार जोजननो प्रथवीनो पिन्ड छे। तेह्माथि एकहजार जोजन उचु मुकिये ॥ एकहजार जोजन निचु मुकिये ॥ विचे एकलाख ने ३० हजार जोजननि पोलार छे ॥ तेमाहि ११ पाथ्रडा ने ॥ २५ लाख नरकावासाछे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके एकलाख ने अठ्याविशहजार जोजननो प्रथवी पिंड छे। तेह्माहि ॥ १ हजारजोजन उत्तुं मुकिये ॥ १ हजारजोजन निचुं मुकिये ॥ विचे ॥ एकलाख ने छविशहजार जोजननी प्रथविनो पिन्ड छे। तेमाहि ॥ ९ पाथ्रडा ने ॥ १५ लाख नरकावासा छे ॥ ३ ॥ चोथि नरके एकलाख ने ॥ २० हजार जोजननो प्रथवीनो पिन्ड छे ॥ तेह्माथि ॥ १ हजार जोजन उचुं मुकिये ॥ १ हजार जोजन निचुं मुकिये ॥ विचे एकलाख ने १८ हजार जोजननि पोलार छे। तेमाहि ॥ ७ पाथ्रडा ने ॥ १० लाख नरकावासा छे ॥ ४ ॥ पाचमि नरके एकलाख ने अढारहजार जोजननो पृथ्वीनो पिन्ड छे। तेह्माथि एकह-

जार जोजन उचु मुकिये एकहजार जोजन निचु मुकिये । विचे एकलाख ने १६ हजार जोज-
ननि पोलार छे । तेहमाहि ॥ ५ पाथरा ने ॥ ३ लाख नरकावासा छे ॥ ५ ॥ छठी नरके
एकलाख ने ॥ १६ हजार जोजननो प्रथवीनो पिण्ड छे ॥ तेहमाथि । एकहजार जोजन उंचुं
मुकिये ॥ एकहजार जोजन निचु मुकिये ॥ विचे १ लाख ने ॥ १४ हजार जोजननि पोलार छे ॥
तेहमाहि ॥ ३ पाथरा ने १ लाखमा ॥ ५ उणा ॥ नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १
लाख ने ॥ ८ हंजार जोजननो पृथवीनो पिण्ड छे ॥ तेहमाथि । साढावावनहजार जोजन उचुं
मुकिय ॥ साढावावनहजार जोजन निचुं मुकिये ॥ विचे ३ हजार जोजननो जाडो एक पाथडो
छे तेहमांहि ॥ ५ नरकावासा छे ॥ ७ ॥ ५ ॥ छठे अलोक कहेछे ॥ पहिली नरकथि ॥
१२ जोजन जइये तिवारे त्रिछो अलोक आवे ॥ १ ॥ विजी नरकथि ॥ १२ जोजन ने ॥ २
त्रियाभागे त्रिछो अलोक आवे ॥ २ ॥ त्रिजी नरकथि ॥ १३ जोजन ने ॥ १ त्रियाभागे त्रिछो
अलोक आवे ॥ ३ ॥ चोथि नरकथि ॥ १४ जोजने त्रिछो अलोक आवे ॥ ४ ॥ पाचमिथी ॥ १४
जोजन ने २ त्रियाभागे त्रिछो अलोक आवे ॥ ५ ॥ छठीथि ॥ १५ जोजन ने १ त्रिया भागे

त्रिठो अलोक आवे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १६ जोजने त्रिठो अलोक आवे ॥ ७ ॥ ६ ॥ सातमे आधार कहेछ । साते नरक स्थाने आधारे रहिठे ॥ २० हजार जोजननो घनोदधि जारूपणे ठे ॥ असंख्याता जोजननो लावपणे पहोलपणे ठे ॥ असंख्याता जोजननि परिधि ठे ॥ ते ध्रिणा घी सरिखो जाणवो ॥ असख्याता जोजननो घनवाय ठे ॥ ते विघस्या घी सरिखो जाणवो ॥ असख्याता जोजननो तनुवाय ठे ॥ ते तपाव्या घी सरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे ७ नर्के रहिठे ॥ एकेकि नरके त्रणत्रण वलाका ठे ॥ असख्याता जोजननो आकाशास्तिकाय ठे । विश हजार जोजननो घनोदधि जारूपणे ठे । ते ठेहमे जाता ठ जोजननो रह्यो ॥ पेहेली नरके ठ जोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजीनरके ठ जोजन ने ॥ १ त्रियोन्नाग ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ठ जोजन ने ॥ २ त्रिपान्नाग ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥ ७ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पाचमी नरके ७ जोजन ने ॥ १ त्रियोन्नाग ॥ ५ ॥ ठठी नरके ॥ ७ जोजन ने ॥ २ त्रियान्नाग ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ८ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो घनवाय ठे ते ठेहमेजाता साढा-च्यार जोजननो रह्यो ॥ पहिलीनरके साढाच्यार जोजननो घनवाय ठे ॥ १ ॥ बिजी नरके

पोणापाच जोजननो घनवाय ठे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ॥ ५ जोजननो घनवाय ठे ॥ ३ ॥ चउथी नरके सवापाच जोजननो घनवाय ठे ॥ ४ ॥ पाचमी नरके साढापांच जोजननो घनवाय ठे ॥ ५ ॥ ठठी नरके पोणाठ जोजननो घनवाय ठे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ६ जोजननो घनवायठे ॥ ७ ॥ असंख्याता जोजननो तनुवायठे ते ठेहूके जाता दोढ जोजननो रह्यो ॥ पहिलीनरके दोढ जोजननो तनुवाय ॥ १ ॥ बिजी नरके दोढ जोजन ने १ वारियो ज्ञाग ॥ २ ॥ त्रिजीनरके दोढ जोजन ने वारिया २ ज्ञाग ॥ ३ ॥ चउथी नरके दोढ जोजन ने वारिया ॥ ३ ज्ञाग ॥ ४ ॥ पाचमी नरके दोढ जोजन ने वारिया ॥ ४ ज्ञाग ॥ ५ ॥ ठठी नरके दोढ जोजन ने वारिया ॥ ५ ज्ञाग ॥ ६॥ सातमी नरके २ जोजननो तनुवाय ठे ॥७॥ तेहने आधारे ७ नरक रहिठे ॥७॥ आठमे आतरा कहे ठे ॥ पहिली नरके ॥ १३ पाथमा ने ॥ १२ आतरा ठे ॥ एकेका पाथमाने ॥ ११५८३ ॥ इग्यार हजार पाचसें त्र्यासी जोजन ने ॥ १ त्रिया ज्ञागनु आतरु ॥ १ ॥ बिजी नरके ॥ ११ पाथमा ने ॥ १० आतरा । एकेका पाथमाने ९७०० सताणुसे जोजननु आंतरुं ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ए पाथमा ने ॥ ८ ॥ आतरा । एकेका पाथमाने ॥ १२३७५ ॥ बारहजार त्रणसे पंचोतेर

जोजननुं आंतरु ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥ ७ पाथडा ने ६ आतरा छे । एकेका पाथडाने ॥ १६१६६ ॥ सोलहजार एकसो छासठ जोजन ने ॥ २ त्रिया भागनु आतरुं ॥ ४ ॥ पाचमी नरके ॥ ५ पाथडा ने ॥ ४ आतरा ॥ एकेका पाथडाने ॥ २५२५० ॥ सवापचविशहजार जोजननु आतरुं ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ३ पाथडा ने ॥ २ आतरा ॥ एकेका पाथडाने ॥ ५२५०० ॥ साढावावन हजार जोजननुं आंतरु ॥ ६ ॥ सातमी नरके १ पाथडो छे ॥ आतरुं नथि ७ ॥ ८ ॥ हवे नवमे पुष्फाविकीर्ण ने आवलिकावध नरकावासा कहेछे ॥ पहिली नरके २९९५५६७ ॥ उगणत्रीशलाख पंचाणुंहजार पाचसें सतसठ पुष्फाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ४४३३ चुमालिससें तेत्रीस पंक्तिवध नरकावासा छे ॥ एव सर्व मिलिने ३० लाख ॥ १ ॥ बिजी नरके २४९७३०५ ॥ चोविसलाख सताणुं हजार त्रणसें पाच पुष्फाविकीर्ण नरकावासा छे । अने २६९५ छविससें पचाणु पक्तिवध नरकावासा छे । एव सर्व मिलिने ॥ २५ लाख ॥ २ ॥ त्रिजी नरके १४९८५१५ ॥ चउदलाख अठाणु हजार पाचसें पदर पुष्फाविकीर्ण नरकावासा छे । अने १४८५ चउदसें पच्यासी पक्तिवध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मिलिने

॥ १५ लाख ॥ ३ ॥ चनथी नरके ए्एएएए२ ॥ नवलाख नवाणु हजार वसेंत्राणु पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे। अने ७०७ सातसें सात पक्तिवध नरकावासा छे ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ १० लाख ॥ ४ ॥ पाचमी नरके ॥ २एए७३५ ॥ वे लाख नवाणु हजार सातसें पात्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने ॥ २६५ वसें पांसठ पक्तिवंध नरकावासा छे ॥ एव सर्व मिलिने ॥ ३ लाख ॥ ५ ॥ छठि नरके ॥ एएए३२ नवाणु हजार नवसे वत्रीस पुष्पाविकीर्णं नरकावासा छे ॥ अने६३पक्तिवध नरकावासा छे॥६॥सातमी नरके ॥५ पक्तिवध नरकावासा छे॥७॥साते नरकना ८३ए०३४७ त्र्यासी लाख नेवुहजार त्रणसे सुम्तालीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा छे ॥ अने साते नरकना ए६५३ ॥ नवहजार छसें त्रेपन पंक्तिवध नरकावासा छे ॥ सर्व मिलि ८४ लाख नरकावासा जाणवा ॥ ए ॥ दशमे अवकार कहेछे ॥ नरकनो अधकार ॥ १ ॥ अशुन्न पुम्लनो अध-कार ॥ २ ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकिने उपजवाना स्थानक कहेछे ॥ कुन्निने आकारे ॥ १ ॥ घम्ने आकारे ॥ २ ॥ पेटिने आकारे ॥ ३ ॥ कुम्ने आकारे । एवं नानाविध विषमस्थानके उपजे ॥ ११ ॥ वारमे क्षेत्रवेदना कहेछे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ तृषा ॥ २ ॥ शित ॥ ३ ॥ उष्ण ॥ ४ ॥

दाह ॥ ५ ॥ ज्वर ॥ ६ ॥ भय ॥ ७ ॥ शोक ॥ ८ ॥ खरज ॥ ९ ॥ परवश ॥ १० ॥ ए १० प्रकारनि अनति वेदना वे ॥ १२ ॥ तेरमे ॥ १५ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अंबरिस ॥ २ ॥ शाम ॥ ३ ॥ सबल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥८॥ असिपत्र ॥९॥ धनूष ॥१०॥ कुंभ ॥११॥ वालु ॥१२॥ वेतरणी ॥१३॥ खरस्वर ॥१४॥ महाघोष ॥ १५ ॥ १३ ॥ हवे चउदमे जीव अजीवना परिणाम कहेछे । जीव परिणामना ॥ १० भेद ते । गतिपरिणाम १ ॥ इंद्रियपरिणाम २ ॥ कसायपरिणाम ३ ॥ लेसापरिणाम ४ ॥ जोगपरिणाम ५ ॥ उपयोगपरिणाम ६ ॥ नाणपरिणाम ७ ॥ दसण परिणाम ८॥ चरित्तपरिणाम ९॥ वेदपरिणाम १० ॥ हवे अजीवपरिणामना १० भेद ते कहेछे ॥ बंधनपरिणाम १ ॥ गतिपरिणाम २ ॥ संठाणपरिणाम ३ ॥ भेदपरिणाम ४ ॥ वर्णपरिणाम ५ ॥ गंधपरिणाम ६ ॥ रसपरिणाम ७ ॥ फासपरिणाम ८ ॥ अगुरुलहुपरिणाम ९ ॥ शब्दपरिणाम १० ॥ १४ ॥ पनरमे अवधिज्ञाने देखवुं कहेछे ॥ पहिली नरकना नारकि । जघ० । साढात्रण गाउ देखे । उत्० च्यार गाउ देखे ॥ १ ॥ बिजीना । जघ० ३ गाउ । उत्० साढात्रण गाउ देखे ॥ २ ॥

त्रिजीना जघ० अढिगाउ । उत्० त्रण गाउ देखे ॥ ३ ॥ चोथिना । जघ० । वे गाउ । उत्० । अढिगाउ देखे ॥ ४ ॥ पाचमीना जघ० दोढ गाउ । उत्०॥२ गाउ देखे ॥ ५ ॥ छठिना जघ० १ गाउ । उत्० दोढ गाउ देखे ॥ ६ ॥ सातमीना जघ० । अर्द्ध गाउ ॥ उत्० ॥ १ गाउ देखे ॥ ७ ॥ ॥ १५ ॥ सोलमे संघयण कहेछे ॥ पहिली बिजी नरके छ संघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवट्ठु वर्जिने पाच सघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलकु १ ॥ ने छेवट्ठु ॥ २ ॥ ए ॥ २ वर्जिने ॥ ४ सघयणनो धणि जाय ॥ पाचमी नरके ॥ ३ सघयणनो धणि जाय ते । किलकु ॥१॥ छेवट्ठु ॥ २ ॥ अर्द्धनाराच ३ । ए ३ वर्जिने ॥ छठी नरके । वज्रऋषभनाराच संघयण ॥ १ ॥ ने ऋषभनाराच सघयण ॥ २ ॥ ए २ नो धणि जाय । सातमीये ॥ १ वज्रऋषभनाराच संघयणनो धणि जाय ॥ १६ ॥ सत्तरमे कोण जीव केइ नरके उपजे ते कहेछे ॥ असज्ञीतिर्यंच पहिली नरक सुधि उपजे ॥ १ ॥ भुजपरसर्प वीजी सुधि उपजे ॥ २ ॥ खेचरतिर्यंच त्रिजी नरकसुधि उपजे ॥ ३ ॥ थलचरतिर्यंच चउथि नरकसुधि उपजे ॥ ४ ॥ उरपरतिर्यंच पाचमी नरकसुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री छठी नरकसुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मछ ने संज्ञिमनुष्यनो

आदि उपजे ॥ ७ ॥ १७ ॥ अढारमे अशुज्ञ । वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ फरस जोगव-
ताथका नारकि विचरे ठे ॥ १८ ॥ इति नारकिनो बोल समाप्त ॥ १ ॥ हवे बिजो ज्ञवनपतिनो
वार कहेठे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥
पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ ठठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥
॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ए ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषदा ॥ ११ ॥
बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ १३ ॥ चउदमे ॥ ४ बोल ॥ १४ ॥ पहिले नाम
कहेठे ॥ असुरकुमार ॥ १ ॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥
अग्निकुमार ॥ ५ ॥ द्विपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ए ॥
थणितकुमार ॥ १० ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह कहेठे ॥ असुरकुमारने चुमामणि मुगटनु चिन्ह ॥ १ ॥
नागकुमारने फेणनु चिन्ह ॥ २ ॥ सुवर्णकुमारने गरुमनु चिन्ह ॥ ३ ॥ विज्जुकुमारने वज्रनुं
चिन्ह ॥ ४ ॥ अग्निकुमारने कलशनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ द्विपकुमारने सिंहनु चिन्ह ॥६॥ उदधिकु
मारने घोमानुं चिन्ह ॥ ७ ॥ दिशाकुमारने गजनुं चिन्ह ॥ ८ ॥ पवनकुमारने मगरमठनुं

चिन्ह ॥ ए ॥ थणितकुमारने सपुष्टनुं चिन्ह ॥ १० ॥ २ ॥ हवे त्रिजे वर्ण कहेछे ॥ असुरकुमारनो श्यामवर्ण ॥ नागकुमार ने उदधिकुमारनो धोलोवर्ण ॥ विज्जुकुमार अग्निकुमार ने द्विपकुमारनो रातोवर्ण ॥ सुवर्णकुमार दिशाकुमार ने थणितकुमारनो पीलोवर्ण ॥ पवनकुमारनो निलोत्पलकमलसरिखो निलोवर्ण ॥ ३ ॥ हवे चउथे वस्त्र कहेछे ॥ राता निला पिला धोला विविध प्रकारना ते पण सध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ हवे पांचमे सामानिक कहेछे॥ दक्षिणदिशना चमरेन्द्रने चोसठ हजार सामानिक छे ॥ उत्तरदिशाना वलेन्द्रनें ॥ ६०००० साठ हजार सामानिक छे ॥ धरणेंद्रादिक ॥ १८ ॥ इन्द्रने छ छ हजार सामानिक छे ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ते सामानिकथि चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे देवागना कहेछे ॥ चमरेन्द्र तथा वलेन्द्रने पाच पाच देवीओ जाणवी ॥ एकेकि देवी आठ आठ हजाररूप वैक्रिय करे धणिभोगववाने अर्थे। धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रिय करे॥ धरणेंद्रादिक १८ इन्द्रने छ छ देविओ जाणवि ॥ एकेकी देवी छ छ हजार रूप वैक्रिय करे धणि भोगववाने अर्थे॥ धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रिय करे ॥ ७ ॥ हवे आठमे अणिका ॥ ७ कहेछे॥ गधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥

गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुन्नट ॥ ६ ॥ मदीप ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे बोले अणिकाना अधिपति
एमज जाणवा ॥ ए ॥ हवे १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो उद्योत ॥ १ ॥ देवीओनो उद्योत
॥ २ ॥ आन्नरणनो उद्योत ॥ ३ ॥ शुन्न पुफलनो उद्योत ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे त्रण
परिषदा कहेछे ॥ दक्षिणदिशाना चमरेंद्रनी ३ परिषदा । समीया ॥ १ ॥ चंमा ॥ २ ॥ जाया
॥ ३ ॥ समीयानो ॥ २४ हजारनो परिवार ॥ १ ॥ चमानो ॥ २८ हजारनो परिवार ॥ २ ॥
जायानो ॥ ३२ हजारनो परिवार ॥ ३ ॥ समीया तेड्या आवे ने मोकल्या जाय तेसाथे गुऊ
करे ॥ १ ॥ चंमा तेम्या आवे ने अणमोकल्या जाय तेसाथे गुऊ न करे अने करणकरावण
करे ॥ २ ॥ जाया अणतेम्या आवे ने अणमोकल्या जाय एहने कामकाज दिये ॥ ३ ॥ हवे
एहना नवनीकायना देवतानि ॥ ३ ॥ परिषदा तेमाहि अन्यंतर परिषदाना ॥ ६०००० ॥ साठ
हजार ॥ १ ॥ मध्यमपरिषदाना ॥ ७०००० ॥ सितेर हजार ॥ २ ॥ बाहिरलि परिषदाना
॥ ८०००० ॥ एंसी हजार ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशना चमरेंद्रनि देवीउनी ॥ ३ ॥ परिषदा तेमाहि
अन्यंतरनि ॥ ३५० देवीओ १ ॥ मध्यमपरिषदानी ॥ ३०० देवीओ ॥ २ ॥ बाहिरली परिषदानी

॥ ७५० ॥ देवीउ ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि देवीओनि ॥ ३ परिपदा तेमाहि
अन्यतरनि ॥ १७५ देवीउ ॥ १ ॥ मझमनि ॥ १५० देवीउ ॥ २ ॥ वाहिरलीनि ॥ १२५ देवीउ
॥ ३ ॥ ए सर्व परिवार दक्षिणदिशना चमरेंद्रनो जाणवो ॥ इमज उत्तरदिशना बलेंद्रनि ३
परिपदा जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहिलीना ॥ २० हजार देवता ॥ १ ॥ विजीना ॥ २४
हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ २८ हजार देवता ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि
॥ ३ परिपदा ते पेहिलीना ॥ ५० हजार ॥ १ ॥ विजीना ॥ ६० हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७०
हजार ॥ ३ ॥ बलेंद्रनि देवीउनी ॥ ३ परिपदा ॥ पहिलीनि ॥ ४५० देवीउ ॥ १ ॥ विजीनि
४०० देवीउ ॥ २ ॥ त्रिजीनि ॥ ३५० देवीउ ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि देवीउनि
॥ ३ परिपदा ॥ पहिलीनि ॥ २२५ देवीउ ॥ १ ॥ विजीनि ॥ २०० देवीउ ॥ २ ॥ त्रिजीनि
॥ १७५ देवीउ ॥ ३ ॥ ११ ॥ वारमे लोकपाल कहेछे । सोम ॥ १ ॥ जम ॥ २ ॥वरुण ॥ ३ ॥
वेसमण ॥ ४ ॥ सोमनो वारो पूर्वदिसे ॥ १ ॥ जमनो वारो दक्षिणदिशे ॥ २ ॥ वरुणनो वारो
पश्चिमदिशे ॥ ३ ॥ वेसमणनो वारो उत्तरदिशे ॥ ४ ॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥ १ ॥

जमने वारे मार मरकि ने भेद घणा होय ॥ २ ॥ वरुणने वारे गरूगुंवरू ने रोग घणा होय ॥ ३ ॥ वेसमणने वारे सुगाल सुन्निक ने लान्न घणा होय ॥ ४ ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ ३३ ॥ ते गुरु समान ॥ १ ॥ ओहितसमान ॥ २ ॥ पुज्यसमान ॥ ३ ॥ मित्र समान ॥ ४ ॥ पितासमान ॥ ५ ॥ आज्ञा आरायक छे ॥ १३ ॥ चउमदे शुन्न वर्ण गंध । रस । स्पर्श । न्नोगवताथका न्नवनपति विचरेछे ॥ १४ ॥ इति बीजो न्नुवनपतिनो द्वार. समाप्त. ॥ २ ॥ हवे त्रिजो वाणव्यंतरनो द्वार कहेछे । पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चोथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आतमरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवागना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषदा ॥ ११ ॥ बारमे ॥ ३ बोल ॥ १२ ॥ पहिले नाम कहे छे । पिशाच ॥ १ ॥ न्नुत ॥ २ ॥ जक्ष ॥ ३ ॥ राक्षस ॥ ४ ॥ किनर ॥ ५ ॥ किंपुरुष ॥ ६ ॥ महोरग ॥ ७ ॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ९ ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ न्नुइवाइ ॥ १२ ॥ कंदीय ॥ १३ ॥ महाकंदीय ॥ १४ ॥ कोहंड ॥ १५ ॥ पयंगदेव ॥ १६ ॥ बिजे चिन्ह कहेछे ॥ पहिलाने कलंबरक्षनुं चिन्ह ॥ १ ॥ बिजाने शालिवृक्षनुं चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजाने वरुवृक्षनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ चउथाने

पार्मलिवृक्षनु चिन्ह ॥४॥ पाचमाने अशोकवृक्षनु चिन्ह ॥५॥ छगने चपकवृक्षनुं चिन्ह ॥६॥ सातमाने नागवृक्षनुं चिन्ह ॥ ७ ॥ आठमाने टिंवरुवृक्षनु चिन्ह ॥ ८ ॥ ए ८ दक्षिणदिशाना कह्या । एमज ॥ ८ उत्तरदिशाना जाणवा ॥ २ ॥ हवे त्रीजे वर्ण ते ॥ पहिला त्रिजा सातमा ने आठमा ए ॥ ४ नो श्यामवर्ण ॥ बिजानो कालोवर्ण ॥ पाचमानो निलोवर्ण ॥ चोथा ने छगनो धोलोवर्ण ॥ ३ ॥ हवे चउथे वस्त्र कहेछे ॥ निला राता पीला ने धोला विविध प्रकारना ते पण संध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ते एकेकाने च्यार च्यार हजार सामानिक देवता छे ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ते सामानिकथी चउगुणा जाणवा ॥६॥ सातमे देवागना ते एकेकाने च्यार च्यार देवीओ छे । एकेकी देवी ॥ १ हजार रूप वैक्रिय करे धणि जोगववाने अर्थे धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रिय करे ॥ ७ ॥ हवे ॥ ८ मे ॥ ७ अणिका कहेछे । गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पायक ॥ ६ ॥ महीष ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥ ए ॥ हवे ॥ १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आभरणनो ॥ ३ ॥ शुभ पुद्गलनो ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे परिषदा ३ ॥ समीयाना ॥ ८ हजार

देवता ॥ १ ॥ चमाना ॥१० हजारदेवता ॥ २ ॥ जायाना ॥ १२ हजार देवता ॥ ३ ॥ त्रणपरखदानुं आवखुं जाखु प्रथमनि रिते जाणवु ॥ ११ ॥ वारमे शुक्ल वर्ण ॥ गंध ॥ रस स्पर्श जोग-वताथका वाणव्यतर विचरेछे ॥ १२ ॥ इति वाणव्यतरनो द्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे चउथो ज्योति-षीनो द्वार कहेछे । पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे वाहक ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे लांवपणुं ने पहोलपणु ॥ ७ ॥ आठमे उचपणुं ने जाडपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पक्ति ॥ ९ ॥ दशमे परिषदा ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत ॥ ११ ॥ वारमे देवीउ ॥ १२ ॥ तेरमे नित्यराहु ने पर्वराहु ॥ १३ ॥ चउदमे परिवार ॥ १४ ॥ पनरमे अणिका ॥ १५ ॥ सोलमे अणिकाना अधिपति ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात ॥ १८ ॥ उगणिसमे निर्व्याघात ॥ १९ ॥ विशमे देखवुं ॥ २० ॥ एकविशमे चाल ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवु ॥ २२ ॥ त्रेवीशमे उचपणु ॥ २३ ॥ चउविशमे आतरुं ॥ २४ ॥ पचविशमे ॥ ४ ॥ बोल ॥ २५ ॥ पहिले नाम ते चंद्र ॥ १ ॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥ ५ ॥ १ ॥ त्रिजे वाहक कहेछे ॥ चंद्रमा सूर्यना विमानने सोल सोल हजार देवता उपाडेछे तेहनो विचरो कहेछे ॥ ग्यार

हजार देवता सिंहनेरूपे पूर्वदिशे उपाम्हेठे ॥ १ ॥ च्यार हजार देवता हाथिनेरूपे दक्षिणदिशे उपाम्हेठे ॥ २ ॥ च्यार हजार देवता वृषभनेरूपे पश्चिमदिशे उपाम्हेठे ॥ ३ ॥ च्यार हजार देवता घोमानेरूपे उत्तरदिशे उपाम्हेठे ॥ ४ ॥ एवं ॥ १६ हजार देवता चंद्रमा सूर्यना विमानने उपाम्हेठे ॥ आठ हजार देवता ग्रहना विमानने उपाम्हेठे ॥ च्यार हजार देवता नक्षत्रना विमानने उपाम्हेठे ॥ बे हजार देवता ताराना विमानने उपाम्हेठे । ते च्यारे दिशे पाचसें पांचसें एणेज रूपे जाणवा ॥ राहु ने चंद्रमानिपरे जाणवुं ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण कहेठे ॥ ज्योतिषीना विमाननो ॥ माहि कनकवर्ण ने बाहिरनो स्फाटिकरत्न समान जाणवो ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र पूर्वंनिपरे विविध प्रकारना जाणवा ते पण सध्याना रागसरिखां जाणवा ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक देवता ॥ ४ हजार जाणवा ॥ ५ ॥ ठठे आत्मरक्षक देवता ॥ १६ हजार जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे बोले लांबपणु ने पहोलपणुं ते चंद्रमानुं विमान । एक जोजनना ६१ भाग करिये तेहवा ॥ ५६ भागनुं लांबुं ने पहोलुंठे ॥ १ ॥ सूर्यनुं विमान एकसठिया ४८ भागनुं लांबु ने पहोलुं ठे ॥ २ ॥ ग्रहनु विमान ॥ २ गाउनुं लांबुं ने पहोलुं ठे॥ ३ ॥ नक्षत्रनुं

विमान ॥ १ गाउनु लांबुं ने पहोलु छे ॥ ४ ॥ तारानु विमान अर्द्ध गाउनु लांबु ने पहोलु छे ॥ ५ ॥ ७ ॥ आठमे उंचपणु ने जाडपणु । चंद्रमानु विमान एकसठिया ॥ ५६ भागनुं उंचु ने जाडुं छे ॥ १ ॥ सूर्यनुं विमान एकसठिया ॥ ४८ भागनुं उंचु ने जाडुं छे ॥ २ ॥ ग्रहनुं विमान ॥ १ गाउनु उंचुं ने जाडुं छे ॥ ३ ॥ नक्षत्रनुं विमान अर्द्ध गाउनुं उंचु ने जाडुं छे ॥ ४ ॥ तारानु विमान पा गाउनुं उंचु ने जाडु छे ॥ ५ ॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति कहेछे ॥ छाशठ छाशठनि ॥ ४ पंक्ति छे ॥ १३२ चंद्रमा ने ॥ १३२ सूर्य छे ॥ ए बेहु मिलिने ॥ २६४ ॥ हवे सर्वथि मंद गति चंद्रमानि ॥ १ ॥ तेहथि सूर्यनि शीघ्र गति ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि शीघ्र गति ॥ ३ ॥ तेहथि नक्षत्रनि शीघ्र गति ॥ ४ ॥ तेहथि तारानि शीघ्र गति ॥ ५ ॥ सर्वथि थोडि ऋद्धि तारानि ॥ १ ॥ तेहथि नक्षत्रनि अधिकी ऋद्धि जाणवि ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ३ ॥ तेहथि सूर्यनि अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ४ ॥ तेहथि चंद्रमानि अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ५ ॥ ९ ॥ दशमे परिषदा कहेछे ॥ परिषदा ३ ॥ इशा ॥ १ ॥ तुडिया ॥ २ ॥ पर्वा ॥ ३ ॥ पहिलीना ॥ ८ सहस्र देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ १० सहस्र देवता ॥ २ ॥

त्रिजीना ॥ १२ सहस्र देवता ॥ ३ ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आत्नरणनो ॥ ३ ॥ शुत्नपुजलनो ॥ ४ ॥ विमाननो ॥ ५ ॥ ११ ॥ बारमे देवीउ कहेछे । एकेकाने च्यार च्यार देवीउ छे ॥ एकेकि च्यार च्यार हजार रूप वैक्रिय करे धणि त्नोगववानेअर्थे धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रिय करे ॥ १२ ॥ तेरमे नित्यराहुने पर्वराहु कहेछे । नित्यराहु ते चन्द्रमाने केम्हेछे । ते अमावास्याना पम्वाथीमाम्निने एकेकि कला ढांकतो जाय । पुनमने दिने चन्द्रमा १६ कला सपूर्ण थाय ॥ अने पुनमनी पम्वेथि एकेकि कला दवावतो जाय । अमावास्याने दहाम्हे १ कला चन्द्रमानि रहे॥ अने परवराहु वेहुने आवे । चन्द्रमानु ग्रहण । जघ० ६ मासे ॥ उत्० । वेतालिशमासे आवे ॥ अने सूर्यनु ग्रहण । जघ० ६ मासे । उत्० । अम्तालीश वर्षे आवे । तेहमा नित्यराहुना विमान श्याम वर्ण छे । अने पर्वराहुना विमान पच वर्णा छे ॥ ते नित्यराहुना २ विमान ॥ अने पर्वराहुना ॥ २० विमान जवुद्वि-पमा छे । चन्द्रमा सूर्यना माम्हला क्षेत्र फरसे तो ॥ ५१० जोजन क्षेत्र फरसे तेमाहि ॥ १८० जोजन जवुद्विपमाहि फरसे अने ३३० जोजन लवणसमुद्रमा फरसे । चन्द्रमाना ॥ १५ माम्हला

छे तेमांहि ॥ए मांमला जंबुद्विपमांहि करे ॥अने १० मांमला लवणसमुद्रमा करे । मांमलेनो मांमले आवे तो ॥ १ए दीने आवे ॥ सूर्यना १०४ मांमला छे तेमांहि ॥ ६५ मांमला जंबुद्विपमा करे । अने ११ए मांमला लवणसमुद्रमा करे ॥ मांमलेनो मांमले आवे तो ७ मासे आवे ॥ सूर्यने मांमले मांमले बे बे जोजननु आंतरु ॥ चंद्रमाने मांमले मांमले ३ए जोजन ने एकसठिया ३? नाग अने एकसठीया एक नागना ७ नाग करिये तेहवा ४ चुरणिया नागनु आंतरु ॥ १३ ॥ चउदमे परिवार कहेछे ॥ एक चंद्रमा ने एक सूर्यनो परिवार ॥ २७ नक्षत्र ॥ ७७ ग्रह अने ७६७० हजार नवसें पचोतेर कोमाकोमि तारा छे ॥ एटलो परिवार जाणवो ॥ १४ ॥ पनरमे बोले ७ अणिका कहेछे ॥ गंधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुनट ॥ ६ ॥ वृषन ॥ ७ ॥ १५ ॥ सोलमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण कहेछे । छये संघयणनो धणि ज्योतिषी थाय ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात कहेछे । व्याघातसहित आंतरुं पमे तो एक विमानथि बिजा विमानने । जघ० ॥ २६६ जोजननु आंतरुं ॥ अने उत्० ॥ १२ हजार बसें

हवे विशमे देखवु ७७८ ॥

मुहुर्त्तनि रात्रि । ते दिवशे उगतो सूर्य ॥ ४७२६३ जोजन ने साठिया ॥ २१ भाग वेगलेथि उगतो दिशे ॥ अने पोशमासे मकरसंक्रातिने दहाडे ॥ १२ मुहुर्त्तनो दिवश ने ॥ १८ मुहुर्त्तनि रात्रि ते दिवशे उगतो सूर्य ३१८३१ जोजन ने एकसठिया ॥ ३० भाग वेगलेथि उगतो सूर्य दिशे ॥ २० ॥ एकोवशमे चाल कहेछे ॥ आषाढमासे कर्कसंक्रातिने दहाडे । एकेक मुहूर्तें सूर्य पांच हजार बसें एकावन जोजन ने साठिया उगणत्रिश भाग चाले । आखे दिवशे थइने ॥ ८४५२६ जोजन ने साठिया ४२ भाग चाले । अने पोषमासे मकरसंक्रातिने दहाडे । एकेक मुहुर्तें सूर्य ॥ ५३०५ जोजन ने साठिया ॥ १५ भाग चाले । आखे दिवसे थइने ॥ ६३६६३ जोजन चाले ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवो कहेछे ॥ सूर्य उचो ॥ १०० जोजन तपेछे ॥ हेठो १८०० जोजन तपेछे । अने त्रिछो ॥ ४७२६३ जोजन ने साठिया ॥ २१ भाग तपेछे ॥ २२ ॥ त्रेविशमे उंचपणुं कहेछे । समभुतलथकि ॥ ७९०

जोजन ऊंचा जइये तिवारे तारामंडल आवे । तिहांथि १० जोजन ऊंचपणे सूर्यनु विमान छे । तिहांथि ॥ ८० जोजन ऊंचपणे चंद्रमानुं विमान छे । तिहांथि ॥ ४ जोजन ऊंचपणे नक्षत्रना विमान छे ॥ तिहांथि ॥४ जोजन ऊंचपणे बुधनो तारो छे॥तिहांथि ॥ ३ जोजन ऊंचपणे शुक्रनो तारो छे ॥ तिहांथि ॥ ३ जोजन ऊंचपणे बृहस्पतिनो तारो छे । तिहांथि ॥ ३ जोजन ऊंचपणे मंगलनो तारो छे । तिहांथि ॥ ३ जोजन ऊंचपणे छेहलो शनिश्चरनो तारो आवे । ए ११० जोजनमां ज्योतिष चक्र छे ॥२३॥ चउविशमे आंतरुं कहेछे । चंद्रमा चंद्रमाना विमानने ॥ सूर्य सूर्यना विमानने ॥ १ लाख जोजननु आंतरुं छे॥ अने चंद्रमा सूर्यना विमानने अर्द्ध लाख जोजननु आंतरुं छे ॥ २४ ॥ पचवीशमे बोले शुभ वर्ण गंध रस फरस भोगवताथका ज्योतिषि विचरेछे ॥ २५ ॥ इति चउथो ज्योतषीनो द्वार समाप्त ॥ ४ ॥ हवे पांचमो वैमानिकनो द्वार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे आधार ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे जाडपणुं ॥ ७ ॥ आठमे ऊंचपणु ॥ ८ ॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान ॥ ९ ॥ दशमे आवलिकाबंध विमान ॥ १० ॥ इग्यारमे

परिपदा ॥ ११ ॥ वारमे उद्योत ॥ १२ ॥ तेरमे देवीउ ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ॥ १५ ॥ सोलमे ॥ ७ अणिका ॥ १६ ॥ सतरमे अणिकाना अधिपति ॥ १७ ॥ अढारमे संघयण ॥ १८ ॥ ओगणीशमे अवधि देखवु ॥ १९ ॥ विशमे ॥ ४ बोल ॥ २० ॥ पहिले नाम कहेवे । सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लंतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्त्रार ॥ ८ ॥ आणत ॥ ९ ॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्युत ॥ १२ ॥ नव ग्रैवेयकना नाम । भद्दे ॥ १ ॥ सुभद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥ ३ ॥ सुमाणसे ॥ ४ ॥ पीयदंसणे ॥ ५ ॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आमोहे ॥ ७ ॥ सुपडिवद्धे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ पाच अनुत्तर विमानना नाम । विजय ॥ १ ॥ विजयंत ॥ २ ॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ मुक्तिशिलाना नाम ॥ इसीतीवा ॥ १ ॥ इसिपब्भारातीवा ॥ २ ॥ तणुतीवा ॥ ३ ॥ तणुतणुतीवा ॥ ४ ॥ सिद्धितीवा ॥ ५ ॥ सिद्धालएतिवा ॥ ६ ॥ मुत्तितिवा ॥ ७ ॥ मुत्तालएतिवा ॥ ८ ॥ लोयग्गेतिवा ॥ ९ ॥ लोगग्गथूभिएतिवा ॥ १० ॥ लोगपडिबोहएतिवा ॥ ११ ॥ सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहे

सातमे आठमे देवलोके ॥ ४ सघयणनो धणि जाय ते किलकु १ ने छेवटु २ ॥ ए २ वर्जिने ॥ नवमे दशमे इग्यारमे बारमे देवलोके ॥३ सघयणनो धणि जाय ॥ नवग्रैवेयकमा ॥ २ सघयणनो धणि जाय ॥ पांच अनुत्तरविमानमा ॥ १ वज्रऋषभनाराच सघयणनो धणि उपजे ॥१८॥ उगणीशमे अवधि देखवु कहे छे ॥ पहिला बिजा देवलोकना देवता निचु पहिली नरकना तलासुधि देखे ॥ उंचु पोताना विमाननी ध्वजालगे देखे । तिरछुं असख्याता द्विप समुद्रलगे देखे ॥ त्रिजा चोथा देवलोकना देवता निचुं बिजीनरकना तलासुधि देखे । उंचु त्रिछुं तेटलुज देखे॥पाचमा छठा देवलोकना देवता निचुं त्रिजीनरकना तलासुधि देखे । उंचुं त्रिछुं तेटलुंज देखे । सातमा आठमा देवलोकना देवता निचुं चउथि नरकना तलासुधि देखे उंचु त्रिछुं तेटलुंज देखे । नवमा दशमा इग्यारमा ने बारमा देवलोकना देवता निचु पाचमी नरकना तलासुधि देखे । उंचुं त्रिछुं तेटलुज देखे । नवग्रैवेयकना देवता । निचुं छठि नरकना तलासुधि देखे । उंचु त्रिछु तेटलुज देखे ॥ च्यार अनुत्तर विमानना देवता निचु सातमि नरकना तलियासुधि देखे । उंचु त्रिछु तटलुंज देखे ॥ सर्वार्थसिद्धविमानना देवता किंचिन् उणिलोकनालि देखे ॥ नारकि

त्रापाने आकारे देखे ॥ १ ॥ त्रुवनपति पालाने आकारे देखे ॥ २ ॥ व्यंतर जालरने आकारे देखे ॥ ३ ॥ ज्योतिषी पम्हाने आकारे देखे ॥ ४ ॥ वैमानिक ॥ १२ देवलोकना देवता मादलने आकारे देखे ॥ नवग्रैवेयकनादेवता विखस्या फुलने आकारे देखे ॥ च्यार अनुत्तर विमानना देवता कुमारीना कचुवाने आकारे देखे ॥ सर्वार्थसिद्धना देवता जवनालिने आकारे देखे ॥ १ए ॥ विशमे बोले शुन्न वर्ण गंध रस स्पर्श न्नोगवताथका वैमानिक विचरेते ॥ २० ॥ इति पाचमो वैमानिकनो द्वार समाप्त ॥ ए ॥ इति पाच बोल समाप्तं ॥ अथ श्री २३ पदवीना बोल लिख्यते ॥ तेना नाम कहेते ॥ प्रथम ॥ ७ एकेंड्रिय रत्न ॥ ७ पचेंड्रिय रत्न ॥ ए महोटि पदवी । तेहमा ॥७ एकेंड्रिय रत्नना नाम । चक्ररत्न ॥ १ ॥ छत्ररत्न ॥२॥ चर्मरत्न ॥३॥ दम्मरत्न ॥४॥ असिरत्न ॥५॥ मणिरत्न ॥६॥ कागणिरत्न ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ एकेंड्रिय रत्नना नाम कह्या ॥ हवे ॥ ७ पंचेंड्रिय रत्नना नाम कहेते ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ स्त्री ॥ ५ ॥ अश्व ॥ ६ ॥ गज ॥७॥ ए ७ पंचेंड्रिय रत्नना नाम कह्यां ॥ हवे ॥ ए महोटि पदवीना नाम कहेते ॥ अरिहंतनि ॥ १ ॥ चक्रवर्त्तिनि ॥ २ ॥ वलदेवनि

॥ ३ ॥ वासुदेवनि ॥ ४ ॥ केवलिनि ॥ ५ ॥ साधुनि ॥ ६ ॥ श्रावकनि ॥ ७ ॥ सम्यक्त्वदृष्टिनि ॥ ८ ॥ मण्डलिक राजानि ॥ ए ॥ ए ए मदोटि पदवी कही ॥ एव सर्वमिलि २३ पदवी ॥
दवे ॥ १४ रत्न स्यु स्यु काम करे ॥ चक्ररत्न षट् खंम साधता मार्ग वतावे ॥ १ ॥ छत्ररत्न ते ॥ ४८ कोशप्रमाणे गया करे ॥ २ ॥ चर्मरत्न ते नदी आवे पार उतारे ॥ ३ ॥ दंमरत्न ते तमस गुफाना बार उघामे ॥ ४ ॥ असिरत्न ते शत्रुने हणे ॥ ५ ॥ मणिरत्न ते उद्योत करे ॥ ६ ॥ कागणि रत्न ते ॥ ४ए मामला आलेखे तथा तोला माप वधारे ॥ ७ ॥ सेनापति ते देश साधे ॥ ८ ॥ गाथापति ते धान रसवती निपजावे ॥ ए ॥ वार्धिक ते आवास घर निपजावे ॥ १० ॥
तथा शांतिकर्म करे विघ्न टाले ॥ ११ ॥ स्त्रीरत्न ते भोगसाधन
[illegible] काम आवे ॥ १३ ॥ १४ ॥ हवे ॥ १४ रत्न किहां किहां
॥ असि ॥ ३ ॥ दंम ॥ ४ ॥ ए ४ आयुधशालामां उपजे ॥
नगरमां उपजे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥
[illegible] नगरमा उपजे ॥ स्त्री विद्याधरनि श्रेणिना

उपजे ॥ अश्व ने गज । ए २ वैताढने मुले उपजे ॥ हवे ॥ १४ रत्ननी कायानुं परिमाण कहेछे ॥ चक्र छत्र ने दंड ॥ ए ३ वामप्रमाणे । वाम ते ॥ ४ हाथप्रमाणे । चर्मरत्न ते ॥ २ हाथ-प्रमाणे ॥ खड्गरत्न ते ॥ ५० अंगुलनुं लांबु ने ॥ १६ अगुलनुं पहोलु । ने अर्द्ध अंगुलनुं जाडु ॥ मणिरत्न ॥ ४ अगुलनुं लांबु ने ॥ २ अंगुलनु पहोलुं ॥ कागणिरत्नने ६ तला । आठ खुणा । बार हाशो । सोनीनि अहिरणने सठाणे ॥ १ अगुलनुं लांबु पहोलु ने उंचु छे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥३॥ पुरोहित । ४ । ए ॥ ४ नी अवगाहना चक्रवर्त्तिप्रमाणे उंचि जाणवि ॥ स्त्रीरत्न चक्रवर्त्तिथि ४ अंगुल निचि होय ॥ अश्वरत्न ॥ १०८ अगुलनो लांबो कानना मूलथि ते पुंछना मूललगे । अने ॥ ८० अगुलनो उचो होय । गजरत्न चक्रवर्त्तिथि बमणो उचो होय ॥ ए ॥ २३ पदवी जे गतिमाहिथि निकल्यो केटलि पदवी पामे ते कहेछे । पहिली नरकना निकल्या १६ पदवी पामे । ते ॥ २३ माहिथि ॥ ७ एकेंद्रिय रत्न वर्ज्या ॥ १ ॥ बिजी नरकना निकल्या ॥ १५ पदवी पामे । पूर्वे ॥ १६ कहि ॥ तेहमाथि ॥ १ चक्रवर्त्तिनी वार्जि ॥ २ ॥ त्रिजि नरकना निकल्या । तेर पदवी पामे ते ॥ १५माथि

वलदेव ने वासुदेव वर्ज्या ॥ ३ ॥ चउथि नरकना निकळ्या ॥ १२ ॥ पदवी पामे ते । तेरमाथि ॥ १ तिर्थंकर वर्ज्या ॥ ४ ॥ पांचमी नरकना निकळ्या । इग्यार पदवी पामे । ते ॥ १२ माहिथि ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥ ५ ॥ छठि नरकना निकळ्या दश पदवी पामे । ते साधुजी वर्ज्या ॥ ६ ॥ सातमी नरकना निकळ्या ॥ ३ पदवी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ २ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ पदवी पामे ॥७॥ भवनपति । वाणव्यंतर । ज्योतषी । ए ॥३ ना निकळ्या । एकविश पदवी पामे । ते वासुदेव १॥ ने ॥ तिर्थंकर २ ॥ ए २॥ वर्ज्या ॥ प्रथवी । पाणी । वनस्पति । गर्भजमनुष्य । ने गर्भजतिर्यंच । एटलाना निकळ्या ॥ १९ पदवी पामे । ते २३ ॥ माथि ॥ ॥ १ ॥ चक्रवर्ति ॥ २ ॥ बलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ वर्ज्या ॥ बेइंद्रिय । तेइंद्रिय । समुर्छिमतिर्यंच ने समुर्छिममनुष्य ॥ ए ५ना निकळ्या ॥ १८ पदवी पामे । माथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ तेउ वाउना निकळ्या ॥ ए पदवी पामे ते ॥ एकेंद्रिय ... न कागणि । ए ३ लक्ष्मीना भंडारमा उपजे ... स्वरमावासि ने पहिला किल्बिषी ... ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ ए ४ पोताना नगरमा ... उत्तम पुरुष ने ॥ १ केवलि वर्ज्या ॥

उपजे ॥ अश्व ने गज । ए २ वैताढने मुले उपजे ॥ हवे १७ माथि ॥ ७ एकेंद्रिय वर्ज्या शेष ॥ चक्र छत्र ने दंड ॥ ए ३ वामप्रमाणे । वाम देवना निकळ्या ॥ २३ पदवी पामे ॥ त्रिजाथि ते आठमा देवलोकसुधिना तथा नव लोकांतिकना निकळ्या ॥ १६ पदवी पामे । ते २३ माथि ॥ ७ एकेंद्रियरत्न वर्ज्या । शेष ॥ १६ पामे ॥ नवमाथि नवग्रैवेयकसुधिना निकळ्या चउद पदवी पामे ते ॥ १६ माथि अश्व ॥१॥ ने गज ॥ २ ॥ ए २ वर्ज्या ॥ शेष १४ पामे ॥ पाच अनुत्तर विमानना निकळ्या ॥ ७ पदवी पामे । ते ॥ २३ माथि ॥ १४ रत्न ने ॥१ वासुदेव वर्ज्या । शेष ॥ ७ पामे ॥ सञ्ज्ञिमाहि ॥ १५ पदवी लाभे ते ॥ २३ माथि ॥७ एकेंद्रिय ने ॥१ केवलिनी । ए ॥ ७ वर्ज्या ॥ शेष १५ लाभे । असञ्ज्ञिमाहि ॥ ७ पदवी लाभे ते ॥ ७ एकेंद्रिय ने ॥ १ समकीतनी ॥ ए ७ लाभे ॥ तिर्थंकर । तथा चक्रवर्त्तिमा ॥ ६ पदवी लाभे ॥ तिर्थंकरनि ॥१॥ चक्रवर्त्तिनि ॥ २ ॥ मंमलिकनि ॥ ३ ॥ समकितनि ॥ ४ ॥ साधुनि ॥ ५ ॥ केवलिनि । ६ । ए ६ लाभे ॥ वासुदेवमा ॥ ३ पदवी लाभे । वासुदेवनी ॥ १ ॥ समकितनि ॥ २ ॥ मम्लिकनि ॥३ ॥ ए ॥ ३ लाभे ॥ वलदेवमां पाच पदवी लाभे । वलदेवनि ॥ १ ॥ मम्लिकनि ॥२॥ साधुनि ॥३॥ केवलिनि ॥ ४ ॥ समकित-

३६ तिर्थंकर २० सिझे
३७ अतिर्थंकर १०८ सिझे
३८ स्वयंबुद्ध ४ सिझे
३९ प्रत्येक बुद्ध १० सिझे
४० बुद्धबोधि १०८ सिझे
४१ एक लिंग ते एक समये १ सिझे
४२ अनेक लिंग ते एक समये उत्कृ०
१०८ सिझे
४३ विजय विजय प्रते एक समये
वीश वीश सिझे
४६ भद्रशालवन १ नंदनवन २ सोमनसवन ३
ए ३ मा च्यार च्यार सिझे

४७ पंडगवनमा २ सिझे
४८ अकर्मभूमिमां १० सिझे
४९ कर्मभूमिमां १०८ सिझे
५३ पहिले १ बिजे २ पाचमे ३ छठे ४ ए ४
आरे १० दश सिझे
५५ त्रिजे १ चउथे २ ए २ आरे १०८ एकसो
आठ सिझे
५७ अवसर्पिणी १ उत्सर्पिणी २ ए २ मा
१०८ एकसो आठ सिझे
५८ नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमा१०८सिझे
५९ एकथि मांडिने ३२ लगे सिझे तो ८
समयसुधि

६० ३३ थि मान्डिने ४८ सुधि सिझे तो ७ समयलगे

६१ ४९ थि मान्डिने ६० सुधि सिझे तो ६ समयलगे

६२ ६१ थि मान्डिने ७२ सुधि सिझे तो ५ समयलगे

६३ ७३ थि मान्डिने ८४ सुधि सिझे तो ४ समयलगे

६४ ८५ थि मांन्डिने ९६ सुधि सिझे तो ३ समयलगे

६५ ९७ थि मान्डिने १०२ सुधि सिझे तो २ समयलगे

६६ १०३ थि मांन्डिने १०८ सुधि सिझे तो १ समयलगे

इति सिझणाद्वार समास

अथ श्रीविरहद्वार लिख्यते ॥ समुचय चार गतिनो विरहकाल ॥ जघन्य ॥ १ ॥ समयनो ॥ उत्कृष्टो ॥ १२ मुहुर्त्तनो ॥ हवे पहिली नरके ज० ॥ १ समय० ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ १ ॥ बिजी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० ७ दिननो ॥ २ ॥ त्रीजी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० १५ दिननो॥ ३ ॥ चोथी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० १ मासनो ॥४॥ पाचमी नरके ॥ ज० १ समयनो

उ० ॥ २ मासनो ॥ ५ ॥ छठी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० ४ मासनो ॥ ६ ॥ सातमी नरके ज० १ समयनो ॥ उ० ६ मासनो ॥ ७ ॥ उपजवानो तथा चववानो विरह पडे ॥ हवे दस भवनपतीनो ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ पांच एकेंद्रीय अविरहिया संख्याताने गमे संख्याता उपजे ॥ असंख्याताने गमे असंख्याता उपजे ॥ अनंताने गमे अनंता उपजे ॥ समय समय उपजे ॥ समय समय चवे ॥ त्रण विगलेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहुर्त्तनो ॥ समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहुर्त्तनो ॥ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो ॥ समुर्छिम मनुष्यनो ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ गर्भज मनुष्यनो ज० १ ॥ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो ॥ वाणव्यंतर ॥ ज्योतषी ॥ वैमानिकमां पेहला बीजा देवलोक सुधीनो ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो विरह काल ॥ त्रिजे देवलोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० ए दिन ने वीस मुहुर्त्तनो ॥ चोथे देवलोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० १२ दिन ने १० मुहुर्त्तनो ॥ पांचमे देवलोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० साडाबावीस दिननो ॥ छठे देवलोके ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० ४५ दिननो ॥ सातमे देवलोके ज० १ समयनो ॥ उ० ८० दिननो विरहकाल ॥

आठमे देवलोके ज० १ समयनो ॥ उ १०० दिननो ॥ नवमे दशमे देवलोके ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता मासनो ज्यांगले वरस न होय ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ज० १ समयनो॥ उ० सख्याता वरसनो ज्यालगे सो वरस न होय ॥ पहिली त्रिके ज० १ समयनो उ० संख्याता वर्षना सैंकमा ज्यालगे हजार वरस न होय ॥ बीजी त्रीके ज० १ समयनो उ० संख्याता वरसना हजार ज्यालगे लाख वरस न होय ॥ त्रीजी त्रीके ज० १ समयनो ॥ उ० सख्याता लाख वरसनो ज्यालगे क्रोम वरस न होय ॥ च्यार अनुत्तर विमानमा ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० ॥ पल्यना असख्यातमा नागनो विहरकाल ॥ सर्वार्थसिद्धमा ज० १ समयनो उ० पल्यना संख्यातमा नागनो विरहकाल ॥ सिद्धनो विरह ज० १ समयनो ॥ उ० ठ मासनो विरहकाल ॥ च्यार गतिमा पचेंडीय आश्री विरह काल ज०१ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो ॥ सर्व इङस्थानकनो विरह ॥ ज० १ समयनो उ० ६ मासनो ॥ ॥ इतिश्री विरहद्वार समाप्त ॥ अथ श्री पाच देवना बोल लिख्यते ॥ पहिलु नामद्वार ॥ १ ॥ बिजुं गुणद्वार ॥ २ ॥ त्रिजुं उववायद्वार ॥ ३ ॥ चोथुं स्थितिद्वार ॥ ४ ॥ पाचमुं रुद्धि तथा विकुवणाद्वार ॥ ५ ॥ ठठु

श्रवणद्वार ॥ ६ ॥ सातमुं सन्निकर्षद्वार ॥ ७ ॥ आठमु अंतरद्वार ॥ ८ ॥ नवमुं अल्पबहुत्वद्वार ॥९॥ ए ए द्वार पांच देव ॥ उपर उतारेछे॥ हवे पहिलुं नाम द्वार कहेछे ॥ भवियद्रव्यदेव ॥१॥ नरदेव ॥२॥ धर्मदेव ॥३॥ देवाधिदेव ॥४॥ भावदेव ॥५॥१॥ हवे बिजु गुणद्वार कहेछे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेहने देवतामा उपजवु छे तेहने भविय द्रव्यदेव कहिये ॥ १ ॥ चवद रत्न नव निधान जेहने होय तेहने ॥ नरदेव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्याविश गुणेकरीसहित होय तेहने धर्मदेव कहिये ॥ ३ ॥ अढार दोषरहित ने बार गुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥ अढार दोष ते कहेछे ॥ अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ माया ५ लोभ ६ रति ७ अरति ८ निद्रा ९ शोक १० असत्य ११ चोरी १२ मत्सर १३ भय १४ प्राणिवध १५ प्रेम १६ क्रिडाप्रसंग १७ हास्य १८ ॥ ए १८ दोषरहित ने १२ गुणेकरिसहित ॥ ते १२ गुण कहेछे ॥ जिहां जिहां भगवंत उभा रहे बेसे समोसरे तिहां तिहां दश बोलसहित ते भगवंतथि बार गुणो उंचो तत्काल अशोक वृक्ष थइ आवे स्वामिने छांयडो करे ॥ १ ॥ भगवंत जिहां जिहां समोसरे तिहां तिहां पांच वर्णां अचेत फुलनि वृष्टि थाय ढिंचणप्रमाणे उगता थाय ॥ २ ॥

ज्ञगवतनि जोजनप्रमाणे वाणी विस्तरे सहुना मननो संशय हरे ॥ ३ ॥ ज्ञगवतने चोविश जोम्ह चामर विंफाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय पादपीठसहित सिंहासन स्वामिने आगले थाय ॥ ५ ॥ ज्ञामम्फल अवोम्हाने ठेकाणे तेजमम्फल विराजे दिशोदिशना अंधकार टाले ॥६॥ आकाशे साढा बार क्रोम्ह गेवि वाजा वागे ॥ ७ ॥ ज्ञगवतनि उपरे त्रण छत्र उपराउपरि विराजे ॥ ८ ॥ अनंत ज्ञान अतिशय ॥९॥ अनंत अर्चा अतिशय परम पूज्यपणुं ॥१०॥ अनत वचन अतिशय ॥११॥ अनत अपायापगम अतिशय ते सर्व दोपरहितपणु ॥१२॥ ए १२ गुणे करिसहित तथा चोत्रिश अतिशय ॥ पात्रिश वचनातिशय आदि देइने अनंतगुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥४॥ ज्ञावदेव ते ॥ ज्ञवनपति ॥ १ ॥ वाणव्यंतर ॥ २ ॥ ज्योतिषी ॥३॥ वैमानिक ॥ ४ ॥ ए ४ जातिना देवताने ज्ञावे प्रवर्ते छे तेहने ज्ञावदेव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रिजु उववायद्वार कहे छे ॥ ज्ञवियद्रव्यदेवमा मनुष्य तिर्यंच जुगलीया २ ॥ सर्वार्थसिद्ध २ ए २ ठाम वर्जिने बाकि सर्व ठामना आवि उपजे ॥ १ ॥ नरदेवमा ४ ॥ जातिना देवता ने पहिली नर्क ॥ ए ५ ठामना आवि उपजे ॥ २ ॥ धर्मदेवमा छठी सातमी नर्क । तेउ वाउ ॥ मनुष्यतिर्यंचजुग

चरणद्वार ॥ ६ ॥ सातमुं सचिठणाद्वार ॥ ७ ॥ आठमुं अंतरद्वार ॥ ८ ॥ नवमु अल्पबहुत्वद्वार ॥९॥ ए ए द्वार पांच देव ॥ उपर उतारेछे॥ हवे पहिलुं नाम द्वार कहेछे ॥ नविपेड्व्यदेव ॥१॥ नरदेव ॥२॥ धर्मदेव ॥३॥ देवाधिदेव ॥४॥ नावदेव ॥५॥१॥ हवे बिजु गुणद्वार कहेछे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय जेहने देवतामां उपजवु छे तेहने नविय ड्व्यदेव कहिये ॥ १ ॥ चउद रत्न नव निधान जेहने होय तेहने ॥ नरदेव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्याविश गुणेकरीसहित होय तेहने धर्मदेव कहिये ॥ ३ ॥ अढार दोषरहित ने बार गुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥ अढार दोषते कहेछे ॥ अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ माया ५ लोन ६ रति ७ अरति ८ निद्रा ए शोक १० असत्य ११ चोरी १२ मछर १३ नय १४ प्राणिवध १५ प्रेम १६ क्रिडाप्रसंग १७ हास्य १८ ॥ ए १८ दोषरहित ने १२ गुणेकरिसहित ॥ ते १२ गुण कहेछे ॥ जिहां जिहां नगवंत उना रहे बेसे समोसरे तिहां तिहां बढा बोलसहित ते नगवंतथि बार गुणो उंचो ततकाल अशोक वृक्ष थइ आवे स्वामिने छायको करे ॥ १ ॥ नगवंत जिहां जिहां समोसरे तिहां तिहां पांच वर्णा अचेत फुलनि वृष्टि थाय ढिंचणप्रमाणे ढगला थाय ॥ २ ॥

ज्ञगवतनि जोजनप्रमाणे वाणी विस्तरे सहुना मननो संशय हरे ॥ ३ ॥ ज्ञगवंतने चोविश जोम्ह चामर विझाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय पादपीठसहित सिंहासन स्वामिने आगले थाय ॥ ५ ॥ ज्ञामम्हल अंबोम्हाने ठेकाणे तेजमम्हल विराजे दिशोदिशना अंधकार टाले ॥६॥ आकाशे साढा वार क्रोम्ह गेबि वाजा वागे ॥ ७ ॥ ज्ञगवतनि उपरे त्रण छत्र उपराउपरि विराजे ॥ ८ ॥ अनंत ज्ञान अतिशय ॥ए॥ अनंत अर्चा अतिशय परम पूज्यपणु ॥१०॥ अनत वचन अतिशय ॥११॥ अनत अपायापगम अतिशय ते सर्व दोपरहितपणु ॥१२॥ ए १२ गुणे करिसहित तथा चोत्रिश अतिशय ॥ पात्रिश वचनातिशय आदि देइने अनंतगुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव कहिये ॥४॥ ज्ञावदेव ते ॥ ज्ञवनपति ॥ १ ॥ वाणव्यतर ॥ २ ॥ ज्योतिपी ॥३॥ वैमानिक ॥ ४ ॥ ए ४ जातिना देवताने ज्ञावे प्रवर्ते छे तेहने ज्ञावदेव कहिये ॥ ५ ॥ २ ॥ हवे त्रिजुं उववायद्वार कहेछे ॥ ज्ञवियद्रव्यदेवमा मनुष्य तिर्यंच जुगलीया २ ॥ सर्वार्थसिद्ध ३ ए ३ गम वर्जिने वाकि सर्व गमना आवि उपजे ॥ १ ॥ नरदेवमा ४ ॥ जातिना देवता ने पहिली नर्क ॥ ए ५ गमना आवि उपजे ॥ २ ॥ धर्मदेवमां छठी सातमी नर्क । तेउ वाउ ॥ मनुष्यतिर्यंचजुग

दीपा ॥ ए ६ वाम वर्जिने शेष सर्व गमना आवि उपजे ॥ ३ ॥ देवाधिदेवमा । पहिली बिजी
त्रिजी नर्क ने किल्बीषी वर्जिने ॥ वैमानिक देवना आवि उपजे ॥४॥ भावदेवमा तिर्यंच पंचेंद्रिय
१ ए ७ गमना आवि उपजे ॥ ५ ॥ ३ ॥ हवे चोथुं स्थिति द्वार कहेछे॥भविय
अंत० ॥ उत्० ३ पल्यनि ॥ १ ॥ नरदेवनि जघ० सातसें वर्षनि ॥ उत्०
ग पूर्वनि ॥ २ ॥ धर्मदेवनि जघ० अंत० । उत्० देशे उणी पूर्वक्रोडिनि ॥ ३ ॥
वर्षनि ॥ उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥ ४ ॥ भावदेवनि जघ० दश हजार
नि ॥ ५ ॥ ४॥ हवे पांचमु ऋद्धि तथा विकुर्वणाद्वार कहेछे ॥ भविय
वक्रिय लब्धि उपनि होय तेहने ॥ नरदेवने तो होयज ॥ धर्मदेवमां जेहने
तो होयज ॥ ए ४ वैक्रिय रूप करे तो ज० ॥१॥ २ ॥ ३ ॥ उ० संख्याता
तानि छे पण करे नहि॥देवाधिदेवनिशक्ति घणि छे पण करे नहि
कहेछे ॥भविद्रव्यदेव चवि देवता थाय १ ॥ नरदेव चवि नर्कें जाय ॥२॥
मानिक तथा मोक्षमां जाय ॥३॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय॥४॥भावदेव चविने॥

प्रथ्वी पाणी वनस्पति बादरमां ॥ ने गर्भजमनुष्य तिर्यंचमां जाय ॥६॥ हवे सातमुं संचिठणा द्वार कहेछे ॥ संचिठणा ते स्युं देवनो देवपणे रहे तो केटलो काल रहे ते ॥ भविय द्रव्यदेवनि संचिठणा जघ० अंत० उत्० ३ पल्योपमनि॥१॥ नरदेवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥२॥ धर्मदेवनि जघ० १ समयनि॥उत्० देशे उणी पूर्व क्रोडिनि॥३॥ देवाधिदेवनि जघ० बहुतेर वर्षनि॥उत्० ८४ लाख पूर्वनि ॥४॥ भावदेवनि जघ० दश हजार वर्षनि॥उत्०३३साग-रोपमनि ५॥७॥ हवे आठमु अंतरद्वार कहेछे॥भवियद्रव्यदेवनु आतरु पडे तो॥जघ० दश हजार वर्ष ने अंतर्मुहूर्त्त अधिक॥उत्० अनंता कालनु आतरु पडे । १॥ नरदेवनु जघ०१ सागरझाझेरुं । उत्० अर्द्धपुद्गल परावर्त्तन देशे उणु ॥२॥ धर्मदेवनु जघ० २ पल्यझाझेरु ॥ उत्० अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन देशे उणु ॥३ ॥ देवाधिदेवनु आंतरु नथि ॥ ४॥ भावदेवनुं जघ० अंत० ॥ उत्० अनंता कालनु ॥८॥ हवे नवमु अल्पबहुत्व द्वार कहेछे॥ सर्वथि थोडा नरदेव ॥१॥ तेहथि देवाधिदेव संख्यात गुणा ॥२॥ तेहथि धर्मदेव संख्यात गुणा ॥३॥ तेहथि भवियद्रव्यदेव असंख्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेहथि भावदेव असंख्यात गुणा ॥ ५ ॥ ९ ॥ इति पांच देवना बोल संपूर्ण ॥

अथ श्रीखमाजोयणना बोल लिख्यते ॥ खंमाजोयणादि १० बोलनो विचार विचारिये छिये ॥ जंबुद्विप ॥ १ लाख जोजननो लांबो ने पहोलो छे । ते वाटलो तेलना पुम्लाने आकारे छे ? वाटलो रथनापइडाने आकारेछे २ वाटलो कमलनीकर्णिकाने आकारेछे ३ वाटलो पूर्णचन्द्रमाने आकारेछे ४ ॥ तेहनि परिधि ॥ ३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोश १२८ धनुष ने साडा तेर अंगुल काझेरानि छे ॥ हवे जंबुद्विप १० द्वारेकरि वखाणेछे ॥ गाथा । खन्डा १ जोयण २ वासा ३ ॥ पव्वय ४ कुडाय ५ तिथ्थ ६ सेढिओ ७ ॥ विजय ८ दह ९ सलिलाओ १० ॥ पिन्ड एसोंहमसंघ्नी ॥ १ ॥ ए दश द्वार छे ॥ तेहमा प्रथम खन्डाद्वार कहेछे । जंबुद्विपना भरत सरिखा ॥ १९० खांडवा छे ॥ ते किम ॥ भरतक्षेत्रनुं १ खान्डु ॥ चुलहिमवंत पर्वतना २ खांडवा ॥ हेमवय क्षेत्रना ४ खान्डवा ॥ महाहिमवंत पर्वतना ८ खांन्डवा ॥ हरिवास क्षेत्रना १६ खांडवा ॥ निषड पर्वतना ३२ खांन्डवा ॥ महाविदेह क्षेत्रना ६४ खान्डवा ॥ निलवंत पर्वतना ३२ खान्डवा ॥ रमक्वास क्षेत्रना १६ खान्डवा ॥ रुपि पर्वतना ८ खांन्डवा ॥ एरणावय क्षेत्रना ४ खांन्डवा ॥ सिखरि पर्वतना २ खांन्डवा ॥ इरवत क्षेत्रनुं १ खांडुं ॥ एवं सर्व

मलिने विखंभ पहोलपणे दक्षिण उत्तरे थइने । भरत जेवडा पहोलपणे १ए० खाम्वा थाय ॥ इति पहिलो खंमाद्वार समासं ॥ १ ॥ हवे बिजो जोयणद्वार कहेछे ॥ जोयण कहेता जंबुद्विपना ज्यारे हाथे जोजन जोजनना खंम करिये तिवारे सातसें नेवु कोमि छपनलाख चोराणु हजार एकसो ने पचास चउरसा थाय । उपरे १ कोश पनरसें पनर धनूप वधे । उपर ६० अंगुल वधे ॥ २ ॥ इति बिजो जोयणद्वार समास ॥ हवे त्रिजो वासाद्वार कहेछे । वासा कहेता जंबुद्विपनेविषे ॥ ७ ॥ क्षेत्र ते ॥ भरत ॥ १ ॥ हेमवय ॥ २ ॥ हरिवास ॥ ३ ॥ महाविदेह ॥ ४ ॥ रमकवास ॥ ५ ॥ एरणवय ॥ ६ ॥ इरवत ॥ ७ ॥ ए ७ क्षेत्र तथा एक महाविदेहना ४ भाग गणिये तो पूर्व महाविदेह ॥ पश्चिम महाविदेह ॥ ८ ॥ देवकुरु ॥ ए ॥ उत्तरकुरु ॥ १० ॥ एव ॥ ६ ने ॥ ४ भेलता ॥ १० क्षेत्र थाय ॥ तेहनुं विखंभपणु १ ॥ बाहा ॥ २ ॥ जीवा ॥ ३ ॥ धनुपपिठ ॥ ४ ॥ ए ४ कहेछे ॥ भरतक्षेत्रना २ भेद ॥ दक्षिण भरत ॥ १ ॥ उत्तरभरत ॥ २ ॥ दक्षिणभरतनु विखंभपणु ॥ २३८ जोजन ने ॥ ३ कलानुं । एहनि बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ए७४८ ॥ जोजन ने ॥ १२ कला ॥ तेहनि धनुषपिठ ॥ ए७६६

जोजनानि ॥ ... दक्षिण उत्तरे थइने । भरत जेवडा पहोलपणे १९० खं जो वासाद्वार समास ॥ ३ ॥ हवे ॥ ४ ॥ चोथो पव्वयद्वार कहेछे ॥ पव्वय क० जंबुद्विपने विषे ॥ २६९ ॥ पर्वत छे । ते किम ॥ ६ वर्षधर पर्वत ॥ १ मेरु ॥ चित्त १ ॥ विचित्त ॥ १ ॥ जमक २ ॥ २०० कंचनगिरि ॥ ४ गजदंता ॥ १६ वखारा ॥ ३४ लांबा वैताढ ॥ ४ वाटला वैताढ ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ २६९ पर्वत छे । तेहनु उंचपणु । उंडपणु । विखंभपणु । वाहा । जीवा । धनूषपिठ कहेछे । चुलहिमवत १ शिखरि २ ॥ ए २ पर्वत ॥ सो सो जोजनना उंचा छे ॥ अने पचवीश पचवीश जोजनना धरतीमा उंडा छे । तेमनु पहोलपणुं ॥ १०५२ जोजन ने १२ कलानु ॥ तेमनि वाहा ॥ ५३५० जोजन ने ॥ १५ कला ॥ तेमनि जीवा ॥ २४९३२ जोजन ने अर्द्ध कला मावेरि ॥ तेमनि धनूषपिठ ॥ २५२३० जोजन ने ॥ ४ कला ॥ २ ॥ महाहिमवंत ने रुपि । ए २ पर्वत ॥ बसें बसें जोजनना उंचा ॥ अने । पंचाश पचाश जोजनना धरतीमा उंडा छे । तेमनु विखंभपणु ॥ ४२१० जोजन ने १० कलानुं ॥ तेमनि वाहा ॥ ९२७६ जोजन ने ॥ ९ कला ॥ तेमनि जीवा ॥५३९३१ जोजन ने ६ कला झाझेरि ॥ तेमनि धनूषपिठ ॥ ५७२९३

जोजन ने १० कला ॥ ४ ॥ निषध ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ पर्वत च्यारसो च्यारसो जोजनना उंचा छे । अने सो सो जोजनना धरतीमा ऊंडा छे ॥ तेमनुं विस्तारपणु ॥ १६८४२ जोजन ने ॥ २ कलानु । तेमनि बाहा ॥ २०१६५ जोजन ने ॥ २ कला ॥ तेमनि जीवा ॥ ए४१५६ जोजन ने ॥ २ कला । तेमनि धनुःपिठ ॥ १२४३४६ जोजन ने ए कला ॥ ए ॥ ६ पर्वत थया ॥ ६ ॥ मेरुपर्वत ॥ १ लाख जोजननो छे तेमांहि ॥ १ ॥ हजार जोजननो धरतीमांहि ऊंडो छे । तेहमांहि प्रथम २५० जोजन पृथ्वीमय छे ॥ २५० जोजन पाषाणमय छे ॥ २५० जोजन वज्र हीरामय छे ॥ २५० जोजन शर्कर पृथ्वीमय छे ॥ एव ॥ १ ॥ हजार जोजननो ऊंडो छे । ए प्रथम कांड ॥ ते उपरे नवाणु हजार जोजननो मेरु उंचो छे । तेहमांहि । पोणासोल हजार जोजन अंकरत्नमय छे ॥ पोणासोल हजार जोजन स्फटिक रत्नमय छे । पोणासोल हजार जोजन पिला सुवर्णमय छे ॥ पोणासोल हजार जोजन रूपामय छे । ए ६३ हजार जोजननो बिजो कांड ॥ ते उपरे त्रिजो कांड । छत्रिश हजार जोजननो जांबुनद राता सुवर्णमय छे ॥ ए त्रणे मलिने ॥ १ लाख जोजननो

मेरु पर्वत ठे ॥ ते मूले १००९० जोजन ने ॥ एक जोजनना ११ न्नाग करिये ॥ तेह्वा १० न्नाग एटलो धरतीने मूले पहोलो ठे ॥ दश हजार जोजननो धरतीने समन्नूतले लावो पहोलो ठे ॥ धरतीथकि इग्यार हजार जोजन उचा जाइये तिहा नव हजार जोजननो लावोने पहोलो ठे । इम इग्यार इग्यार हजारे १ हजार घटाम्तां शिखरे १ हजार जोजननो लावो पहोलो ठे । तेह्नी त्रिगुणि फाजेरि परिधि ठे । मेरुने ॥ ४ ॥ वन ठे ॥ न्नद्रशाल वन ॥१॥ नदनवन ॥ २ ॥ सोमनसवन ॥ ३ ॥ पंडगवन ॥ ४ ॥ न्नद्रशालवन ते । मेरुने चउपखेर धरती उपरे ठे । ते पूर्व पश्चिमे बाविश बाविश हजार जोजननुं लांबु ठे । अने अढिसो अढिसो जोजननु उत्तर दक्षिणे पहोलु ठे । तेह्ने एक पद्मवरवेदिका ठे ॥ एक वन खंभे सघले चउपखेर विटिठे ॥ मेरु पर्वतथकि पूर्व दिशे ॥ ५० जोजन वनमा जाय । तिहां ॥ १ ॥ सिद्धायतन ठे । ते ५० जोजननु लांबु ने ॥ २५ जोजननु पहोलुं ठे । अने ॥ ३६ जोजननुं उचु ठे । अनेक स्तन्न ठे । ते सिद्धायतनने ३ बारणा ठे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥ ३ ॥ तेह्ना दरवाजा आठ आठ जोजनना उंचा ठे । ने ॥ ४ जोजनना पहोला

छे ॥ ते सिद्धायतनना घणुं मध्य दिश मिणागनेविषे एक मणिमय पिठिका छे। ते ॥ ८
जोजननि लांबि ने पहोली छे ॥ ४ जोजननि जाडपणे छे। सर्व रत्नमय छे। ते उपरे ॥ १
देवछंदो कह्यो ॥ ते ॥ ८ जोजननो लांबो ने पहोलो छे। अने ॥ ८ जोजननो झाझेरो उंचो छे।
तिहां जीनप्रतिमा छे तेहनो वर्णव देवछंदो जाव धूपना कडुछा छे। एक कह्युं तिम च्यारे दिशे
॥ ४ सिद्धायतन छे ते एमज जाणवा ॥ च्यारे दिशे मेरुपर्वतसुं ॥ ५० जोजन इशान कुणे वनमें
जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावडियो छे ॥ मेरुपर्वतसुं ॥ ५० जोजन अग्नि कुणे वनमें जाय तिहां ॥ ४
वावडियो छे ॥ मेरुपर्वतसु ॥ ५० जोजन नैऋत कुणे वनमें जाय तिहां ॥ ४ वावडियो छे ॥
मेरुपर्वतसुं ५० जोजन वायव्य कुणे वनमा जाय तिहा ॥ ४ वावडियो छे ॥ ते एकेकि वावडि
॥ ५० जोजननि लांबि। अने २५ जोजननि पहोलि छे। अने दश दश जोजननि उंडियो छे ॥
तेमाहि च्यारे दिशे तोरणमंडित छे। ते वावडियोना नाम ॥ पद्मा ॥ १ ॥ पद्मप्रभा ॥ २ ॥ कुमुदा
॥ ३ ॥ कुमुदप्रभा ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ वावडियो मध्ये ॥ २ शक्रेंद्रना ने ॥ २ इशानेंद्रना महेल छे ॥
ते प्यारे पांचसो पांचसो जोजनना उंचा छे। अने अढिसो अढिसो जोजनना लांबा ने पहोला

छे । उचाशिखरवध जाणवा । भद्रशाल वनमा ॥ ८ कुट छे ॥ भद्रशाल वनथकि पाचसें जोजन मेरुउपरें जइये तिहा नदनवन आवे । ते नंदनवन ॥ ५०० जोजन चक्रवाल विखम्भपणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ते मेरुपर्वतने ढुंकडु छे ॥ जिहा घणा देवता देवागना हास्यरति खेलेछे ॥ तिहा पण ॥ ४ सिद्धायतन छे ॥ १६ वावडिउ छे ॥ ४ महोल छे । पूर्वनिपरे ॥ ए कुट छे ॥ वलि नदनवनथकि साडावासठ हजार जोजन उंचा जइये । तिहा सोमनसवन आवे ॥ ते ॥ ५०० जोजन चक्रवाल विखंभपणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुने विटि रह्युछे ॥ ४ सिद्धायतन छे ॥ १६ ॥ वावडिउ छे ॥ ४ महोल छे ॥ तिहाथकि ॥ ३६ हजार जोजन मेरुने शिखरे जइये तिहा पडगवन आवे ते ॥ ४९४ जोजन चक्रवाल विखंभपणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुनि चुलिकाने विटि रह्युछे ॥ पडगवननेविषे ॥ १ चुलिका छे ॥ ते ४० जोजननि उचि छे ॥ १२ जोजननि मूले पहोलि छे । अने ४ जोजननि मथाले पहोलि छे । आठ जोजननि विचमे पहोलि छे । गायना पुछने आकारे छे ॥ सर्व वैडूर्य रत्नमयछे ॥ तेहने एक पद्मवर वेदिका छे उपर घणि समोरमणिक भूमिका छे । ते

चुलिका उपरे १ सिद्धायतन छे ॥ ते १ कोशनु लांबु ने । अर्ध कोशनु पहोलुं छे अने देशेउणुं कोश उंचुं छे । अनेक स्तंभाछे जावथुपना करुवा छे ॥ ते पंडगवनमां ॥ ४ सिद्धायतन छे ॥ १६ प्रासादि छे ॥ ॥ महोत्व छे ॥ ते पुर्वनिपरे जाणवुं । पंडग वनमा ॥ ४ अभिषेकशिला छे । तेहनां नाम ॥ पडु शिला ॥ १ ॥ पडु कंबलशिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्तकंबलशिला ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ शिला कहि ते । अर्ध चन्द्रमाने आकारे छे ॥ पुर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पांचसो पांचसो जोजननीलांबि छे ॥ अने पुर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोलि छे ॥ अमर दक्षिणनि शिला ते पुर्व पश्चिमे पांचसो पांचसो जोजननि लांबि छे ॥ अने उत्तर दक्षिणे अढिसो अढिसो जोजननि पहोलि छे ॥ ४ जोजननि जाडपणे छे । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने शिला उपरे पादलिखा छे ॥ पुर्व पश्चिमनि शिलाउपरे बे बे सिंहासन छे । अने उत्तर दक्षिणनि शिला उपरे एकेक सिंहासन छे ॥ ते पांचसो पांचसो धनुषना लांबा ने पहोला छे ॥ अने २५० धनुषना उंचा छे । तिहां तिर्थंकर देवनो जन्म महोत्व करेछे । जंबुद्विपमध्ये जघन्य ४ तिर्थंकरनो । उत्कृष्ट ३४ तिर्थंकरनो जन्ममहोत्व करेछे ॥ मेरुना १६ नाम कहेछे ॥ मंदर ॥ १ ॥ मेरु ॥ २ ॥

मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयमन्न ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम ॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ए ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण ॥ १३ ॥ उत्तम ॥ १४ ॥ दिशादि ॥ १५ ॥ अवतंश ॥ १६ ॥ ए १६ नाम कह्या ॥ ५ ॥ चित्त ॥ १ विचित्त ॥ २ ॥ ए २ पर्वत देवकुरु क्षेत्रमा छे ॥ निषढपर्वतथकि उत्तरे ॥ ८३४ जोजन ने एक जोजनन ॥ ७ भाग करिये तेहवा ४ भाग जइये तिहां सीतोदा नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ २ जमक २ पर्वत उत्तरकुरु क्षेत्रमा छे ॥ निलवंतपर्वतथकि दक्षिणे ॥ ८३४ जोजन ने १ जोजनना ७ भाग करिये तेहवा ॥ ४ भाग जइये । तिहां सिता नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ चित्त १ ॥ विचित्त १ ॥ जमक २ ॥ ए ४ पर्वत १ हजार जोजनना उचा छे अने अढिसो जोजनना धरती माहि उंडा छे ॥ एक हजार जोजनना मूले लांबा पहोला छे ॥ साढासातसें जोजनना विचमा लांबा पहोला छे । उपरे पाचसो जोजनना लांबा पहोला छे । तेहनी त्रिगुणी ऊफेरि परिधि छे ॥ ११ ॥ वसे कचन गिरि पर्वत ते सिता सितोदा नदीनि विचे । पाच पाच द्रह छे । एवं १० ॥ एकेक द्रह पासे एकेकि कोरे दश पर्वत छे ॥ इम विजी

चुलिका उपरे १ सिद्धायतन छे ॥ ते १ कोशनुं लांबु ने । अर्ध कोशनु पहोलुं छे अने देशेउणु कोश उचुं छे । अनेक स्तम्भा छे जावधुपना कडुग छे ॥ ते पम्डगवनमा ॥ ४ सिद्धायतन छे ॥ १६ वावडिउ छे ॥ ४ महोल छे ॥ ते पूर्वनिपरे जाणवुं । पंडग वनमा ॥ ४ अभिषेकशिला छे । तेहना नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कंबलशिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्तकंबलशिला ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ शिला कहि ते । अर्द्ध चंद्रमाने आकारे छे ॥ पूर्व पश्चिमनिशिला । उत्तर दक्षिणे पाचसो पाचसो जोजननीलावि छे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोलि छे ॥ उत्तर दक्षिणनि शिला ते पूर्व पश्चिमे पाचसो पाचसो जोजननि लावि छे ॥ अने उत्तर दक्षिणे अढिसो अढिसो जोजननि पहोलि छे ॥ ४ जोजननि जाडपणे छे । सर्व कनकमय छे । ए ४ ने त्रिण दिशे पावडिया छे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिलाउपरे बे बे सिंहासन छे । अने उत्तर दक्षिणनि शिला उपरे एकेकु सिंहासन छे ॥ ते पांचसो पांचसो धनूपना लावा ने पहोला छे ॥ अने २५० धनू-पना उचा छे । तिहा तिर्थंकर देवनो जन्म महोछव करेछे । जंबुद्विपमध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो । ने उत्कृष्ट ४ तिर्थंकरनो जन्ममहोछव करेछे ॥ मेरुना १६ नाम कहेछे ॥ मंदर ॥ १ ॥ मेरु ॥ २ ॥

मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयप्रन्न ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम ॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ए ॥ लोकनान्नि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण ॥ १३ ॥ उत्तम ॥ १४ ॥ दिशादि ॥ १५ ॥ अवतश ॥ १६ ॥ ए १६ नाम कह्या ॥ ७ ॥ चित्त ॥ १ विचित्त ॥ २ ॥ ए २ पर्वत देवकुरु क्षेत्रमा छे ॥ निषढपर्वतथकि उत्तरे ॥ ८३४ जोजन ने एक जोजनन ॥ ७ न्नाग करिये तेहवा ४ न्नाग जइये तिहा सीतोदा नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ २ जमक २ पर्वत उत्तरकुरु क्षेत्रमा छे ॥ निलवंतपर्वतथकि दक्षिणे ॥ ८३४ जोजन ने १ जोजनना ७ न्नाग करिये तेहवा ॥ ४ न्नाग जइये । तिहां सिता नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ चित्त १ ॥ विचित्त १ ॥ जमक २ ॥ ए ४ पर्वत १ हजार जोजनना उंचा छे अने अढिसो जोजनना धरती माहि उंडा छे ॥ एक हजार जोजनना मूले लांवा पहोला छे ॥ साढासातसे जोजनना विचमा लांवा पहोला छे । उपरे पाचसो जोजनना लांवा पहोला छे । तेहनी त्रिगुणी जाझेरि परिधि छे ॥ ११ ॥ वसे कचन गिरि पर्वत ते सिता सितोदा नदीनि विचे । पाच पाच द्रह छे । एवं १० ॥ एकेक द्रह पासे एकेकि कोरे दश पर्वत छे ॥ इम विजी

पासे पण दश दश पर्वत छे । एवं ॥ १० इहने वेहुकाठे मिलिने विश विश पर्वत छे ॥ दशने
गिरि पर्वत थाय ॥ ते सो सो जोजनना ऊचा छे । पचविश पंचविश
ई ऊंडाछे ॥ मूले सों जोजनना लावा ने पहोला छे ॥ विचे पोणोसो
ने पहोला छे । उपरे पंचाश जोजनना लांबा ने पहोला छे । तेमनि त्रिगुणी
॥ हवे ॥ ४ गजदंता कहेछे । गंधमादन ॥ १ ॥ मालवत ॥ २ ॥
प्रत्न ॥ ४ ॥ निपढथकि वे निलवंतथकि वे गजदता निकलिने मेरु
रह्याछे । ते ३०२०९ जोजन ने ६ कलाना लावा छे ॥ निपढ ने
च्यारसो जोजनना ऊचा छे । अने सो सो जोजनना धरतीमा
गो जोजनना पहोला छे ॥ मेरु पासे जइये तिहा पाचसो पाचसो
अने सवासो सवासो जोजनना धरतीमांहि ऊंडा छे । घटता अंगुलने
गो पहोला छे । ए हस्तिना दांतने आकारे छे ॥२१९॥ सोल वखारापर्वत ॥ चित्त
। २ ॥ नलीन ॥ ३ ॥ एकसेल ॥ ४ ॥ त्रिकुट ॥ ५ ॥ वेसमण ॥ ६ ॥ अजण

॥ ७ ॥ मायजण ॥ ८ ॥ अकावइ ॥ ए ॥ पह्मावइ ॥ १० ॥ आशिविप ॥ ११ ॥ सुहावह ॥ १२ ॥ चदे ॥ १३ ॥ सूरे ॥ १४ ॥ नागे ॥ १५ ॥ देवे ॥ १६ ॥ एव १६ ते ॥ १६एए२ जोजन ने २ कलाना लाबा ठे । पाचसो पाचसो जोजनना पहोला ठे । निषढ निलवंतथकि निकलता च्यारसो च्यारसो जोजनना उंचा ठे । अने सो सो जोजनना धरतीमां ऊंडा ठे ॥ सिता सितोदा नदीनी पासे पाचसो पाचसो जोजनना उचा ठे । अने सवासो सवासो जोजनना धरतीमाहि ऊंडा ठे । पाचसो पाचसो जोजनना पहोला ठे । वखारापर्वत घोडाना खधने आकारे ठे ॥ २२१ ॥ चउत्रिश लाबा वैताढ तेमा ॥ १ भरतनो वैताढ ॥ १ इरवतनो वैताढ । अने ३२ विजयना ३२ ॥ एव ॥ ३४ वैताढ ते पचविश पंचविश जोजनना उचा ठे । अने सवाठो जोजनना धरतीमाहि ऊंडा ठे । पचाश पचाश जोजनना पहोला ठे । तेमनि वाहा ४८८ जोजन ने १६ कला ऊऊंरि ठे । तेमनी जीवा १०७२० जोजन ने १२ कलानि । तेमनि धनूषपिठ १०७४३ जोजन ने १५ कला । एकेके वैताढे वे वे गुफा ठे । तिमिसगुफा १ ॥ खन्डप्रपातगुफा ॥ २ ॥ ए २ गुफाउ । पंचाश पचाश जोजननि लाबिउ ठे । अने १२ जोजननी पहोलिउ ठे । अने आठ

जोजननि ऊंचिउ छे। तेमाहें बे बे नदी छे। तेहना नाम ॥ उमगजला ॥ १ ॥ निमगजला ॥ २ ॥ एकविश जोजन जइये तिहां उमगजला नदी आवे। ते त्रिण जोजनना पहोटमां छे। तेहमाहि हाथि घोडा बलद मनुष्यनु कलेवर कचरो पडे तेहने त्रिणवार भमाडि उछालि नाखे ते कारणे उमगजला कहिये। तिहाथि ? जोजन आघा जइये तिहा निमगजला नदी छे। ते ३ जोजनना पहोटमा छे तेहमाहि हाथि घोडा मनुष्य बलदनु कलेवर अनेरुं पुद्गल पडे तेने त्रिणवार भमाडिने हेठो बेसाडे ते कारणे निमगजला कहिये ॥ शेष ॥ ३२ दिर्घ वैताढ्य महाविदेह क्षेत्रमाहि छे। ते पण ए सरिखा छे। पण बाहा जीवा धनुपपिठ नथि। पल्यगने आकारे छे ॥ २६५ ॥ हवे ४ वाटला वैताढ कहेछे। सदावइ ॥ १ ॥ वियडावइ ॥ २ ॥ गधावइ ॥ ३ ॥ मालवंत। ४ ॥ ए ॥ ४ वाटला वैताढ जुगलियाना क्षेत्रमा छे। ते ॥ १ हजार जोजनना उंचा छे ॥ २५० ॥ जोजनना धरतीमांहि उंडा छे। मूले ॥ १ हजार जोजनना लांबा ने पहोला छे। धानना कोठारने आकारे छे ॥ तेनि ॥ ३१६७ जोजन झाझेरानि परिधि छे ॥ स्वेत वर्णं छे ॥ एव सर्व मिलिने ॥ २६९ पर्वत थया ॥ इति ॥ ४ चोथो पर्वतद्वार समाप्तं ॥४॥

हवे ए मो कुटद्वार कहे छे । कुम्रायक० । जंबुद्विपमांहि ॥ ५२५ कुट छे ॥ तेमांहि ॥ ४६७ कुट पर्वत उपरे छे। तेहनो विवरो कहेछे ॥ ३४ दिर्घ वैताढ । निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥ मेरु ॥ ३ ॥ एवं ॥ ३७ पर्वत ॥ अने विद्युप्रभ ॥ १ ॥ मालवंत ॥ २ ॥ ए २ गजदंता । ए ३ए पर्वत उपरे नव नव कुट छे ॥ ३ए ने नवे गुणतां ॥ ३५१ कुट थाय । चुलहिमवंत ने शिखरि । ए २ पर्वत उपरे इग्यार इग्यार कुट छे ॥ एवं २२ ॥ महाहिमवंत ने रूपि । ए ॥ २ पर्वत उपरे आठ आठ कुट छे। एवं १६ कुट। सोल वखारा पर्वत उपरे च्यार च्यार कुट छे। एवं ६४ कुट। सोमनस ॥१॥ गंधमादन ॥२॥ ए ॥ २ गजदंता उपरे सात सात कुट छे। एवं ॥ १४ कुट ॥ एवं सर्व मलिने ॥ ४६७ कुट पर्वत उपरना थया। अने शेष ५७ कुट नूमि उपरना छे ते कहेछे ॥३४॥ रुषभकुट ते ॥ १ नरतनो ॥ १ इरवतनो। अने ३२ विजयना ३२ ॥ एवं ३४ ॥ अने नद्रशाल वनना ८ ॥ देवकुरुना ८॥ उतरकुरुना ८ ॥ एवं सर्व मिलिने ५८ कुट नूमी उपरना थया ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ ५२५ कुट थया। इति ए मो कुटद्वार समाप्त ॥ ए ॥ हवे ६ गे तिर्थद्वार कहेछे ॥ तिह केo। जंबुद्विपमध्ये ॥ १०२ तिर्थ छे। ते किम ॥ ३२ विजय ॥ १ नरत ॥ १ इरवत ।

एवं ॥ ३४ ठेकाणा छे । एकेकामे त्रिण त्रिण तिर्थ छे । मागध ॥ १ ॥ वरदाम ॥ २ ॥ प्रन्नास ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ते अग्निकुणे ॥ १ ॥ नैरुत्त कुणे ॥ २ ॥ वायव्यकुणे ॥ ३ ॥ एवं ॥ ३४ त्रि १०२ तिर्थ थाय ॥ इति ६ठो तिर्थद्वार समास ॥ ६ ॥ हवे ७ मो श्रेणिद्वार कहेछे ॥ सेढिउ के० जंबु द्विप माहि १३६ श्रेणियो छे । ते वैताढ्य पर्वत उपरे दश दश जोजन ऊंचा चढिये । तिहा १ दक्षिणे ने ॥ १ उत्तरे ॥ ए बे विद्याधरनि श्रेणियो छे ॥ तेमाहि न्नरतना वैताढ उपरे गगन वलन्नादिक ॥ ५० नगर दक्षिणनि श्रेणिये छे । अने रथ चक्रवालादिक ६० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । इमज इरवतना वैताढ उपरे ६० नगर दक्षिणनि श्रेणिये छे । अने ५० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । महा विदेहना ३२ वैताढ उपरे दक्षिण उत्तरनि श्रेणिये पचावन पचावन नगर छे । सर्व मिलिने ३७४० नगर विद्याधरनि श्रेणिये छे । एवं ३४ ड ६८ विद्याधरनि श्रेणि । वलि विद्याधरनि श्रेणिथी १० जोजन ऊचा चढिये तिहा आन्नियोगिया देवतानि ॥ २ श्रेणि आवे । दक्षिणे १ ॥ ने ॥ १ उत्तरे एव ३४ ड ६८ श्रेणि आन्नियोगिया देवतानि छे ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ ६८ विद्याधरनि ने ॥ ६८ देवतानि । एव ॥ १३६ श्रेणियो छे । इति ७ मो श्रेणिद्वार समास ॥ ७ ॥ हवे ८ मो विजय

ह्यार कहेवे । विजय के० जबुद्विपमाहि ॥ ३४ विजयरूप स्थानक वे । तेहना नाम । कछे ॥ १ ॥ सुकछे ॥ २ ॥ महाकछे ॥ ३ ॥ कछगावइ ॥४॥ आवर्त्ता ॥ ५ ॥ मगला ॥ ६ ॥ पुखला ॥ ७ ॥ पुखलावती ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजय सिता महानदीने उत्तर दिशे पूर्व महाविदेहने विषे श्री मेरुपर्वतथि माभिने सितामूखवनसुधि प्रथम खाम्वु जाणवुं ॥ १ ॥ वछे ए ॥ सुवछे १० ॥ महावछे ११ ॥ वछगाइ १२ ॥ रमे १३ ॥ रमक १४ ॥ रमणिक १५ ॥ मगलावइ १६ ॥ ए ॥ ८ विजय सितानदीने दक्षिण पासे सितामूखवनथि माभिने मेरुसुधि मायजण वखारापर्व-तसुधि बीजु खाम्वु जाणवु ॥ २ ॥ पह्मे ॥ १७ ॥ सुपह्मे ॥ १८ ॥ महापह्मे ॥१९॥ पह्मगवाइ ॥ २० ॥ सखे ॥ २१ ॥ कुमुदे ॥ २२ ॥ नलीणे ॥ २३ ॥ नलीणावर्ती ॥ २४ ॥ ए ८ विजय सितोदानदीने दक्षिणाने काठे विद्युप्रज्ञ गजदंता पछि अकावति वखारापर्वतथि ते सितोदामूख वनसुधि त्रिजु खाम्वु जाणवु ॥३ ॥ वप्पे ॥२५॥ सुवप्पे ॥२६॥ महावप्पे ॥ २७ ॥ वप्पगाइ २८॥ वग्गु ॥ २९ ॥ सुवग्गु ॥ ३० ॥ गधिले ॥ ३१ ॥ गधिलावइ ॥ ३२ ॥ ए ८ विजय ते सितोदा मुखवनथि माभिने । सितोदा नदीने काठे देव वखारा पर्वतसुधि चोथुं खाम्वुं जाणवु॥४॥ ए ३२

विजय महाविदेह क्षेत्रमा छे ॥ ते सघलि विजय ॥ १६५९२ जोजन ने २ कलानि उत्तर दक्षिणे लाबि छे । अने २२१३ जोजन माठेरानि पूर्वपश्चिमे पहोलियो छे ॥ १ भरत ॥ १ इरवत । एव ३४ ॥ तिहा ॥ ३२ विजयनि । एक भरतनि । एक इरवतनि । ए ॥ ३४ राजधानी छे ॥ ३४ तिमिसगुफा ॥ ३४ खंडप्रपातगुफा ॥ ३४ कृतमालदेवता ॥ ३४ नटमालदेवता ॥ ३४ रुषभकुट ॥ एटला वाना शास्वता छे । इति ८ मो विजयद्वार समाप्तं ॥ ८ ॥ हवे ए मो द्रहद्वार कहेछे ॥ द्रह के० । जबुद्विपमा ॥ १६ ॥ द्रह छे । तेहना नाम । पद्म द्रह ॥ १ ॥ महापद्मद्रह ॥ २ ॥ पुंडरिक द्रह ॥ ३ ॥ महापुंडरिकद्रह ॥ ४ ॥ तिगिछ द्रह ॥५॥ केशरिद्रह ॥ ६ ॥ ए ॥ ६ द्रह वृषधर पर्वतना ॥ हवे ५ द्रह देवकुरुने विषे छे । निषढद्रह ॥ १ ॥ देवकुरुद्रह ॥ २ ॥ सूर्यद्रह ॥ ३ ॥ सुलसद्रह ॥४॥ विद्युत्प्रभद्रह ॥५॥ ए ॥ ५ द्रह देवकुरु क्षेत्रमा सितोदा नदीनि विचे छे । इमज उत्तरकुरु क्षेत्रने विषे सितानदीने मध्य भागे ॥ ५ द्रह छे तेहना नाम । निलवतद्रह ॥ १ ॥ उत्तरकुरुद्रह ॥ २ ॥ चद्रद्रह ॥ ३ ॥ एरावतद्रह ॥ ४ ॥ मालवतद्रह ॥ ५ ॥ एव १० ने ॥ ६ उपरला एव १६ द्रह थया ॥ हवे ?

पद्मद्रह अने पुंडरिकद्रह ए २ द्रह ॥ १ हजार जोजनना लांबा ॥ अने ५०० जोजनना पहोला छे ॥ १० जोजनना धरतीमांहि ऊंडा छे । ए प्रमाणेज देवकुरु उत्तरकुरुना १० द्रह जाणवा ॥ एकेका द्रहमांहि ॥ १२०५०१२० कमल छे । सघला रत्नमय छे ॥ पद्मद्रह मध्ये १ महोटु कमलछे ॥ ते श्रीदेवीनु छे ॥ अने १०८ कमल श्रीदेवीना शृंगारना छे ॥ ४ कमल महत्तरिकाना छे ॥ ७ कमल अणिकाना छे ॥ १६ हजार कमल आत्मरक्षक देवना छे ॥ ४ हजार कमल सामानिक देवना छे ॥ ८ हजार कमल माहिली परिषदाना छे ॥ १० हजार कमल विचलि परिषदाना छे ॥ १२ हजार कमल बाहिरली परिषदाना छे ॥ तेने फिरता ३ कोट कमलना छे ॥ तेमा ३२ लाख कमल पहिला कोटना छे ॥ ४० लाख कमल विचला कोटना छे ॥ ४८ लाख कमल बाहिरला कोटना छे । एव सर्व मिलिने १२०५०१२० कमल थया ॥ तेहमांहि महोटु कमल ॥ १ जोजननु लांबु ने पहोलुं छे । अर्द्ध जोजननु जाडु छे । १० जोजननु पाणिमांहि ऊंडु छे ॥ २ कोश पाणिथकि ऊंचु छे ॥ १० जोजन ऊफेरु सर्वांगे परुप्यु । ते कमलनु वज्र रत्नमय मूल छे । रिष्ट रत्नमय कंद छे । वैरुलि रत्नमय निलवरणा

। पानमा छे । जवुनंद राता रत्न सुवर्णमय माहिला पानमा छे ॥ तपाव्या सोनामय
छे । नाना प्रकारना मणिमय जे उपरे पाखमियो छे । सोनानि कर्णिका छे । वे
कर्णिका लांबि ने पहोली छे ॥ एक कोशनो जाममपणे मोमो छे ते उपर घणु रमणिक
देश जागे श्रीदेवीनुं घर छे । ते १ कोशनुं लावुं ने अर्ध कोशनु पहोलुं छे ॥
श उचुं छे ॥ अनेक स्तम्भा छे ॥ घगास्यो सुवर्णकरि ते जोवा योग्य छे ॥ ते
रुणा छे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥ ३ ॥ ते बारणा ॥ ५०० धनुषना
धनुपना पहोला छे । ते जुवनमे एक मणिपिठिका छे । ते ५०० धनूषनि
छे ॥ २५० धनूषनी उची छे । ते मणिपिठिका उपरे १ देवसेजा रहेवानो
॥ हवे महापद्मद्रह ॥ १ ॥ महापुंमरिकद्रह २ । ए २ द्रह ॥ एकेको २ हजार
ो लांबो ने १ हजार जोजननो पहोलो छे । अने १० जोजननो घरतीमाहि उमो छे ॥
द्रहमा हीदेवी रहेछे ॥ महापुमरिकद्रहमा बुद्धि देवी रहेछे ॥ एहना कमल श्रीदेवी-
ाणवा । पण कमलनु मान वमणु जाणवुं । तेमाहि महोटुं कमल ॥ २ जोजननु

लांबु ने पहोलु छे ॥ अने १ जोजननु जाडु छे ॥ हवे तिगिछद्रह ॥ १ ॥ केशरिद्रह ॥ २ ॥ ए २ द्रह एकेको ४ हजार जोजननो लांबो ने ॥ २ हजार जोजननो पहोलो छे ॥ १० जोजननो धरतीमांहि ऊंडो छे ॥ तिगिछद्रहमा धृतिदेवी रहेछे । केशरिद्रहमा कीर्तिदेवी रहेछे । एहनुं महोटु कमल ॥ ४ जोजननुं लांबु ने पहोलु छे । अने २ जोजननु जाडु छे । कमल श्रीदेवि निपरे जाणवा । इम सोले द्रहना ॥ १२०५०१२० कमलने १६ गुणा करता शाश्वता कमल ॥ १९२८०१९२० कमल थाय ॥ अने ५ द्रह देवकुरुमे ॥ ५ ॥ उत्तरकुरुमे ॥ ए १० द्रह धरती उपरे छे ॥ तेहने नामे देवताना नाम छे । एक पल्यनु आयुष छे । अने चुलहिमवंत पर्वत उपरे पद्मद्रह छे तिहा श्रीदेवीनो वास छे । शिखरिपर्वत उपरे पुंडरिकद्रह छे ॥ तिहा लक्ष्मी देवीनो वास छे ॥ महाहिमवत पर्वत उपरे महापद्मद्रह छे । तिहा ह्रिदेवीनो वास छे ॥ रूपिपर्वत उपरे । महापुंडरिक द्रह छे । तिहा बुद्धिदेवीनो वास छे ॥ निषढपर्वत उपरे तिगिछ द्रह छे । तिहा धृतिदेवीनो वास छे ॥ निलवंतपर्वत उपरे केशरि द्रह छे । तिहा कीर्तिदेवीनो वास छे ॥ ए ६ देवीयो भवनपतिनी जातिनि जाणवि । तेहनु

युप १ पल्यनुं छे ॥ इति ए मो द्रहद्वार समाप्त ॥ ए ॥ हवे दशमे सलिला द्वार कहेछे ॥
[illegible] के० जंबुद्विप मध्ये ॥ १४५६०७० नदियो छे तेमाहि पद्मद्रहने पूर्वदिशिने तोरणेथि
१ ॥ ५०० जोजन पूर्व साहमि गइ । तिहा गंगा वर्तन कुट छे तिहा अफलाणी ।
ण दिशे चालि ते ५२३ जोजन ने ३ कला दक्षिण दिशे पर्वत उपरे गइ । तिहा
[illegible]ना मुखमाथि पाणि पडे तिम मोतिना हार सरिखु महामगरमछनामुखने आकारे
[illegible]कामाथि काइक अधिक १०० जोजन उचेथि पाणि पडेछे । ते जीन्नीका अर्ध
वि छे । अने सवाछ जोजननि पहोलि छे ॥ प्रनालि मगरमछना मुख विकस्या
न सठाणे छे । सर्व वज्रमय छे । आछो तेजवत छे ॥ तेमाहिथि पाणि पडेछे ॥ तिहा १ महोटो
प्रपात नामा कुंड छे । ते कुंड ॥ ६० जोजननो लाबो ने पहोलो छे ॥ १० जोजननो उंडो
ते कुंडनि रूपामय उपकठपालि छे । वज्र पाषाणमय तलो छे । सुखे माहि उत्तरिये । नाना
मणि रत्नेकरि बाध्योछ काठो जेहनो ॥ वज्रमय तलो छे सुवर्णनो ॥ मध्य न्नाग रूपानि वेलु छे ।
गन्निर शितल जल छे अने ते कमलने पानडे छायु छे । घणा उत्पल कमल छे । कुमुद नलीन

पुंमरिक शतपत्र सहस्रपत्र कमल घणा छे । गंगा कुंमने ३ बारणा छे । त्रिण दिशे पावम्नियां छे । पूर्व दिशे ॥ १ ॥ दक्षिण दिशे ॥ २ ॥ पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ पावम्नियानो वर्णव जिम पापाण तेहनो उपरलो भाग रिष्ट रत्नमय छे । वैरुलिरत्नमय स्तंभा छे । सोना रुपाना पाटिया छे । लोहिताक्ष रत्नमय खिला छे । वज्रमय साधो जम्नि छे । मणिना आलंबन पकम्नवाने पावम्नियां आगले प्रत्येक प्रत्येक तोरण छे । ते मणि सुवर्ण मुक्ताफल हारे करि शोभेछे । ते गंगाप्रपात कुंमनि विचे ॥ १ गंगाद्विप नामा द्विपो कह्यो । ते ८ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ २ कोश पाणिथकि उचो छे । सर्व वज्र रत्नमय छे । गंगाद्विपने उपरे घणु रमणिक छे । ते उपर १ गंगा देवीनु भवन कह्यु । ते १ कोशनु लांबु ने अर्द्ध कोशनु पहोलुं छे अने देशे उणु कोश उचु छे । अनेक स्तंभा छे तेहनो वर्णव श्रीदेवीनि परे जाणवो । गंगानो शास्वतो नाम छे । ते गंगाप्रपात कुंमना दक्षिण दिशना बारणाथि गंगा नदी निकलिने । उत्तर भरतमध्ये वहेतिथकी ७ हजार नदी साथे खंमप्रपात गुफा ने । वैताढ पर्वतने हेठे थइने ॥ दक्षिणार्द्ध भरतमाहि वहेति बिजी ७ हजार नदी भलतिथकि सर्व ॥ १४ हजार नदीने परिवारे जगतीने भेदिने पूर्वना

आयुष १ पल्यनु छे ॥ इति ए मो द्रहद्वार समाप्त ॥ ए ॥ हवे दशमे सलिला द्वार कहेछे ॥ सलिलाद्व के० जंबुद्विप मध्ये ॥ १४५६०ए० नदियो छे तेमाहि पद्मद्रहने पूर्वदिशिने तोरणेथि गगा निकलि ॥ ५०० जोजन पूर्व सांहमि गइ । तिहां गगा वर्तन कुट छे तिहा अफलाणी । तिहाथि दक्षिण दिशे चालि ते ५२३ जोजन ने ३ कला दक्षिण दिशे पर्वत उपरे गइ । तिहा महोटा घमाना मुखमाथि पाणि पमे तिम मोतिना हार सरिखु महामगरमछनामुखने आकारे परनालि जीन्नीकामाथि काइक अधिक १०० जोजन उचेथि पाणि पमेछे । ते जीन्नीका अर्द्ध जोजननि लावि छे । अने सवाछ जोजननि पहोलि छे ॥ प्रनालि मगरमछना मुख विकस्या तेहने सठाणे छे । सर्व वज्रमय छे । आछो तेजवत छे ॥ तेमाहेथि पाणि पमेछे ॥ तिहा १ महोटो गगाप्रपात नामा कुम छे । ते कुम ॥ ६० जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ १० जोजननो उंमो छे । ते कुमनि रूपामय उपकछपालि छे । वज्र पाषाणमय तलो छे । सुखे माहि उत्तरिये । नाना मणि रत्नेकरि बाध्योछे काठो जेहनो ॥ वज्रमय तलो छे सुवर्णनो ॥ मध्य भाग रुपानि वेलु छे । गंभिर शितल जल छे अने ते कमलने पानमे छायु छे । घणा उत्पल कमल छे । कुमुद नलीन

पुरूरिक शतपत्र सहस्रपत्र कमल घणा छे । गगा कुरूने ३ वारणा छे । त्रिण दिशे पावरूिया छे । पूर्व दिशे ॥ १ ॥ दक्षिण दिशे ॥ २ ॥ पश्चिम दिशे ॥ ३ ॥ पावरूियानो वर्णव जिम पाषाण तेहनो उपरलो न्नाग रिष्ट रत्नमय छे । वैरुलिरत्नमय स्तम्ना छे । सोना रुपाना पाटिया छे । लोहिताक्ष रत्नमय खिला छे । वज्रमय साधो जमि छे । मणिना आलवन पकरूवाने पावरूिया आगले प्रत्येक प्रत्येक तोरण छे । ते मणि सुवर्ण मुक्ताफल हारे करि शोन्नेछे । ते गगाप्रपात कुरूनि मिचे ॥ १ गगाद्विप नामा द्विपो कह्यो । ते ७ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ २ कोश पाणियकि उचो छे । सर्व वज्र रत्नमय छे । गगाद्विपने उपरे घणु रमणिक छे । ते उपर १ गगा देवीनु न्नवन कह्यु । ते १ कोशनु लांबु ने अर्द्ध कोशनुं पहोलुं छे अने देशे उणु कोश उचु छे । अनेक स्तम्ना छे तेहनो वर्णव श्रीदेवीनि परे जाणवो । गगानो शास्वतो नाम छे । ते गंगाप्रपात कुरूना दक्षिण दिशना वारणाथि गगा नदी निकलिने । उत्तर न्नरतमध्ये वहेतियकी ७ हजार नदी साथे खरूप्रपात गुफा ने । वैताढ पर्वतने हेठे थइने ॥ दक्षिणार्द्ध न्नरतमाहि वहेति बिजी ७ हजार नदी न्नलतियकि सर्व ॥ १४ हजार नदीने परिवारे जगतीने न्नेदिने पूर्वना

लवणसमुद्रमाहि जलि ॥ इमज सिंधु पण पश्चिम दिशे जाणवि । सलिलाउ केण । जवुद्विप माहि १

गो ठे । तेहनो विवरो कहेठे । ॥ गंगा ॥ १ ॥ सिंधु ॥ २ ॥ रत्ता ॥ ३ ॥
नदीयो मूल थकि निकलता सवाछो जोजननि पहोलिउ । अने अर्द्ध
उद्रूरे समुद्रमा जलता साढावासठ जोजननि पहोलि अने अढि जोजननि
चउद चउद हजार नदियोनो परिवार जाणवो ॥ सर्व मिलिने ॥ १४ चोकु
। पर ॥ हवे रोहिया १ । रोहितसा २ । ए २ नदियो हेमवय क्षेत्रमा ठे ।
रणवय क्षेत्रमा ठे । एव ४ नदी निकलतां साढा
समुद्रमा जलता ॥ सवासो जोजननि
विश अठाविश हजार नदीयोनो
र नदीयो थइ ॥ हवे हरिक-
मा ठे ॥ अने नरकंता ॥ १ ॥
मूले निकलता पचवीश पचत्रिश

जोजननि पहोलियो छे । अने ॥ २ गाउनि उंडियो छे । छेहडे समुद्रमा जलता । अढिसो अढिसो जोजननि पहोलियो छे । अने पाच पाच जोजननि उंडियो छे ॥ एकेकि नदीनो परिवार छपन हजार छपन हजार नदीयोनो जाणवो । एव ४ थइने ॥ २ लाख ने २४ हजार नदीयो थइ ॥ सिता ॥ १ ॥ सीतोदा ॥ २ ॥ ए २ नदीयो महाविदेह क्षेत्रमा छे । ते मूले ॥ ५० पचास पचास जोजननि पहोलियो छे । च्यार च्यार गाउनि उंडियो छे ॥ छेहडे समुद्रमा जलता । पाचसो पाचसो जोजननि पहोलियो छे । दश दश जोजननि उंडियो छे ॥ एकेकिनो पाच लाख ने बत्रिश हजारनो परिवार छे ॥ एव २ नो परिवार १० लाख ने ६४ हजार नदियोनो जाणवो ॥ महाविदेह क्षेत्रनि १६ विजयमा । गंगा ॥ १ ॥ सिंधु ॥ २ ॥ छे ते ॥ १६ उ बत्रिश थइ । अने ॥ १६ ॥ विजयमा । रत्ता ॥ १ ॥ रत्तवइ ॥ २ ॥ छे ते पण ॥ १६ ॥ उ ॥ ३२ थइ । एव महाविदेह क्षेत्रमा ६४ नदीयो छे ॥ ६४ नु पहोलपणु भरतनि गगानि परे जाणवु । ते एकेकिनो चउद चउद हजार नदीयोनो परिवार जाणवो ॥ चोसठ ने १४ हजारे गुणता ८ लाख ने ९६ हजार नदीयो थाय । अने देवकुरुनि ८४ हजार अने उत्तर-

कुरुनि ८४ हजार । एव १ लाख ने ६८ हजार अने ८ लाख ने ९६ हजार मांहि भेलविये एटले ॥ १० लाख ने ६४ हजार थाय एटलो परिवार सीता सीतोदानो जाणवो अने शेष १२ नदीयोनो परिवार ३ लाख ने ९२ हजार । एव सर्वमिलिने १४ लाख ५६ हजार नदीयो थाय । अने ९० महोटी नदीयो जाणवी ॥ हवे ॥ १२ अंतर नदीयो महाविदेहक्षेत्रमा छे ते ॥ ८ विजयनु ॥ १ गाम्बु तेमाहि ॥ ३ नदीयो ॥ पूर्व महाविदेहने उत्तरने खाम्बे ३ ॥ अने दक्षिणने खांम्बे ३ ॥ ए ६ ॥ इमज पश्चिममहाविदेहने उत्तरने खाम्बे ३ ॥ अने दक्षिणने खाम्बे ३ ॥ एव १२ अतर नदीयो छे ते एकेकि सवासो सवासो जोजननि पहोलियो छे । अने अढि अढि जोजननि ऊण्डियो छे ॥ १६५९२ जोजन ने २ कलानि लाबियो छे ॥ ते १२ अतर नदीना नाम कहेछे ॥ गाहावइ ॥ १ ॥ दहावइ ॥ २ ॥ पकावइ ॥ ३ ॥ ततजला ॥ ४ ॥ मतजला ॥ ५ ॥ उमतजला ॥ ६ ॥ खिरोदा ॥ ७ ॥ सिहसोया ॥ ८ ॥ अतोवाहिणी ॥ ९ ॥ उमिमालिनी ॥ १० ॥ फेणमालीनी ॥ ११ ॥ गम्भीरमालिनी ॥ १२ ॥ एव सर्व थइ महोटि नदीयो ॥ १४ ॥ ६४ ॥ १२ ॥ थइने ९० नदीयो थइ । एहनो परिवार सर्व नदीयो

थइने ॥ १४५६०७० नदीयो थाय ॥ इति १० मो सलिलाद्दार संक्षेपथि समाप्त ॥ १० ॥
इति खंमाजोयण समाप्तं ॥

ॐ नमः सिद्धं ॥ अथ सजया लिख्यते गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥ कप्प ४ चरित्त ५ पमिसेवणा ६ नाणे ७ ॥ तित्थेय ८ लिंगे ९ शरीरे १० ॥ खेत ११ काल १२ गइ १३ संजम १४ निकासे १५ ॥ १ ॥ जोगु १६ वनगे १७ कसाए १८ ॥ लेशा १९ परिणाम २० बंध २१ वेदेय २२ ॥ कम्मोदीरणा २३ उव सपजहणा २४ ॥ सन्नाय २५ आहारे २६ ॥ २ ॥ नव २७ आगरिसे २८ काल २९ तरेय ३० ॥ समुघाय ३१ खेत ३२ फुसणाय ३३ ॥ न्नावेय ३४ परिमाणे ३५ खलु ॥ अपावहुच्च ३६ सजयाणं ॥ ३ ॥ इति गाथा त्रण संपूर्ण ॥

१ पन्न० ॥ सामायक चारित्रना बे न्नेद । एक थोमा कालनु ते प्रथम जिनेश्वरने तथा चर्मजिनेश्वरने वारे ॥ १ ॥ बीजुं घणाकालनु ते बावीस जिनने वारे । तथा महाविदेह केत्रे ॥ २ ॥ १॥

छेदोपस्थापनीयना बे प्रकार । एक अतीचार सहित ने पंच महाव्रत आरोपीए । बीजु अतीचाररहित ने पच महाव्रत आरोपीए २ । परिहार विसुध चारित्रना बे प्रकार । एक तप करवा पेठो ॥१॥ बीजो परिहार विसुधचारित्र सेवीने नीकल्यो ते २॥३॥ सूक्ष्म संपराय चारित्रना बे प्रकार । एक उपसमश्रेणीथी पडतो ॥१॥ बीजो क्षपक श्रेणीए चडतो ॥ २ ॥४॥ यथाख्यातचारित्रना बे प्रकार । एकछदमस्थ ॥ १ ॥ बीजो केवलीनो ॥ २ ॥

२ सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय २ सवेदी ने अवेदी होय जो अवेदी होयतो। उपसमवेदीनेखीणवेदिहुवे । अने सवेदी होय तो । त्रिणेवेदमा हुवे । अने परिहार विसुधसवेदी होय पण अवेदी न होय । सवेदी होय तो पुरुष १ ॥ पुरुष नपुंसक । ए बे वेदमे हुवे ॥ सूक्ष्मसंपराय १ अने जथाख्यात ए ॥ २ ॥ अवेदी होय उपसम ने खीणवेदीहोय॥ ३ आगला ॥ ४ चारित्र ॥ सरागी । अने जथाख्यातवीतरागी ते उपसम ने खीणरागी होय ॥

४ स्थीतीकल्प ॥ १ ॥ अस्थीतीकल्प॥२॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥ स्थिवरकल्प ॥४॥ कल्पातीत ॥५॥ तेमा स्थीती कल्पमा ॥ ५ चारित्र लाभ्ने ॥ अस्थिती कल्पमा ३ चारित्र लाभ्ने सामायक ॥१॥ सूक्ष्म सपराय ॥ २ ॥ जथाख्यात । ए ३ ॥ लाभ्ने ॥ जिनकल्प अने स्थिवरकल्प ए ॥ २ मा आगल्या ॥ ३ चा० लाभ्ने ॥ कल्पातीतमा ॥३ चारित्र लाभ्ने सा० ॥ सु०॥ जथाख्यात । ए ३ लाभ्ने ॥

५ पुलाक ॥ १ ॥ वकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवणा ॥ ३ ॥ कषायकुसील ॥ ४ ॥ निर्ग्रंथ ॥ ५॥ स्नातक ॥६॥ तेमा । पुलाक ॥ १ ॥ वकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवणा ॥ ३ ॥ ए ३ मा वे चारित्र लाभ्ने । सामा० ॥ १ ॥ छेदो० । ए २ चारित्र लाभ्ने । कषायकुसीलमा आगला ॥ ४ चारीत्र लाभ्ने। निर्ग्रंथमा ने स्नातकमा । एक जथाख्यात चारित्र लाभ्ने ॥

६ हवे प्रतिसेवणाद्वार कहेछे। प्रतिसेवीमा आगला ॥ २ चारित्र लाभ्ने ॥ तेमा पण मुल गुण उत्तर गुण प्रतिसेवीमां वे आगल्या चारित्र लाभ्ने ॥ अने अप्रतिसेवीमां तो ॥ ५ चारित्र लाभ्ने ॥

छेदोपस्थापनीयना बे प्रकार। एक अतीचारसहित ने पच महाव्रत आरोपीए। बीजु अतीचाररहित ने पच महाव्रत आरोपीए ७। परिहार विसुध चारित्रना बे प्रकार। एक तप करवा पेठो ॥१॥ बीजो परिहार विसुधचा रित्र सेवीने नीकल्यो ते २॥३॥ सूक्ष्म सपराय चारित्रना बे प्रकार। एक उपसमश्रेणीथी पड़तो ॥१॥ बीजो क्षपक श्रेणीए चढ़तो ॥ २ ॥४॥ यथा ख्यातचारित्रना बे प्रकार । एकछद मस्थ ॥ १ ॥ बीजो केवलीनो ॥ २ ॥

७ सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय २ सवेदी ने अवेदी होय जो अवेदी होयतो। उपसमवेदीनेखीणवेदिहुवे। अने सवेदी होय तो। त्रिणेवेदमा हुवे। अने परि हार विसुधसवेदी होय पण अवेदी न होय। सवेदी होय तो पुरुष १ ॥ पुरुष नपुसक। ए बे वेदमे हुवे ॥ सूक्ष्मसप राय ७ अने जथाख्यात ए ॥ २ ॥ अवेदी होय उपसम ने खीणवेदीहोय॥ ३ आगला ॥ ४ चारित्र ॥ सरागी। अने जथाख्यातवीतरागी ते उपसम ने खीण रागी होय ॥

४ स्थीतीकल्प ॥ १ ॥ अस्थीतीकल्प॥२॥
जिनकल्प ॥ ३ ॥ स्थिवरकल्प ॥४॥
कल्पातीत ॥५॥ तेमां स्थीती कल्पमा
॥ ५ चारित्र लाभे ॥ अस्थिती कल्पमा
३ चारित्र लाभे सामायक ॥१॥ सूक्ष्म
संपराय ॥ २ ॥ जथाख्यात । ए ३ ॥
लाभे ॥ जिनकल्प अने स्थिवरकल्प
ए ॥ २ मां आगल्या ॥ ३ चा० लाभे ॥
कल्पातीतमां ॥३ चारित्र लाभे सा० ॥
सु०॥ जथाख्यात । ए ३ लाभे ॥
५ पुलाक ॥ १ ॥ वकुस ॥ २ ॥ प्रतिसे
वणा ॥ ३ ॥ कषायकुसील ॥ ४ ॥ नि

ग्रंथ ॥ ५॥ स्नातक ॥६॥ तेमा । पुलाक
॥ १ ॥ वकुस ॥ २ ॥ प्रतिसेवणा
॥ ३ ॥ ए ३ मा वे चारित्र लाभे ।
सामा० ॥ १ ॥ छेदो० । ए २ चारित्र
लाभे । कषायकुसीलमा आगला ॥ ४
चारीत्र लाभे। निर्ग्रंथमा ने स्नातकमा ।
एक जथाख्यात चारित्र लाभे ॥
६ हवे प्रतिसेवणाद्वार कहेछे। प्रतिसेवीमां
आगला ॥ २ चारित्र लाभे ॥ तेमा
पण मुल गुण उत्तर गुण प्रतिसेवीमा
वे आगल्या चारित्र लाभे ॥ अने अप्र
तिसेवीमा तो ॥ ५ चारित्र लाभे ॥

७ हवे ज्ञानद्वार कहेछे । आगला ॥४ चारित्रमां ॥ २ ज्ञान ॥ ३ ॥ ज्ञान ॥४ ज्ञान लाभे । जथाख्यातमां ज्ञान ५ भजना । अज्ञान एके चारित्रमा लाभे नही । हवे केटलु भणे । सामा० ॥ १ ॥ छेदो० २ । सूक्ष्म० ३ । जथाख्यात ॥ ४ । ए ॥ ४ चारित्रजघन्य ॥ ८ प्रवचनमाता । भणे । उत्० ॥ १४ पूर्व पुरा भणे । परिहारवीसुध नवमा पूर्वनी त्रिजिआचार वत्थु भणे । उ० । देशे उणा ॥ १० पूर्व भणे ॥

८ हवे तीर्थद्वार कहेछे ॥ तीर्थमां पाच चारित्र लाभे । अतीर्थमां ३ चारित्र लाभे ते सामा० ॥१॥ सुक्ष्मसपराय।२। जथाख्यात ३ । तिर्थंकर प्रत्येकबूधमा ॥ पण एज ३ चारित्र लाभे ॥

९ हवे लिंगद्वार कहेछे । द्रव्यलिंग आश्री सलिंगमा ॥ ५ चारित्र लाभे । अन्य लिंग ग्रहलिंगमा । परिहारवीसुध वरजीने ॥ ४ चारित्र लाभे । भावलिंग आश्री सलिंगमा ५ चारित्र लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमा एके चारित्र लाभे नही ॥

१० हवे सरीरद्वार कहेछे । सामा० ।

छेदो० । ए २ मा ॥ ३ सरीर ॥ ४ सरीर तथा ॥ ५ सरीर लाभ्ने । पावला ॥ ३ चारित्रमा ॥ ३ सरीर लाभ्ने ते ॥ उदारीक ॥ १ ॥ तेजस ॥२॥ कार्मण ॥ ३ ॥

११ हवे खेत्रद्वार कहेछे । कर्मभूमीमां जनम उत आश्री ॥ ५ चारित्र लाभ्ने । अकर्मभूमीमा एके चारित्र न लाभ्ने ॥ साहारण आश्री कर्मभूमीमा अकर्म भूमीमा परीहारवीसुधवरजीने ॥ ४ चारित्र लाभ्ने ॥

१२ हवे कालद्वार कहेछे । अवसर्प्पिणी ॥ उत्सर्पिणी ॥ ए २ मा ॥ ५ चारित्र लाभ्ने । नोअवसर्पिणी नोउत्सर्पिणीमा । छेदोप० । परिहार० । ए २ वरजीने ॥ ३ चारित्र लाभ्ने ॥

तेमा अवसर्पिणीकालमां जनम आश्री ॥ १ । २ ॥ आरामा एके चारित्र न लाभ्ने॥३ । ४ ॥ आरामा ॥ ५ ॥ चारित्र लाभ्ने । पाचमा आरामा ॥ ३ चारित्र लाभ्ने । सामा०॥१॥ छेदो० ॥२ ॥ ए ॥२ चारित्र लाभ्ने।छठेआरे एके न लाभ्ने॥हवे उतआश्री ॥१ ।२॥ आरामां एके चारित्र न लाभ्ने॥३।४।५॥ आरामा ॥५ चारित्र

लाभे ॥ ठठा आरामां एके चारित्र लाभे नही। सादारण आश्री परिहारवीसुध वरजीने ॥४ चारित्र लाभे। हवे चढता कालमा। जनम आश्री ॥ १ थारे एके चारित्र न लाभे ॥२। ३। ४ ॥ आरामां ॥ ५ चारित्र लाभे ॥ ५। ६ ॥ आरामा एके चारित्र लाभे नही। हवे छत आश्री ॥ १। २ ॥ आरामा एके चारित्र न लाभे ॥३।४ ॥ आरामा ॥ ५ चारित्र लाभे ॥ ५। ६ ॥ आरामां एके चारित्र न लाभे। हवे सादारण आश्री परिहारवीसुधवरजीने ॥ ४ ॥ चारित्र

लाभे। नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमां। जनमछतआश्री ॥ ६ जुगलीयाना खेत्रमा एके चारित्र न लाभे ॥ पंच महाविदेह खेत्रमा। छेदो० । परिहार विसुध वरजीने ॥ ३ चारित्र लाभे। हवे सादारण आश्री परिहार वीसुध वरजीने ॥६ अकर्मभूमि। १ महाविदेह एवं ७ क्षेत्रमा ॥ ४ चारित्र लाभे ॥

१२ हवे गतिद्वार कहेछे। नरक ॥१॥ तिर्यंच ॥२॥ मनुष्य। ए ३॥ गतिमां न जाय।१ देवगतिमा जाय।तेमा। सामा० । छेदो० । ए २ आराधकआश्री जघन्य। पहेले देव

लोके उत्० । अनुत्तरविमाने जाय । परि
हारवीसुध । जघन्यण॥१ देवलोकेजाय।
अने । उत्० । आठमे देवलोके जाय ।
सूक्ष्मसपराय ॥ १ ॥ जथाख्यात ॥२॥
ए ॥ २ ज० । उ० । अनुत्तर विमाने
जाय । अने जथाख्यातवालो मोक्ष पण
जाय । हवे आराधक पाच पदवी पामे ।
ईंद्रनी ॥ १ ॥ सामानीकनी ॥२॥ त्राय
त्रिंसकनी ॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥ ४ ॥
अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ॥५ पदवी पामे ।
तेमा । सामा० ने छेदो०। ए २ ॥ पांच
पदवी पामे । परिहारविसुध १ अहमें

द्रनी वरजीने ॥ ४ पदवी पामे ।
सूक्ष्मसपराय ने जथाख्यात । ए २ ॥ १
अहमेंद्रनी पदवी पामे । हवे विराधक
आश्री पांचे चारित्रवाला । ज० ।
भवनपतीमा जाय । उ० । पहीले देव
लोके जाय । पदवी पाचमाइली एके
न पामे ॥ हवे स्थिति कहेछे । आवता
भव आश्री । आगला २ चारित्रनी ।
ज० बे पल्यनी । उ० ॥ ३३ साग
रनी । परिहारवीसुधनी । ज० बे
पल्यनी उ० ॥ १८ सागरनी ॥
सूक्ष्मसपराय । जथाख्यात । ए २

चारित्रनी । जघन्य० उत्कृष्टी ॥ ३३ सागरनी ॥

१४ हवे संजमठाणाद्वार कहेछे । आगला ॥ ३ चारित्रना असंख्याता थानक । सूक्ष्मसंपरायना असंख्याता थानक अंतर्मु० कालप्रमाणे समय २ प्रते चारित्रनी विशुद्धिना विशेषभावथी ते असंख्याय अने जथाख्यातनु एकज स्थानक ॥ हवे अल्पबहुत्व । सर्वथी थोडा । जथाख्यातना स्थानक ॥ १॥ तेथी सूक्ष्मसंपरायना असंख्यातगुणा ॥ २॥ तेथी परिहारवीसुधना असंख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी । सामा० ने छेदोप० माहोमाहि तुल्य ने असंख्यातगुणा ॥ ४ ॥

१५ हवे निकासद्वार कहेछे । पाछे चारित्रना अनंतापर्यव जाणवा । सामायक ॥ सामायक ॥ १ ॥ छेदोप० ॥ २ ॥ परिहारवीसुध ॥ ३ ॥ साथे छठाणव डियो ॥ उपला २ थी अनंतगुणहीण ॥ १ ॥ छेदोपस्था० ॥ सामायक० । छेदो० । परिहारवीसुध साथे छठाणवडियो । उपला ॥ २ थी अनंतगुणहीण ॥ २ ॥ हवे परिहार वीसुध ॥

सामा० । छेदोप०। परिहारवीसुध साथे छगणवक्रियो । उपला २ थी अनंतगुण हीण ॥ ३ ॥ हवे सुक्ष्मसंपराय । सामायक। छेदोप० । परिहारवीसुधथि अनतगुण अधिक । पण ॥ नो तुल्य० । सूक्ष्मसपराय । सूक्ष्मसपरायसाथे ॥ छगण वक्रीयो । जो हीणो होय तो । अनतगुणहीणो । जो अधिको होय तो अनंतगुण अधिक । अने तुल्य पण होय । अने जथाख्यातथि अनतगुण हीण ॥ जथाख्यात आगला ॥ ४ थी अनतगुण अधिक ॥ जथाख्यात जथाख्यात साथे तुल्य ॥ हवे अल्पबहुत्व । सर्वथी थोडा सामायक । छेदोपस्थापनीकना ज० पर्यव ॥ माहोमाहि तुल्य । तेथी परिहारवीसुधना । ज० पर्यव अनतगुणा । तेथी परिहारवीसुधना । उ० पर्यव अनतगुणा ॥ तेथी सामायक० छेदोपस्थापनियना ॥ उत्० पर्यव अनंतगुणा अने माहोमाहि तुल्य । तेथि सूक्ष्मसंपरायरायना । ज० पर्यव अनंतगुणा । तेथी सूक्ष्मसंपरायना उ० पर्यव अनतगुणा। तेथी जथाख्यातना ज०।उ०। पर्यव अनंतगुणा ने माहोमाहि तुल्य ॥

१६ हवे जोगद्वार कहेछे । पाचे चारित्र सजोगीमां ते मनजोग ॥ १ ॥ वचन जोग ॥२॥ कायजोग ॥३॥मा आगल्या चारित्र ॥ ४ लाभे ॥ अने अजोगीमां एक जथाख्यात लाभे ॥

१७ हवे उपयोगद्वार कहेछे । सागार उपयोगमा पाचे चारित्र लाभे । अणागार उपयोगमां । सूक्ष्मसंपराय वरजीने ॥ ४ चारित्र लाभे ॥

१८ हवे कषायद्वार कहेछे । आगला ॥ ४ चारित्र सकसाई । एक छेल्लो अकसाई । आगला ॥ ३ चारित्रमा । संजलनो क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ लाभे । अने सूक्ष्मसपरायमा । १ संजलनो लोभ लाभे । जथाख्यात उपसमने क्षिणकसाई होय ॥

१९ हवे लेशाद्वार कहेछे । सलेसीमा पाचे चारित्र लाभे । अलेलीमां एक छेल्लो । सामा० ॥ छेदोपस्थापनीयमा लेसा ॥६॥ लाभे । परिहारवीसुध्मा पाछली ॥ ३ लेसा लाभे ॥ उपला ॥ २ मा १ सुक्ल लेसा लाभे

२० हवे परिणामद्वार कहेछे । वर्धमान

परिणाममा पाचे चारित्र लाभे । हा
यमान परिणाममा आगला ॥ ४ ॥
चारित्र लाभे ॥ अवस्थित परिणाम
मा ॥ १ सूक्ष्मसपराय वरजीने ॥ ४
चारित्र लाभे ॥ तेमा आगला ॥ ४ नी
जघन्य वृद्धी ॥ १ समो ॥ उत्० ॥
अतर्मुहू० । अने जथाख्यातनी ॥ ज०
उ० वृद्धि । अतर्मु० । हवे हायमानमा
आगला ॥ ४ नी ज० ॥ १ ॥ समो ।
उ० अतर्मु०। हवे अवस्थितमा आगला
॥ ३ नी । ज० ॥ १ ॥ समो । उ० ॥ ७
सम० ॥ जथाख्यातनी । ज० ॥ १

समो । उत्कृष्टी । देशे उणा पूर्व
कोमनी ॥

२१ हवे बधद्वार कहेछे । आगला ॥ ३ ॥
चारित्र ॥ ७ कर्म तथा ॥ ८ ॥ कर्म
बाधे ॥ ७ बाधे तो आउखू वरजीने ।
सूक्ष्मसंपराय ॥ ६ कर्म बाधे । आउखू
मोहनी वरजीने।जथाख्यात एक साता
वेदनीय बाधे अथवा अबंध पण होय॥

२२ वेदद्वार कहेछे ॥ आगला ॥ ४ ॥ चारित्र
आठ कर्मवेदे अने जथाख्यात सात
कर्म वेदे । मोहनीय वरजीने । तथा ॥
४ वेदे तो । वेदनी ॥१॥ आयु ॥ २ ॥

नाम ॥ ३ ॥ गोत्र० ए ४ वेदे
२३ हवे उदीरणाद्वार कहेछे । आगला ३
चारित्र ॥ आठ कर्मनी उदीरणा करे
॥ ७ नी करे तो आउखुं वरजीने ॥ ६
नी करे तो वेदनी वरजीने ॥ सूक्ष्मसं
पराय ॥ ६ कर्मनी उदीरणा करे । आ
उखु १ ॥ वेदनी वरजीने ॥ ५ नी करे
तो । आउखु मोहनी वेदनी वरजीने ।
जथाख्यात ॥ ५ नी उदीरणा करे ।
तथा ॥२ नी करे तो । नाम १॥ गोत्र ।
ए २ ॥ नी उदीरणा करे ॥
२४ हवे उवसंपजहणाद्वार कहेछे । सामा
यक चारित्रवालो चडे तो । छेदो० ।
सूक्ष्मसपरायपणु पामे अने पडे तो
असजति० ने श्रावकपणु पामे ॥ १ ॥
छेदो० । चडे तो परिहा० । सूक्ष्म०
पणु पामे । पडे तो सामा० । असंज
ती० ने श्रावकपणुं पामे ॥ परिहा०
चडे नही । पडे तो । छेदो० । असंजती
पणुं पामे ॥ सूक्ष्मसप० चडे तो जथा
ख्यातपणु पामे पडे तो । सामा० ।
छेदो० । असजमपणु पामे ॥ जथा
ख्यात चडे तो मोक्षमां जाय । पडे तो ।
सूक्ष्म० । असंजमपणुं पामे ॥

२५ हवे सन्नाद्वार कहेठे । सनावन्नतामा । आगल्या ॥ ३ चारित्र लान्ने । नोस नावन्नतामा । पांचे चारित्र लान्ने ॥

२६ हवे आहारद्वार कहेठे । पांचे चारित्र आहारकमा लान्ने । एक जथाख्यात अणाहारकमा पण होय ॥

२७ हवे न्नवद्वार कहेठे । सामा० । ठेदो० । ज० ॥ १ न्नव ॥ उत्कृष्टा ॥ ८ न्नवकरे । वाकी ॥ ३ चारित्रवाला ज० १ न्नव । उ० ॥ ३ न्नव करे ॥

२८ हवे आकर्षद्वार कहेठे । एक न्नव आश्री सामायक ॥ जघन्य ॥ १ वार आव ॥ उत्० प्रत्येकसें ॥ ए०० वार आवे ॥ १ ॥ ठेदो० ॥ ज० ॥ १ ॥ उत्० वीसपहुत्तं १२० ॥ २ ॥ परिहार० । ज० १ ॥ उत्० ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० १॥उ० ४ ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज० ॥ १ ॥ उ० २ ॥ ५ ॥ हवे घणा न्नव आश्री सामा० । ज० ॥ २ वारआवे ॥ उ० प्रत्येक हजारवार आवे ॥ १ ॥ ठेदो० ज० २ ॥ उत्० ए६० ॥ २ ॥ परिहा०।ज० २ उ० ७ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० २ ॥ उ० ए ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज० २ ॥ उ० ५ ॥ ५ ॥

२९ हवे स्थितीद्वार कहेछे । एक वचन आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ समय । उ० । देशे उणी पूर्व कोमनी । परिहा० । ज० ॥ १ समो उ० २९ वरस उणी पूर्व कोम ॥ सूक्ष्म० । ज० ॥ १ समो । उ० । अंतर्मु० ॥ जथाख्यात ज० ॥ १ समो । उ० । देशे उणी पूर्व कोम ॥ घणा जव आश्री । सामा यकनि । ज० उ० । सर्वाकाल ॥ छेदो प० । ज० ॥ २५० वरस । उ० ५० लाख कोम सागर ॥ परिहा० । ज० ॥ २०० वरस । उ० देशे उणी ॥ २ पूर्व कोम ॥

सूक्ष्म० । ज० १ समो । उ० । अंत र्मु० ॥ जथाख्यात ज० । उ० । सर्वाकाल ॥

३० हवे अंतरद्वार कहेछे । एक वचन आश्री । पाचे चारित्रनुं । ज० ॥ अंत र्मु० । उ० । अर्द्ध पुद्गल देशे उणु आंतरुं पमे । बहुवचन आश्री सामा० ज० । उ० । अंतर नथि ॥ १ ॥ छेदो० । ज० ॥ ६३००० वर्ष ॥ उ० ॥ १८ कोमा कोम सागरनुं । २ ॥ परिहा० । ज० ॥ ८४००० वर्ष । उ० ॥ १८ कोमा कोम सागरनुं ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० जघन्य

सम १ ॥ उ० । ६ मासनुं ॥ ४ ॥ जथाख्यातनु । ज० । उ० । आंतरुनथी ॥ ५ ॥

३१ हवे समुद्घातद्वार कहेछे । सामा० । छेदो० । ए ॥ २ मा ६ समुद्घातलाभे । परिहार० ॥ ३ समुद्घात पहेली लाभे । सूक्ष्म० समुद्घात नथी । जथाख्यातमा ॥ १ केवल समुद्घात लाभे ॥

३२ हवे खेत्रद्वार कहेछे । लोकने संख्यातमे भागे के असंख्यातमे भागे के घणे संख्यातमे भागे के घणे असंख्यातमे भागे के सर्व लोकने विषे चारित्र लाभे । उत्तर । लोकना असंख्यातमा भागमा तो आगला ४ चारित्र लाभे ॥ अने एक जथाख्यात० असंख्यातमे भागे । घणे असंख्यातमे भागे । ते सर्व लोकने विषे लाभे ॥

३३ हवे फरसनाद्वार ते खेत्रद्वारनीपरे जाणवो ॥

३४ हवे भावद्वार कहेछे । सामा० । छेदो० । परिहा० । सूक्ष्म० ए ॥ ४ मा भाव १ खउपसम लाभे । जथाख्यातमा ॥ २ भाव लाभे । उपसम ने खायक ए ॥ २ लाभे ॥

२७ हवे परिमाणद्वार कहेवे । हवे पडि वजमाण आश्री जो होय तो । सामा० ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक हजार ॥ छेदो० । परीहार० । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० । प्रत्येकसें ॥ सूक्ष्म [illegible] । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० [illegible]ते ॥ १०८ क्षपक ॥ ५४ उप [illegible] यात । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ [illegible] १६२ ते ॥ १०८ ॥ क्षपक० [illegible]म० ॥ पुर्वपडिवजमाण [illegible]पती । सामा० । ज० । [illegible]र कोड । उत्० । प्रत्येक

हजार कोड । छेदो० ज० । प्रत्येकसें कोड । उ० प्रत्येकसें कोड ॥ परिहारवी सुध । ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० । प्रथक हजार ॥ सूक्ष्म० ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० । प्रत्येकसें ॥ जथा ख्यात । ज० । प्रत्येक कोड । उ० प्रत्येक कोड

२६ अल्पबहुत्वद्वार कहेवे । सर्वथी थोडा सुक्ष्मसंपराय ॥ १ ॥ तेथी परिहा० संखेजगुणा ॥ २ ॥ तेथी जथाख्यात० सखे जगुणा ॥ ३ ॥ तेथी छेदो० सखेजगुणा ॥ ४ ॥ तेथी सामा० । सखेजगुणा

लाभे ॥९॥ इति संजयाना बोल सपूर्ण

॥ ॐ नम ॥ अथ नियठा लिख्यते ॥

गाथा ॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥
कप्प ४ चरित्त ५ पडिसेवणा ६ नाणे
७ ॥ तीछेय ८ ॥ लिगे ९ सरीरे १० ॥
खेत्त ११ काल १२ गइ १३ सजम १४
निकासे १५ ॥ १ ॥ जोग १६ वउगे
१७ कसाए १८ । लेसा १९ परीणाम
२० वध २१ वेदेय २२ । कम्मोदीरणा
२३ उवसपजहणा २४ । सन्नाय २५
आहारे २६ ॥ २ ॥ भव २७ आगरीसे
२८ काल २९ तरेय ३० ॥ समुग्घाय
३१ खेत ३२ फुसणाय ३३ ॥ भावेय
३४ परीमाणे ३५ खलु । अप्पाबहुच्च
३६ नीयठाण ३ ॥ ए ३ गाथा ॥

१ हवे १ पन्नवणा द्वार । पुलाक ॥ १ ॥
वकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा ॥ ३ ॥
कषायकुसील ॥ ४ ॥ नीयंठो ५ ॥ सना
तक ६ ॥ पुलाक ते सडुंसा धाननापुला
नीपरे ॥ १ ॥ वकुस ते सडुसा धाननीपरे
॥ २ ॥ प्रतीसेवना ते मसळ्याधाननीपरे
३ ॥ कषायकुसील ते उपण्याधाननीपरे
॥ ४ ॥ नीयंठो ते कणकीस दितचोखा
नीपरे ॥ ५ ॥ सनातक ते अणीसुध
चोखानीपरे ॥ ६ ॥ पुलाकना वे भेद ।

चारित्रकषायकुसील ॥ ३ ॥ लिंगकषाय
कुसील ॥ ४ ॥ यथासूक्ष्मकषायकु
सील ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे नियठो ते मोह
नी कर्मथी नीकल्यो संपूर्ण ग्रंथरहित ॥
उपसमीत ॥ १ ॥ यथानिर्मलक्षायक
ज्ञानिक २ कषायवरजित वीतरागाव
स्थायेवर्ति ते ॥ मुनीनो प्रथम समय
ते पढमसमय नियठो ॥ १ ॥ अपढम
समय ते बीजासमयादिके वर्ते ते अप
ढमसमय नियंठो ॥ २ ॥ ते गुणस्था
नकने पर्यंतवर्तिसमयनो ते चरम
समय नीयठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणा

ना छेहला समयथी पूर्वलासमयवर्ति
ते अचरमसमय नीयठो ॥ ४ ॥ यथा
सूक्ष्म ते गुणठाणाना सर्व समयवर्ती ते
प्राहसुक्ष्म नीयठो ॥ ५ ॥ ५ स्नातक
ते घातिकर्ममलपखालवाथी टालवाथी
परमपवित्र नाह्यानीपरे उजल परी
णामी रुपातीत ध्यानी ॥ ते स्नातक
पचनामनिरपात ॥ अछवी ते जोगनी
रुध्यामाटे अछवी ॥ १ ॥ असबल ते
निरतीचार कावरासरहित तेमाटे
असबल ॥ २ ॥ घनघातिकर्म क्षय
कर्या ते माटे अकर्मांस ॥ ३ ॥ ससु

ज्ञाणदंसणधरे । अरहा जीण केवली ते । सम्यक् सुध निर्दोष ज्ञानदर्सनना धरणहार ॥ अरहाजीणे ते रहस्यग नीवात नही ते राग द्वेपना जीतनार माटे केवली कहीये ॥ ४ ॥ अपरी सावी ते नवा कर्म आवेनही तेमाटे अपरीसावी सर्व योगना रुधवाथी ५ ॥ ६ ॥ ए नामनी प्रज्ञापनापरुपणा द्वार किंचित् निरुपण ॥

२ वेदद्वार । आगला ४ सवेदी ॥ उपरला २ अवेदी ॥ तेमां पुलाक । स्त्रिवेदमा नही । पुरुप ॥ १ ॥ पुरुप नपुसक ॥ २ ॥ ए २ मा होय । वकुस ने प्रति सेवना । ३ वेदमा होय । कपायकु सील सवेदी होयतो त्रिणे वेदमा होय । अने अवेदी होयतो उपसम ने खीणवे दमा होय । निर्ग्रंथ उपसम ने खीणवे दमां होय ॥ स्नातक खीणवेदमां होय । ए द्वार ॥ २ ॥

३ रागद्वार आगला ४ नीयंठा सरागी ॥ नीर्ग्रंथ ने स्नातक खीणरागी होय ॥ ए द्वार ॥ ३ ॥

४ कल्पद्वार ॥ स्थितिकल्प ॥ १ ॥ अ स्थितिकल्प ॥ २ ॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥

चारित्रकपायकुसील ॥ ३ ॥ लिंगकपाय
कुसील ॥ ४ ॥ यथासूक्ष्मकपायकु
सील ॥ ५ ॥ ४ ॥ हवे नियंठो ते मोह
नी कर्मथी नीकल्यो संपूर्ण ग्रथरहित ॥
उपसमीत ॥ १ ॥ यथानिर्मलक्षायक
क्षाविक २ कपायवरजित वीतरागाव
स्थायेवर्ति ते ॥ मुनीनो प्रथम समय
ते पढमसमय नियठो ॥ १ ॥ अपढम
समय ते बीजासमयादिके वर्ते ते अप
ढमसमय नियठो ॥ २ ॥ ते गुणस्था
नकने पर्यंतवर्तिसमयनो ते चरम
समय नीयंठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणा

ना छेहला समयथी पूर्वलासमयवर्ति
ते अचरमसमय नीयंठो ॥ ४ ॥ यथा
सूक्ष्म ते गुणठाणाना सर्व समयवर्ती ते
आहसुहूम नीयठो ॥ ५ ॥ ५ स्नातक
ते घातिकर्ममलपखालवाथी टालवाथी
परमपवित्र नाह्यानीपरे उज्वल परी
णामी रूपातीत ध्यानी ॥ ते स्नातक
पचनामविख्यात ॥ अछवी ते जोगनी
रुध्यामाटे अछवी ॥ १ ॥ असवल ते
निरतीचार कावरासरहित तेमाटे
असवल ॥ २ ॥ घनघातिकर्म क्षय
कर्या ते माटे अकर्मांस ॥ ३ ॥ ससु

समय नीपजे ॥ २ ॥ ते

द्नाणदंसणधरे । अरहा जीण केवली ते । सम्यक् सुध निर्दोष ज्ञानदर्सनना धरणहार ॥ अरहाजीणे ते रहस्यना नीवाल नही ते राग द्वेपना जीतनार माटे केवली कहीये ॥ ४ ॥ अपरी सावी ते नवा कर्म आवेनही तेमाटे अपरीसावी सर्व योगना रुधवाथी ए ॥ ६ ॥ ए नामनी प्रज्ञापनापरुपणा द्वार किंचित निरुपण ॥

२ वेदद्वार । आगला ४ सवेदी ॥ उपरला २ अवेदी ॥ तेमा पुलाक । त्रिवेदमा नही । पुरुप ॥ १ ॥ पुरुप नपुंसक ॥ २ ॥ ए २ मा होय । वकुस ने प्रति सेवना । २ वेदमा होय । कषायकु सील सवेदी होयतो त्रिणे वेदमा होय । अने अवेदी होयतो उपसम ने खीणवे दमा होय । निर्ग्रंथ उपसम ने खीणवे दमां होय ॥ स्नातक खीणवेदमा होय ।

ए द्वार ॥ २ ॥

३ रागद्वार आगला ४ नीयंठा सरागी ॥ नीर्ग्रंथ ने स्नातक खीणरागी होय ॥

ए द्वार ॥ ३ ॥

४ कल्पद्वार ॥ स्थितिकल्प ॥ १ ॥ अस्थितिकल्प ॥ २ ॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥

ंपठा,

।३८॥

उदारीक तेजस कार्मण ॥ ए द्वार १० ॥

११ क्षेत्रद्वार । जन्म आश्री कर्मन्नूमीमा
ठए नीयठा लान्ने । अकर्मन्नूमीमा एके
न लान्ने । ठत आश्री पण ठए लान्ने ।
साहारण आश्री पुलाक वरजीने ए
नीयठा कर्मन्नूमी अकर्मन्नूमी वेहुमा
लान्ने ॥ ए द्वार ११ मो ॥

१२ कालद्वार समुचेअवसर्पिणी ॥ उत्स
र्पिणी ॥ नोअवसर्प्पिणी नोउत्सर्प्पि
णीमा ६ नीयंठा लान्ने । तेमा अवस
र्प्पिणी उतरतो काल तेमा ६ आरा तिहा
जन्म आश्री पहीला ने वीजा आरामा
एके न लान्ने । त्रीजा ने चोथा
आरामा ६ नीयठा लान्ने ॥ पाचमा
आरामां ३ नीयठा लान्ने । वीजो ।
त्रीजो । चोथो ए ३ लान्ने । ठठा आ
रामां एके नही । हवे ठत आश्री पहिला
वीजा आरामां एके नही॥त्रीजा चोथा
पाचमा आरामा ठए नीयठा लान्ने ।
ठठा आरामा एके न लान्ने । हवे
साहारण आश्री पुलाक वरजीने ए
नीयठा ठए आरामा लान्ने । हवे
चरूता कालमा जन्मआश्री पहिले
आरे एके नही लान्ने वीजे त्रीजे चोथे

आरे ६ नीयठा लाभे । पाचमे छठे आरे एके नही । हवे जत आश्री पहिले बीजे आरे एके नही लाभे ॥ त्रीजे चोथे आरे ६ नीयठा लाभे । पाचमे छठे आरे एके नही । हवे साहारणआश्री । पुलाक वरजीने छए आरामा ए नियठा लाभे । हवे नोउत्सर्पिणीनो अवसर्पिणी काल । ते हेमवय ॥ १ ॥ एरणवय ॥ २ ॥ हरीवास ॥ ३ ॥ रमकवास ॥ ४ ॥ देवकुरु ॥ ५ ॥ उत्तरकुरु ॥ ६ ॥ ए ६ क्षेत्रमां जन्मछतआश्री एके नही । अने साहारणआश्री पुलाक वरजीने ए नीयठालाभे ॥ पाच महा वीदेह क्षेत्रमा ॥ जन्मछतआश्री छए नीयंठा लाभे । साहारणआश्री पुलाक वरजीने ए नीयठा लाभे ॥ ए द्वार १२ मो ॥

१३ गतिद्वार । आगला ए नीयठा आराधक एक वीमानीकदेवनी गतिमा जाय । स्नातक मोक्ष जाए । तेमा पुलाक ज० पहिले देवलोके जाए । उ० । आठमे देवलोके जाय । वकुस ने प्रतिसेवना ज० पहिले देवलोके जाय । उ० । बारमे देवलोके जाए । कषायकुसील

ज० पहेले देवलोके जाए । उ० अनुत्तर विमानमा जाय ॥ नियठो ज० उ० अनुत्तर विमानमां जाय ॥ स्नातक मोक्षमा जाय । आराधक पदवी पाच पामे ॥ इन्द्रनी ॥१॥ सामानीकनी ॥२॥ त्रायत्रिंसकनी ॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥४॥ अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ५ माहेली आगला ३ नीयंठा पदवी ४ पामे एक अहमेन्द्रनी नही । कषायकुसील पदवी ५ पामे । नीर्ग्रंथ एक पदवी अहमेंद्रनी पामे । स्नातक मोक्ष जाय । हवे वीराधक आगला ५ नीयंठा ज० भवनपतिमा जाय उ० पहीले देवलोक जाय । पदवी ५ माहेली एके न पामे । ए १३ थिति कहे छे ॥देवतामा जाय तिहां थिति केटलीपामे ॥ पुलाक ज० प्रत्येक पल्यनी । उ० । १८ सागरनी पामे । बकुस ने प्रतिसेवना ज० प्रत्येक पल्यनी उ० २२ सागरनी पामे । कषायकुसील ज० प्रत्येक पल्यनी उ० ३३ सागरनी पामे ॥ निर्ग्रंथ ज० उ० ३३ सागरनी पामे । स्नातक मोक्ष जाय ॥ १३ ॥

१४ संजमस्थानद्वार । आगला ४ नीयठाना असख्याता संजम स्थानक ते ॥

परिणामना थानक छे। अने निर्ग्रंथ ने स्नातकनु एकेकु थानक छे। हवे अल्प वहुत्व ॥ पहिले वोले सर्वथी थोमा निर्ग्रंथ ने स्नातकना थानक वेहू माहो माही तुल्य ॥ १ ॥ तेथी वीजे वोले पुलाकना थानक । असंख्यातगुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे वोले वकुसना थानक असख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे वोले प्रतिसेवनाना थानक असख्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेथी पाचमे वोले। कषाय कुसीलना थानक असंख्यात गुणा ॥ ५ ॥ ए द्वार १४ मो ॥

१५ निकासद्वार ते पर्यद्वार एकेका नियंठाना अनतापर्यव छे पुलाक। पुलाक साथे छठाणवमियो। पुलाक वकुस प्रति सेवनाथी अनतगुणहीणो ॥ कषायकुसीलसाथे छठाणवमीयो ॥ उपरला वेथी अनंत गुणहीणो ॥१॥ हवे वकुस ॥ पुलाकथी अनंतगुण अधिक ॥ वकुसप्रतिसेवना कषाय कुसीलसाथे छठाणवमीयो ॥ उपरला वेथी अनंत गुण हीणो ॥ २ ॥ हवे प्रतिसेवना पुलाकथी अनंतगुण अधिक ॥ वकुसप्रति सेवना कषायकुसीलसाथे छठाणव

म्यो। ऊपरला वेथी अनतगुण हीणो ॥ ३ ॥ हवे कषायकुसील आगला ४ साथे ठठाणवम्यिो ॥ ऊपरला वेथी अ नतगुणहीणो ॥ ४ ॥ हवे निग्रंथ ने स्नातक। आगला च्यारथी अनतगुण अधिक ने माहोमाही तुल्य ॥ ६ ॥ हवे अल्प बहुत्वद्वार ॥ पहिले वोले सर्वथी थोमा पुलाक ने कषायकुसीलना जघन्य पर्यव माहोमांही तुल्य ॥१॥ तेथी बीजे वोले पुलाकना उत्कृष्टा पर्यव अनतगुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे वोले वकुस ने प्रतिसेवनाना जघन्य

पर्यव माहोमाही तुल्य ने अनंतगुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे वोले वकुसना उत्कृष्टा पर्यव अनंतगुणा ॥ ४ ॥ तेथी पांचमे वोले प्रतिसेवनाना उ० पर्यव अनंतगुणा ॥ ५ ॥ तेथी ठठे वोले कषायकुसीलना पर्यव अनंतगुणा ॥६॥ तेथी निग्रंथ ने स्नातकना उ० पर्यव माहोमाही तुल्य ने अनतगुणा ॥ ७ ॥ हवे ठगणवम्यिा ते शुं। हीणो होय के अधिको होय। जो हीणो होय तो अनंतभाग ॥ १ ॥ असंख्यातभाग ॥ २ ॥ संख्यातभाग ॥ ३ ॥ संख्यातगुण

॥ ४ ॥ असख्यातगुण ॥ ५ ॥ अनत गुणहीण ॥ ६ ॥ हवे अधिक होय तो । अनतभाग ॥ १ ॥ असख्यातभाग ॥ २ ॥ संख्यातभाग ॥ ३ ॥ सख्यातगुण ॥ ४ ॥ असख्यातगुण ॥ ५ ॥ अनतगुण अधिक ॥ ६ ॥ ए षटगुण हानी वृद्धि जाणवी । ए द्वार १५ मो ।

१६ जोगद्वार ॥ आगला ५ नीयठा । सयोगी होय तो ३ जोग होय । ने छठो स्नातक सयोगी होय तो ३ जोग होय ॥ अजोगी होय तो जोग एके नही । ए द्वार १६ मो ॥

१७ उपयोगद्वार । छए नीयठामा साकार उपयोग ने अणाकारे उपयोग बेहू लाभे । ए द्वार १७ मो ॥

१८ कषायद्वार । आगली २ चोकडीमां एके नीयठे न लाभे । हवे संज्वलनी १ चोकडी आगला त्रण नीयठामा होय । अने कषायकुसीलमा सज्वलना ज्यारे होय । अने जो ३ होय । तो क्रोध वरजीने । बे होय तो मान वरजीने । ने एक होय तो माया वरजीने । तेमां क्रोध मान मायानी भजना लोभनी नीयमा होय ॥ ४ ॥ निर्ग्रंथ उपसम

तथा खीणकषाइ होय । स्नातक खीण कषाइ होय ॥ ए द्वार १८ मो थयो ॥

१ए लेस्याद्वार । आगला ३ नियंठामां उपरली ३ लेस्या होय । कषायकुसीलमां ६ लेस्या होय ने निर्ग्रंथने सुक्ल लेस्या । स्नातकमां परम सुक्ललेस्या अने अलेसी पण होय ॥ ए द्वार १ए मो थयो ॥

२० परिणामद्वार । ए नीयंठामां वर्द्धमान परिणाम होय तो । आगला ४ नां ॥ जघन्य १ समो उ० अंतर मुहूर्त्त । उपला २ ना जघन्य उत्कृष्ट अंतरमुहूर्त्त । हवे हायमान परिणाम । आगला ४ ना । ज० एक समो । उ० । अंत० उपला २ ना हायमान परीणाम होय नही । हवे अवस्थितपरिणाम आगला ४ ना ज० १ समो उ० ७ समा । निर्ग्रंथ ज० १ समो उ० अंत० स्नातकना ज० अंतर मु० उ० देसे उणी पूर्वकोड ॥ ए द्वार २० ॥

२१ बंधद्वार । पुलाक ७ कर्म बांधे । आउखू वरजीने ॥ बकुस ने प्रतिसेवना ७ । ८ कर्म बांधे । ७ बांधे तो आउखूं वरजीने ॥ कषायकुसील ६ ॥ ७ ॥ ८ कर्म

वाधे । ७ कर्म वाधे तो आउखूं वरजीने । ६ कर्म वाधे तो आयुष तथा मोहनी वरजीने ॥ निर्ग्रंथ १ साता वेदनी कर्म वाधे । स्नातक १ सातावेदनी वाधे ने स्नातक अवधक पण होय॥ ए द्वार २१ मो ।

२२ वेदद्वार ॥ आगला ४ आठे कर्म वेदे ॥ निर्ग्रंथ मोहनीकर्म वरजीने७ कर्म वेदे। स्नातक ४ कर्म वेदे । वे० आ० ना० गो० ए ४ वेदे ॥ ए द्वार २२ मो ॥

२३ उदीरणाद्वार । पुलाक ६ कर्मनी उदीरणा करे ॥ आउखूं १ वेदनी २ वरजीने । वकुस ने प्रतिसेवना आठ कर्मनी उदीरणा करे । अने जो ७ नी करे तो आउखू वरजीने । ६ नी करे तो आउखू वेदनी वरजीने । कषायकुसील ८ कर्मनी उदीरणा करे ।७ नी करे तो आउखू वरजीने । ६ नी करे तो आयुष वेदनी वरजीने ॥ ५ नी करे तो मोहनी आउखूं वेदनी वरजीने । अने नीर्ग्रंथ आउखू वेदनी मोहनी ए ३ वरजीने । पाच कर्मनी उदीरणा करे । तथा नाम गोत्र २ नी उदीरणा करे। स्नातक नाम गोत्रनी उदीरणा करे तथा न

पण करे ॥ एके कर्मनी उदीरणा ॥२३॥

२४ उवसपजदणाद्वार । पुलाक चढे तो कपायकुशीलपणु पामे । अने जो पमे तो असजतिपणु पामे ॥ १ ॥ बकुस चढे तो प्रतिसेवना ने कपायकुसीलपणु पामे ॥ अने जो पमे तो असजति ने श्रावकपणु पामे ॥ २ ॥ प्रतिसेवना चढे तो कपायकुसीलपणु पामे ॥ अने जो पमे तो बकुस० ॥ १ ॥ असजति० ॥ २ ॥ श्रावकपणुं ३ पामे ॥३ ॥ कपायकुशील चढे तो नीर्ग्रंथपणु पामे । अने जो पमे तो पुलाक ॥ १ ॥ बकुस २ । प्रतिसेवना ॥ ३॥ असजति ४। श्रावक ५ । ए ५ थाय ॥ ४॥ निर्ग्रंथ चढे तो स्नातकपणु पामे । अने जो पमे तो कपायकुसीलपणुं पामे असजति पण थाय ॥ ५ ॥ स्नातक मोक्ष जाय पण पमवु नथी ॥ ए २४ ॥

२५ सज्ञाद्वार । वीजो १ त्रीजो २ ॥ चोथो ३ ॥ ए३ नीयंठा सनावउतामा होय । नोसनावउतामा ६ नीयठा लाभे । ए द्वार २५ मो ॥

२६ आहारद्वार । आगला ५ नियठा आहारक होय । छगो नीयठो स्नातक आहा

रक ने अणाहारक पण होय ॥ ए द्वार २६ मो थयो ॥

२७ ज्ञवद्वार । पुलाक ज० १ ज्ञव करे ॥ उ० ३ ज्ञव करे । वकुस ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील ॥ ३ ॥ ए ३ ॥ ज० ॥ १ ज्ञव । उ० ८ ज्ञव । निर्ग्रंथ ज० ॥१ ज्ञव ॥ उ०३ ज्ञव करे ॥ स्नातक मोक्षमा जाय।ए द्वार२७मो ॥

२८ आकर्षद्वार । आकर्ष१ ज्ञवे पुलाक ज० १ वार ॥ उ०३ वार आवे। वकुस प्रतिसेवना ॥ कषायकुसील ॥ ज० ॥ १ ॥ उ० प्रत्येकसो ९०० वार आवे । निर्ग्रं थ० ज० १ उ० २ वार आवे। स्नातक० ज० उ० १ वार आवे । हवे घणा ज्ञव आश्री ॥ पुलाक० ज० २ वार उ० ७ वार आवे । वकुस० ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील० ॥ ३ ॥ ज० २ उ० प्रत्येक ७२०० हजार वार आवे । निर्ग्रंथ० ज० २ उ० ५ वार आवे । स्नातकने पुनर्ज्ञव छे नही । ए द्वार २८ मो ॥

२९ स्थितिद्वार । स्थिति १ ज्ञवआश्री । पुलाकनी ज० अंत० । उत्० अं० । वकुस प्रतिसेवना कषायकुसीलनी

ना ॥ स्नातक जº ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उº १०७॥हवे पुव्वपडिवज्जमानआश्री पुलाक होय तो । जº ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उº । प्रत्येक हजार ॥ वकुस ने प्रतिसेवना होय तो जº प्रत्येकसें कोड ॥ उº प्रत्येकसें कोड । कषायकुसील होय तो । जº प्रत्येक हजार कोड । उº प्रत्येक हजार कोड । निग्रंथ जº ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उº प्रत्येकसें ॥ स्नातक । जº प्रत्येक कोड उत्कृष्टा प्रत्येक कोड होय ॥ ए द्वार ३५ मो ॥

३६ हवे अल्प बहुत्वद्वार । सर्वथी थोडा निर्ग्रंथ १ ॥ तेथी पुलाक सख्यातगुणा ॥ ॥ २ ॥ तेथी स्नातक सख्यातगुणा ॥३॥ तेथी वकुस सख्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेथी प्रतिसेवना सख्यातगुणा ॥ ५ ॥ तेथी कषायकुसील सख्यातगुणा ॥ ६ ॥ एव नियठानो अधिकार । सूत्र श्रीभगवति शतक २५ मे उद्देशे छठे छे ॥

॥ इति श्रीनियंठा बोल समाप्त. ॥

अथ श्रीषद्द्रयनो विचार संक्षेप मात्र लिख्यते ॥ परिणाम जीवमुत्त ॥ सपएसाएगखेत्तकिरियाय ॥ निच्चकारणकत्ता ॥ सव्वगयमियरेह्विअप्पवेसा ॥ १ ॥ ए गाथा। हवे एहनो अर्थ कहेछे। शिष्य आत्मार्थी पंचाग नम्रता करि पुछे छे जे। स्वामिन्। षट्द्रव्यमा परिणामि द्रव्य केटला। अने अपरिणामि द्रव्य केटला। गुरु कहेछे॥ हे आयुष्मन् शिष्य निश्चय नये षट्द्रव्य। पोत पोताने स्वभावे स्वरूपे पोत पोताना गुणपर्यायनि परिणतिरूपे छस्वभावपरिणामि। अने व्यवहार नये ॥ एक जीव ॥ १ ॥ ने पुद्गल ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ विभावपरिणामि। शेष ॥ ४ ॥ द्रव्य। अपरिणामि ॥ १ ॥ हवे छ द्रव्यमें ॥ एक जीवास्तिकाय। जीवद्रव्य चैतन्य। शेष ॥५॥ जड। अजीवद्रव्य ॥ २ ॥ हवे छ द्रव्यमे मूर्तिरूपी। एक पुद्गल द्रव्य ॥ शेष ॥ ५ ॥ अमूर्ति अरूपीद्रव्य ॥ ३ ॥ छ द्रव्यमें एक काल द्रव्य अप्रदेशी। एक समयिकज द्रव्य माटे ॥ शेष ५ समदेशी ॥ धर्म। अधर्म। असंख्यातप्रदेशी ॥ आकाश लोकालोकप्रमाणे छे माटे अनतप्रदेशी ॥ पुद्गलद्रव्य। एकप्रमाणु यावत् अनंताणुक खंधमाटे। अनतप्रदेशी। एक जीवात्मा असंख्यातप्रदेशी ॥ ४ ॥ छ द्रव्य निश्चय नये

एक । ए्ये द्रव्य अनेक । धर्म ० अधर्म ० । द्रव्यथि एक । गुणपर्याय प्रदेशथि अनेक । गुण अनंता । पर्याय अनंता । प्रदेश असंख्याता ॥ आकाशना प्रदेश पण अनंता । कालद्रव्य । वर्त्तना लक्षणे एक ॥ गुण पर्याय समयथि अनेक । गुण अनंता । पर्याय अनंता । समय अनंता ते किम ॥ एक आवलिकाना चोथा असंख्यातप्रमाणे समय थाय । एम यावत् दश कोडाकोडि सागरोपमे ॥ एक उत्सर्पिणी ॥ दश कोडा कोडि सागरोपमे ॥ एक अवसर्पिणी । विश कोडा कोडि सागरोपमनो एक कालचक्र थाय ॥ ते एक कालचक्रना असंख्याता असंख्याता समय थाय ॥ एहवे अनंता भेद कालचक्रे एक पुद्गल परावर्त्तन थाय ॥ एहवो अनंता पुद्गलपरावर्त्तनो अतीतकाल गयो । वर्त्तमानकाल एक समयज ॥ अनंत पुद्गलपरावर्त्तन नो । आगमियोकाल आवस्ये । एम त्रिणकालना समय अनंता ॥ हवे पुद्गलद्रव्य ॥ पुरणगलन स्वभावे एक ॥ गुणपर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुणअनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदेश अनंता ॥ अनंता परमाणुया ॥ अनंता द्विप्रदेशीया ॥ अनंता त्रिप्रदेशीया । अनंता चउप्रदेशीया । अनंता पंचप्रदेशीया । इम यावत् अनंता संख्यातप्रदेशीया ॥ अनंता असंख्यात प्रदेशीया अनंता अनंत

प्रदेशीया खधछे ते माटे। एक अनंत प्रदेशिया खंधमां अनता अनत प्रदेशीया प्रदेश छे माटे पुद्गल अनत प्रदेशी छे। जीवास्तिकाय चैतन्य लक्षण। द्रव्यथि एक छे। गुणपर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ पर्याय अनता ॥ प्रदेश एक जीवना असंख्याता एहवा आत्मद्रव्य छे ॥ अने व्यवहार नये ॥ धर्म० । अधर्म० । आकाश० । ए त्रिणे । एक । अने काल । पुद्गल ॥ जीव । ए ३ द्रव्यअनेक छे। सकलनुं भिन्न भिन्न प्रवर्त्तन अवस्थापणुछे माटे अनंत ॥ ५ ॥ छद्रव्यमें क्षेत्र आधार पात्रसमान। ते एक आकाशद्रव्य क्षेत्र । शेष ५ ॥ द्रव्य क्षेत्रीआध्येय रहेवायोग्य वस्तुमाटे ॥ ६ ॥ छ द्रव्य निश्चय स्वरूपे पोत पोतानि क्रियारूपे तो षट् द्रव्य सक्रिय चलणसहायरूप क्रिया ॥ स्थिरसहाय ॥ अवकाश। आश्रयरूप। वर्त्तना प्रावर्त्तना रूप पुरणगलन हानि वृद्धि रूप उपयोग चैतन्य रूप क्रिया ए सक्रिय ॥ अने व्यवहार नये गमनागमन पररूप चलणक्रिया आश्रि पुद्गल जीव। ए। २ ॥ सक्रिय। शेष ॥ ४ द्रव्य अक्रिय ॥ ७ ॥ छ द्रव्यमें निश्चय नये छए नित्य। छए अनित्य ॥ ते किम। धर्मना। अधर्मना। च्यार गुण। पर्यायमा खधलोकप्रमाणे नित्य छे। अने देश प्रदेश ॥ अगुरु लघु। ए ३ ॥

पर्याय अनित्य छे ॥ आकाशमा ॥ ४ ॥ गुण लोकालोकप्रमाणे खध नित्य । देश प्रदेश अगुरु लघु अनित्य । कालद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण नित्य ॥ ४ ॥ पर्याय । अनित्य । पुद्गलद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण नित्य ॥ ४ ॥ पर्यायअनित्य ॥ जीवद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण ॥ ३ ॥ पर्याय नित्य । अगुरु लघुपर्याय अनित्य ॥ ७ ॥ छ द्रव्यमा एक जीव कारण छे । एटले जीव ने पचेद्रव्य कारणरूप छे ॥ जीव तो कारणी छे ॥ पाच द्रव्य अकारणी छे ॥ ए ॥ छ द्रव्यमा । स्वरूप । चलणस्वन्नाव । स्थिरस्वन्नाव । अवकाशदान । नवीन पुरणस्वन्नाव । पुरणगलनस्वन्नाव ॥ उपयोग लक्षण । चैतन्य स्वन्नाव छए स्वन्नावना कर्ता छे ॥ अने व्यवहार नये एक जीवद्रव्य परन्नावरूपनो कर्ता छे । शेष ॥ ५ द्रव्य अकर्ता ॥ १० ॥ छए द्रव्यमें सर्वव्यापी एक आकाशद्रव्य । शेष ॥ ५ द्रव्य असर्वगत लोक मात्र व्यापी माटे ॥ ११ ॥ हवे इयर अप्पवेशा के० । यद्यपि छए द्रव्य एक क्षेत्रमें खिर निरनिपेरे एकठा मिलि रह्याछे तोहि पण एक बिजामें कोइ कोइमें न्नले नहि ए द्रव्यनो विचार ॥ हवे धर्मास्ति काय ते केहने कहिये ॥ धर्म ते चलणस्वन्नावरूप ॥ गतिमान् पुरुषवत् ॥ अस्ति के० त्रणकालमां छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥

तेने धर्मास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥३॥
चलणसहाय ॥ ४ ॥ तेना पर्याय पण ४ ॥ स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरुलघु
॥ ४ ॥ १ ॥ इम अ कहेता नहि। धर्म के० चलणस्वभाव। एतावता प्रतिपक्ष ते स्थिरस्वभाव॥
स्थितिमान् पुरुषवत् ॥ अस्ति के० त्रणकालमा छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने
अधर्मास्तिकायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥
स्थिरसहाय ॥ ४ ॥ तेना पर्याय पण ४ ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ आ के० सर्व दिशे ॥ काश के० प्रकाश
अवगाह आश्रय दानरूप ॥ भित्तिमा क्षितिकावत् ॥ अस्ति के० त्रण कालमा छे ॥ काय के० अनंत
प्रदेशनो समूह ॥ तेने आकाशास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचै
तन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ अवकाशदान ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ पूर्ववत् ॥३॥ जीवने पुद्गलनि क
लनाकरे तेने काल कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ वर्त्त
नालक्षण ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ अतित ॥ १ ॥ अनागत ॥ २ ॥ वर्तमान ॥३॥ अगुरुलघु ४ ॥४॥
समये समये पुरायगलायहानि वृद्धिरूप स्वभाव॥ अस्ति के० त्रणकालमाछे॥ काय के० वेधिमाभि

अनंत प्रदेशनो समूह तेने पुद्गलास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ रूपि॥१॥ अचैतन्य॥२॥ सक्रिय॥३॥ पुरण गलण ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरु लघु॥ ॥४॥ तथा विजापण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥ १॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥३॥ स्पर्श ॥४॥ ए॥ द्रव्य प्राणभाव प्राणेकरि जीवे ते जीव ॥ अस्ति के० त्रण कालमा छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह तेने जीवास्तिकायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण॥ केवल ज्ञान ॥१॥ केवल दर्शन ॥२॥ स्वरूप रमण। स्थिरता चरण ॥ ३ ॥ क्षायक अनतशक्ति ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ अव्याबाध ॥ १ ॥ अनावगाह ॥ २ ॥ अमूर्त्ति ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥ एक परमाणुमां ५ वर्णमांहिलो १ वर्ण ॥ बे गंधमांहिलो १ गंध ॥ पाच रस माहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्शमांहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणुमिले त्यारे द्विप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा २ वर्ण ॥ २ गंध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणुमिले त्यारे, त्रिप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा त्रण वर्ण ॥ २ गंध ॥ ३ रस ॥४ स्पर्श ते ॥ शित ॥ १ ॥ उष्ण २। निध ॥ ३ ॥ लुख ॥ ४ ॥ च्यार परमाणु मिले त्यारे चतु, प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा ४ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पचपरमाणु मिले त्यारे पच्च

प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ एम ७ सात आठ यावत् संख्यात असंख्यात अनंतप्रदेशी खंधमा यावत् चउथे अनंते अभव्यजीवथी अनंतगुण अधिक ॥ सिद्धने अनंतमे भागे जेटापरमाणुमिले त्यारे उदारिकग्रहणयोग्यवर्गणा थाय लेवायोग्य ॥ इम अनंत गुण अधिकवर्गणामिले अग्रहणयोग्य वैक्रियनिवर्गणाथाय ॥ एम अनंतगुणे वैक्रियग्रहणयोग्य वर्गणाथाय ॥ एम आहारकवर्गणा ॥ तैजसवर्गणा ॥ भाषावर्गणा ॥ ५ ॥ श्वासोश्वास वर्गणा ॥ ६ ॥ मनोवर्गणा ॥ ७ ॥ कार्मण वर्गणा ॥ ८ ॥ ए ८ वर्गणा मांहि ॥ पहिलीथी बिजी वर्गणाअनंतगुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनंतगुणी ॥ एम आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमा उदारिक ॥ ॥ १ ॥ वैक्रिय ॥ २ ॥ आहारक ॥ ३ ॥ तैजस ॥ ४ ॥ ए ४ मां ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ अने भाषा ॥ १ ॥ श्वास ॥ २ ॥ मनो ॥ ३ ॥ कार्मण ॥ ४ ॥ ए ४॥ वर्गणामा ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ ए ४ वर्गणा अगुरुलघुजाणवी ॥ हवे षट्द्रव्यमां आठ २ पक्षकह्याछे ॥ नित्य ॥ १ ॥ अनित्य ॥ २ ॥ एक ॥ ३ ॥ अनेक ॥ ४ ॥ सत् ॥ ५ ॥ असत् ॥ ६ ॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥ ८ ॥ धर्म अधर्मादि षट्द्रव्यमा ॥ नित्य ॥ अनित्य ॥

अनंत प्रदेशनो समूह तेने पुद्गलास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ रूपि॥१॥ अचैतन्य॥२॥ सक्रिय॥३॥ पुरण गलण ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरु लघु॥ ॥४॥ तथा विजापण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥ १॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥३॥ स्पर्श ॥४॥ ५॥ द्रव्य प्राणभाव प्राणेकरि जीवे ते जीव ॥ अस्ति के० त्रण कालमां छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह तेने जीवास्तिकायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण॥ केवल ज्ञान ॥१॥ केवल दर्शन ॥२॥ स्वरूप रमण। स्थिरता चरण ॥ ३ ॥ दायक अनंतशक्ति ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ अव्याबाध ॥ १ ॥ अनावगाह ॥ २ ॥ अमूर्त ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥ एक परमाणुमा ५ वर्णमांहिलो १ वर्ण ॥ बे गंधमांहिलो १ गंध ॥ पांच रस मांहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्शमांहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणुमिले त्यारे द्विप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां २ वर्ण ॥ २ गंध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणुमिले त्यारे त्रिप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा त्रण वर्ण ॥ ७ गंध ॥ ३ रस ॥४ स्पर्श ते ॥ शित ॥ १ ॥ उष्ण २ । निध ॥ ३ ॥ लुख ॥ ४ ॥ च्यार परमाणु मिले त्यारे चतु प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमां ४ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पंचपरमाणु मिले त्यारे पंच

प्रदेशी खध थाय ॥ तेमा ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ एम ७ सात आठ यावत् संख्यात असख्यात अनतप्रदेशी खंधमा यावत् चउथे अनते अजव्यजीवथि अनतगुण अधिक ॥ सिद्धने अनंतमे जागे जगपरमाणुमिले त्यारे उदारिकग्रहणयोग्यवर्गणा थाय लेवायोग्य ॥ इम अनंत गुण अधिकवर्गणा मिले अग्रहणयोग्य वैक्रियनिवर्गणाथाय ॥ एम अनतगुणे वैक्रियग्रहणयोग्य वर्गणाथाय ॥ एम आहारकवर्गणा ॥ तैजसवर्गणा ॥ जाषावर्गणा ॥ ५ ॥ श्वासोश्वास वर्गणा ॥ ६ ॥ मनोवर्गणा ॥ ७ ॥ कार्मण वर्गणा ॥ ८ ॥ ए ८ वर्गणा माहि ॥ पहिलीथी बिजी वर्गणाअनंतगुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनतगुणी ॥ एम आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमा उदारिक ॥ ॥ १ ॥ वैक्रिय ॥ २ ॥ आहारक ॥ ३ ॥ तैजस ॥ ४ ॥ ए ४ मा ५ वर्ण ॥ २ गध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ अने जाषा ॥ १ ॥ श्वास ॥ २ ॥ मनो ॥ ३ ॥ कार्मण ॥ ४ ॥ ए ४॥ वर्गणामां ५ वर्ण ॥ २ गध ॥ ५ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ ए ४ वर्गणा अगुरुलघुजाणवी ॥ हवे षट्द्रव्यमां आठ २ पक्ष कह्याछे ॥ नित्य ॥ १ ॥ अनित्य ॥ २ ॥ एक ॥ ३ ॥ अनेक ॥ ४ ॥ सत् ॥ ५ ॥ असत् ॥ ६ ॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥ ८ ॥ धर्म अधर्मादि षट्द्रव्यमा ॥ नित्य ॥ अनित्य ॥

अनंत प्रदेशनो समूह तेने पुद्गलास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ रूपि॥१॥ अचैतन्य॥२॥ सक्रिय॥३॥ पुरण गलण ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ स्कंध ॥१॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरु लघु॥ ॥४॥ तथा निजापण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥ १॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥३॥ स्पर्श ॥४॥ ५॥ द्रव्य प्राणभाव प्राणेकरि जीवे ते जीव ॥ अस्ति के० त्रण कालमां छे ॥ काय के० असंख्य प्रदेशनो समूह तेने जीवास्तिकायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण॥ केवल ज्ञान ॥१॥ केवल दर्शन ॥२॥ स्वरूप रमण। स्थिरता चरण ॥ ३ ॥ क्षायक अनंतशक्ति ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ अव्याबाध ॥ १ ॥ अनावगाह ॥ २ ॥ अमूर्ति ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥ एक परमाणुमा ५ वर्णमाहिलो १ वर्ण ॥ बे गंधमाहिलो १ गंध ॥ पांच रस माहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्शमांहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणुमिले त्यारे द्विप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा २ वर्ण ॥ २ गंध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणुमिले त्यारे त्रिप्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा त्रण वर्ण ॥ २ गंध ॥ ३ रस ॥४ स्पर्श ते ॥ शित ॥ १ ॥ उष्ण २। निध ॥ ३ ॥ लुख ॥ ४ ॥ च्यार परमाणु मिले त्यारे चतु. प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा ४ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पंचपरमाणु मिले त्यारे पंच

प्रदेशी खंध थाय ॥ तेमा ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ एम ७ सात आठ यावत्
संख्यात असंख्यात अनंतप्रदेशी [illegible] अनंतगुण अधि
क ॥ सिद्धने अनंतमे भागे [illegible] वैक्रियनिवर्गणा थाय ॥ एम अनंतगुणो वैक्रियप्रद
इम अनंत गुण अधिक वर्गणा [illegible] तैजसवर्गणा ॥ भाषावर्गणा ॥ ५ ॥ श्वासोश्वास
णयोग्य वर्गणा थाय ॥ एम [illegible] कार्मण [illegible] ॥ ८ वर्गणा मांहि ॥ पहिलीथी त्रिजी
वर्गणा ॥ ६ ॥ मनोवर्गणा ॥ ७ ॥ [illegible] आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमां औदारिक ॥
वर्गणाअनंतगुणी ॥ बीजीथी त्रिजी अनंतगुणी ॥ [illegible] वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥
॥ १ ॥ वैक्रिय ॥ २ ॥ आहारक ॥ ३ ॥ तैजस ॥ ४ ॥ [illegible] वर्गणामा ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥ ५
अने भाषा ॥ १ ॥ श्वास ॥ २ [illegible] आठ २ पलकमाले ॥ [illegible]
रस ॥ ४ स्पर्श ॥ ए ४ वर्गणा ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥
॥ १ ॥ अनित्य ॥ ४ ॥ [illegible] धर्म [illegible]

॥ ७ ॥ [illegible]

[illegible] ८ ॥ खंध ॥ १ ॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥३॥

॥ सिद्धनाजीवमा धर्मास्तिकायना प्रदेश सादि

एक ॥ अनेक ॥ ए ४ पक्षते पूर्वेकह्या ॥ तिमज सत् ते ७ द्रव्य पोतपोताना द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काल ॥ भावरूपे ठछे ॥ तेमा धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य ॥ चलणसहायगुण ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकायनो स्वद्रव्यस्थिरसहायगुण ॥ आकाश० स्वद्रव्यअवकाशदानगुण ॥ ३ काल० स्वद्रव्यवर्तनालक्षणगुण ॥ ४ ॥ पुद्गल० स्वद्रव्यपूरणगलनगुण ॥ ५ ॥ जीवास्तिकायस्वद्रव्य उपयोग लक्षण गुण ॥ ६ ॥ एम ७ द्रव्यस्वक्षेत्र ॥ धर्म०अधर्म०स्वक्षेत्र असंख्यातप्रदेशी॥१॥आका श० स्वक्षेत्र अनंतप्रदेशी ॥ २ ॥ कालनो स्वक्षेत्र एकसमय ॥ ४ ॥ पुद्गलनो स्वक्षेत्र एकपरमा णु एहवा अनंता ॥ ५ ॥ जीवनो स्वक्षेत्र असंख्यप्रदेशी ॥ ६ ॥ एम ७ द्रव्यनोकाल ॥ पोतपोताना अगुरुलघुनि समयसमयनी प्रणतिफिरेठे ते ७ द्रव्यनो स्वकाल ॥ ७ द्रव्यनोस्वभाव ते ७एद्र- व्यमा पोतपोताना ४ बोल पोतपोतामाजठे अने बिजाद्रव्यना ४ बोल तेमांनथि ॥ जिम धर्मा स्ति कायमा पोताना द्रव्य क्षेत्र काल भाव ४ बोलठे ॥ बीजा ५ द्रव्यना नथि॥ एम ७एद्रव्यमां पोतपोताना ४ बोलठे ॥ बिजा ५ नानथि ॥ एम स्वभाव ए सत्पक्षकह्यो ॥ अने असत् ते अठता द्रव्य क्षेत्र काल भाव परद्रव्यना अठतारूपे तो असत्ठे ॥ जिम धर्म० द्रव्य अधर्मादि ५ परद्र-

व्यना द्रव्य क्षेत्र काल भावे असत् के० अछतोछे ॥ एम छए द्रव्यमां जाणवु ॥ हवे छ द्रव्यमां वक्तव्य ते वचनसु कहिवायोग्य एहवा अनंतास्वभाव एक एक द्रव्यमा छे ॥ अने अवक्तव्य के० वचनसु कह्याजायनहि केवलज्ञानेजणाय एहवा अनंताधर्मस्वभाव एकएकद्रव्यमां रह्याछे ॥ एम अनंतागुणपर्याय पण कहेवा ॥ हवे सर्वपदार्थ केवलियेदिठा तेने अनंतमेभागे अभिला प्यवाक वर्गणायोग्य ॥ अनभिलाप्यने अनंतमे भागे ते अभिलाप्य ॥ ते वलि अभिलाप्यने अन तमे भागे वक्तव्य कह्या ॥ तेने अनंतमेभागे गणधरमहाराजे सूत्रगुंथ्याछे ॥ तेहथि असंख्यातमे भागे हमणा आगमरह्याछे ॥ ए ८ पक्ष ॥ वलि नित्य अनित्य पक्षथि उपनि चउभंगीकहेछे ॥ अनादि अनंत ते जेनि आदि ने अंत नथि ते प्रथमभागो ॥ १ ॥ जेनि आदि नथि ने अंत छे ते अनादिसांत बिजोभागो ॥ २ ॥ जेनि आदिछे ने अंतपणछे ते सादिसांत त्रिजोभागो ॥ ३ ॥ जेनि आदिछे पण अंत नथि ते सादिअनंत चउथोभांगो ॥ ४ ॥ हवे धर्मा स्तिकायमा ४ गुण अनादि सातभांगो नथिज ॥ पर्याय ४ ॥ खंध ॥ १ ॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ ए ४ सादिसांत त्रिजेभागेछे ॥ सिद्धनाजीवमा धर्मास्तिकायना प्रदेश सादि

हवे त्रीजा परमात्मानुं लक्षण करेछे ॥ दुहो ॥ प्यारो आपस्वरूपमें ॥ न्यारो पुद्गल खेल ॥ सो परमात्मा जाणिये ॥ नहि जसजव को मेल ॥ १ ॥ आत्मस्वरूपने विषे मग्न ॥ दुहो ॥ समता रमता उर्ध्वता ॥ ज्ञायकता सुख व्यास ॥ वेदकता चैतन्यता ॥ ए सब जीवविलास ॥१॥ एटला बोल प्रगटथयाछे ॥ शुद्धपणतिये अने पुद्गलना खेलथि न्यारो ॥ दुहो ॥ तनता मनता वचनता ॥ जडता जडसंमेल ॥ लघुता गुरुता गमनता ॥ ए अजीव के खेल ॥ १॥ ए सर्व पर वस्तु मात्र कर्म चेतनाथि न्यारो रहे जेहने पुनरपि जवादि सर्वमेलरहित ते परमात्मा ॥ तेरमे चउदमें गुणठाणे तथा सिद्धने परमात्मा कहिये ॥ ३ ॥ तेमा द्रव्यात्मा असख्यात प्रदेशी ॥ बहिरात्मानि प्रणतिये परिणम्यो ते बहिरात्मा ॥ एमज अंतरात्मा परमात्मा पण कहिये ॥१॥ एमज कषायात्मा ते निश्चयव्यवहारे सर्वरिते बहिरात्माज कहिये ॥ २ ॥ योगात्मा निश्चय नये तो बहिरात्मा ॥ व्यवहारनये शुद्ध योग ते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध योग ते बहिरात्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मा तेमा ज्ञानात्मानां उपयोगमा ४ ज्ञानअंतरात्मा ॥ केवलज्ञानपरमात्मा ॥ दर्शन आत्मामां ३ दर्शनना उपयोग शुद्ध प्रणतिये अंतरात्मा ॥ अशुद्धप्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवलद

र्शननो उपयोग ते परमात्मा ॥ ३ ॥ अज्ञाननो उपयोग ते वहिरात्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानात्मामां ४ ज्ञान अतरात्मा ॥ केवलज्ञान परमात्मा ॥५॥ दर्शन आत्मामां ३ दर्शन शुद्धप्रणतिये अंतरात्मा॥ अशुद्धप्रणतिये वहिरात्मा ॥ केवल दर्शन ते परमात्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मामा ॥ ५ चारित्र क्षयोपशमनि परिणतिये अंतरात्मा ॥ अने जथाख्यातचारित्र क्षायक केवली चारित्रनि परिण तिनि अपेक्षाये ॥ परमात्मा ॥७॥ वीर्यात्मामां ॥ वालवीर्यनि परिणति ते ॥ वहिरात्मा ॥ बाल पन्डित वीर्यनी श्रावकनि शुद्धपरिणति ते अंतरात्मा ॥ अशुद्ध परिणति ते वहिरात्मा ॥ पंन्डित वीर्यक्षयोपशमपरिणतिनि अपेक्षाये छदमस्तनुं पन्डित वीर्य अंतरात्मा अने क्षायककेवली पंन्डित वीर्यनि परिणतिनी अपेक्षाये परमात्मा ॥ ८ ॥ ए आठ आत्मानो लेशमात्र अधिकार कह्यो ॥ हवे षट्द्रव्य ॥ आत्मवोधनो विचार लेशमात्र निरुपण ॥ पण विस्तार रुचिये ॥ सात नय चार प्रमाण चार निक्षेप ॥ षट् उपक्रम नव अनुगम ॥ उघनिष्पन ॥ नाम निष्पन ॥ सूत्रालापकनि ष्पन ॥ निक्षेपनिर्युक्ति ॥ स्याद्वादि ॥ असंख्यप्रदेशी ॥ अनंत नयात्मक वाणी सिद्धातनि ॥ वि स्ताररुचिनो वर्णव करता पार न पामिइं पण सारभूत एटलुजे असंख्यप्रदेशी अनंत केवल ज्ञान ॥

अनंत केवल दर्शन ॥ अनंत स्वरूपस्थिरता रमण ॥ अनंत क्षायकशक्ति ॥ अनंत परमक्षमा अनंत परम मार्दव ॥ परमार्जव । परम संतोष । परम समता॥ परम शीतला दशा ॥ परम शांति ॥ परम शांति । परम क्षायक सम्यक्त ॥ परम क्षायक भाव ॥ परम शुद्ध परिणामिक भावमयि ॥ शुद्धसत्तानि राशि । निस्पृहि ॥ स्वतंत्री । इवारोप निरासंसी॥ नाहं मम ॥ अरागी अद्वेषी अमोहि अविकारी ॥ सहजानंदि स्वरुपविलासी ॥ स्वरुपभोक्ता ॥ स्वरुपभोगभोक्ता ॥ स्वरुपतत्वर मणीय ॥ तत्वानंदि । तत्वविश्रामि ॥ स्वरुपस्थापि ॥ तत्वविलासी तत्वानुभवी ॥ अछेद अभेद ॥ अप्रतिहत अविनासी ॥ अजरअमर ॥ निःकलंकी ॥ अगम्य अलक्ष अकल अगोचर अगाध ॥ सच्चिदानंद पूर्णानंद पूर्णब्रह्म ॥ आत्मद्रव्य अनंतगुणी ॥ अनंतपर्यायमयि ॥ अनंतशुद्धात्मधर्म मयि ॥ आत्मसत्तानि सद्दहणाप्ररुपणास्पर्शनाकरवी ॥ एहवी शुद्धसत्ता ॥ केवल ज्ञानादि ॥ आत्मद्रव्यने न माने तेहनी साध्य शुन्यसाधना क्रिया पण जीम घृत अथवा लुंणविना रसवति न सोभे ॥ तिम सत्ताये केवलज्ञान न माने ॥ ते जीव पूर्वे तेटली क्रीया करे ॥ द्रव्यज्ञाननो अभ्यास करे ॥ पण जो केवलज्ञानज सत्ताए नथी ॥ ने बीजा द्रव्य तो जड छे । तिवारे शुं प्रगट

असे ते माटे शुद्द सत्ताप्रगटकरवी ॥ तेज कारज विनातो करणी सर्वेशुन्नाश्रव पुन्यफलनी दाताछे ॥ तेतो परन्नावछे अनत वारजीवेपाम्या ॥ तेपाम्यानुं सुं आश्चर्यछे ॥ ते माटे आचाराग नंदिमोक्ष मार्गाध्ययन न्नगवति पन्नवणा अनुयोगद्वारादि दशवैकालिक आठमाध्ययनादि ॥ सकल आगमनीशाखे ॥ आत्मार्थि मोक्षार्थि निर्जरार्थिनेतो ॥ एकातहित ॥ पार्श्वमणीचिता मणी रसकुपि अमृत रस कुन्न ॥ चित्रावेली कल्पवेली तथातरु ॥ सीद्दमंत्रथी अधिक अनोपम ॥ सारसर्वज्ञाननुं तत्वएजे केवलज्ञान सत्ताए मानिने ॥ शक्तिप्रमाणे शुद्द व्यवहार क्रियाकरीने शुद्द सत्ता प्रगटकरवि ॥ ए सर्वे सद्द्हणाथी ॥ कोम्निगमे युक्तिवालामीले ॥ सद्द्हणासत्तानाप्रतिपक्षी ॥ पणनचलवुं ॥ फरीफरीने जीवने आत्मद्रव्यनी शुद्द केवलसत्तानी श्रद्दाथावी महादुर्लन्न छे ॥ ते माटे ज्ञानामृतमाक्षीली ॥ सकलजतु नीरक्षाकरी गुणीनागुणग्रामकरी आत्मानी निंदाकरी ॥ सकलजीवने उपगारबुद्दि चितवी ॥ सर्व इर्ष्या कोइजीवना अवर्णवादमात्रनो निषेधकरी ॥ सकल उपगारी पुरुषनो क्षणक्षण

री ॥ सरल स्वन्नावी नदासी न्नावेरहिने ॥ पूर्वे अनतजीव सन्नानेवर्या वरेठे ॥ आ
रस्ये ॥ घणु मु कहिइ ॥ ए विचारणातो पोताना जीवने हाथठे ॥ ए सिखामण
। तेहना सकल कार्य सिध्याय ॥ इति षद्द्रव्य वीचार संपूर्ण ॥ अथ रूपि अरू
ना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ कम्मठा पावठणाय ॥ मनवय जोगाय कम्मदेहा ॥ एसाचन
ेहदी ॥ १ ॥ नरालाय चनदेहा ॥ पुग्गलठ्यिकाय दवलेसा ॥ तह
अठ फासा ॥ २ ॥ धम्मा धम्मागासा ॥ जीव अहापावठाणा वत्ति
। ठनठगन्नावलेसाय ॥ ३ ॥ नग्गहासन्नावुद्दि ॥ चनचन एगेगसठीय ॥
वितम्यनायघा ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ कर्म ॥ ८ ॥ पाप ॥ १८ ॥ मनजोग
। कार्मणशरीर ॥ १ ॥ ए ॥ २७ ॥ बोलमा ४ स्पर्श लान्ने ॥ १ ॥ घन
१ ॥ घनोदधि ॥ १ ॥ नदारिक ॥ १ ॥ वैक्रिय ॥ १ ॥ आहारक ॥ १ ॥
शरीर ॥ पुद्गलास्तिकाय ॥ १ ॥ द्रव्यलेशा ॥ ६ ॥ कायजोग ॥ १ ॥ ए १७ ॥
। स्पर्श लान्ने ॥ २ ॥ ए ४४ बोल रूपिना जाणवा ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥

अधर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ १ ॥ जीव ॥ १ ॥ काल ॥ १ ॥ अढार पापनि नि
वृत्ति १८ ॥ दृष्टि ॥ ३ ॥ उगण ॥ १ ॥ कर्म ॥ १ ॥ वल ॥ १ ॥ वीर्य ॥ १ ॥ पुरुपाकारप्राक्रम
॥ १ ॥ उपयोग १२ ॥ ज्ञावलेश्या ॥ ६ ॥ अवग्रह ॥ १ ॥ इहा ॥ १ ॥ अवाय ॥ १ ॥ धारणा ॥१॥
संज्ञा ॥ ४ ॥ उत्पातकि ॥ १ ॥ विणयकि ॥ १ ॥ कर्मकि ॥ १ ॥ पारिणामिकि १ ॥ ए ४ ॥ बुद्धि ।
ए ॥ ६१ ॥ बोल अरूपीना जाणवा ॥ इति रूपी अरूपीना बोल समाप्त ॥ ॐनमः ॥
अथ ज्ञव्य जीवना सुख बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना प्रल्योपमनुं मान
सूत्र अनुयोग द्वारथी लिखियेछे ॥ तेमा प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम ॥ आत्माअगुल ॥ १ ॥
उत्सेधागुल ॥ २ ॥ प्रमाणांगुल ॥ ३ ॥ हवे आत्मअंगुलनु मान कहेछे ॥ ज्ञरतादि १५ क्षेत्रछे ॥
तिहा जे काले जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्यनुं ते काले ते आराने विषे पोतपोताने १२
अगुले १ मुख थाय ॥ अने ए मुखे एक पुरुषनु उंचपणानुं मान थाय ॥ एटले १२ नवा अग्लंत्तर
सो १०८ आत्मअगुलनो पुरुष उचो होय ॥ ते पुरुषने प्रमाणोपेत कहिये ॥ १ ॥ हवे मान युक्त
पुरुष ते केहने कहिये ॥ पुरुष प्रमाणे उन्डिजलनिकुन्डि होय ॥ तेने जलेकरि परिपूर्ण ज्ञरिये ॥

हमो चाल्योजाय पण खलायनहि ॥ घातपामेनहि ॥ तथा पाणिना आवर्त्तन तथा विउ
पामाहि रहे पण तिहां सडिगलिने पाणि नथइजाय ॥ जे अतितिखे शस्त्रे करिने देवतानी
शक्तिपे वेधता भेदता एकलमनो विभोखंक न थाय ॥ तेने तत्वज्ञाता परमाणु कहेवे ॥ एहवा
अनता व्यवहारि परमाणु एकग मिलेतिवारे १ उष्णसन्निपो थाय ॥ आठ उष्णसन्निये १ सण
सन्निपो थाय ॥ आठ सणसन्निये १ उर्ध्वरेणु थाय ॥ आठउर्ध्वरेणुये १ त्रशरेणु ते वेंद्रीयादिक त्रश
जीवने चालता रज उम्हेतेथाय ॥ आठत्रशरेणुये १ रथरेणु ते रथादिकहिंम्हता रजउम्हे ते थाय ॥
आठ रथरेणुए १ देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयामनुष्यना वालाग्रनुं जाम्हपणु थाय ॥ आठ देव
कुरु उत्तरकुरुना वालाग्रे १ हरिवास रमकवासक्षेत्रना जुगलियाना वालाग्रनु जाम्हपणुंथाय ॥
आठ हरिवास रमकवासना वालाग्रे १ हेमवय एरणवयक्षेत्रनाजुगलियाना वालाग्रनुं जाम्हपणुं
थाय ॥ आठ हेमवयएरणवयना वालाग्रे १ पुर्वपश्चिम महाविदेहना मनुष्यनावालाग्रनुं जाम्ह
पणुथाय ॥ आठ पुर्वपश्चिम महाविदेहनावालाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यनावालाग्रनु जाम्हप
णुंथाय ॥ एहवा ८ वालाग्रे १ लिख थाय ॥ आठ लिखे १ जुथाय ॥ आठ जुये १ जवमध्यथाय ॥

आठ जवमधे १ अगुलथाय ॥ ठअंगुले १ पगथाय॥ १२ अगुले १ वेंतथाय ॥ २४ अगुले १ हाथ थाय ॥ ४८ अगुले १ कुक्षिथाय ॥ ए६ अंगुले १ धनूपथाय ॥ २ हजारधनूपे १ गाउथाय ॥ ४ गाउए १ जोजनथाय ॥ ए उत्सेधागुले २४ दंमकनी अवघेणामवीठे ॥ हवे प्रमाणागुलनुमान कहेठे ॥ जरतादिक चक्रवर्तीनु कागणिरत्नहोय ॥ ते ८ सोनइया जारनेतोलेठे ॥ सोनइयानुं तोलकहेठे ॥ ४ मधुरत्रिफले ॥ १ स्वेतसरसवथाय ॥ १६ सरसवे १ अरूदथाय ॥ २ अरूदे १ गुजाथाय ॥ ५ गुजाये १ मासो थाय ॥ १६ मासे १ सोनइयोथाय ॥ एहवा ८ सोनइयाजा-रनु कागणिरत्न होय ॥ तेने ठ तला ॥ ८ खुणा ॥ १२ हांश ठे ॥ सोनीनी अहिरणने सठाणेठे ॥ ते कागणिरत्ननी एकेकीहाश उत्सेधागुलनि पहोलिठे ॥ अने जे उत्सेधागुल ते श्रमण जगवत महावीरनु अर्द्धअंगुलथाय ॥ तेने हजारगुणुकरिये ॥ तिवारे १ प्रमाणागुलथाय ॥ एटले महावीरस्वामीना पाचसे आत्मअगुले १ प्रमाणागुलथाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पगथाय ॥ १२ अगुले १ वेंतथाय ॥ २४ अगुले १ हाथथाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षिथाय ॥ ए६ अगुले १ धनूप थाय ॥ २ हजारधनूपे १ गाउथाय ॥ ४ गाउये १ जोजनथाय॥ ए प्रमाणांगुले।

ए बादर उद्धार पल्योपम ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म उद्धार पल्योपमनु मान कहेछे ॥ जीम एक जोजननो पालो कल्पिये ते पुर्ववत् ॥ ते पालामाहि देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयानामाथाना केश ते एकदीनना जाव सात दीनना उगयावालाग्र लेइये ॥ ते एकेका वालाग्रना असंख्याता खंडकरिये ॥ ते खंडकेवडानाइनाथाय ॥ चक्षु इन्द्रियनि अवघेणाथि असख्यातमे भागे अने नाइना सुक्ष्म वनस्पतिना जीवना शरीरनी अवघेणाथि असख्यात गुणामहोटा ॥ अने जेवडु एक बादर पृथ्वीकायना जीवनुं शरीर तेवडा ते वालाग्रना खंड नाइनाथाय ॥ ते वालाग्रनाखंड अग्निये बलेनहि ॥ वायेउडेनहि पूर्ववत् ॥ पछि ते वालाग्रनेखंड करिने ते पालो ठासी भरिये पूर्ववत् पछी ते पालामाहिथि ॥ समये समये एकेकोवालाग्रनोखंड काढिये ॥ इम काढता जेटले काले ते पालोखालीथाय ॥ तेटला कालने सुक्ष्म उद्धार पल्योपम कहिये ॥ ए पल्योपम असंख्याता समयनोथाय एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म उद्धार सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमे द्विप समुद्रनुं मान मव्युंछे ॥ अढि उद्धार सागरोपमना जेटला समयथाय तेटला द्विपसमुद्र जिन सोकमाहे ॥ जंबुद्विप १ एकलाख जोजननो लांबो ने पहोलो इम ठाम बमणो

लवण समुद्र बेलाख जोजननो ॥ घातकिखंड ४ लाखजोजननो ॥ इम ठाम बमणा असख्याता द्विप समुद्र जाणवा ॥ ए सुक्ष्म उद्धार पल्योपम ॥ २ ॥ १ ॥ हवे अद्धापल्योपमनु स्वरूप कहेछे तेना २ भेद ॥ बादर ॥ १ ॥ सुक्ष्म ॥ २ ॥ तेमा बादर अद्धापल्योपम केहने कहिये ॥ एक जोजननो लांबो पहोलो ने उंचो च्यारेहाशेसरिखो पूर्ववत् पालो कलपीये पछी पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीया मनुष्यना बालाग्रेकरी पालो ठांसी भरिये ॥ पछी सोसोवर्षे एके कोवालाग्रकाढिये ॥ इम काढता जेटले काले ते पालोठालो थाय ॥ तेटला कालने बादर अद्धा पल्योपम कहिये ॥ ए पल्यसख्याताकोडिवर्षेथाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि बादर अद्धापल्यो पमे १ बादर अद्धासागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनु काइ प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणामात्रछे ॥ २ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म अद्धापल्योपमनुं स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजननो लांबो पहोलो ने उंचो पालो पूर्ववत् कलपिये ॥ तेहमां पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयाना बालाग्रना असं ख्याता खंडकरिभरिये ॥ पछी ते पालामाथि सोसोवर्षे एकेकिरज काढिये॥जेटले काले ते पालो खालिथाय ॥ तेटला कालने सुक्ष्म अद्धापल्योपम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे

१ सुक्ष्म अद्धासागरोपमथाय ए सागरोपमे ॥ नारकी ॥ तिर्यंच ॥ मनुष्य ॥ देवता ॥ ए ४ गतिना आयुष्य मप्याछे ॥ २ ॥ २ ॥ हवे क्षेत्रपल्योपम कहेछे ॥ क्षेत्रपल्योपमना २ भेद ॥ बादर ॥ १ ॥ सुक्ष्म ॥ २ ॥ तेमा बादर क्षेत्रपल्योपम केहने कहिये ॥ एक जोजननो लांबो पहोलो ने उंचो पूर्ववत् पालो कल्पिये ॥ तेमां पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयाना माथाना वालाग्र भरिये ॥ पछी ते पालामांहिला वालाग्रने फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरता जेटले काले ते पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने ॥ बादर क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ ए पालोखालिथातां असंख्याति अवसर्पिणी उत्सर्पिणी वहिजाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ बादर क्षेत्र सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनो काइ प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणा मात्रछे ॥ तथा मतांतरे जीव द्रव्यना परिणाम मप्याछे ॥ ३ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म क्षेत्रपल्योपमनु स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजननो लांबो पहोलो ने उंचो पूर्ववत् पालो कल्पिये ॥ तेमांही पूर्ववत् देवकुरुउत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलियानावालाग्रना असंख्याता खंड करिभरिये ॥ पछि ते पालामांहिलावालाग्रने फरस्या आकाश प्रदेश तथा अणफरस्या आकाश प्रदेश छे ते फरस्या

अणफरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरिये ॥ जेटले काले पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने १ सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपम कहिये ॥ एहवा दशकोडाकोडि सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे १ सुक्ष्म क्षेत्र सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमे द्रष्टिवाद सूत्रनाभाव मव्याठे ॥ ३ ॥ ४ ॥ ए ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनुं मान कह्यु ॥ इति प्रमाणबोध. समाप्तः ॥ अथ सिद्धांतना मूल श्लोकनु मान तथा बीजा टीका चूर्णि भाष्यनुं मान लिख्युं छे ॥ आचारांगमूलश्लोक ॥ २५०० ॥ आचा० निर्युक्ति ॥ ४५० ॥ आचा० चूर्णि ॥ ८३०० ॥ आचा० वृत्ति ॥ १२००० ॥ १ ॥ सूयगडांगमूल ॥ २१०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ २५० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १०००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १२८५० ॥ २ ॥ ठाणांगसूत्रमूल ॥ ३७७० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १५२५० ॥ ३ ॥ समवायांगमूल ॥ १६६७ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७७६ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४०० ॥ ४ ॥ भगवतीसूत्र मूल ॥ १५७७२ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १८६१६ ॥ ५ ॥ ज्ञाताधर्मकथामूल ॥ ॥ ५५०० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ४२५२ ॥ ६ ॥ उपाशक दशामूल ॥ ८१२ ॥ अंतगडदशामूल ॥ ॥ ७५० ॥ अनुत्तरोववाइमूल ॥ १५२ ॥ ए ३ सूत्रनि वृत्ति ॥ १३०० ॥ ए ॥ प्रश्नव्याकरण

मूल ॥ १२५७ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ४६०० ॥ १० ॥ विपाकमूल ॥ १२१६ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ए०० ॥ ११ ॥ ए ११ अंगनु मान कह्यु ॥ हवे १२ उपांगनुं मान कहेछे ॥ उववाइमूल ॥ ॥११६७ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३१२५ ॥ १ ॥ रायपसेणीमूल ॥ २०७८ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७०० ॥ २ ॥ जिवाभिगम मूल ॥ ४७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १५०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १००० ॥ तेनि मलयवृत्ति ॥ १३००० ३ ॥ पन्नवणामूल ॥ ७७८५ ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ३७२८ ॥ तेनि बृहद्वृत्ति १६००० ॥ ४ ॥ जंबुद्विपप्रज्ञप्तिमूल ॥ ४१४६ ॥ तेनि चूर्णि ॥ १८६० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १२००० ॥ ५ ॥ चंद्रप्रज्ञप्तिमूल ॥ २२०० ॥ तेनि वृत्ति ॥ए४००॥ ६ ॥ सूर्यप्रज्ञप्तिमूल ॥ २३०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥१०००॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ए१३०॥ ७ ॥ निरयावलिका ॥ ८ ॥ कप्पिया ॥ ए ॥ पुप्फिया ॥ १०॥ पुप्फचूलिया ॥ ११ ॥ विण्हिदसा ॥ १२ ॥ ए ५ नि मूलसंख्या ॥ ११०ए ॥ ए ५ नि वृत्ति ॥ १८०ए ॥ १७ ए १२ उपांगनु मान कह्युं ॥ हवे ४ छेदनु मान कहेछे ॥ व्यवहारमूल ॥६००॥ तेनुं भाष्य॥६०००॥ तेनि चूर्णि ॥ १०३६१ ॥ तेनि वृत्ति ॥३३६२५॥१॥ बृहत्कल्पमूल॥४७३॥तेनुं लघु भाष्य ॥८०००॥ तेनु बृहद्भाष्य॥१३०००॥ तेनि चूर्णि॥१४०००॥ तेनि वृत्ति ॥ ४७००० ॥ २॥ निशिथमूल॥८१५॥

तेनु जाष्य ॥ ७४०० ॥ तेनुं वृहद्भाष्य ॥ १२००० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २८००० ॥ ३ ॥ दशाश्रुतस्कधमूल ॥ १८३० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ १६८ ॥ तेनि चूर्णि ॥ २२४५ ॥ तेनि वृत्ति ब्रह्मकृत ॥ २५०० ॥ ४ ॥ ए ४ छेदनु मान कह्यु ॥ पंचकल्पमूल ॥ ११३३ ॥ तेनु जाष्य ॥ ३१२५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ३१३१ ॥ १ ॥ जीतकल्पमूल ॥ २०५ ॥ तेनुं जाप्य ॥ ३१२५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ १००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १७०० ॥ तेनुं टिपण ॥१२०० ॥२॥ केटलाक ए २ ने छेदसूत्र कहेछे पण ए २ नु नाम नंदीसूत्रमा नथि ॥ एवं ६ छेद ॥ हवे ४ मूलसूत्रनु मान कहेछे ॥ उत्तराध्ययनमूल ॥ २००० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥७००॥ तेनि चूर्णि ॥६०००॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १२००० ॥ तेनि वृहद्वृत्ति ॥ १८००० ॥ १ ॥ दशविकालिकमूल ॥ ७०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ४५० ॥ तेनि लघुवृत्ति ३५०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ ७०० ॥ तेनि वृहद्वृत्ति ॥ ७००० ॥ २ ॥ नंदीमूल ॥ ७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २००० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ २३१२ ॥ तेनि वृहद्वृत्ति ॥ ७३५३ ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वारमूल ॥ १८९९ ॥ तेनि चूर्णि॥ ३००५॥तेनि लघुवृत्ति ॥ ३५००॥ तेनि वृहद्वृत्ति॥७००० ॥४॥ ए ४ मूलसूत्रनु मान कह्यु ॥ पाक्षिकसूत्रमूल ॥ ३०० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३००० ॥ १ ॥ पिण्डनिर्युक्तिमूल ॥

निरयावलियाउ ॥ ३६ ॥ कप्पियाउ ॥ ३७ ॥ कप्पवंसियाउ ॥ ३८ ॥ पुप्फियाउ ॥ ३९ ॥
॥ विण्हिदसाउ ॥ ४१ ॥ ए ४१ कालिक सूत्र रात्रि तथा दिवसने पहि
ला जणना सझायकरवी शेष ४ पहोर सझाय न करवि ॥ हवे उत्कालिक
दशवैकालिक ॥ १ ॥ कप्पियाकप्पियं ॥ २ ॥ चूलकप्पसुय ॥ ३ ॥ महा
५ ॥ रायपसेणि ॥ ६ ॥ जिवाभिगम ॥ ७ ॥ पन्नवणा ॥ ८ ॥
।य ॥ १० ॥ नंदी ॥ ११ ॥ अनुयोगद्वार ॥ १२ ॥ देवेंद
१४ ॥ चंदगविजय ॥ १५ ॥ सूरप्रज्ञप्ति ॥ १६ ॥ पोरिसीम
१८ ॥ विद्याचारणविणिछ्य ॥ १९ ॥ गणिविद्या ॥ २० ॥ झाणवि
२२ ॥ आयविसोहि ॥ २३ ॥ वियरायसुय ॥ २४ ॥ सलेह
२६ ॥ चरण वीसोहि ॥ २७ ॥ आउरपच्चखाण ॥ २८ ॥ महा
दृष्टिवाद सूत्र ॥ ३० ॥ ए ३० उत्कालिक सूत्र ते ४ अकाल तथा असझाय
नवा जणना सझाय करवी ॥ एक आवश्यक तद्व्यतिरिक्त त्रेश्रि न्यारुं ए

७२ सूत्रना नाम कह्या ॥ आज वर्त्तमानकाले केटला सूत्र नथि तेनिविगत ॥ पाक्षिक सूत्रमा उत्कालिक ३७॥ ने कालिक ३६ सूत्र कह्याछे ॥ तेमा १५ उत्कालिक ने ॥२१ कालिक सूत्र हमणां नथि ॥ उत्कालिक १५ ना नाम ॥ कप्पिया कप्पिय ॥ १ ॥ चुलकप्पसुयं ॥ २ ॥ महाकप्पसुय ॥ ३ ॥ महापन्नवणा ॥ ४ ॥ पमायपमायं ॥५॥ पोरसिमन्डल ॥ ६ ॥ मन्डलपवेसो ॥ ७ ॥ विद्याचारणविणिच्छ ॥ ८ ॥ झाणविन्नत्ति ॥ ए ॥ मरणविन्नत्ति ॥१० ॥ आयवीसोही ॥ ११ ॥ संलेहणासुयं ॥ १२ ॥ वियरायसुय ॥ १३ ॥ विहारकप्पो ॥१४॥ चरणविहि ॥ १५ ॥ ए १५ नथि ॥ हवे कालिक २१ ना नाम कहेछे ॥ खुड्डियाविमाण विन्नत्ति ॥१॥ महल्लियाविमाण विन्नत्ति ॥२॥ अगचूलिया ॥ ३ ॥ वंगचूलिया ॥ ४ ॥ विवाहचूलिया ॥ ए ॥ अरुणोववाए ॥ ६ ॥ वरुणोववाए ॥ ७ ॥ गरुडोववाए ॥ ८ ॥ धरणोववाए ॥ ए ॥ वेसमणोववाए ॥ १० ॥ वेलंधरोववाए ॥ ११ ॥ देविंदोववाए ॥ १२ ॥ उगाणसुए ॥ १३ ॥ समुगाणसुए ॥ १४ ॥ नागपरियावलियाण ॥ १५ ॥ कप्पियाकप्पियाणं ॥ १६ ॥ आसिविसन्नावणाणं ॥ १७ ॥ दिठिविसन्नावणाणं ॥ १८ ॥ चारणन्नावणाण ॥ १ए ॥ महासुमिणन्नावणाणं ॥ २० ॥ तेयग्गिनिसग्गाण ॥ २१ ॥ ए २१

निरयावलियाउ ॥ ३६ ॥ कप्पियाउ ॥ ३७ ॥ कप्पवडंसियाउ ॥ ३८ ॥ पुप्फियाउ ॥ ३९ ॥ पुप्फचूलियाउ ॥ ४० ॥ वण्हिदसाउ ॥ ४१ ॥ ए ४१ कालिक सूत्र रात्रि तथा दिवसने पहि ले तथा छेल्ले पहोरे वांचवा जणवा सझायकरवी शेष ४ पहोर सझाय न करवि ॥ हवे उत्कालिक सूत्रना नाम कहेछे ॥ दशवैकालिक ॥ १ ॥ कप्पियाकप्पियं ॥ २ ॥ चूलकप्पसुय ॥ ३ ॥ महा कप्पसुयं ॥ ४ ॥ उववाइय ॥ ५ ॥ रायपसेणि ॥ ६ ॥ जिवाभिगम ॥ ७ ॥ पणवणा ॥ ८ ॥ महापणवणा ॥ ९ ॥ पमायपमाय ॥ १० ॥ नंदी ॥ ११ ॥ अनुयोगद्वार ॥ १२ ॥ देविंद स्तव ॥ १३ ॥ तंडुलवेयालिय ॥ १४ ॥ चंदगविझयं ॥ १५ ॥ सूरपन्नत्ति ॥ १६ ॥ पोरिसीमं डल ॥ १७ ॥ मंडलपवेश ॥ १८ ॥ विज्जाचारणविणिच्छ ॥ १९ ॥ गणिविद्या ॥ २० ॥ झाणवि भत्ति ॥ २१ ॥ मरणविभत्ति ॥ २२ ॥ आयविसोहि ॥ २३ ॥ वियरायसुय ॥ २४ ॥ सलेह णासुत्र ॥ २५ ॥ विहारकप्पो ॥ २६ ॥ चरण वीसोहि ॥ २७ ॥ आउरपच्चखाण ॥ २८ ॥ महा पच्चखाण ॥ २९ ॥ दृष्टिवाद सूत्र ॥ ३० ॥ ए ३० उत्कालिक सूत्र ते ४ अकाल तथा असझाय वर्जिने आठे पहोर वांचवा जणवा सझाय करवी ॥ एक आवस्यक तद्यतिरिक्त त्रेणि न्यारु ए

७२ सूत्रना नाम कह्या ॥ आज वर्त्तमानकाले केटला सूत्र नथि तेनिविगत ॥ पाक्षिक सूत्रमा उत्कालिक ३७॥ ने कालिक ३६ सूत्र कह्याछे ॥ तेमा १५ उत्कालिक ने ॥२१ कालिक सूत्र हमणां नथि ॥ उत्कालिक १५ ना नाम ॥ कप्पिया कप्पियं ॥ १ ॥ चुलकप्पसुयं ॥ २ ॥ महाकप्पसुय ॥ ३ ॥ महापन्नवणा ॥ ४ ॥ पमायपमायं ॥५॥ पोरसिमंमल ॥ ६ ॥ मन्मलपवेसो ॥ ७ ॥ विद्याचारणविणिछउ ॥ ८ ॥ झाणविन्नत्ति ॥ ९ ॥ मरणविन्नत्ति ॥१० ॥ आयवीसोही ॥ ११ ॥ सलेहणासुयं ॥ १२ ॥ वियरायसुय ॥ १३ ॥ विहारकप्पो ॥१४॥ चरणविहि ॥ १५ ॥ ए १५ नथि ॥ हवे कालिक २१ ना नाम कहेछे ॥ खुन्नियाविमाण विन्नत्ति ॥१॥ महल्लियाविमाण विन्नत्ति ॥२॥ अगचूलिया ॥ ३ ॥ वंगचूलिया ॥ ४ ॥ विवाहचूलिया ॥ ५ ॥ अरुणोववाए ॥ ६ ॥ वरुणोववाए ॥ ७ ॥ गरुलोववाए ॥ ८ ॥ धरणोववाए ॥ ९ ॥ वेसमणोववाए ॥ १० ॥ वेलधरोववाए ॥ ११ ॥ देविंदोववाए ॥ १२ ॥ उठाणसुए ॥ १३ ॥ समुठाणसुए ॥ १४ ॥ नागपरियावलियाण ॥ १५ ॥ कप्पियाकप्पियाणं ॥ १६ ॥ आसिविसन्नावणाणं ॥ १७ ॥ दिठिविसन्नावणाणं ॥ १८ ॥ चारणन्नावणाण ॥ १९ ॥ महासुमिणन्नावणाणं ॥ २० ॥तेयग्गिनिसग्गाण ॥ २१ ॥ ए २१

नथि ॥ अंगमनिहमां १ दृष्टिवादसूत्र ते पण नथि ॥ सर्वमिलिने ३६ सूत्र हालना कालमा नथि पाक्षिक सूत्रनिवृत्तिमा उत्कालिक २० सूत्रना नामनि व्याख्याना अंतमा कह्युंछे के ए २० अध्ययन यथार्थ कह्या नथि ए उपलक्षण मात्र छे स्यामाटे के हालमां एटला उत्कालिक नथि ॥ वली एज सूत्रनि वृत्तिमा कालिक ३६ सूत्र कह्या छे तेना नामनि व्याख्याने अंते कह्युं छे के ए ३६ अध्ययन उपलक्षण (उजखावारूप) भूत छे स्यामाटे के हालमा एटला कालिक सूत्र नथि ॥ आ सूत्रनि टिकाउपरथि पूर्वे कह्या ते सूत्र हालमां नथि एम सिद्ध थाय छे ॥ हालमा ए ३६ माहिना केटलाक ए नामना सूत्र वर्त्ते छे ते आधुनिककृत जणाय छे विशेष तो ज्ञानि जाणे ॥ अथ पूर्वे कह्या जे सिद्धांत ते ३२ असझाय टालिने वाचवा भणवा ते ३२ असझा यनु स्वरूप निरूपते ॥ ठाणांग ठाणे १० मे ॥ दस विहे अंतलिक्खए असज्झाइए ॥ आकाशने आश्रिने १० असझाय उपजे छे तेना नाम ॥ उक्कावाए ते तारो खरे तथा ते प्रकारे रेखा सहित अनेक प्रकाशसहित तेहनु पडवु ते उल्कापात ॥ अथवा उक्का के० ज्वालारहित अ ग्नि तेनुं पात के० आकाशथि पडवुं ते उल्कापात तेहमा थोडु दोष तो किंचित्काल खमवु

निरंतर तथा कोई मोटो तारो खरे तो १ पहोर लगे असझाय ॥ रात्रिने अते तारो खरे तो सूर्य उदय थाय तिहांसुधि असझाय गणवि ॥ १ ॥ दिसिदाहे के० दिशाउने विषे मोटि लाय सरिखो उद्योत ने रक्तता तेनि अस० जिहांसुधि होय तिहा लगि ॥ २ ॥ गज्जिए के० अकाले गाजनि अस० ॥ ३ ॥ विज्जुए के० अकाले विजलिनि अस० ॥ ४ ॥ निग्घाए के० अकाले कड़ाकानि अस० ॥ ५ ॥ अकालते आर्द्रानक्षत्रथि मांडिने हस्तनक्षत्र उत्तरयासुधि काल॥ते उपरात शेषनक्षत्रे गाज विज वरसाद जेटलीवार होय तेटलीवारसुधि अकाल जाणवो ॥ जुवए के० शुक्लपक्षना वालाचंद्रमानि ते चंद्रना उदयथि ते अस्तसुधि जाणवी ॥ ६ ॥ जखालित्तए के० आकाशनेविषे भूतादिकनो चालो थाय जेटली वारसुधि चालो होय तेटली वारसुधि अस० ॥७॥ धुमियाए के० दिवस उगया पछि जेटलिवार धुम्र वर्षे तेटली वारसुधि अस० ॥ ८ ॥ महियाए के० रात्रिनेविषे झाकलवर्षे ते मेघरवो तेनी अस० ॥९॥ रजोग्घाए के० घणो वायरोगुंजे आकाशे धूलि चढे दिशा धुंधली लागे ते रजोद्घात जीहा लगे रहे तिहांसुधि अस० ॥ १० ॥ हवे १० उदारिकने आश्रिने असझाय कहेछे ॥ ठाणांगठाणे १० मे ॥ दसविहे उरालिए अस

ाइग् ॥ तेमां प्रथम ॥ अढि के० हाडकानि असज्झाय ॥ १ ॥ मसे के० मासनि असज्झाय० ॥ २ ॥
।।ए के० रुधिरनि अस० ॥ ३ ॥ असुइसामते के० अशुचि विष्टा नजीकमा पडि होय तेनि
० ॥ ४ ॥ सुसाण सामते के० मशाण नजीक होय तेनि अस०॥५॥ चंदोवराए के० चन्द्रमानु
ण थाय तेनि अस० ॥ ६ ॥ सुरोवराए के० सूर्यनुं ग्रहण थाय तेनि अस० ॥ ७ ॥ ए २ अस
ज्झाय ग्रहण थयाथि मांडिने मुक्त थया पछी बे घडिसुधि जाणवी ॥ पडणे के० मोटो अधिका
रि राजा प्रमुखनो मरण थाय तेनि अस० ते आसरो दिवश एक अस०॥८॥रायवुग्गहे के० राजा
राजाने मांहोमांहि लडाइ संग्राम थातो होय पोताना नगरनि समिपमा ते न मिटे तिहांसुधि
अस० ॥ ९ ॥ उवस्सयस्स अंतो उरालियसरिरगे के० उपाश्रयमांहि उदारिकपंचेंद्रियनुं शरीर
जेटलीवार पड्युंहोय तेटलिवार अस० ॥१०॥ ए १० उदारिक आश्री कहि ॥ सर्व मिली २० थइ॥
आषाढशुक्ल पुर्णिमानि अस० ॥ १ ॥ आषाढवद १ नि अस० ॥ २ ॥ भाद्रवाशुद पुर्णिमानि
अस० ॥ ३ ॥ भाद्रवावद १ नि अस० ॥ ४ ॥ कार्तिकशुद पुर्णिमानि अस० ॥ ५ ॥ कार्तिकवद
१ नि अस० ॥६ ॥ चैत्रशुक्ल पुर्णिमानि अस० ॥ ७ ॥ चैत्रवद १ नि अस० ॥ ८ ॥ प्रभातनि २

घमिसुधि असः ॥ए॥ मध्यान्हनि २ घमि असः ॥१० ॥ सध्यासमयनि २ घमि असः ॥ ११ ॥ मध्यरात्रिनि २ घमिसुधि असः ॥ १२ ॥ ए १२ असझाय गणागसूत्रने चनथे गणे तथा छेद सूत्रमा कहिछे ॥ सर्व मिलि विशने वार बत्रिश असझाय थइ ॥ ३२ ॥ ए ३२ असझाय टालि सिद्धातनि वांचता जणता सझायकरतां आशातना लागे नहि ॥ इति ३२ असझाय समास ॥ इति सिधांतमानं समास ॥ अथ ज्योतिषबोधनु स्वरूप जबूद्विप प्रज्ञप्ति प्रमुख सूत्रोना आधारथि लिखिये छे ॥ जबूद्विपमां २ चंद्र ॥ २ सूर्य ॥ १७६ ग्रह ॥ ५६ नक्षत्र ॥ एकलाख तेत्रिशहजार नवसें पचास कोमाकोमि तारा छे ॥ सूर्यना १८४ मंमलछे ॥ तेमां ६५ मंमल जंबूद्विपनी जगतीथिमाहि १८० जोजन जइये एटला सुधिमां छे ने जगतीथी ३३० जोजन लवणमा जइये एटला सुधिमां ११९ मंमल छे–सर्वमिली ५१० जोजनमा १८४ मंमल रह्याछे–सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंमलथि बाहिरलुं छेलुं मंमल ५१० जोजनने छेटेछे ॥ एकेक मंमलथि बिजु २ मंमल २ जोजनने छेटेछे–सूर्यनु विमान एक जोजनना $\frac{48}{61}$ भागनु लांबु पहोलुं छे ने $\frac{24}{61}$ भागनु जाडुं छे– जंबूद्विपमा सूर्यनु-प्रथम मंमल मेरूपर्वतथि

झाइए ॥ तेमां प्रथम ॥ अढि के० हाम्कानि असझाय ॥ १ ॥ मंसे के० मासनि अस० ॥ २ ॥
सोणिए के० रुधिरनि अस० ॥ ३ ॥ असुइसामते के० अशुचि विष्ठा नजीकमा पमि होय तेनि
अस० ॥ ४ ॥ सुसाण सामते के० मशाण नजीक होय तेनि अस०॥५॥ चंदोवराए के० चइमानु
ग्रहण थाय तेनि अस० ॥ ६ ॥ सुरोवराए के० सूर्यनु ग्रहण थाय तेनि अस० ॥ ७ ॥ ए २ अस
झाय ग्रहण थयाथि माम्निने मुक्त थया पठी वे घम्सुिधि जाणवी ॥ पम्णे के० मोटो अधिका
रि राजा प्रमुखनो मरण थाय तेनि अस० ते आखो दिवश एक अस०॥८॥रायवुग्गहे के० राजा
राजाने माहोमाहि लमाइ संग्राम थातो होय पोताना नगरनि समिपमा ते न मिटे तिहासुधि
अस० ॥ ९ ॥ उवसयस्स अतो उरालियसरिरगे के० उपाश्रयमाहि उदारिकपचेंद्रियनुं शरीर
जेटलीवार पम्युंहोय तेटलिवार अस० ॥१०॥ ए १० उदारिक आश्री कहि ॥ सर्व मिली २० थइ॥
आपाढशुद्ध पूर्णिमानि अस० ॥ १ ॥ आपाम्वद १ नि अस० ॥ २ ॥ भाद्रवाशुद्ध पूर्णिमानि
अस० ॥ ३ ॥ भाद्रवावद १ नि अस० ॥ ४ ॥ कार्तिकशुद्ध पूर्णिमानि अस० ॥ ५ ॥ कार्तिकवद
१ नि अस० ॥६ ॥ चैत्रशुद्ध पूर्णिमानि अस० ॥ ७ ॥ चैत्रवद १ नि अस० ॥ ८ ॥ प्रभातनि २

घम्सिुधि असं० ॥ए॥ मध्यान्हनि २ घम्सिुधि असं० ॥१०॥ संध्यासमयनि २ घम्सिुधि असं० ॥ ११ ॥ मध्यरात्रिनि २ घम्सिुधि असं० ॥ १२ ॥ ए १२ असझाय ठाणागसूत्रने चउथे ठाणे तथा ठेद सूत्रमा कहिठे ॥ सर्व मिलि विशने वार बत्रिश असझाय थइ ॥ ३२ ॥ ए ३२ असझाय टालि सिद्धातनि वांचता जणता सझायकरता आशातना लागे नहि ॥ इति ३२ असझाय समाप्त ॥ इति सिद्धातमानं समाप्त ॥ अथ ज्योतिषबोधनु स्वरूप जंबूद्विप प्रज्ञप्ति प्रमुख सूत्रोना आधारथि लिखिये ठे ॥ जंबूद्विपमा २ चंड ॥ २ सूर्य ॥ १७६ ग्रह ॥ ५६ नक्षत्र ॥ एकलाख तेत्रिशहजार नवसें पचास कोमाकोमि तारा ठे ॥ सूर्यना १७४ मम्मलठे ॥ तेमां ६५ मम्मल जंबूद्विपनी जगतीथिमाहि १७० जोजन जइये एटला सुधिमां ठे ने जगतीथी ३३० जोजन लवणमा जइये एटला सुधिमा ११ए मंम्मल ठे–सर्वमिली ५१० जोजनमा १७४ मम्मल रह्याठे–सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंम्मलथि बाहिरलुं ठेलुं मम्मल ५१० जोजनने ठेटेठे ॥ एकेक मंम्मलथि बिजुं २ मंम्मल २ जोजनने ठेटेठे–सूर्यनु विमान एक जोजनना $\frac{४८}{६१}$ जागनु लांबु पहोलुं ठे ने $\frac{२४}{६१}$ जागनु जामुं ठे– जंबूद्विपमा सूर्यनु-प्रथम मंम्मल मेरूपर्वतथि

४४८२० जोजनने छेटेछे–बीजु मंडल ४४८२२ जोजनने ४८/६१ भागने छेटेछे ॥ इम मांडले २ बे बे जोजनने ४८/६१ भाग वधारता छेलु १८४ मु मंडल मेरुथि ४५३३० जोजनने छेटे आवे इमज छेला मंडलथि माहिले १ मांडले आवतामां २ जोजनने ४८/६१ भाग घटाडता जाव प्रथममंडल ४४८२० जोजनने छेटे आवे–सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंडल ९९६४० जोजननु लांबु पहोलु छे ने तेनि परिधि ३१५०८९ जोजन झाझेरानि छे–बीजुं मंडल ९९६४५ जोजनने ३५/६१ भागनुं लांबुं पहोलुं छे ने तेनि परिधि ३१५१०७ जोजननि छे–इम निकलता लांबपणा पहोलपणामा ५ जोजनने ३५/६१ भाग वधारता ने परिधिमां अढार जोजन वधारता छेलुं १८४ मुं मंडल १००६६० जोजननुं लांबुं पहोलुं छ ने तेनि परिधि ३१८३१५ जोजननि छे–इम छेला मंडलथि मांहिले मांडले प्रवेश करता पण पूर्वोक्तरीते लांबपणा पहोलपणा परिधिमाथि पूर्वोक्तरीते घटाडता जाव प्रथम मंडलनुं लांब पहोलपणुं तथा परिधि आवे–जीवारे सूर्य सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंडलने आश्रिने गतिकरे तिवारे एक मुहूर्त्त ५२५१ जोजनने [illegible] भाग चाले ॥ तिवारे इहांना मनुष्यने ४७२६३ जोजनने २१/६० भाग वेगलेथि उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ जिवारे बीजा मांडलाने आश्रिने गति करे तिवारे एक मुहूर्त्त

५२५१ जोजनने २९/६० भाग चाले तिवारे ४७११९ जोजननें ३९/६० भाग वेगलेथि उगतो सूर्य नजरे आवे ॥ इम निकलता मांम्ले २ चालमा भाग १६/६० वधारता ने नजरेआवे तेमा ८४ जोजन वधारता २ छेले १८४ मे माम्ले एक मुहूर्त्तें ५३०५ जोजनने १५/६० भाग चालेने ३१८३१ जोजनने १/६० भाग वेगलेथि उगतो सूर्य नजरे आवे इम मांही प्रवेशकरतां मांम्ले २ मुहूर्त्त गतिमाने नजरेआवे तेमां पूर्वोक्तरीते घटाडता २ प्रथममाम्ले पूर्वोक्तमान आवे ॥ जीवारे सर्वाभ्यतर (प्रथम) मंम्लने आश्रिने सूर्य गति करे तिवारे १८ मुहूर्त्तनो दिवश ने १२ मुहूर्त्तनि रात्रि होय वीजामम्ल ने आश्रिने गति करे तिवारे पूर्वोक्तमांथि २/६१ भाग दीवशमांथि घटाम्ता ने रात्रीमा वधारता जाव १८४ मे माम्ले १२ मुहूर्त्तनो दीन ने १८ मुहूर्त्तनि रात्रि होय–इम छेलेमाम्लेथि प्रथम मांम्ले आवता पूर्वोक्त भाग दीनरात्रीमां वधारता घटाम्ता १८ मुहूर्त्तनो दीन ने १२ मुहूर्त्तनि रात्रि आवे–जिवारे सर्वाभ्यतंर (प्रथम) मंम्लने आश्रिने सूर्यगतिकरे तिवारे तापक्षेत्रनो आकार ऊर्ध्वमुखे कलम्बुवनस्पतिना फुलने आकारे माहि संकुचित ॥ वाहिर लवणतरफविस्तृत माहीमेरुपासे अर्ध्ववलयाकारे वाहीर लवण तरफ पहोलो मांहि पलाठीना मुखनेआकारे वाहिरगाडानि उधिने

आकारे ॥ ते तापक्षेत्रनि वे पांसे २ अवस्थित वाहाछे ते पीशतालीश २ हजार जोजननी लावीछे ॥ अने एकेकी तापक्षेत्र सस्थितरूप वाहाने २ अनवस्थित वाहाछे मेरुसमिपे सर्वाभ्यंतर वाहा अने लवण तरफ सर्ववाहिरली वाहा तेनि सर्वाभ्यंतर वाहा मेरुपासे ए४७६ जोजनने ६/१० न्नाग परिधि पणे छे तेकिम मेरुनि परिघिने ३ गुणी १० न्नागे तो पूर्वोक्त मानंआवे ॥ ते तापक्षेत्रनि सर्व वाहिरनि वाहा लवण पासे ए४७६७ जोजनने ४/१० न्नागनी परिधिपणे छे तेकिम जंबूद्विपनि परिधिने ३ गुणी १० न्नागता पूर्वोक्त मान आवे॥तिवारे तापक्षेत्र ७७३३३ जोजनने १ न्नाग लांबपणेछे—सगडनि उध्निने आकारेछे—तिवारे अंधकारक्षेत्राकार तापक्षेत्राकारनिपरे जाणवो॥ मेरुपासे ते अंधकारक्षेत्र नि सर्वाभ्यतरवाहा ६३२४ जोजनने ६/१० न्नागनि परिधिपणेछे तेकिम मेरुनिपरिघिने २ गुणी १० न्नागता पूर्वोक्त मान आवे॥ ते अंधकारक्षेत्रनि सर्व वाहिरनि वाहा लवणसमिपे ६३२४५ जोजन ६/१० न्नाग परिधिपणेछे तेकिम जंबूद्विपनिपरिघिने २ गुणी १० न्नांगता पूर्वोक्त मान आवे जिवारे सूर्य वाहिरलामंमलने आश्रिने गतिकरे तिवारे तापक्षेत्राकार पूर्ववत् नवरं एटलो फेर ॥ जे अंध कारनुं प्रमाण वर्णव्यु ते तापक्षेत्रनुं प्रमाण जाणवु ॥ इति सूर्याधिकारः ॥१॥ हवे चंद्रमाना १५

माभ्लाछे तेमा जगतीथि१८० जोजनमाहि जइये एटला क्षेत्रमां ५ मांडलाछे ने जगतीथि ३३० जोजन लवणमा जइये एटला क्षेत्रमां १० माडलाछे सर्व मिली ५१० जोजनमां १५ मांडला रह्याछे–प्रथममडलथी छेलुमंभलपण ५१० जोजनने छेटे छे ॥ एकेकचन्द्रमंडलने ३५ जोजन ३०/६१ भाग ४ भागनु अतरछे–एक मंडल ५६/६१ भागनु लांबुपहोलुछे ने २८/६१ भागनुं जाडुछे ॥ सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मडल मेरुथि ४४८२० जोजनने छेटे छे बिजुमडलमेरुथि ४४८५६ जोजनने २५/६१ भागने ४ भागने छेटे छे ॥ इम निकलता माडले २ छत्रिसजोजनने २५/६१ भागने ४ भागवधारता छेलुपंदरमु माडलु मेरुथि ४५३३० जोजनने छेटे आवे॥इममाडले२ माहीली कोरे प्रवेश करतां पूर्वोक्त जोजन घटाडता २ प्रथम मंडल मेरुथि पूर्वोक्त छेटे आवे–सर्वाभ्यतर (प्रथम) मंभल ९९६४० जोजन नुंलांबुपहोलुछेनेतेनिपरिधि ३१५०८९ जोजनझाझेरानिछे बीजुमंडल ९९७१२ जोजन ५१/६१ भाग ने १ भागनु लांबुपहोलुछे ने तेनि परिधि ३१५३१९ जोजनझाझेरानिछे इम निकलता माडले २ लांबपहोलपणामां ७२ जोजनने ५१/६१ भागने १ भाग वधारतानेपरिधिमां २३० जोजन मांडले २ वधारता छेलु १५ मुं मडल १००६६० जोजननु लाबुं छे नेतेनिपरिधि ३१८३१५ जोजननी आवे ॥

इम वाहिरथिमाहिले मांमले प्रवेशकरता पूर्वोक्त लांवपहोलपणमाथी पूर्वोक्त जोजनघटामता ने परिधिना मानमांथि पण पूर्वोक्त जोजन घटामता प्रथममंमलनुं लांवपणु पहोलपणु तथा परिधि आवे ॥ जिवारे चंद्र सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंमलने आश्रिनेगतिकरे तिवारे एक मुहुर्ते चंद ५०७३ जोजनने एकजोजनना १३७२५ भागकरियेतेवा $\frac{७७४४}{१३७२५}$ भागचाले—तिवारे इहांना मनुष्यनें ४७२६३जोजनने $\frac{२१}{६०}$ भाग वेगलेथीउगतो चंदनजरे आवे—जिवारेचंद्रबीजामंमलने आश्रिनेगतिकरे तिवारे १ मुहूर्ते ५०७७ जोजनने $\frac{३७७४}{१३७२५}$ भागचाले एवं निकलता मांमले २ मुहूर्तगतिमा ३ जोजन ने $\frac{९६५५}{१३७२५}$ भागवधारता यावत् छेले १५ मांमले १ मुहूर्ते ५१२५जोजनने $\frac{६९९०}{१३७२५}$ भागचाले इम माहि प्रवेश करता मांमले २ मुहूर्त्त गतिमाथि पूर्वोक्तरीते जोजनभाग घटामता प्रथम मांमले मुहूर्त्त गति आवे—ते दीने चंद उगतो ३१८३१ जोजनथि नजरे आवे—इतिचंद्राधिकार. ॥ नक्षत्रना ८ मंमल छे तेमां जगतीथि १८० जोजन जम्बुद्विपमा पेशीये एटलामा २ मंमलछे ने जगतीथि ३३० जोजन लवणमा जइए एटलामा नक्षत्रना ६ मांमलाछे सर्वमिली ५१० जोजनमां ८ मंमल रह्याछे सर्वाभ्यंतर (प्रथम) मंमलथि छेलु ८ मुं मंमल ५१० जोजनने छेटे छे

नक्षत्रना मांडला २ ने ॥ २ जोजननुं आंतरु—नक्षत्रनुं मंडल १ गाउनु लांबु पहोलुं ने अर्द्धगाउनुं जाडुछे ॥ मेरुथि ४४८२० जोजननेछेटे प्रथम मंडल छे—मेरुथि ४५३३० जोजनने छेटे छेलु ८ मु मंडल छे—प्रथममंडल ९९६४० जोजननुं लांबु पहोलुछे ने ३१५०८९ जोजन झाझेरानि तेनि परिधिछे ॥ बाहिरलु ८ मुं मंडल १००६६० जोजनुं लांबु छे ने १३८३१९ जोज ननि तेनिपरिधिछे—जीवारे प्रथम मांडले चाले तिवारे १ एक मुहूर्त्ते ५२६५ जोजनने $\frac{१८२६३}{२१९६०}$ भाग चाले—जीवारे छेला मंडलने आश्रिने गतिकरे तिवारे मुहूर्ते ५३१९ जोजनने $\frac{१६३६५}{२१९६०}$ भागचाले ८ नक्षत्रनामंडल १-३-६-७-८-१०-११-१५ मा चंद्रमंडलसाथे भेलाछे—एक मुहूर्ते चढ जे जे मंडलने आश्रिने गति करे तेते मंडलनी परिधिना १७६८ भाग चाले ते मंडलनिपरिधिने १०९८०० छेदिये तेवा—सूर्य १ मुहूर्ते १८३० भागचाले—नक्षत्र १८३५ भागचाले ॥ अथ ५ संव छरना नाम—नक्षत्र संवछर १ युगसंवछर २ प्रमाण संवछर ३ लक्षण सवछर ४ शनैश्च रसवछर ५ ॥ नक्षत्र संवछरना १२ भेद ॥ श्रावण जाव आषाढ ॥ अथवा बृहस्पति नामे ग्रह १२ वर्षे सर्व नक्षत्रना मंडलने पूर्ण करे नक्षत्र भोगवी ले ते नक्षत्रसंवछर कहिये ॥ १ ॥

युगसंवछरना ५ न्नेद ॥ चंद १ ॥ चंद चद २ ॥ अन्निवर्द्धित ॥ ३ ॥ चद ४ ॥ अन्निवर्द्धित ५—
प्रथम चंद संवछरना २४ पर्व एव बीजा चोथानापण २४ पर्व जाणवा॥ अन्निवर्द्धितोना छविश २
पर्व एव ५ संवछरे १ युग—१२४ पर्व ॥ २ ॥ प्रमाण संवछरना ५ न्नेद ॥ नक्षत्र १ चंद २
रुतु ३ आदित्य ४ अन्निवर्द्धित ५ ॥ ३ ॥ लक्षण संवछरना ५ न्नेद ॥ सम नक्षत्र (जे
वखते जेनो जोग जोइये ते) जोग जोमे समऋतुपरिणामे अति ताप टाढ नहि बहु उदक
वर्षे तेने नक्षत्र सवछर कहिये १ पूर्णीमाए चंद्र साथे विषम चारि नक्षत्रनो योग होय तापे
टाढे अति दारुण घणोमेह वर्षे तेने चंदसंवछर कहीये ॥२॥ वनस्पतिना प्रवाल विषम परिणमे
ऋतुविनाकाले फुलफलआवे वर्षा सम्यक् प्रकारे न वर्षे तेने कर्मसवछर कहिये ॥ ३ ॥ थोडे मेहे
करि पृथवीपाणीनो रस फुलफलनोरस आपे सम्यक् प्रकारे धान्य निपजे तेने आदित्य
सवछर कहिये ॥ ४ ॥ सूर्यने तापे करि तप्या थका क्षण लवदिवस ऋतु परिणमे ने नीचा
स्थानक जलेकरि पुराय तेने अन्निवर्द्धित संवछर कहिये ॥ ५ ॥ ४ ॥ अन्निजितादि २८
नक्षत्रोने शनैश्चर महाग्रह ३० वर्षे न्नोगवी ले तिवारे शनैश्चर सवछर अथवा ए संवछर २८

प्रकारनो ते आभ्रच जाव उत्तराषाढा—ए ॥ एक सवछरना १२ मास तेना २ प्रकारे नाम लोकिकपक्षे श्रावण जाव आषाढ ॥ लोकोत्तरपक्षे अभिनंदित १ प्रतिष्ठित २ विजय ३ प्रीति वर्द्धन ४ श्रेयाश ५ शीव ६ शीशीर ॥ ७ ॥ हीमवत ८ वसत ए कुसुमसभ्रव १० निदाघ ११ वनविरोध १२ ॥ एक मासना २ पक्ष—बहुलपक्ष ॥ १ ॥ शुक्लपक्ष ॥ २ ॥ एक पक्षना १५ दिवश ते प्रतिपदा दिवश जाव पचदशी दिवश—हवे १५ दिवशना १५ नाम ते ॥ पूर्वांग १ सिद्धमनोरम २ मनोहर ३ यशोभद्र ४ यशोधरा ५ सर्वकामसमृद्ध ६ इद्रमूर्धाभिषिक्त ७ सोमणस ८ धनजय ए अर्थसिद्ध १० अभिजात ११ अत्यासन १२ शतंजय १३ अग्निवेश्म १४ उपशम १५॥ हवे १५ दिवशनि १५ तिथि ते ॥ नंदा १ भद्रा २ जया ३ तुछा ४ पूर्णा ५ एरीते ५ ने ३ वार उथलावता १५ थाय—एक पक्षनि १५ रात्रि ते प्रतिपदा जाव पंचदशी ॥ हवे १५ रात्रिना १५ नाम ते उत्तमा १ सुनक्षत्रा २ एलापत्या ३ यशोधरा ४ सोमणसा ५ श्रिसभूता ६ विजया ७ विजयती ८ जयती ए अपराजिता १० इछा ११ समाहारा १२ तेजा १३ अतितेजा १४ देवा नदा १५ ॥ हवे १५ रात्रिनी १५ तिथि कहेछे ॥ उग्रवती १ भोगवती २ यशोवती ३ सर्वसिद्धा ४

अनुराधा ७ ॥ ए ७ नक्षत्र चन्द्रने उत्तर दक्षिणे प्रमर्द्दिने जोग जोडेछे ॥ पूर्वाषाढा १ उत्तराषाढा २ ए २ नक्षत्र सर्व बाहीरले माडले दक्षिणे चद्रमाने प्रमर्द्दिने जोगजोडे ने १ ज्येष्टा नक्षत्र सदा चंद्रने प्रमर्द्दिने जोगजोडे ॥ हवे नक्षत्रना देव कहेछे ॥ ब्रह्मा १ विष्णु २ वसु ३ वरुण ४ अज ५ अहिर्बुंभ ६ पूष ७ अश्व ८ यम ए अग्नि १० प्रजापति ११ सोम १२ रौद्र १३ अदिति १४ बृहस्पति १५ सर्प १६ पितृ १७ भग १८ अर्यम १ए सविता २० त्वष्टा २१ वायु २२ इद्राग्नि २३ मित्र २४ इद्र २५ नैऋति २६ जल २७ विश्व २८ ॥ नक्षत्रना तारा अनुक्रमे कहे छे ॥३—३—५—१००—२—२—३२—३—३—६—५—३—१ -५—३—६—७—२—२—५—१—१—५—४—३—११—४—४—हवे नक्षत्र ना गोत्र कहेछे ॥ मुद्गलायन १ सख्यायन २ अग्रभाव ३ कर्णिलायन ४ जातुकर्ण ५ धनंजय ६ पुष्पायन ७ अश्वायन ८ भार्गवेश ए अग्निवेश १० गौतम ११ भारद्वाज १२ लोहित्य १३ वासिष्ठ १४ अवमज्ञायन १५ माडव्यायन १६ पिंगलायन १७ गोवल्लायन १८ काश्यप १ए कौशिक २० दर्भायन २१ चामरगाय २२ शृंगायन २३ गोलव्यायन ॥२४॥ तिगिछायन २५ कात्यायन २६ अ रघ्यायन २७ व्याघ्रापत्य ॥ २८—हवे नक्षत्रना आकार कहेछे ॥ गोशीर्षावलि ॥१ ॥ कावड॥२॥

शकुनिपजर ॥ ३ ॥ पुष्पोपचार ४ वापि ५ नावा ६ अश्वखध ७ भग ८ धजाने
आकारे ए कुरम १० शकटउद्दि ११ मृगशीर्षावलि १२ रुधिरविंदु १३ तुला १४
वर्द्धमान १५ पताका १६ प्राकार १७ पल्यक १८ तया १९ हस्त २० मुखाभरण
२१ किलक २२ दामणि २३ एकावलि २४ गजदंत २५ वृश्चिकलागुल २६ गज-
विक्रम २७ सिद्धनिषीद २८ ॥ अभिचनोयोग चंद्रमासाथे ए मुहूर्त्तने[21/67] भागनो ॥ सूर्यसाथे ४
अहोरात्रि ने ७ मुहूर्तनो ॥ शतभि० १ भरणी २ आर्द्रा ३ अश्लेषा ४ स्वाति ५ ज्येष्ठा ६ ए ६ नो चंद्र
साथे योग १५ मुहूर्तनो ने सूर्यसाथे ६ अहोरात्र ने २१ मुहूर्त्तनो ॥ उत्तराभाद्र० १ उत्तराफा० २
उत्तरापाढा ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ ए ६ नो योगचंद्रसाथे ४५ मुहूर्त्तनो ॥ सूर्यसाथे
२० अहोरात्र ने ३ मुहूर्त्तनो ॥ शेषनक्षत्र चंद्रसाथे ३० मुहूर्त ने सूर्यसाथे १३ अहोरात्र ने १२ मुहूर्त्त
जोगजोम्हे—२८ नक्षत्रमां १२ कुल ते धनिष्ठा १ उत्तराभाद्रपद २ अश्विनी ३ कृतिका ४ मृगशीर
५ पुष्य ६ मघा ७ उत्तराफा० ८ चित्रा ए विशाखा १० मूल ११ उत्तरापाढा १२=अभिच १
शत० २ आर्द्रा ३ अनुराधा ४ ए ४ कुलोपकुल—शेषउपकुल ॥ श्रावणीपूर्णीमाए ३ नक्षत्रमाथि

अरुण ५४ अग्निल ५५ काल ५६ महाकाल ५७ स्वस्तिक ५८ सोवस्तिक ५९ वर्द्धमाणक ६० प्रलंवक ६१ नित्यालोक ६२ नित्योद्योत ६३ स्वयंप्रभ ६४ अवभास ६५ श्रेयस्कर ६६ क्षेमंकर ६७ आभकर ६८ प्रभंकर ६९ अरजा ७० विरजा ७१ अशोक ७२ वितशोक ७३ विमल ७४ वितप्त ७५ विवस्त्र,७६ विशाल ७७ शाल ७८ सुव्रत ७९ अनिवृत्ति ८० एकजटी ८१ द्विजटी ८२ करक ८३ करिक ८४ राजा ८५ अर्गल ८६ पुष्पकेतु ८७ भावकेतु ८८॥इति ज्योतिषबोध संपूर्ण.॥

इतिश्री प्रकरणसंग्रह. संपूर्णः ॥

॥ श्लोक. ॥ वंदे सद्गुरुवर्यमेनमधुना लाघाजिसङ्गं मुदा ।
सद्विद्यार्णवमार्यशीलसरस सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतो जडोप्यलमहो जातोस्मि विद्याबुधो ॥
तंतुं शक्तिधरोदमुत्तमपुरश्चज्ञाननिधानो मुनि ॥ १ ॥

पुस्तक मळवाना ०

भगवानदास केवलदास–सगरामपुरा–सुरत.

जगजीवनदास केवलदास पायधुणी–मुंबई.

पंडित जेष्ठारामसुकुंदजी–बुकसेलर–कालबादेवीरोड–मुंबई.

श्रावक भीमसीमाणेक–मांडवी बंदर–मुंबई

श्रीजीवनदास रुगनाथदास बुकसेलर–

ठे० आकासेठना कुवानी पोळ

अमदावाद.